Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समर्पण-पत्रिका

परमश्रद्धेय वैद्यरत्न स्वर्गीय सम्पादकप्रवर
श्रीयुक्त वैद्यराज शङ्करलालजी
अध्यक्ष—आयुर्वेदोद्धारक औषधालय,
एवं वैद्य कार्यालय तथा वैद्य-प्रेस, मुरादाबाद (यू० पी०)
के सुपुत्र—
वैद्यकुलावतंस जैनवंश विभूषण स्वनामधन्य
श्रीयुक्त वैद्य विष्णुकान्तजी के उदार अनुरोधवश
यह रत्नमाला ग्रथित की गई है।

अतः उनके ही गल प्रदेश में
परिधान कराने के प्रेम में
मालाकार को हार्दिक आनन्द की अनुभूति होती है।

मिति आश्विन शुद्ध]
विजयादशमी सं० १९९३]

—कृष्णप्रसाद त्रिवेदी
चांदा, सी० पी०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समर्पण-पत्रिका

परमश्रद्धेय वैद्यरत्न स्वर्गीय सम्पादकप्रवर
श्रीयुक्त वैद्यराज शङ्करलालजी
अध्यक्ष-आयुर्वेदोद्धारक औषधालय,
एवं वैद्य कार्यालय तथा वैद्य-प्रेस, मुरादाबाद (यू० पी०)

के सुपुत्र-

वैद्यकुलावतंस जैनवंश विभूषण स्वनामधन्य
श्रीयुक्त वैद्य विष्णुकान्तजी के उदार अनुरोधवश
यह रत्नमाला ग्रथित की गई है।

अतः उनके ही गल प्रदेश में
परिधान कराने के प्रेम में
मालाकार को हार्दिक आनन्द की अनुभूति होती है।

मिति आश्विन शुद्ध]
विजयादशमी सं० १९९३]

-कृष्णप्रसाद त्रिवेदी
चांदा, सी० पी०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकाशकीय निवेदन।

प्रेस और ग्रन्थ-प्रकाशन का हमारा यह प्रथम प्रयास है। इसीलिये कितनी ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। प्रेस का डिक्लेरेशन दिया उसकी मंजूरी में २-२॥ मास का समय लग गया। जब अदालत से आज्ञा प्राप्त हुई, तब पुस्तक का कार्य प्रारम्भ किया गया। हम समझते थे, शीघ्र ही मंजूरी मिल जाने पर पुस्तक छप जावेगी। इसीलिये सूचना निकाल दी, पर हम विवश थे। इसके बाद प्रेस का सामान कुछ बाहर से आना बाकी था, उसके आने में बहुत बाट देखनी पड़ी। यही नहीं, काग़ज़ की महंगी होगई। मुरादाबाद जैसे साधन-विहीन नगर में हमारे मन के माफ़िक काग़ज़ का प्राप्त होना मुश्किल होगया, बाहर से काग़ज़ मंगवाने में भी बहुत समय लगा। फिर भी उतना सुन्दर काग़ज़ न लगा सके, जिसका हमें दुःख है।

इन्हीं सब कारणों से पुस्तक के प्रकाशित होने में बहुत अधिक देरी होगई। कितने ही महानुभावों को चिर-प्रतीक्षा करनी पड़ी। जो हमारी विवशता-वश ही हुई है, उसकेलिये हम सभी सज्जनों से क्षमा चाहते हैं।

शीघ्रता के कारण संभव है प्रूफ आदि देखने में भी कुछ भूलें रह गई हों, आशा है उदार पाठक महानुभाव उन्हें हमारे पास या लेखक महोदय के पास लिखकर भेज देने की कृपा करेंगे। जिससे उन्हें हम आगामी संस्करण में ठीक कर सकें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस संस्करण को बहुत प्रयत्न करने पर भी जैसा हम चाहते थे, वैसा न बना सके। जिसका हमें दुःख है। पर दूसरे संस्करण में हम इसे अधिक सुन्दर रूप में निकालने का प्रयत्न करेंगे।

इस ग्रन्थ के लेखक और संपादक आयुर्वेद के माननीय विद्वान् आयुर्वेदसूरिः श्री वैद्यराज पं० कृष्णप्रसादजी त्रिवेदी बी० ए० को हम किन शब्दों में धन्यवाद दें? उन्होंने निस्वार्थभाव से आयुर्वेद के एक विषय को अपूर्ण देखकर उसे सम्पूर्ण बनाने के लिये हमारे लिखने पर इस ग्रन्थ के निर्माण और संकलन में अपना वर्षों का अमूल्य समय व्यय किया है? और कितना श्रम किया है?

आयुर्वेद की निस्वार्थ सेवा में निरंतर व्यस्त रहने वाले आयुर्वेद-प्रेमी त्रिवेदीजी को नाम की कोई चाह नहीं है, यह हम खूब जानते हैं। वे आयुर्वेद के एक रत्न हैं और उनका आयुर्वेद के सभी विषयों पर एक-सा अधिकार है। उनकी विशेषता है, वे जिस विषय के ग्रन्थ को लिखते हैं, उसे पूर्ण अधिकार के साथ लिखते हैं।

यह आसवारिष्ट सम्बन्धी ग्रन्थ उनकी लेखनी का चमत्कार है! आशा है पाठक इसे अवश्य अपनायेंगे।

श्री पं० रघुवीरशरण शर्मा आदि प्रेस के कर्मचारियों ने जिस सहूलियत से काम किया उसके लिये वे विशेष धन्यवाद के पात्र हैं।

अन्त में उन सभी सज्जनों के हम अत्यन्त आभारी हैं, जिनके द्वारा इस ग्रन्थ के प्रकाशन में कुछ भी सहायता प्राप्त हुई है।

विनीत—प्रकाशक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस ग्रन्थ के लेखक और सम्पादक—

आयुर्वेदसूरिःश्री० पं० कृष्णप्रसादजी त्रिवेदी बी० ए०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भूमिका

जिस प्रकार संसार की अनेक चिकित्सा-प्रक्रियाओं में नाना प्रकार से औषधियाँ व्यवहार की जाती हैं, उसीप्रकार प्रत्युत् उससे भी अधिक औषधिनिर्माण के प्रकार आयुर्वेद में वर्णित हैं, जैसे-स्वरस, हिम, मन्थ, फांट, कल्क, पुटपाक, चूर्ण, क्वाथ, गुटिका, अवलेह, पाक, मुरब्बा, शर्बत, घृत, तैल, अर्क, आसवारिष्ट, सत्व, क्षार, कांजी, नस्य, धूम्रपान आदि २। इनमें से आसवारिष्ट की गणना सन्धानवर्ग में कीजाती है। यह अत्यन्त प्राचीन प्रक्रिया कब निर्माण हुई, और इसका आविष्कर्त्ता कौन था इसका पता लगाना बहुत कठिन है। कारण चरक सुश्रुत के भी आदि ग्रन्थ जो वेद ब्राह्मण आदि हैं, उनमें भी किसी न किसी रूपसे इसका विधान पाया जाता है।

इस विषय में आयुर्वेदपंचानन पं० पूनमचन्द्रजी व्यास ने बहुत कुछ ऊहापोह करते हुये जो कुछ मार्के की बातें अपने 'आसवारिष्ट प्रयोग' शीर्षक निबन्ध में प्रगट की हैं, उसे यहाँ उद्धरण करने का लोभ हम संवरण नहीं कर सकते।

वे कहते हैं कि-"सन्धान क्रिया के सम्बन्ध में अनेक धार्मिक आज्ञायें बहुत प्राचीनकाल से प्रचलित हैं। उनसे भी यही अनुमान होता है कि इस प्रक्रिया का शोध हमारे भारत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में अत्यन्त प्राचीनकाल में ही हुआ है। आयुर्वेदिक फार्माकोपिया की यह माननीय और प्रसंशनीय क्रिया बहुत प्राचीन और ऋषियों की आविष्कृत की हुई है।

आसवारिष्ट जैसी महान् उपयोगी प्रक्रिया के सम्बन्ध में पिछले कई दिनों से सरकार की ओर से प्रतिबन्ध लगाने का प्रयत्न किया जारहा है, कुछ वैद्यों पर अमृतसंजीवनी आसव आदि निर्माण करने के कारण अदालती कार्यवाहियाँ भी हो चुकी हैं। इसके विरुद्ध वैद्यक पत्रों में बहुत कुछ आन्दोलन भी हो चुका है। यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि चूर्ण, गुटिका, अवलेहादि नानाविध औषधि प्रक्रियाओं से श्रेष्ठ महा लाभकारी आसवारिष्ट की प्रक्रिया है। किन्तु खेद है कि अभी भी कतिपय वैद्यगण इस कल्याणकारी आसवारिष्ट-प्रणाली को अपनाते हुये हिचकते हैं।

आयुर्वेद में 'आसवारिष्ट' की प्रक्रिया मुख्यतया औषध का द्रवसत्व (Lipuid Fxtract) निकालने ही के लिये आविष्कृत तथा उपयुक्त हुई है। द्रव्य के औषधीय वीर्य (सत्व) का महत्व, उपयोगिता एवं निर्माण विधि का पूर्ण ज्ञान हमारे पूर्वजोंने बहुत समय पहिले ही से मालूम कर लिया है, तथा आसवारिष्ट जैसी प्रक्रिया का इसके लिये आधार लिया गया है। सत्व निकालने की अनेक विधियाँ हैं, और भिन्न २ औषधों के लिये भिन्न २ प्रकार से सत्व निकालने की आवश्यकता होती है. किन्तु संधानक्रिया द्वारा मद्यसार निर्माणपूर्वक जो सत्व निकाले जाते हैं, वे अधिक उपयोगी एवं विश्वसनीय होते हैं। डाक्टरी (एलोपैथिक) चिकित्साप्रणाली का इस ओर विशेष लक्ष्य है। हमारे ऋषि मुनियोंने अन्यान्य विधियों के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साथ ही साथ मद्यसार की क्रिया के अनुसार द्रवसत्व निकालने का जो उपाय ढूंढ निकाला है वह वर्त्तमान की अन्य रीतियों से तयार हुये सत्वों की अपेक्षा अत्युत्तम कहा जा सकता है। इस आसवारिष्ट की प्रक्रिया द्वारा इच्छित औषध का द्रवसत्व, जल में उत्लेचनक्रिया (खमीर) की सहायता से निकल आता है। यह विधि इतनी अच्छी एवं सरल होने पर भी, इसके द्वारा तयार किया हुआ सत्व पुराना होने पर हीनवीर्य नहीं होता, प्रत्युत् और भी बलवान गुणवाला होता जाता है। इसमें अल्कोहल (उन्मादकारकमद्य) का परिणाम नहीं के बराबर ही रहता है,जो कुछ रहता भी है वह हानिकारक कदापि नहीं होता, प्रत्युत् अवस्था विशेष में रोग नाश करने में पूर्ण समर्थ रहता है। यद्यपि यह सत्य है कि केवल स्पिरट या अल्कोहल में औषधि द्रव्य डालकर द्रवसत्व (टिंकचर, इसके विषय में आगे देखिये) खींचने की अपेक्षा आसवारिष्ट की क्रिया कुछ अधिक कठिन और अनियमित है; परन्तु अन्य कई विशेषताओं के कारण हमारे पूर्वज आचार्योंने इसी ओर विशेष लक्ष्य रखा था।

आयुर्वेदिक चूर्ण गुटिकादि प्रक्रियाओं की अपेक्षा आसवारिष्ट की प्रक्रिया विशेष गुणकारी एवं उपकारी हैं। इसमें बड़ी भारी विशेषता भस्म और रस के सदृश यह है कि ये ज्यों २ पुराने होते जाते हैं त्यों २ उनका गुण अधिकाधिक बढ़ता जाता है। ये कभी हीनवीर्य नहीं होते। "बाबा करे और पोता वरते" वाली कहावत चरितार्थ होती है। आसवारिष्ट के प्रयोगों को अन्य वनौषधियों के स्वरसों की भावनायें नहीं देनी पड़तीं, गजपुटादि में फूंकने फांकने की आवश्यकता नहीं होती, गोली बांधने के लिये बहुत सा समय एवं नौकर आदि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का खर्च नहीं करना पड़ता, किन्तु केवल आवश्यक द्रव्य एकत्र कूट पीस कर अरिष्ट हो तो क्वाथ और आसव हो तो साधारण जल में डाल कुछ दिन योग्य पात्र में रख छोड़ना पड़ता है, और नियत समय के बाद छान कर बोतलों में भर लिया जाता है। सत्व के कारण मूल औषध की अपेक्षा इसकी मात्रा भी कम देनी होती है, गुण अधिक और तुरन्त होजाता है तथा उत्सेचन क्रिया की सहायता से बना होने से कुछ शारीरिक बल-तेज भी देता है। जब इन्द्रियाँ बहुत कमज़ोर होजाती हैं, जीर्ण व्याधि से सारा शरीर कृश होजाता है, पथ्य-अन्न तो दूर रहा, औषध तक नहीं पचती, ऐसी अवस्था में आसवारिष्ट का प्रयोग चमत्कारिक रूप से फल देता है। इससे एक ओर रोगी की शक्ति कायम रहते हुये, साथ ही में उसके कार्य से रोग भी दूर होजाता है। जिस समय शरीर के परमाणु नष्ट हो रहे हों, शरीर घट रहा हो, उस समय आसवारिष्ट के प्रयोगों की बराबरी करने वाला एक भी पदार्थ नहीं होता, जो परमाणुओं को नष्ट होने से रोक कर, नष्ट होने के कारण को भी शीघ्र ही मिटा देवे। यह गुण केवल आसवारिष्ट ही में है कि जिससे इसका महत्व औरों से अधिक एवं विशेष गिना जा सकता है। हमने अपने अनुभव से अनेकों बार देखा है कि जब कितनी ही जीर्ण व्याधियाँ अन्य प्रयोगों से आराम नहीं हो सकीं, तब इसके सेवन से उनमें सन्तोषजनक लाभ प्राप्त हुआ है।

इसका मूल्य भी अधिक नहीं लगता। दूसरे प्रयोगों की अपेक्षा कम खर्च में ही बहुत काम होजाता है। पतला और प्रायः बिना स्वाद का होने से सेवन करते समय कष्ट नहीं होता। रोगी जब दवायें खाते २ थक जाता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है, तब फिर वह उनसे घृणा करने लगता है, किन्तु आसवारिष्ट ऐसे पदार्थ हैं कि जिनसे उसे अरुचि नहीं होती।

केवल इतनी सी आपत्ति जरूर है कि ये आवश्यकता के समय तुरंत तैयार कर उपयोग में नहीं लाये जा सकते। अवश्य ही यह एक असुविधा है, किंतु अन्य गुणों के आगे यह अवगुण कुछ विशेष महत्व का नहीं है कि जिससे इसके प्रचार में बाधा उत्पन्न हो, क्योंकि यदि आवश्यकता पड़ने पर ही सब औषधें तैयार कीजावें तो वे कब तो तैयार हों और कब सेवन करने का अवसर आवे। अतएव औषध तो समय के पहले ही तैयार कर रखना उचित होता है। आग लगने पर उसी समय कुँवा खोदने से क्या लाभ!

जो लोग आसवारिष्ट को एक प्रकार का मद्य समझते हुये उसके सेवन से हिचकिचाते हैं, वे भूल में हैं। मद्य में तो मादक पदार्थ अधिक और तेज उत्पन्न होता है वैसा प्रायः ध्यान तथा प्रबन्ध किया जाता है, उत्सेचन क्रिया भी सम्पूर्ण की जाती है। आसवारिष्ट में मादक नहीं किन्तु औषधों का सत्व द्रवपदार्थ में खिंच आवे इसी का ध्यान रक्खा जाता है। अतः यह मादक या मद्य पदार्थ कदापि नहीं है, और न मादकता के लिये इसका उपयोग ही किया जाता है।

आसवारिष्ट की परिभाषा एवं निर्माण विधि।

* आसव और अरिष्ट प्रायः एक ही वस्तु है, दोनों नाम

---

* महर्षि चरकजी ने आसवों का वर्णन करते हुये लिखा है।

"इत्येषामासवानामासुतत्वादासवसंज्ञा।"

अर्थात्—आ = समन्तात्, सुत = उत्पन्न होने से, सन्धान क्रिया के पश्चात्, पात्र के अन्दर, सर्वतः = विशेष किण्वनामक कीटाणुओं द्वारा उत्पन्न होने से, यह आसव कहलाता है। —लेखक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समान भाव सूचक हैं, और प्राचीन ग्रन्थों में ये दोनों शब्द एक ही भाव में प्रयुक्त हुये हैं, अवश्य ही कई ग्रन्थों में इनको क्रिया में परस्पर थोड़ा सा भेद माना है, परन्तु प्राचीन ग्रन्थकारोंने इस थोड़े से भेद के लिये आसव और अरिष्ट को अलग२ नहीं माना। यहाँ तक कि शार्ङ्गधरसंहिता से पहिले के ग्रन्थों में तो ऐसी कोई संज्ञा भी निर्धारित नहीं हुई है कि जिससे आसव और अरिष्ट में भेद समझा जा सके। इससे अनुभव किया जा सकता है कि ठेठ पूर्वकाल में आसव और अरिष्ट कोई अलग २ पदार्थ नहीं समझे जाते थे। आसव और अरिष्ट दोनों में उत्सेचन क्रिया (खमीर उठना) भी समान ही होती है। केवल मद्यसार का अंश अरिष्ट की अपेक्षा आसव में कुछ शीघ्र होता है, किन्तु इसका सारा आधार द्रव्य की जाति और उसके परिमाण पर बहुत कुछ निर्भर है। एक ही द्रव्य के आसव और अरिष्ट दोनों बनाये जा सकते हैं। किन्तु उनके गुण में कुछ खास विशेषता अवश्य आती है। आसव कुछ बृंहण पदार्थ समझा जाता है, और वह कुछ सनसनाहट पैदा करने वाला भी है। अरिष्ट में औषध का सत्व आसव की अपेक्षा अधिक परिमाण में तथा बलवान होता है, एवं रोग नाश करने की शक्ति भी अधिक रखता है। इन दोनों में जो द्रव्य प्रधान होता है, उसी के अनुसार गुण मुख्य होता है। जो पदार्थ कड़े हों अथवा जिनका सत्व देर से निकलता हो, उनके लिये अरिष्ट क्रिया, तथा जो पदार्थ मृदु हों या जिनका सत्व द्रवरूप में शीघ्र निकल आता हो, उनके लिये आसव क्रिया लाभकारी है।

आसवारिष्ट के प्रयोगों में मुख्य औषध के साथ दूसरे कई द्रव्य तो मुख्य औषध ही की भांति और वह क्रिया में सहा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यता पहुंचाने के लिये व्यवहृत होते हैं। मुख्य औषध का तो सत्व निकलता है, तथा वह प्रयोग उसी औषध के नाम से पुकारा जाता है। जल, गुड़, शहद, द्राक्षा, खांड, महुआ तथा अन्य कई शर्करादि पदार्थ उत्सेचन क्रिया को उत्पन्न करने तथा सहायता पहुंचाने के लिये उपयुक्त होते हैं। धायके फूल,लोध, मुलैठी, आमकी गुठली, त्रिफला, जामुन की गुठली, बदूल की छाल, खैर आदि कसैले पदार्थ क्रिया में विशेष सहायता पहुंचाने के लिये उपयोग में आते हैं, जिनसे निर्मलता आती है। कुछ द्रव्य सुगन्धित एवं सुवासित करने के लिये डाले जाते हैं। आसवारिष्ट किसी भी पदार्थ के बनाये जा सकते हैं, किंतु द्रव्य खास कर अम्लगुण वाला नहीं होना चाहिए। यद्यपि कैथ, दही का पानी, छाछ, आँबला, कांजी, लवण, तैल आदि पदार्थों का उपयोग प्राचीन चिकित्सकोंने कई प्रयोगों में किया है, किंतु अवस्था विशेष में ही उनकी खास आवश्यकता समझी गई है। नवीन प्रयोगों में इन पदार्थों का उपयोग बहुत विचार पूर्वक होना चाहियें, अन्यथा प्रयोग के बिगड़ जाने का भय है।

आसवारिष्ट को यथोपयुक्त तैयार करने के लिये खास अनुभव की आवश्यकता है। थोड़ीसी भी भूल या उपेक्षा होजाने से वे ठीक २ तैयार नहीं हो पाते, अथवा बिगड़ जाते हैं, और आसवारिष्ट के स्थान में शुक्त, सिरका आदि कुछ और ही पदार्थ बन जाते हैं। उनमे जैसा चाहिये वैसा गुण नहीं होता, प्रत्युत् अनेक बार विपरीत गुण होजाता है।

आयुर्वेद में आसवारिष्ट की निर्माण विधि अत्यन्त संक्षेप में सूत्ररूप से कही गई है। यथा—

द्रवैपु चिरकालस्थं द्रव्यं यत्सान्धितं भवेत्।
आसवारिष्ट भेदैस्तु प्रोच्यते भेषजोचितम्॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अर्थात्—जलादि द्रव पदार्थों में औषधियाँ डालकर निर्धारित समय तक (उत्सेचन क्रिया पूर्ण होने तक) सन्धान कर रखने के बाद जो द्रव्य तैयार होता है, उसे क्रिया भेद से आसव या अरिष्ट कहते हैं।

"यदपक्वौषधास्वभ्यां सिद्धं मद्यं स आसवः ।"

अर्थात्—औषधियों को जल में डालकर न पकाते हुये वैसे ही सन्धान करके उत्सेचन क्रिया के पूर्ण होने तक सुरक्षित रखने के बाद जब वह शारीरिक-उत्साह संचार शक्तियुक्त, रोग निवारक गुण सम्पन्न होजाता है, तब उसे आसव कहते हैं। मूल श्लोक में 'मद्य' शब्द आया है, उससे मद्य अर्थात् तीव्र मदकारी शराब का अर्थ ग्रहण करना अनर्थकारी है । कारण 'मद्य' वह है जो अन्न के समान स्वाभाविक ही देहधारण करे (शराब कुछ स्वाभाविक ही देहधारण नहीं करती प्रत्युत देह को और शुष्क कर डालती है यदि उस पर तर माल न खाया जाय) कहा है—

"मद्यं स्वभावेन यथैवान्नं तथा स्मृतम् ।"

अरिष्ट के विषय में कहा है—

अरिष्टः क्वाथ सिद्धः स्यात् सम्पक्वो मधुरद्रवैः ॥

अर्थात्—जब उन्हीं औषधियों का क्वाथ तैयार कर गुड़ आदि मधुर द्रव्यों का योग (मधुर द्रव्यों का योग आसव में भी दिया जाता है) देकर, नियत काल तक सन्धान करके रखने के बाद जो उत्साह संचार एवं रोग निवारक शक्ति युक्त द्रव्य तैयार होता है उसे अरिष्ट कहते हैं। यह लघुपाकी होने से अधिक उपयोगी हुआ करता है, जैसा कि कहा है—

"अरिष्टं लघुपाकेन सर्वतश्च गुणाधिकम् ।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निर्माणविधि—आसवारिष्ट साधारणतया मिट्टी के शुद्धपात्र में, या आधुनिक चीनी मिट्टी के पात्र में, यदि अत्यधिक मात्रा में बनाने हों तो लकड़ी के ढोल (जिनमें शराब आती है) में बनाने चाहिये। पात्र ऐसे होने चाहिये जिसमें कभी भी अचार, दही, लस्सी, सिरका आदि अम्लतोत्पादक पदार्थों का स्पर्श न हुआ हो। वह बिल्कुल नवीन होने चाहिये। यदि पुराने हों या उक्त अम्लतोत्पादक पदार्थ युक्त हों या ऐसे हों जिसमें एक दो बार आसवीय द्रव्य बिगड़ चुके हों तो उन्हें पूर्णतया निम्न प्रकार से शुद्ध करलेना चाहिये। "घृतभाण्डे विनिक्षिप्य" का यह मतलब नहीं है कि कोई भी घृत से चिकना किया हुआ पात्र ले लिया जाय। ऐसा अन्धानुकरण करने से आसवारिष्ट अवश्य ही बिगड़ जाते हैं।

पात्र शुद्धि करणविधि—पात्रको प्रथम खौलते हुये गर्मजल से स्वच्छ धोकर, आग पर या तीव्र धूप में रख खुष्क करलेवे। पश्चात् चूने के जल से (२५ सेर जल और १ सेर कलई का चूना एकत्र उस पात्र में डाले, जब वह खौल उठे तब उस पात्र को आग पर २ या ३ घन्टे तक रखे, फिर अन्दर के चूर्णोदक को लौट कर, उसे ५-६ बार उष्णोदक सेही धोकर सुखा लेवे) धोकर और शुष्क कर, लोबान आदि धूप द्रव्यों से धूपित एवं सुवासित कर लेवे यदि मामूली मिट्टी के घड़े में आसवारिष्ट संधान करना हो तो उसे भी उक्त प्रकार से स्वच्छकर, अन्दर लोध की छाल और धाय के फूलोंका समभाग खूब महीन कलक कर पतला २ लेप ३ बार करे। प्रत्येक बार लेप करके सुखालेना चाहिये। यदि इस प्रकार लेप न किया जावेगा तो उस घड़े के सूक्ष्मातिसूक्ष्म छिद्रों द्वारा अन्दर का आसवीय द्रवभाग बाहर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निकल जावेगा, तथा इन्हीं छिद्रों द्वारा बाह्य वायु अन्दर प्रविष्ट होकर आन्तरिक उपयोगी ऊष्मा को कम कर दे, यह संभव है, जिससे आसवारिष्ट बिगड़ जाते हैं। कोई २ राल और मैथिलेटिडस्प्रिट के मिश्रण का लेप३ बार करनेका आदेश करते हैं, किन्तु यह हमें पसंद नहीं, कारण यह लेप ठीक २ नहीं होता।

जल तथा औषधि द्रव्य शुद्धि—उक्त प्रकार से पात्र शुद्धि के पश्चात् जल जो कि आसवारिष्ट निर्माण के लिये प्रयुक्त होता है वह यदि बाष्पीय जल हो या ऊपरी वर्षा का शुद्ध पात्र में लिया हुआ जल हो तो अत्युत्तम होता है। यदि ऐसा जल न मिले तो शुद्ध कूप, नदी प्रवाह या तालाब का जल, जो क्षार रहित निर्गन्ध, कीटाणु दोष रहित हो, और शुद्ध वस्त्र में छना एवं शुद्ध पात्र में भरा हुआ होना चाहिये।

औषधि द्रव्य परिपक्व, यथा समय संग्रह किये हुये एवं साफ़ होने चाहियें। कोई भी द्रव्य सड़ा, गला, मिट्टी—धूल से मैला या वर्षा के सीलाब से भीगा हुआ नहीं होना चाहिये, अन्यथा एक ही द्रव्य की खराबी से संपूर्ण आसवारिष्ट बिगड़ जाते हैं। तथा सब परिश्रम व्यर्थ जाता है। इस प्रसंग में हम ऊपर कह आये हैं तथा यहाँ पर भी कह देना आवश्यक समझते हैं कि औषधि द्रव्यों में ऐसा कोई द्रव्य नहीं होना चाहिये जिसका स्वाद अम्ल हो, या जो अम्लतोत्पादक हो।

गुड़, शक्कर, शहद आदि मीठे पदार्थों पर ही आसवारिष्ट की प्रक्रिया विशेष निर्भर है। इनके ही योग से उनमें उत्सेचन क्रिया का प्रारम्भ होता है। अतः ये मीठे पदार्थ परम शुद्ध ही डालने चाहियें। बाजारू गुड़ प्रायः बहुत अशुद्धि से भरा रहता है, इसमें सिरका, सिलाब या किसी न किसी अम्लत्व का दोष

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहता है । अतः गुड़ जहाँ तक होसके खूब छान बीन कर विशुद्ध ही लेना चाहिये, नहीं तो गुड़ के स्थान में खाण्ड डालना उत्तम होता है। खाण्ड डालने से गुणमें कुछ भी अन्तर नहीं आता, प्रत्युत् और भी गुणवर्धक एवं स्वादिष्ट होजाता है । गुड़ के समान शहद की भी खूब जाँच पड़ताल करलेनी आवश्यक है। गुड़ और शहद परम विशुद्ध और जहाँ तक हो सके पुराने ही लेने चाहिये किन्तु खांड या शक्कर नवीन ही लेना ठीक है। इनके सिवाय मुनक्का, खजूर, महुआ आदि जो भी पदार्थ डालने हों वे सब कूड़ा करकट रहित साफ करके डालना ठीक होता है। जल आदि सब औषधि द्रव्यों को ठीक२ प्रमाण से तोल कर डाले, कम या ज्यादा कोई भी द्रव्य न होने पावे ।

गुड़, शर्करा, शहद आदि घुलने वाले जितने पदार्थ हों उन्हें प्रथम जल में या क्वाथ में घोल कर पात्र में डालना चाहिये। पश्चात् प्रक्षेप के जो औषधि द्रव्य हों, उन्हें महीन चूर्ण कर उसमें मिला देवे, फिर धाय के फूल या बबूर की छाल या महुआ आदि जो मद्योत्पादक पदार्थ डालने हों उन्हें भी अच्छी तरह साफ़ कर तथा कूट पीस कर उसमें डाले।

मुख बन्धन–पात्र के मुखको कपड़े से बांध देवे, या शराव से ढ़क कर कपड़मिट्टी कर देवे। हम तो पात्रके मुखको स्वच्छ वस्त्र से बांधकर, ऊपर एक लकड़ी की पटिया रखदिया करते हैं। यदि शराव संपुट से दृढ़तया मुख मुद्रा करना हो तो उष्ण ऋतुमें कम से कम ३ दिनतक और शीतकाल में ७ दिनतक मुख को बन्द न करके, पश्चात् मुखमुद्रा कर देना ठीक होता है। किन्तु हम दृढ़ मुखमुद्रा के विरुद्ध हैं, कारण पात्र के मुख को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दृढ़तया सन्धान करदेने से उसमें बाह्यशुद्ध हवा का किंचिन्मात्र भी प्रवेश न होने से, अन्दर उत्सेचन क्रिया ठीक २ नहीं होपाती, और प्रायः आसवारिष्ट बिगड़ जाया करते हैं । या उन्हें छान कर बोतलों में भरने पर उस समय वहां उत्सेचन क्रिया शुद्ध होकर बोतलों के कार्क उड़ जाया करते हैं, या बोतलें फूट जाया करती हैं । हमने आगे प्रत्येक प्रयोग में शास्त्र की परिपाटी के अनुसार सन्धान करने के लिये कह दिया है, किन्तु हमारा जो निजी अनुभव है, उसे यहाँ प्रकट कर देना हमारा कर्त्तव्य है ।

अरिष्ट की निर्माणविधि में इस बातका ध्यान रहे कि औषधि द्रव्यों को उत्तम प्रकार से जवकुट कर, जल में २४ या १२ घंटे भिगो रखने के बाद विधि युक्त क्वाथ करे । पश्चात् उसे छान कर तोल लेवे, यदि क्वाथ जल का वजन कम हो तो बाष्पीय जल या औटाया हुआ जल उसमें मिला कमी की पूर्ति करली जावे । यदि क्वाथ जल अधिक होजाय तो उसे पुनः औटाकर यथायोग्य वज़न कर लेवे । कुछ उष्णमायुक्त तोलने पर १ सेर पीछे ५ तोले जल कम होजाता है, ऐसा अनुभव है । यह भी ध्यान रहे कि औटाये हुये क्वाथ को सूखे वस्त्र द्वारा सूखे पात्र में इस तरह धीरे २ छानना चाहिये, जिससे नीचे बैठी हुई गाद पात्र में न आने पावे । पश्चात् उसमें प्रक्षेपणीय द्रव्यों को यथायोग्य वजन से चूर्ण कर मिलावे और उपर्युक्तानुसार पात्र का मुख बन्दकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिये ।

स्थान कैसा हो ? आसव या अरिष्ट का सन्धान किया हुआ पात्र रखने के लिये स्थान ऐसा शुद्ध होना चाहिये जहाँ कूड़ा, कचरा, सड़ी गली वस्तु न हो सील तथा तेज धूप

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहित, धुला हुआ, हवादार एवं रजस्वला स्त्री या कोई भी अपवित्र व्यक्ति के आवागमन से रहित होना चाहिये। जिस स्थान में दही जमाया जाता हो, या आटे से खँमीर तैयार कर डबल रोटियाँ बनाई जाती हों, या ईख आदि का सिरका जहाँ रक्खा जाता हो ऐसे स्थानों में भी आसवारिष्ट नहीं रखना चाहिये। कारण वहाँ के अन्य जाति के सूक्ष्म कीटाणु किसी न किसी प्रकार पात्र में घुसकर अवश्य ही आसवारिष्टों को बिगाड़ देते हैं। यदि पात्र को जमीन में गाढ कर रखना हो तो वहाँ की अतराफ़ की भूमि सीलरहित एवं शुद्ध हो, गड्ढे में नीचे भूसा भरकर उस पर पात्र को धीरे से जमा देना चाहिये तथा पात्र के ऊपर भी शुद्ध भूसा जमा कर गड्ढे के मुख को मिट्टी से या लकड़ी की पट्टियों से बन्द कर देना चाहिये।

उत्सेचन क्रिया तथा छानना—४ या ५ दिन के बाद ही पात्र में सनसनाहट उत्पन्न होकर, अन्दर का घोल आसव के रूप में परिणत होने लग जाता है। यदि ४ या ५ दिन के बाद उसमें सनसनाट उत्पन्न न हो तो पात्र को धूप में रखकर या आग पर रख कर किंचित् उष्णता देने से यह क्रिया शीघ्र ही प्रारंभ होने लग जाती है। जब तक सनसनाहट चालू रहे तब तक उसका मुख न खोले, पश्चात् शीघ्र ही खोल कर छान लेवे। अन्यथा कई दिनों तक आसवारिष्ट बन्द पड़े रहने से बिगड़जाते हैं।

उत्सेचन या खमीर की क्रिया आरम्भ होने के कुछ समय पश्चात् गैस के बुदबुदे अन्दर के घोल में उठने लगते हैं, तथा उसमें चक्रके रूपमें फेन उत्पन्न होता है। उक्त बुदबुदे इतने अधिकहोते हैं कि उसमें से धीमे स्वरसे सनसनाहट की ध्वनि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुनाई पड़ती है और चक्राकार सफेद फेन दिन दिन मोटा होता जाता है। यही सुराबीज या किण्व (Yeast) नामक कीटाणुओं का समुदाय है। अन्त में जब खमीर की सब क्रिया हो चुकती है, तब वह टूट टूट कर द्रव में अधःपतित होजाता है, जिसके पश्चात् खमीर की दूसरी क्रिया आरंभ होजाती है, जो आसवारिष्ट के लिये उपयोगी नहीं है। अतः यह आवश्यक है कि खमीर की उक्त क्रिया समाप्त होते ही अर्थात् फेन के अधःपात होने के पहिले ही आसवारिष्ट को छानकर दूसरे पात्रों में भर लिया जावे।

प्रसंगानुसार उक्त सुराबीज या किण्व-कीटाणुओं के विषय में संक्षेप में लिखना आवश्यक है-ये कीटाणु हवा तथा अन्य कितने ही पदार्थों में स्वभावतः विद्यमान रहते हैं। योग्य परिस्थिति पाते ही ये अपना कार्य प्रारंभ करने लगते हैं। जल मिश्रित मधुर द्रव्यों पर द्राक्षाशर्करा (Inoerted Sugr) पर इनका खास प्रभाव पड़ता है। ये अपनी क्रिया से जब मधुर द्रव्यों को मद्यसार में परिणत करते हैं, तब कार्बन ओषित गैस की उत्पत्ति होने से द्रव या घोल में बुदबुदे से उठने लगते हैं, और द्रव पर धीरे २ चारों ओर श्वेत वर्णका फेनसा उठता है, धीमी आवाज भी आने लगती है, तथा द्रव का तापमान भी एक बारगी बढ़कर १०० डिग्री तक पहुंच जाता है और फिर पीछे घट जाता है। जब इनकी क्रिया समाप्त होचुकती है, मधुर पदार्थ का मद्यसार बन चुकता है, तब फेन हटकर घोल स्वच्छ होजाता है। आवाज बन्द हो जाती है, तथा कार्बन गैसका निकलना बन्द होजाता है। बस आसवारिष्ट के लिये इनकी इतनी ही क्रिया पर्याप्त है। ठीक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसी समय यदि द्रव्य को छानकर अलग बोतलों में बन्द न कर दियाजाय तो पुनः खमीर उठने लगता है; पहले की भांति आवाज सुनाई देती है, द्रव या घोल पर रोटी सी जम जाती है, तथा वह अम्लरसयुक्त शुक्त होजाता है।

किण्व कोटाणु बराबर एवं उत्तम काम करे, इसके लिये कितनी ही बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। सब से पहिले मधुरता का परिमाण ठीक होना चाहिये। (१ मन जल में कम से कम २॥ सेर (ढाई सेर) तथा अधिक से अधिक ५ या ६ सेर तक मीठा डालना ठीक होता है) मीठा प्रमाण से बाहर अत्यधिक मिलाने से ये किण्व नष्ट होजाते हैं, और बिल्कुल ही कम मिलाने से इनकी क्रिया बराबर नहीं होने पाती, तथा समय भी लग जाता है। दूसरी बात यह है कि प्राणवायु बराबर पहुंचता रहे, एतदर्थ हवा पहुंचाने का भी ध्यान रखना आवश्यक है। तीसरी बात यह है कि अन्दर के घोल पर जब फेन आजाय और हवा भीतर न पहुँच सकती हो, तब उसे हिला देना चाहिये। यद्यपि कुछ लोगों की सम्मति में फेनको हिलाना उत्तम नहीं है, परन्तु अनुभव इसके विरुद्ध है। तापमान का भी ध्यान रखना उचित है। अधिक उष्णता में ये किण्व नष्ट होजाते हैं, और अधिक शीत में अपना कार्य ठीक २ नहीं कर सकते। आसवारिष्टों में धायकेफूल, मुलैठी आदि जो डाले जाते हैं वे इन किण्वों की पुष्टि के लिये उपयोगी होते हैं।

उत्सेचन क्रिया लगभग ५। ६ दिन में समाप्त होजाती है। शीत की अपेक्षा ग्रीष्म में कुछ कम समय की आवश्यकता होती है। यदि स्वाभाविक नियमानुसार सब व्यवस्था रहे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तो शीतकाल में ६ या ७ दिन और ग्रीष्म में ५ या ६ दिन में खमीर की क्रिया होचुकती है। इसप्रकार आसवारिष्ट के प्रयोगों में खमीर की समाप्ति का समय शास्त्रों में भिन्न २ ऋतुओं में भिन्न २ कहा है। किन्तु शीत गर्मी के तारतम्य से या पदार्थों की मधुरता आदि की भिन्नता आदि अनेक कारणों से समय में थोड़ा बहुत ही नहीं प्रत्युत बहुत कुछ अन्तर पड़ जाना स्वाभाविक है। अतएव केवल दिनों के ही भरोसे बैठे रहना ठीक नहीं, किंतु साथ ही साथ खमीर पूर्ण होने के चिन्हों पर भी ध्यान रखना चाहिये। ये चिन्ह इस प्रकार हैं।

जब खमीर या उत्सेचन क्रिया समाप्त होती है तब (१) अन्दर से सनसनाहट की आवाज आनी बन्द होजाती है। (२) अन्दर का घोल साफ होजाता है। (३) कार्बन ओषित गैस निकलना बन्द होजाता है, इसकी पहिचान के लिये पात्र के मुख के पास बत्ती जलाकर लाई जावे, यदि वह बुझजाय तो समझना चाहिये कि गैस निकल रही है, यदि न बुझे या कुछ भी टिमटिमाती रहे तो समझना चाहिये कि उक्त गैस निकलना बन्द है और खमीर की क्रिया अब तैयार होने पर है। (४) यदि मधुरता मापक यंत्र सेक्रोमीटर (Secrometer) पास हो तो उससे भी परीक्षा ठीक होसकती है, अर्थात् उस यन्त्र की स्पेसिफिकग्रेविटी ४ या ५ डिग्री पर हो तो समझना चाहिये कि खमीर की क्रिया अब समाप्ति पर है। (५) थर्मामीटर से भी परीक्षा हो सकती है, अर्थात् थर्मामीटर को उक्त सेक्रोमीटर के अनुसार ही पात्र के घोल में लटका कर देखना चाहिये यदि तापमान ८० या ८५ डिग्री का हो तो समझना चाहिये कि खमीर की क्रिया अब समाप्ति पर है। (६) पात्र का मुख

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खोल कर देखें, जब फेन हट कर द्रोल साफ निर्मल होजाय तब समझ लेना चाहिये कि उत्सेचनक्रिया समाप्त होचुकी है।

(आसवारिष्ट प्रयोग निबन्ध से)

यदि संधान पात्र में सुरा, सुराबीज (किण्व) डाले गये हों तो आसवारिष्ट १५ दिन के अन्दर ही तैयार होजाते हैं, यदि न डाले गये हों तो १५ या २० दिन बाद (जैसी आज्ञा दी गई हो) मुख खोलकर शीघ्र ही छान लेना चाहिए। या उक्त प्रकार से परीक्षा कर लेने के बाद तुरन्त ही छान लेना आवश्यक है।

छानते समय कलईदार पात्रों में, चीनी या कांच के पात्रों में, पात्र का मुख ढाँक कर, मक्खी या कीटकों से बचाते हुये, धीरे २ छानना चाहिये। शीघ्रता से एकदम उन्डेलते हुये छानने से उसका मद्यांश या सत्वांश, हवा में उड़ जाता है और नीचे बैठी हुई गाद भी पात्रों में छनकर चली जाती है। जिससे आसवारिष्ट हीनवीर्य होजाते हैं। और गाद के आजाने से कभी २ पुनः उत्सेचन क्रिया शुरू होकर पात्र का ढक्कन उड़ जाता है, आसवारिष्ट में उबालसा आ जाता है और आसवीय भाग कम होकर गुणरहित होजाता है। यदि बोतलों में भरना हो तो बोतलों को मुख तक न भरे, कुछ स्थान खाली रखना चाहिये। कारण मुख तक बोतल भर देने से अन्दर जोश पैदा होकर डाट को उड़ाकर आसव बाहर निकल जाता है अथवा बोतल के फूट जाने का भय है। सेवन करने योग्य बाहर निकाल कर पुनः बोतल के मुख को अच्छी तरह बन्द कर देना चाहिये, जिससे बाहरी वायु अन्दर न जासके।

आसवारिष्ट निर्माणकाल निर्णय—आसवारिष्ट बनाने का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

योग्य काल आश्विनमास से लेकर आषाढ़ तक अर्थात् शरद ऋतु से ग्रीष्म तक उत्तम माना गया है। इनमें से शरद, हेमंत और शिशिर में आसवारिष्ट निर्माण करते समय हमें आन्तरिक उत्ताप को यथास्थित कायम रखने के लिये विशेष प्रयत्न नहीं करना पड़ता। कारण बाह्य शैत्य के प्रभाव से पात्र स्थित द्रव्य का उत्ताप प्रायः यथायोग्य ही बना रहता है। किंतु कभी २ बाह्य अत्यधिक शैत्य के कारण पात्रस्थित द्रव्यों का उत्ताप यथायोग्य न रहकर, बहुत कुछ घट जाने से आसवोत्पादक किण्व नामक कीटाणु निष्क्रिय होते हैं, अतः आसवारिष्ट के उत्तम प्रकार से तैयार होने में अत्यधिक समय लग जाना संभव है। ऐसी स्थिति में पात्र को भूसे के अन्दर या धान्य राशि में दबाकर या ऊनी वस्त्र कम्बल आदि से ढाँक कर रखना पड़ता है, या पात्र के आसपास अँगीठियाँ जलानी पड़ती हैं। अथवा इसके लिये सरल युक्ति यह है कि अत्यधिक शीतकाल में आसवारिष्ट निर्माण करते समय पात्र में जो जल या क्वाथ का मिश्रण किया जाता है, उसकी उष्णता लगभग ५० या ६० डिग्री तक चढ़ाकर, मिलाने से बाह्य शैत्य के कारण आन्तरिक घोल का उत्ताप घटने से पूर्व ही उसमें खमीर क्रिया के प्रारंभ होजाने से स्वाभाविक ही आन्तरिक उत्ताप यथायोग्य कायम रहकर शीघ्र ही वह उत्तमतया तैयार होजावेगा। आगे कोई विशेष खटपट करने की आवश्यकता न रहेगी।

वसन्तऋतु में तो बड़ी सरलता से शीघ्र ही कार्य निष्पत्ति होजाती है। ग्रीष्म ऋतु में भी प्रायः विशेष झंझट नहीं उठानी पड़ती। हाँ, कभी २ बाह्य ऊष्मा की परिवृद्धि के कारण पात्र में उबाल आकर खराबी होना संभव है। एतदर्थ पात्र को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बार २ हिलाना, या पात्र पर शीतल जल का सिंचन करना, या पात्र के अन्दर वर्फ की पोटिलियाँ छोड़ना, या उसे ऐसे स्थान में रखना जहाँ बाहरी अत्यधिक गर्मी की पहुँच न होने पावे, इत्यादि साधारण प्रयत्न करना आवश्यक है।

वर्षाऋतु में बाह्य वातावरण इतना गंदला होजाता है कि जरासी भी असावधानी से आसवारिष्ट बिगड़ जाया करते हैं।

आसवारिष्ट में द्रव्यों का परिमाण—

आसवारिष्ट के प्रत्येक प्रयोग में द्रव्यों का परिमाण बतला-दिया गया है। यदि कोई नवीन प्रयोग बनाना हो तो या किसी प्राचीन प्रयोग में द्रव्यों का परिमाण स्पष्टतया निर्दिष्ट न किया हो तो—

अनुक्तमानारिष्टेषु द्रवद्रोणे तुलां गुडम्।
क्षौद्रं क्षिपेद् गुडादर्धं प्रक्षेपं दशमांशकम्॥

अर्थात्—जल १ द्रोण या १३ सेर, गुड़ या शर्करा १ तुला अर्थात् ४०० तोले या ५ सेर, शहद २०० तोले या २॥ सेर, तथा अन्य औषध द्रव्यों का कुल परिमाण ४० तोले होना चाहिये।

टिंक्चर--यह भी एक प्रकार का आसव ही है। इसे 'सुरा-मण्डासव' कह सकते हैं। अत्रिसंहिताकार इसे अरिष्ट कहते हैं यथा—

"आलोड्य सुरया सम्यग्द्रव्याणि विविधानिच।
सप्ताहान्ते परिस्राव्य रसं वस्त्रेण गालयेत्॥
एषोऽरिष्टोऽभिधानेन भिषग्भिः परिकीर्त्तितः।"

किंतु हमारे मत से इन्हें आसव ही कहना उचित होगा। कारण सर्वसम्मति से अरिष्ट वह कहा जाता है जिसमें पक्व

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

या क्वथितद्रव पदार्थ का मेल किया गया हो। टिंक्चर्स में तो आसव विधान के अनुसार अपक्व द्रव्यों का ही मोटा कल्क कर, पात्र में डाल, उसपर विशुद्ध मद्यसार (रेक्टिफाइडस्पिरिट) या संजीवनीसुरा आदि प्रमाणानुसार डालकर, पात्र का मुख बन्द कर दिया जाता है। फिर कम से कम ३ या ४ दिन में तथा अधिक से अधिक ७ या १५ दिनमें पात्र का मुख खोल कर (सन्धानावधि में पात्र को रोज़ १ या २ बार अच्छी तरह हिला दिया जाता है) ऊपर का निर्मलद्रव भाग निथार कर, तथा नीचे की गाद को टिंक्चरप्रेस में या पोटली में बांध खूब दबा कर, सब रसको निचोड़ते हुये निकाल लेते हैं। और आवश्यकतानुसार इसमें और भी मद्यसार मिला बोतलों में भर लिया जाता है। कर्पूरासव, अहिफेनासव आदि आसव टिंक्चर्स ही हैं। अन्य आसव और टिंक्चर में केवल अन्तर इतना ही है कि आसवारिष्ट में जल, द्रव्य सत्व और मद्यसार (१० से १५०।० तक) का मिश्रण रहता है, तथा टिंक्चर में जलका अभाव रहता है, उसके स्थान में मद्यसार ९० ०।० का मिश्रण रहता है। यह आसवारिष्टों की अपेक्षा शीघ्र परिणामकारी होते हैं, तथा इनकी सेवनीय मात्रा भी उनकी अपेक्षा बहुत कम होती है। इसी दृष्टि से हमने कई टिंक्चर्स के प्रयोग इस संग्रह में ग्रथित कर दिये हैं, जो कि बड़े ही मार्के के हैं। यह कोई नूतन आविष्कार नहीं, चरकसंहिता में, कई स्थानों पर इसका विधान पाया जाता है * । किन्तु महान खेद है कि हम लोग आयुर्वेदीय औषधि व्यवहार में इसकी योजना अत्यन्त

* देवदारुत्वचासुस्तनागरातिविषाभयाः। वारुण्यामासुतास्तोये कोष्णे वा लवणं पिबेत्॥ (च० चि० अ० १५)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संकुचित वृत्ति से करते हैं। यह हमारे अज्ञान एवं कूपमण्डूक वृत्तिका परिणाम है। यदि हमें आधुनिक पाश्चात्य चिकित्सा से पूर्णतया सामना लेना है तो हमको चाहिये कि शीघ्र ही आयुर्वेदीय प्रधान २ द्रव्यों का सुरामण्डासव बनाकर लाभ उठायें।

अन्य दृष्टव्य—(१) पात्र में आसवारिष्ट का सम्मिश्रण पात्र के मुख तक नहीं भरना चाहिये कम से कम चौथाई और ज्यादा से ज्यादा आधा भाग पात्र का खाली रखना चाहिये। मुँह तक भर देने से खमीर के उठने पर वह बाहर को निकलने की कोशिस करेगा, तथा उत्सेचन क्रिया ठीक २ नहीं होसकेगी।

(२) आसवारिष्ट को सुगन्धित बनाने की इच्छा हो तो उसमें सुगन्धित पदार्थों को तब मिलाना चाहिये जब कि आन्तरिक खमीर की क्रिया समाप्त होजाय, अर्थात् जब अन्दर से कार्बोनिक एसिड़ गैस का निकलना बिल्कुल बन्द होजाय। बोतलों में भरते समय उन्हें मिलावे, जिससे कि उनकी सुगन्ध द्रव में अच्छी तरह समाजावे।

कस्तूरी कर्पूर आदि रेक्टिफाइडस्प्रिट में हल करके मिलाना चाहिये। किंतु प्रयोगों में द्रव्यों के साथ कहे हुये केसर, जायफल आदि पदार्थ प्रारम्भ में ही अन्य द्रव्यों के साथ मिला देने चाहिये, क्योंकि वे सुगन्धित द्रव्य केवल सुगन्ध के

पाठां मधुरसां रास्नां सरलं देवदारुच। प्रक्षाल्य जर्जरीकृत्य सुरामण्डे निधापयेत्। इत्यादि (च० चि० अ० १७)

आसुत्य (जीमूतकं) च सुरामण्डे मृदित्वातं पिबेत्। कफजेऽरोचके कासे पाण्डु रोगेक्षयक्ष्मणि॥ (च० कल्प० अ० २)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिये नहीं किंतु उनके विशेष गुणों के लिये संमिलित किये जाते हैं।

(३) तयार हुये आसवारिष्टों को अधिक शुद्ध एवं स्वच्छ करने के लिये उन्हें ब्लाटिंग पेपर के द्वारा फिल्टर कर लिया जाता है। अथवा कतक (निर्मलीफल) को उनमें मिला देने से वे निर्मल-स्वच्छ होजाते हैं।

(४) सेवनीय मात्रा और काल—आसवारिष्ट की सेवनीय मात्रा रोगी की प्रकृति एवं बलाबल के अनुसार, साधारण युवा मनुष्यों के लिये पूर्ण मात्रा २ तोले से ४ तोले तक है। तथा टिंक्चर्स मृगमदासव, कर्पूरासव, अहिफेनासव आदि की मात्रा ५ बून्द से २५ बून्द तक है।

साधारणतया इनके सेवन का समय भोजन के पश्चात् ही है किंतु रोग और रोगी की परिस्थिति के अनुसार यथोचित समय में दिया जासकता है। सेवनीय मात्रा में समभाग जल मिला कर सेवन करने से इनका प्रभाव शीघ्र ही होता है। बिना जल मिलाये वैसे ही सेवन करने से कभी २ गले और छाती में दाह, बेचैनी आदि विकार उत्पन्न होजाते हैं। जिस रोगी को जुलाब की दवा दीगई हो, या जिसे भूख लगी हो, या जिस रोगी पर अन्य उष्णोपचार किये गये हों उसे आसवारिष्ट का सेवन कराना हितकर नहीं होता।

(५) सुवर्ण तथा लोहादि धातुओं को मिलाने की विधि।

लोहासव आदि कई आसवारिष्टों के प्रयोगों में लोहादि धातुओं को मिलाने का विधान है, जैसे सारस्वतारिष्ट, और भी वाजीकरणीय प्रयोग हैं, जिनमें सुवर्ण मिलाने को कहा गया है। ऐसी अवस्था में कई लोग लोहादि धातुओंके स्थान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में उनका अशुद्ध या शुद्ध किया हुआ बुरादा डाला करते हैं, वह आसवारिष्टों में कभी भी हल नहीं होता, वैसे ही पात्रों में पड़ा रह जाता है। (हम यह मानते हैं कि उसका कुछ अंश अवश्य ही विलीन होता होगा, किंतु उससे कुछ विशेष गुण वृद्धि नहीं होती) अतः इन धातुओं के स्थान में उनकी भस्म डालना श्रेष्ठ उपाय है। किंतु ये भस्म भी कभी २ अच्छी तरह नहीं मिल पातीं, अतः इनके अच्छे प्रकार हल होने के लिये उन को विलीन करने वाले द्रव्यों में (ये द्रव्य उस प्रयोग के अंग ही होवें) ठीक २ विलीन कर मिलाना चाहिये। उदाहरणार्थ लोहासव में लोहभस्म को यदि जल मिश्रित त्रिफला चूर्ण में ६ दिन तक पड़ा रहने दें तो वह पूर्णतया विलीन होजाता है, फिर इस विलीन हुये लोहभस्मयुक्त त्रिफलाजल को अन्य द्रव्यों के साथ पात्र के घोल में मिला संधान कर दिया जावे तो परमोत्तम गुणयुक्त लोहासव निर्माण होता है।

सारस्वतारिष्ट जैसे प्रयोगों में जहाँ स्वर्ण पत्र डालने का विधान हो वहाँ स्वर्ण भस्म (क्षार रहित) डालना चाहिये, अथवा शुद्ध स्वर्ण के वर्कों को अन्य द्रव्यों के साथ घोटकर मिलाना ठीक होता है। जो सुवर्ण-लवण (Gololdchlride) मिलाने के लिये कहते हैं, वह हमारी समझ एवं अनुभव के विरुद्ध है। सुवर्ण लवण में क्षार एवं तेजाब आदि का अंश रहने से वह आसवारिष्टों को केवल बिगाड़ता ही नहीं प्रत्युत् उन्हें हीनवीर्य भी कर देता है।

(६) हम आसवारिष्ट के प्रत्येक प्रयोगका वीर्यांश(Vitamin) वैज्ञानिक विधि से पूर्णतया जाँच कर लिखना चाहते थे किंतु इसमें अधिक समय व्यय होता देखकर नहीं लिख सके।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तथापि इस कार्य को हमारे मित्रवर्य विश्वनाथजी शास्त्री प्रिंसिपल (ललितहरि आयुर्वेदिक कालेज पीलीभीत) ने बहुत कुछ किया है। उनका कृपा करके भेजा हुआ प्रास्ताविक लेख आगे दिया जाता है। इस कष्ट के लिये हम उनको हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

(७) आसवों का परिस्रुत करना—आसव को भबके या नलिकायंत्र द्वारा खींच लेने या चुवा लेने पर वह बिल्कुल विशुद्ध एवं अविकृत होजाता है, उसके बिगड़ने की कदापि संभावना नहीं रहती। हम इस बात को मानते हैं कि परिस्रुत आसव में शारीरोत्साह संचारक शक्ति (जिसका भ्रमपूर्ण अर्थ मद्यसार किया जाता है) की मात्रा प्रचुरता से होती है। किंतु जो कहते हैं कि इसमें आसव के मुख्य द्रव्यों का गुण नहीं आता अतः वह निकम्मा एवं बेकार होता है, वे भ्रम में हैं। जिस तरह चतुर्जात, उशीर, चन्दनादि सुगन्धित द्रव्यों के उड़नशील सत्व(Volatile principes) मद्यसार के साथ (शारीरोत्साह वर्धक शक्ति के साथ) उड़कर उसमें (परिस्रुत आसव में) आते हैं, वैसे ही उन उड़नशील सत्वों के साथ ही में अन्यान्य पार्थिव द्रव्यों के सत्वांश भी उड़कर चले आते हैं, जैसे हवा के साथ धूल। इसीसे परिस्रुत या चुवाये हुये आसव विशेष या अत्यधिक स्रोतः शोधक, आशु क्रियाकारी एवं शीघ्र-पाकी होते हैं, तथा इसकी सेवनीय मात्रा भी कम होती है अतः रोगी को कोई कष्ट नहीं होता।

सरकार आबकारी एक्ट या कानूनधारा के अनुसार हमारी इस क्रिया में बाधा पहुंचाना चाहती है। किंतु हमें सरकार को अच्छी तरह समझा देना होगा कि आयुर्वेदीय आसवारिष्ट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कदापि इस एक्ट के अन्तर्गत् नहीं आ सकते। उन्हें पानीय मद्य या शराब की समता में रखना या सरकार को रखने देना हमारी मूढ़ता एवं कायरता का परिचायक होगा। शास्त्र वर्णित एवं इस पुस्तक में ग्रथित सब आसवारिष्ट औषधस्वरूप हैं, एवं भिन्न २ रोगों के प्रतिकारार्थ और नाशार्थ हैं न कि मद्यवत् पानार्थ—उनका प्रयोग किया या कराया जाता है। प्रसंग विशेष पर उनके परिभुक्त करने की विधि भी हमारी प्राचीन शास्त्रानुमोदित ही है। अतः उस पर कायदे की लगाम कसना माना हमारे परंपराप्राप्त अति विशुद्ध आयुर्वेदीय तत्वों को नष्ट कर डालना है। क्या दयालु सरकार का यही मन्तव्य है ? नहीं २ यह हमारी ही भूल है कि जो सरकार को ऐसा करने के लिये बाध्य करते हैं। हमारी फूट एवम् संगदिली का ही यह परिणाम है। हमें चाहिये कि एक स्वर से सरकार को बतला दें कि हमारे आसवारिष्ट शांतिभंग करने वाली शराब की कोटि के नहीं, प्रत्युत् प्रजा की सुख शांति एवं आरोग्यता प्रदान करने वाली एक औषधि विशेष हैं। जिस पर रोक लगाने से राजा और प्रजा दोनों का अकल्याण होना संभव है।

(८) आसवारिष्ट की अनुभूत चिकित्साप्रणाली ।

आसवारिष्ट के प्रयोगों के साथ उनके भिन्न २ रोगनाशक गुणों का वर्णन किया गया है। तथा हमने पाठकों की सुविधा के लिये रोगानुसार आसवारिष्टों की योजना की सूची (तालिका) भी नम्बरवार अलग लगा दी है। अब यहाँ पर संक्षेप में हम रोगानुसार उन आसवारिष्टों की चिकित्साप्रणाली को प्रकाशित किये देते हैं, जिसका हमें तथा हमारे मित्रों को खास अनुभव हुआ है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१) ज्वर पर—चढ़े हुये ज्वर को उतारने के लिये लोहासव १ तो०, सौंफ का अर्क १ तो०, शुद्ध नवसादर १ रत्ती तथा जल २॥ तोले का मिश्रण कर पिलाने से ज्वर तत्काल कम होजाता है।

(अ) वातज्वर की तीव्रता पर दशमूलारिष्ट १। तोला और जल २॥ तो० का मिश्रण एक २ घंटे से थोड़ा २ पिलावे, ज्वर का वेग शीघ्र ही रुक कर तृष्णा की शांति होती है।

(आ) प्लीहा एवं यकृत वृद्धि युक्त ज्वर पर—लोहासव २॥ तोले में दो माशे सुदर्शनचूर्ण को ३॥ तोले जल में खूब घोट कर मिलावे। इस मिश्रण की ३ मात्रायें दिन में ३ बार पिलाने से ७ दिन के अन्दर ही प्लीहा और यकृत की वृद्धि नष्ट होजाती है, दस्त भी रोज खुलकर होता है।

(२) कृमि विकार पर—मल के साथ बारीक सूत जैसे श्वेत कृमियों का बहुतायत से निकलना तथा साथ ही में स्वप्नदोष के होने पर विडङ्गारिष्ट १ तोला में कृमिमुद्गर रस १ रत्ती मिला सेवन करावे। प्रातः सायं। शीघ्र ही लाभ होता है।

(३) पाण्डुरोग या रक्ताल्पता पर—चित्रकाद्यरिष्ट का सेवन भोजनोपरांत लाभदायक है।

(अ) यदि साथ ही में प्रदरादि उपद्रव हों, रज की अत्यधिक प्रवृत्ति हो, प्रमेह या बहुमूत्रता हो तो अशोकारिष्ट ३ माशे में मीठे अनार का रस १ तोला मिला सेवन करावे, भोजनोपरांत। अथवा धात्र्यारिष्ट या मध्वासव का अनार के रस के साथ, उक्त प्रकार से सेवन करावे।

(आ) यदि साथ ही में हृदय का विकार, अथवा यक्ष्मा का कुछ अंश हो तो पिप्पल्यासव और द्राक्षासव यथोचित

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा में समभाग एकत्र मिला तथा सबके समभाग अनार का रस मिला दोनों शाम भोजनोपरान्त सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है।

(इ) यदि साथ ही में शोथ और मलावरोध हो तो पुनर्नवासव की यथोचित मात्रा में हंसमरडूर की मात्रा मिला कर देनी चाहिये।

(ई) यदि साथ में अन्त्रविकार, उदरक्षत, या आमरक्तमय अतिसार हो तो कुटजासव १ तो०, मृद्वीकासव १ तो०, विजयपर्पटी १ रत्ती, शहद १ तो० और घृत २ तोले एकत्र मिश्रण कर, इसकी २ मात्रायें करे। प्रातः सायं सेवन करावें। ७ दिन में पूर्ण लाभ होता है।

(उ) यदि साथ में मूत्र ग्रन्थि प्रदाह, कष्टार्तव और हृद्रोग हो तो उशीरासव की उचित मात्रा, दोनों शाम भोजनोपरांत सेवन करावे।

(ऊ) यदि रक्तस्राव हो तो लोध्रासव या अशोकारिष्ट का सेवन करावे।

(४) रक्तविकृति—कभी २ रक्तविकृति के कारण, वातव्याधि जैसे कटिशूल पार्श्वशूल आदि विकार शरीर में होते हैं जो सैकड़ों वात नाशक उपचारों से शमन नहीं होते। ऐसी अवस्था में सारिवाद्यरिष्ट और अश्वगन्धारिष्ट का मिश्रण समभाग जल मिला, दोनों शाम भोजनोपरान्त सेवन कराने से शीघ्र ही लाभ होता है।

(अ) रक्तविकृति के साथ ही साथ यदि रोगी को श्वास (दमा) का भी आजार हो तो प्रातः सायं खदिरारिष्ट का सेवन कराना हितकर है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(आ) रक्तस्राव-रक्तार्श या अत्यार्तव से पीड़ित स्त्री को अत्यधिक रक्तस्राव होता हो तो द्राक्षासव को वनपशा पञ्चाङ्ग के क्वाथ के साथ सेवन कराने से शीघ्र ही लाभ होता है।

(इ) छाजन (एग्जिमा) पर खदिरारिष्ट के साथ शुद्ध गन्धक का सेवन करावे।

(ई) यकृत विकार—कुमारीआसव की यथोचित मात्रा के साथ नवायसलोह की मात्रा १ से ३ रत्ती तक सेवन करावे।

(अ) यकृत विकार के साथ यदि शोथ या जलोदरादि उदर विकारहों तो लोहासव २०तोले, अपामार्गक्षार१तो० और मूली क्षार १ तो० इन तीनों के मिश्रण में गिलोय १२तो० करंजपत्र १ तो०,चिरायता १ तो०, चूना १॥ तो० और नवसादर २ तो० का क्वाथ २॥ सेर जल में पका, ४० तोले शेष रहने पर, छानकर ठंडा कर मिलावें, और बोतल में भर रक्खे। मात्रा १ से २ तोले तक, प्रातः सायं पिलावें, तथा पथ्य में दूध, फल, मूली, मकोय देवे, अन्न बन्द रखे। बहुत जल्दी फायदा होता है।

(६) वीर्यविकार पर—अंगूरासव,अश्वहरारिष्ट, खर्जूरासव, गाजरासव, चन्द्रहासासव आदि कई आसवारिष्ट परमोत्तम हैं। यदि बालक अवस्था में अतिमैथुनादि से धातुक्षीणता, कमर पीठ में पीड़ा, शिश्नशैथिल्य, शिश्न के अग्रभाग पर फुन्सियाँ, मलावरोध एवं मन्दाग्नि हो तो—सारिवाद्यासव के साथ चन्द्रप्रभावटी का सेवन दोनों शाम कराना परम हितकर है।

अथवा—केवल सारिवाद्यरिष्ट का सेवन प्रातः सायं एक मास तक करे,फिर खदिरारिष्ट का सेवन १ मास तक करावे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(अ) स्वप्नदोषपर—चन्दनासव २॥ तोले में शुद्ध देशी कपूर आधी रत्ती, कबाबचीनी १ माशा और शुद्ध काला सुर्मा १ रत्ती इनका मिश्रण कर, दो मात्रा बना, प्रातःसायं सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है। वीर्य पुष्ट होता है।

(आ) शुक्रमेह, धातुदुर्बलता, मंदाग्नि पर—अश्वगन्धारिष्ट ५ तोले को, गौदुग्ध गर्म १० तोले में मिला, हिलावे। दूध के फटजाने पर, उसमें मिश्री मिला पिलावे। दोनों शाम। ३०दिन के अन्दर पूर्ण लाभ होता है।

(७) मधुमेहपर—द्राक्षासव की उचित मात्रा में केशर को पीस कर सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है, इससे अश्मरी और मूत्रकृच्छ्र भी दूर होता है।

(८) सूजाक (उष्णवात) पर—चन्दनासव के साथ चन्द्रप्रभा गुग्गुल का सेवन परम हितकारी है।

अथवा—चन्दनासव १ तो० में कलमीसोरा ४ रत्ती मिला पिलावे, मूत्र खुलकर दाह, चीस, चबक की तत्काल शांति होती है। फिर केवल चन्दनासव का सेवन रोज़ ४ बार करावे। रोग की प्रथम तथा द्वितीयावस्था में विशेष लाभप्रद है।

(९) यक्ष्माकीटाणुनाशार्थ—विडंगासव १ तो०, नीलगिरी तैल २० बूंद तथा रेक्टिफाइडस्प्रिट २॥ तोले एकत्र मिला ३ माशे की मात्रा से (समभाग जल मिला) दिन में ३ बार पिलावे। तथा इसकी ही नस्य देवे।

(अ) यक्ष्मा का रात्रिप्रस्वेद—क्षय की बीमारी में रोगी को रात्रि में पसीना बहुत आया करता है, इसके निवारणार्थ—द्राक्षारिष्ट का सेवन संध्या के समय नित्य नियम पूर्वक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कराने से लाभ होता है। अथवा-चन्दनारिष्ट के सेवन से भी उत्तम लाभ होता है।

(१०) प्रतिश्यायपर-द्राक्षासव और कनकासव का मिश्रण उत्तम लाभकारी है।

(११) सूर्यावर्त्त (आधासीसी)—नामक सिर पीड़ा पर कर्पूरासव की १ मात्रा पिलाकर ४। ५ बून्दें कान में छोड़ देवे और कुछ थोड़ा सिर पर मल देवे। कान में डालते ही सिर का दर्द कुछ बढ़कर फिर शीघ्र ही घट जाता है, और सुख पूर्वक नींद आजाती है।

(१२) वृक्कशूल पर—लोहासव २॥ तोले, नवसादर १ माशा, कल्मीशोरा १ माशा और जल १। तोला का मिश्रण ३-३ घंटे के बाद पिलावे। पेशाब खुलकर दर्द शांत होजाता है। यदि रोगी को कब्जी की शिकायत हो तो पहले रेंडीका तेल ५ तोले, गर्म जल ४० तोले में मिला बस्ती देनी चाहिये।

(१३) उदरशूल पर—लोहासव में थोड़ा शंखद्राव मिला और जल मिला कर दिन में ३ बार पिलावे।

(१४) वातरोगों पर—अश्वगंधारिष्ट २ तोले और द्राक्षारिष्ट दो तोले एकत्र मिला सेवन करावे। प्रातः सायं।

(१५) शिरोबाधा पर—जब कंप और मूर्च्छा हो लोहासव एक एक या दो दो तोले की मात्रा में (जल मिला) १-१ घंटे के बाद पिलावे।

(१६) स्त्री रोगों पर--

(अ) योषापस्मार—हिस्टीरिया हो तो लोहासव और कुमारी आसव समभाग मिश्रण, जल मिला दिन में ३ बार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देवे । अथवा—दशमूलारिष्ट १। तो० और लोहभस्म दो रत्ती का मिश्रण (जल मिला) दिन में ३ बार देवे (यह १ मात्रा है) अपूर्व लाभ होता है।

(आ) स्त्री का मासिकधर्म अनियमित या साफ न होता हो, विशेष वेदनायुक्त हो तो-मासिकधर्म होने के पूर्व उत्तम द्राक्षारिष्ट आधा तोला या १ तोला में समभाग जल और हुरमल (इस्बन्द) का महीन चूर्ण १ माशा मिला सेवन करावे । (यह १ मात्रा है) प्रातः सायं ७ दिन तक।

(इ) आर्तवजन्य गुल्म पर—दशमूलारिष्ट ६ माशे, जंवीरद्राव ६ माशे, गुल्मकालानलरस १ रत्ती और शंखभस्म ३ रत्ती इन चारों का मिश्रण (यह १ मात्रा है) नित्य सायंकाल के समय पिलावे।

(ई) प्रसूत विकारों पर—प्रसूतो के साधारणतः सर्व विकारों पर- कस्तूरी युक्त दशमूलारिष्ट, अथवा अश्वगंधारिष्ट और दशमूलारिष्ट का मिश्रण समभाग जल मिला प्रातः सायं (भोजनोपरांत) सेवन करावें । ७ दिन में लाभ होता है।

(उ) बाल्यावस्था में मैथुन एवं गर्भधारण से, गर्भाशय की विकृति, शूल, सर्वशरीर में पीड़ा, अर्श, आध्मान, यकृत प्लीहा की वृद्धि, शक्तिपात, मासिकधर्म के समय कमर, पेट, पेडू में शूल, आदि हों तो- लोहासव आधातोला, कुमार्यासव १ तोला और जल १॥ तोला का मिश्रण भोजन के बाद दोनों शाम सेवन करावे ।

(ऊ) गर्भपात के उपद्रव—उदर, पार्श्व में शूल, अपचन, अतिसार, योनि से श्वेत स्राव, भ्रम, हाथ पैर में जलन आदि हों तो दशमूलासव और कुमार्यासव १-१ तोला समभाग जल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिला, प्रातः सायं (भोजन के बाद) १ मास तक सेवन करावे। पश्चात् अश्वगंधारिष्ट का सेवन करावे।

(ए) गर्भवती के शरीर पर गर्मी के विकार हों तो खदिरारिष्ट का सेवन भोजनोपरांत करावे।

(ऐ) योनिरोग–रक्तविकृति से योनि में फुन्सियाँ हों तो खदिरारिष्ट २ तो० में मंजिष्ठादि अर्क ५ तोले मिला, दिन में दो बार पिलावे। ७ दिन तक।

(१७) बालरोगों पर–

(अ) सूखा रोग पर–द्राक्षासव ३० बून्द, कुटजारिष्ट १५ बूंद, अहिफेनासव १ बूंद और अर्क दशमूल १ तोला मिश्रण का सेवन दो वार दोपहर और रात्रि में करावे। २ मास तक।

(आ) पेट में गुड़गुड़ाहट तथा नाभि के बाहर निकलने से पीड़ा हो तो कर्पूरासव प्रथम दिन ३ बार एक २ बूंद की मात्रा से माता के दूध के साथ पिलावे। दूसरे दिन दो २ बूंदें पिलावे। ३ या ४ दिन इसीप्रकार पिलाने से पूर्ण लाभ होता है।

(इ) खाँसी और कृशता के निवारणार्थ अरविन्दासव का सेवन कराना हितप्रद है।

(१८) नकसीर–गर्मी के कारण नाक से खून गिरताहो, पेशाब लाल पीला होता हो तो उशीरासव में चन्दनादि आसव या चन्दनादि चूर्ण मिला सेवन कराने से तुरन्त लाभ होता है।

और भी कई योग हैं, जो कि विस्तारभय से यहाँ नहीं लिखे जा सकते। यदि पाठकों को यह चिकित्साप्रणाली ठीक जँची तो हम आगे के संस्करण में इसे विस्तार पूर्वक लिखेंगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह 'रत्नमाला' परमोदार 'वैद्य' सम्पादक श्रीयुत विष्णु-कान्तजी जैन वैद्य की प्रेरणा से ग्रथित कीगई है, अतः उन्हें ही यह समर्पित भी है, क्या उन्हें मैं धन्यवाद भी दे सकता हूँ ?

जिन २ प्रेमी वैद्योंने मुझे इस कार्य में, अपने अमूल्य प्रयोगों को भेजकर कृतार्थ किया है, उन्हें हार्दिक धन्यवाद देते हुये, उनसे विनम्र निवेदन है कि ऐसी ही कृपा की ओर हमेशा के लिये बनाये रक्खें। भूपाल निवासी मित्रवर बालकृष्णजी वैद्य-राज, शकरगढ़ के वैद्यशास्त्री पं० देवदत्तजी शर्म्मा, पिंसपिल श्रीयुत विश्वनाथजी द्विवेदी वैद्यशास्त्री, कविराज गौरीशङ्करजी आनन्द, वैद्यभूषण पं०मक्खनलालजी शर्म्मा, स्वामी चैनदासजी आदि महानुभावों का तो मैं चिरकृतज्ञ हूँ। कारण आप सहृदयों की सहायता से ही मैं एक अज्ञ इस कार्य को किसी प्रकार पूर्ण कर सका हूँ। आशा है आप अपनी दयालुता का परिचय इसी प्रकार सदैव देते रहेंगे।

अन्त में इस पुस्तक को लिखकर भेजने में मेरी ओर से जो अत्यधिक विलंब हुआ, एतदर्थ प्रकाशकों की क्षमा याचना करते हुये तथा उनकी आयुर्वेद के उत्थान कार्य में लगी हुई लगन की सराहना करते हुये मैं इस बढ़ी हुई प्रस्तावना को समाप्त करता हूँ। और विज्ञ पाठकों से प्रार्थी हूँ कि इस पुस्तक में जो कुछ त्रुटियाँ मेरे प्रमादवश रह गई हों उनकी क्षमापूर्वक सूचना देने की कृपा करेंगे। कारण सज्जनों का यही कार्य है—

गच्छतः पतने भूमौ प्रमादान्नाहि विस्मयः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्रोत्तोलयन्ति तु सज्जनाः॥

* इति सर्वे सन्तु निरामयाः *

आयुर्वेदसूरिः कृष्णप्रसाद त्रिवेदी बी० ए०,
आयुर्वेदाचार्य, चांदा सी० पी०।

—*—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वैद्य

(वैद्यक-विद्या का सब से पहला पत्र)

हमारे यहाँ से यह २१ वर्षों से प्रकाशित हो रहा है। यह अपने विषय का सब से श्रेष्ठ और सबसे सस्ता—

मासिक-पत्र

(सम्पादक—श्री बाबू विष्णुकांतजी जैन वैद्य)

है। प्रतिमास प्रत्येक घर में उपस्थित होकर एक सच्चे वैद्य या डाक्टर का काम करता है। इसमें स्वास्थ्य-सम्बन्धी सभी बातोंपर सरल भाषामें विवेचन किया जाता है। वार्षिक मू० केवल २) रुपये। नमूना मंगाकर देखिये।

पता—वैद्य-ओफिस, मुरादाबाद।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्रीः

आसवारिष्ट और उनकी शक्ति

भारतवर्ष की चिकित्साप्रणाली विज्ञानपूर्ण क्रियात्मक अन्वेषणों के परिणाम स्वरूप निश्चित व अटल है। इसको न समझ सकने के कारण आज कुछ पाश्चात्य चिकित्सक इसकी तरफ उङ्गली उठाने की कोशिश करते हैं। किन्तु वे भूल पर हैं। उन्हे आवश्यकता है कि आयुर्वेदिक चिकित्सा-पद्धति का वे निष्पक्ष दृष्टि से अनुशीलन करें।

आयुर्वेद की चिकित्साप्रणाली में जितनी औषधियाँ (वनस्पतियाँ) प्रयुक्त होती हैं उनमें अधिकतर पञ्चांग का भाग होता है इसका अभिप्राय यह है कि किसी औषधि का एकांश उसमें उत्तम गुण नहीं लासकता। आसवारिष्टों के निर्माण का प्रधान प्रयोजन भी यही है। इसकी पुष्टि में हम केवल अपनी ही बातें न रख करके डा० ए० आर० कुशनी का मत उल्लेख करते हैं जो मिशिगन व लण्डन की अन्य यूनिवर्सिटियों तथा एडिन वरा की युनिवर्सिटी में भी द्रव्यगुण के प्रोफेसर रहचुके हैं, वह स्व-रचित फार्माकोलोजी (Pharmacology) नामक पुस्तक के पृष्ठ ९६ पर स्पष्ट लिखते हैं।

"None of the pure princeples are as satisfactory in their actions as the crude drugs"

अर्थात् वनस्पति का कोई भी मुख्य अंश अपने प्रभाव में इतना संतोषदायक नहीं, जितनी कि वह सारी की सारी बूंटी। अतएव आचार्यों ने इनका उल्लेख खूब जान बूझकर के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किया है। इसके अतिरिक्त आसवों में वनस्पतियों या औषधियों के भीतर रहने वाले वे पदार्थ जिनको 'जीवनीय'(Vitamins) कहते हैं नष्ट होजाते हैं,जब कि वे कथित होती हैं। अतःआसवों का विधान अपक्व औषधि संधान से ही होता है। इनमें आसुत होने समय जो उष्णता उत्पन्न होती है। 100°f. से (क्वथनांक) जिस पर पानी उबलने लगता है,बहुत कम होता है। विटामिन क्वथनांक पर कई नष्ट होजाते हैं किन्तु इस प्रक्रिया द्वारा वे ज्यों के त्यों व एक विशिष्ट पदार्थ के साथ संयुक्त होते हैं जिनको सुरासार (Alcohal or Sprits) कहते हैं। आसव सज्ञा भी आसुत होने पर ही होती है। यथा--

'आसवा नामासुतत्वादासवसंज्ञा' "चरक"

अर्थात्–कुछ निश्चित द्रव्यों को लेकर एक स्थान में रखकर जो संधान किया जाता है। उसी को आसव या अरिष्ट कहते हैं।

अरिष्ट में भी क्वाथ बनाने के बाद प्रक्षेप द्रव्यों का उपयोग करते हैं, जिससे द्रव्यांश जो नष्ट होगये हैं पुनः ज्यों के त्यों व वल्य होजावें। जिसको लोक में आसव या मद्य कहकर पुकारते हैं, जिसको पीकर मनुष्य पागल होजाते हैं हमारा उससे अभिप्राय न होकर आयुर्वेदिक प्रणाली से आसुत आसव-अरिष्टों से है। इनमें मद्यांश (Alcohal) बहुत कम होता है।२५,प्रतिशत से अधिक अलकोहल अरिष्टोंमें व आसवों में कभी भी नहीं पाये जाते। किसी ही आसवारिष्ट में (कुटजारिष्ट, द्राक्षासव, कूष्माण्डासव इत्यादि) इनकी अधिक प्राप्ति होती है।

इससे आसवादिक पदार्थ स्वच्छ, निर्मल,तरल,सुगंधित व गुण युक्त होजाते हैं। कभी सड़ने नहीं पाते। यह संभव है कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आसवारिष्ट यदि बिना छाने हुये ही रक्खेजाँय,या संधानावधि का अतिक्रमण होजाय,या शुक्तादि के बोतल बिना कार्क के साथ ही साथ रखे हों या पुराने शुक्तादि के संधानित पात्र में रह कर आसवारिष्ट उनके परमाणु सम्मेलन से शुक्त होजावें,तथापि छानकर निष्कीट करके उन्हें बोतलों में भरने पर शुक्तादि के रूप में परिणत नहीं होते।

यह गुण इन उत्पन्न रासायनिक पदार्थों (Alcohal) के ही हैं। विकाशीपन भी आसवारिष्टों में रासायनिक क्रियाओं से जो आसूत होने पर होता है, प्रधानतया दृष्टि-गोचर होता है। इनका पचन शीघ्र होता है और वे पाचक संस्थान के पाचक रसों के कार्यों में विशेष प्रकार की शक्ति भी देते हैं, जिनसे यह शीघ्र प्रभावकर होजाते हैं।

पाश्चात्य तरीकों से जो आसव बनते हैं वे बहुत पतले व अल्पवीर्य होते हैं। अतः पाश्चात्य चिकित्सक उनका उपयोग न करके उन पदार्थों के सत्वों के घोल मिश्रण (Mixture) से करते हैं। ये सत्व भी अधिकतर अलकोहल के द्वारा (Thvough alcohal) बनते हैं, अतः उतने उपयुक्त नहीं होते। पाचक संस्थान के अन्दर यकृत का जो प्रधान कार्य पित्त पैदा करके वसादिकों का पाचन करना है, उसमें क्षोभ उत्पन्न करता है। अतः हानिकर सिद्ध होता है। आयुर्वेदिक प्रणाली से निर्मित आसवादि इससे निर्मुक्त व इसके विपरीत उत्तेजक होते हैं। वे हृद्य और शक्तिप्रद होते हैं। आजकल जितने भी मिश्रण या आसव जो पाश्चात्य चिकित्सक बतते हैं वे आयुर्वेद के इस भग्नावशेषकाल में भी इसके आसवारिष्टों से कहीं श्रेष्ठ होते हैं और इसीलिये उनकी खपत भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अधिक है, जो इसकी उपयोगिता को सिद्ध करती है। उदाहरण के लिए द्राक्षासव ले लो, इसमें जो जीवक (Vitamins) वस्तुएँ है उनकी संख्या तीन है।

ए० वी० डी० (A. B. D. Vitamins) साथ ही C. E. की भी मात्रा है किन्तु वह उल्लेखनीय नहीं है।

इन तीनों का कार्य–

A. क्लास की जीवक वस्तुएँ–१–शरीर की वृद्धि करना, विशेषकर बच्चों के शरीर की वृद्धि करना।

२—शरीर की रक्षा करना, क्षय पूर्ति करना।

३—सहनशीलता देना।

४—फेफड़ों को ताकत देना।

इसके अभाव से बालकों व प्रौढ़ोंको श्वास रोग होसकता है।

B. विटामिन से नाड़ी संस्थान का पोषण, नसों में ताकत, हृद्य और वल्य है। इसके अभाव में पैर कांपना, हृदय कमजोर होना व शरीर में मृदुता इत्यादि होना।

C. से पेशियों में दृढ़ता, विषो (शारीरिक) का विनिमय होना, अभाव में मांसपेशियों की कमज़ोरी, मसूड़ों व नाक से खून जाना इत्यादि रोग होते हैं।

D. से हड्डियों की दृढ़ता, दांतों का मजबूत होना अभाव में हड्डियों का पुष्ट न होना।

E. से जननेन्द्रिय शक्तियों का विकाश इत्यादि।

हरएक प्रकारके विटामिन १००डिग्रीके शतांश ताप तक नष्ट नहीं होते। 'बी' तो १२० शतांश ताप पर भीनष्ट नहीं होता। आसवारिष्टों में इतने डिगरी का ताप होता ही नहीं, अधिक से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अधिक ७५ या ८५ तक शतांश ताप होता है, अतः कोई भी जीवक पदार्थ नष्ट नहीं होते।

यही कारण है कि द्राक्षासव, अंगूरासव इत्यादि के सेवन से शरीर में भार की वृद्धि, रक्तवृद्धि, शक्तिवृद्धि, अस्थि-दार्ढ्य, हृदय व फुफ्फुसों में बल और पाचक संस्थान को शक्ति मिलती है। प्रत्येक मनुष्य जो इसका सेवन करता है, इसके गुणों पर मुग्ध होजाता है और स्वास्थ्य लाभ करता है। यहाँ पर प्रद्रि आसव व अरिष्टों के कुछ प्रधान नुसखों के विषय में वर्त्तमान कालीन अनुसंधान को, जिसको ललितहरि आयुर्वेदिक कालिज के अन्वेषण विभाग ने पता लगाया है उसे सबके सामने स्पष्ट निवेदित कर देना उचित समझते हैं। क्योंकि आजकल के कुछ पाश्चात्य शिक्षा के आलवाल में पले हुये शिक्षित बहुत सी औषधियों के विज्ञापन में सर्व प्रथम विटामिन्स के ऊपर ही दृष्टि निक्षेप करके उसकी उपयोगिता को परखना चाहते हैं। उनके लिए यह तालिका बहुत उपयुक्त होगी साथ ही हमारे बहुत से वैद्य-बन्धु जो इन विषयों में घोर अंधकार में हैं, वे भी परिचित होंगे।

नाम आसव	विटामिन्स जो उपस्थित रहते हैं	गुण—
द्राक्षासव	A. B. D.(C.E.)	शरीर वृद्धि, नसोंको ताकत मिलना, हड्डियों का मजबूत होना, मांसपेशियों की दृढ़ता, रक्त व शुक्र वृद्धि, हृदय व फुफ्फुस को ताकत देने वाले उत्तेजक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अंगूरासव	A. B. C. D. (डी अधिक)	वही गुण जो द्राक्षासव के हैं विशेषकर वल्य व रक्तवर्द्धक।
उशीरासव	B.(अधिक)A.C D. साधारण	मस्तिष्क की शक्ति बढ़ाना, नसोंको ताकत देना, स्मृति-वर्द्धक.उन्माद,अपस्मार,मूर्च्छा इत्यादि में उपयुक्त शरीर की मांसपेशियों को सुन्दर बनाना।
कुमार्यासव	A. B. C. D. E. चिन्हित अधिक	पोषण संस्थान को बलदायक अतः गुल्म, अग्निमांद्य इत्यादि उदर रोग हर, रक्तवर्द्धक, वेदनाहर, हृद्य, नींद लाने वाली, पेशी दार्ढ्यकर।
अमृतारिष्ट	A.B. C.	वेदनाहर, तापहर, विषहर अतः ज्वर, ताप, अग्निमांद्य को हरने वाला।
दशमूलारिष्ट	A. B. C.	वेदना हर, ताप वर्द्धक,उत्तेजक, हृदय, फुफ्फुस, व पोषण-संस्थान का शक्तिदायक, नाड़ी उत्तेजक इत्यादि।

इस तरह कई आसवारिष्टों पर अन्वेषण होचुका है, जिनके विषय में स्थानाभाव से यहाँ नहीं लिखा जासका है।

हमारे आसवारिष्टों की शक्ति विशेष उपयुक्त होती है। वैद्यबन्धु भी सरलता से वर्तते हैं। इनमें मद्यांश विशेष न होने से यह न तो किसी आबकारी कानून के अन्दर ही आते हैं और न कोई विशेष उपद्रव ही पैदा करते हैं। अतः आजकल सर्वसाधारण भी इनका उपयोग आसानी से करने लगे हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इनकी मात्रा-एक तोले से २॥ तोले तक की है सात्म्यावस्थानें ५ तो० । अधिक उपयोग से बहुत से उपद्रव होते हैं । जैसे-श्वास फूलना, जी-घबराना, दाह व मूर्छा तथा बेहोशी ।

इनके गुण—प्रधानतया हरएक आसवारिष्ट विकाशी, अग्निवर्द्धक, सुपाच्य व उत्तेजक होते हैं अतः शीघ्र अपना प्रभाव दिखलाते हैं ।

परीक्षा—साधारणतया हरएक आसव व अरिष्टों में संधानावधि तक उपयुक्त स्थान में रखने से रस, गंध, स्वाद का विकाश हो ही जाता है किन्तु विशेष विचार्य वस्तु यह है कि प्रारंभ के ७ दिनों तक उसके अन्दर की वस्तुओं में कुछ विशेष क्रिया नहीं होती । सप्ताहांत में भिन्न भिन्न वनस्पतियों के विशिष्ट अंश बहिर्गत होते हैं । जो संधित स्थान (भूसा, इत्यादि) या पृथ्वी की उष्णतापर निर्भर है । जब स्थान का तापमान ७५ से ८५ । शतांशमीटर से कम होता है तो रासायनिक क्रिया प्रारंभ हो जाती है, और विपचन (मृदु) प्रारंभ होता है । दूसरे व तीसरे सप्ताह में इसमें उष्णता के कारण एक वायव्य पदार्थ उठने प्रारंभ होजाते हैं । इस समय पात्र पर कान लगाकर सुना जावे तो सनसनाहट सुनाई देने लगती है । इससमय इसका तापमान ७५–८५ शतांश तक होजाता है । यह तापमान भीतर के द्रवपदार्थ का होता है । इस सप्ताह के अन्तमें इसमें यदि जलती हुई वत्ती का प्रवेश करें तो वह बुझ जायगी । चतुर्थ सप्ताह में यह क्रिया नष्ट होजाती है अब एक नया वायव्य और उत्पन्न होता है । इससमय यदि दीपक जलता प्रविष्ट किया जावे तो प्रकाश अधिक होगा । इस समय यह समझना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चाहिए कि अब इसके अंदर की प्रक्रिया ठीक हो रही है। आसव तयार होने जारहा है।

यह क्रिया जलाधिक्य होने से देर में होती है और कभी कभी नहीं भी होती। अतः आसव मधुर या उसमें प्रधान द्रव्यानुकूल स्वाद वाले न होकर के अम्ल होजाते हैं। सिरके का सा उसका स्वाद हो जाता है। इसे शुक्त की जगह इस्तेमाल कर सकते हैं। आसव या अरिष्ट के प्रतिनिधि स्वरूप देने पर ये अवगुण करते हैं।

परीक्षा में--वर्ण, गंध, स्वाद, तारल्य, आपेक्षिक गुरुत्व इत्यादि के ऊपर विशेष ध्यान देना चाहिए।

वर्ण--हरएक आसवों में धाय के फूल पड़ते हैं। यह लाल वर्ण या कषाय वर्ण की उत्पत्ति करते हैं। अतः अधिक आसवारिष्ट लाल वर्ण के होते हैं।

गंध--प्रक्षेपानुकूल तथा प्रधान द्रव्यानुकूल होती हैं। जैसे द्राक्षारिष्ट मधुरगंध तथा एला, तेजपत्रादि अनुकूल गंध वाला।

स्वाद--मधुर, कषाय व प्रधानद्रव्य के स्वाद के अनुकूल। यथा-द्राक्षासव मधुराधिक कषाय।

तारल्य-तरलता जलापेक्षा कम होती है, यह घने होजाते हैं।

आपेक्षिक गुरुत्व (Specific gravity) १०२५ से ४५ तक गुड़ वालों में घनता होने से गुरुत्व अधिक होता है तथा क्वथित होने से भी घनता वर्द्धित होती है अतः १०४०-४५ तक गुरुत्व होता है। खदिरारिष्ट का गुरुत्व १०६० अमृतारिष्ट का ११४५ द्राक्षारिष्ट का ११०० दशमूलासव का १०१२ से १०१५ इस तरह प्रत्येक आसव अरिष्ट की परीक्षा करके उसको उपयोग में लाने योग्य समझना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नोट—सन्धान के पूर्व हमेशा पात्र की शुद्धि के ऊपर ध्यान देना चाहिये। पात्र हमेशा नया व चिकना रहे, प्राचीन पात्र में संधान करने से अधिक आसवारिष्ट शुक्त होजाते हैं। अतः प्राचीन पात्रों को उष्णोदकक्षार व चूर्ण के उपयोग से शुद्ध कर लेना चाहिए।

इस तरह बने हुये आसवादि विशेष उपयुक्त होते हैं व सर्वगुण सम्पन्न होते हैं तथा हम उनमें पूर्वकथित गुण पासकते हैं।

विश्वनाथ शास्त्री,
प्रिंसपिल—ललितहरिआयुर्वेदिक कालिज,
पीलीभीत।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब प्रकार की छपाई का काम

वैद्य-प्रेस मुरादाबाद

को भेजिये

हमारे यहाँ छपाई का छोटा, बड़ा सब प्रकार का काम बड़ी सुन्दरता के साथ होता है, बढ़िया और शुद्ध छपाई का पूर्ण प्रबन्ध है। पुस्तक, सूचीपत्र, मासिकपत्र, चेक, हुण्डी, रसीद, लेबिल, बिलबुक, आर्डर-बुक, लेटर-पेपर कार्ड या कोई भी काम छपवाना हो तो सीधे हमारे पास भेजिये। हमारे काम से आप प्रसन्न हो जायँगे।

दाम बहुत कम लिया जाता है।

काम ठीक समय पर दिया जाता है।

लिखिए-व्यवस्थापक, वैद्य-प्रेस, मुरादाबाद।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

* श्री *

अकरादि-क्रम से
रोगानुसार प्रयोगों के नम्बरों की सूची

१ अग्निदग्ध—७५

२ अग्निमांद्य—] १८, २१, २४, ३७, ४२, ४८, ५६, ६४, ७८,
३ अजीर्ण—] ८४, ९१, ९६, ९७, १००, ११०, ११३, ११५, १२६, १२७, १४१, १४५, १४७, १४८, १५१, १५९, १६०, १६४, १६७, १७५, १८०, १८३, १८५, १९०, २०१, २०४, २०५, २०७, २१०, २१३, २१४, २१६, २१७, २१८, २१९, २२३, २२७, २२८, २३१, २३३, २३४, २३८, २४०, २४४, २४८, २५७, २६१, २६४, २६६, २७१, २७८, २८२, २८३, २८४, २८५, २८८, २९१, २९२, २९३, २९७, २९९, ३००, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०७, ३०८, ३१७, ३२४, ३२६, ३२७, ३२८, ३३३, ३३५, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५९, ३७२, ३८९, ३९३, ३९७, ३९९, ४१०, ४१४, ४१६, ४२४, ४३०, ४३७, ४४९, ४५०, ४५१, ४६६, ४७१, ४९१, ४९५, ५१४, ५२२, ५३२, ५३३, ५३८, ५५०, ५५१, ५५७, ५६२।

४ अण्डवृद्धि—२१३।

५ अतिसार—९, ४९, ५०, ५१, ५२, ६८, ९७, ११४, ११५, १२२, १४०, १४१, १४२, १६५, १७३, १७४, २२८, २४२, २४३, २४७, २५४, २५९, २६२, २६१, ३०८, ३१०, ३१४, ३१६, ३२८, ३४१, ३४८, ३६५, ३७४, ३८८, ४०९, ४२०, ४३०, ४३९, ४९०, ५२४।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

६ अन्त्रवृद्धि—२०५, २१३, ३५०।

७ अनिद्रा—१४७, २७३, ३१०, ३४१, ५५३।

८ अपतंत्रक—२२५, ३६६।

९ अपतानक—४५८।

१० अपस्मार—४२, १४५, १४७, १६१, १७६, २२५, २६६, ३१०, ३५०, ३५६, ३६२, ४५०, ५०७, ५४४, ५५२।

११ अम्लपित्त—७८। ८४। ९६।११५। २१७। २९३। ३१७। ३५४।

१२ अरुचि—९६।१०५।१५१। १२७। १४५। २०५। २०७। २१७। २१८। २२८। २३२। २३३। २३७। २५७। २६५। २७४। २७८। २८१। २८४। २८५। २९१। २९५। २९६। ३०१। ३०२। ३०८। ३१३। ३१७। ३३३। ३३५। ३४८। ३५३। ३९९। ४१०। ४५३। ४५४। ४५६। ४६३। ४६६। ४७८। ४९१। ४८५। ५१४। ५५०। ५५५।

१३ अर्दित—४७८।

१४ अर्बुद—१७५। ४७८।

१५ अर्श—१७। १८। १९। २०। ३७। ४२। ४७। ५८। ६९। ७२। ७५। ८०। १०१। १०२। १०५। १०६। ११०। १२६। १३२ १४१। १४६। १४७। १६४। १६५। १७७। १८०। १८१। १८२। १८९। २०७। २१८। २२७। २३४। २४२। २५१। २५७। २६३। २७२। २७८। २७९। २८१। २८४। २८५। २९०। २९१। २९२। २९३। २९६। २९७। ३०७। ३२१। ३४५। ३४८। ३५१। ३५२। ३५३। ३७२। ३८७। ३९०। ३९७। ४०३। ४१४। ४१७। ४१८। ४४९। ४५५। ४५६। ४५९। ४६२। ४६३। ४६६। ४७२। ४७३। ५५५।

१६ अश्मरी—१। १०९।१३५। १६५। २०५। २०७। २२२। २६३। २८१। २८४। २९३। ३५०। ३९०। ४९२। ५५५।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१७ अष्ठीला—२२८ । ३३६ । ४५६ ।

१८ आतशक—१२ । १५४ । १८४ । २०० । २०२ । २०४ । २०५ । २२२ । ५१८ ।

१९ आध्मान—३०८ । ३३५ । ३६३ । ४४९ । ४७८ । ५१४ । ५५० । ५५७ ।

२० आमवात—७१ । १३२ । १६४ । १७५ । २५६ । २९३ । २९५ । ३६० । ३९१ । ४४९ । ४५० । ४७८ । ५५२ । ५५३ ।

२१ इन्फ्ल्युएञ्जा—२६६ ।

२२ उदरविकार—८ । १० । १८। १९। २० । २१।३३ ।३७। ५०। ६३ । ६५ । ६६ । ७७ ७८। ८६। ९४ । १०५। ११०।११४ । १३१। १४५। १४७ । १४८ । १४९ । १५१ । १५३ । १५६ । १५७ । १५८ । १५९ । १६४ । १६५ । १७५ । १८१ । १९० । १९३ । २०७ । २१३ । २१८ । २२८ । २३९। २३० । २३८ । २४२ । २४६ । २४९ । २७० । २७३ । २७७ । २८१ । २८२ । २८३ । २८४ । २९२ । २९६ । ३०१ । ३०२ । ३०७ । ३१७ । ३२४ । ३२७ । ३३६ । ३४८ । ३४९ । ३५० । ३५२ । ३५३ । ३५४ । ३६६ । ४१६ । ४१७ । ४१८ । ४४८ । ४५३ । ४५६ । ५१३ । ५३८ । ५५१ । ५५५ । ५५७ । ५६० । ५६१ ।

२३ उदर्द—३५० ।

२४ उदावर्त्त—२१ । ६३ । १४५ । १४६ । १४८ । १५९। २७९ । २८५ । २९१ । ३०७ । ३६५ । ३७२ ।

२५ उन्माद—१२६ । १६१ । १७९ । २२५ । २२६ । ३१० । ३४१ । ३९६ । ४४४ । ४५० । ५०७ । ५२७ ।

२६ उपदंश—१४ । ७२ । ७४ । ८५ । १३० । १३२ । १७१ । २२३ । २९३ । ३१९ । ३५९ । ३६४ । ३७७ । ३७८ । ३९४ । ४२२ । ४४१ । ४४२ । ४४३ । ५१० । ५२८ । ५२९ । ५४९ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२७ उरुस्तंभ—१८१ । १९० । ४९२ ।

२८ उरःक्षत—२८७ । २९६ । ३०६ । ४१३ । ४१९ । ४८५ । ४८६ ।

२९ कंठरोग—९१ । २५७ । ३०६ । ३०७ । ४१९ । ४८५ ।

३० कंठमाला—५९ । १२२ । १७५ । १८१ । १८९ । ४७३ । ४९२ । ५०९ ।

३१ कफविकार—३१९ । ६४ । ७० । १४८ । १६४ । १६८ । १७४ । २५७ । २६३ । २६४ । २६५ । २८२ । २८३ । २९० । ३०१ । ३०३ । ३०६ । ३३२ । ३६१ । ३६४ । ३६८ । ३९३ । ४०३ । ४०४ । ४०८ । ४२५ । ४३८ । ४४८ । ४६५ । ४८२ ।

३२ कर्णरोग—५२ । ४०७ । ४१८ ।

३३ कामला—१९ । ६८ । ९७ । १४६ । १६६ । १७७ । १९० । २०५ । २१३ । २३७ । २८४ । २९५ । २९७ । ३०७ । ३१३ । ३३६ । ३७२ । ३८७ । ४०३ । ४१७ । ४३३ । ४५३ । ४५६ । ४६६ । ४६७ ।

३४ कामोत्तेजक—५६ । ५७ । ७९ । ३१६ । ३१८ । ३३७ । ३४१ । ४०० । ४२८ । ४६५ ।

३५ कास—७ । २१ । २९ । ३० । ३४ । ३५ । ४७ । ४९ । ५० । ५२ । ७० । ८० । ८५ । ९१ । ९५ । ९८ । १०१ । १०३ । १०४ । १०५ । १०६ । १०७ । ११३ । १२७ । १३८ । १४७ । १४८ । १६५ । १६८ । १७० । १७५ । १७९ । १९० । २०५ । २१० । २१४ । २६८ । २६९ । २७३ । २७४ । २८१ । २८४ । २८७ । २९४ । २९५ । २९७ । २९९ । ३०० । ३०१ । ३०२ । ३०३ । ३०६ । ३१० । ३१३ । ३४१ । ३४४ । ३५० । ३५३ । ३५६ । ३६१ । ३६७ । ३६८ । ३७२ । ३७४ । ३७५ । ४०० । ४०३ । ४१० । ४१३ । ४१५ । ४१७ । ४१९ । ४२५ । ४२६ । ४५० ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४६६ । ४६९ । ४७७ । ४७८ । ४८३ । ४८४ । ४८५ । ४८७ । ४८८ ४८९ । ५०६ । ५२२ । ५४८ । ५५५ ।

३६ कुष्ठ—१४ । १९ । २० । २२ । ४७ । ७३ । ८० । १०१ । १०२ । १०६ । १२१ । १६३ । १६६ । १७१ । १७२ । १७५ । १८१ । १८२ । १९० । २०५ । २०७ । २७४ । २८१ । २८४ । २९० । २९२ । २९३ । ३०७ । ३१९ । ३४५ । ३४९ । ३५० । ३५३ । ३५७ । ३६१ । ३७४ । ३७७ । ३७९ । ४०१ । ४०२ । ४०३ । ४०८ । ४१२ । ४१४ । ४१५ । ४४८ । ४४९ । ४५६ । ४६२ । ४६६ । ४७१ । ४७३ । ४७८ । ५३० । ५५५ ।

३७ कोष्ठबद्धता—४८ । ६३ । ७० । ७१ । ७३ । ८६ । १०५ । १३४ । १९७ । २१२ । २१४ । २१६ । २२८ । २३० । २३१ । २४० । २४९ । २६५ । २७५ । २७६ । २७८ । २९७ । ३५३ । ३६३ । ३६६ । ४५२ । ४७७ । ५३८ । ५४५ । ५४६ ।

३८ क्रिमि—१९ । ७१ । ८० । १११ । १२२ । १४१ । १४७ । १७५ । १७९ । १८१ । १८२ । १८६ । १९० । २६६ । २७९ । २८६ । २९२ । २९५ । २९६ । ३०६ । ३०७ । ३४१ । ३४५ । ३४९ । ४०३ । ४१५ । ४४९ । ४९२ । ४९३ ।

३९ खुजली (कंडु)—९८ । १८३ ।

४० गण्डमाला—देखिये कंठमाला ।

४१ गर्भस्राव—७५ । ३३० ।

४२ गर्भाशयविकार—१११ । २२७ । २५३ । ३०७ । ५०८ ।

४३ गलगण्ड—

४४ गलशुण्डी—५४८ ।

४५ गुल्म—१९ । २० । २१ । ३३ । ६३ । ६५ । ७१ । १०५ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१४६ । १४७ । १४८ । १५९ । १६५ । १७५ । १७७ । १८१ । १९३ । २१३ । २१७ । २२८ । २२९ । २७२ । २७७ । २९२ । २९६ । ३०७ । ३३५ । ३३६ । ३४८ । ३५० । ३५१ । ३५२ । ३५३ । ३५४ । ३५६ । ३६५ । ३६६ । ३६७ । ३६८ । ३७२ । ४३२ । ४४७ । ४४९ । ४५४ । ४५६ । ४६६ । ४७१ । ४७८ । ५०० । ५३८ ।

४६ ग्रन्थि—१९ । १५० । १७५ । १८१ । २९६ ।

४७ ग्रहणीविकार—१९ । ६९ । ७२ । ८४ । १०५ । ११३ । १४१ । १४२ । १४६ । १४७ । १६४ । १६५ । १७७ । १८० । १८१ । २०१ । २१० । २१६ । २१८ । २३७ । २४२ । २४७ । २६१ । २७८ । २७९ । २८४ । २८५ । २९० । २९१ । २९२ । २९३ । २९७ । ३०७ । ३१० । ३१४ । ३४७ । ३४९ । ३५३ । ३७२ । ३९० । ३९७ । ४०८ । ४०९ । ४१४ । ४१७ । ४१८ । ४२४ । ४३० । ४३१ । ४५६ । ४५९ । ४६२ । ४६३ । ४६६ । ४९१ ।

४८ चर्मरोग—१३ । १४ । २२ । ७२ । १२२ । १७१ । २१९ । २९३ । ३१९ । ३४५ । ३५३ । ३७९ । ३९६ । ४७३ । ५३० । ५४९ ।

४९ जलोदर—७१ । ९७ । १२० । १४५ । १४८ । १६८ । २०७ । २३४ । २३८ । २४९ । २७५ ।

५० जहरबाद—१२० । २२८ ।

५१ ज्वर—१० । १९ । २२ । २३ । २५ । २६ । ३७ । ४६ । ७१ । ७५ । ७६ । ८० । ८५ । ९४ । १०० । १०१ । १०८ । १११ । १२६ । १३३ । १३४ । १४१ । १४३ । १५१ । १६७ । १७९ । २१५ । २१९ । २२० । २४४ । २४५ । २५० । २६४ । २६६ । २६९ । २७० । २७२ । २७३ । २८७ । २८९ । २९२ । २९४ । २९५ । २९६ । ३०२ । ३०३ । ३०७ । ३०८ । ३०९ । ३१० । ३१३ । ३१५ । ३१९ । ३२० । ३२३ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३३३ । ३३६ । ३४५ । ३५० । ३५४ । ३५९ । ३६१ । ३६३ । ३९९ । ४३३ । ४५४ । ४५५ । ४७४ । ४७६ । ४८२ । ४९४ । ५१५ । ५२४ । ५३२ । ५३३ । ५३४ । ५३५ । ५३६ ।

५२ तृष्णा—३८९ । ४९७ ।

५३ दद्रु—५९ । ६७ । १८३ ।

५४ दन्तविकार—२४ । ५२ । ५६ । २५२ ।

५५ दाह—२३ । १२२ । १३० । १३१ । १७८ । १९४ । २०२ । २६५ । २८७ । ३६१ । ३८९ । ५३३ ।

५६ धनुस्तंभ—४९० ।

५७ नपुंसकत्व—२३ । ४२ । १२७ । २०७ । २०९ । २९९ । ३०३ । ३१० । ३१६ । ३१८ ।

५८ नाड़ीव्रण (नासूर)—५९ । ८५ । ३५० । ४७३ ।

५९ निमोनिया—७ । ९३ । १२७ । ३०६ । ४२७ । ४७६ ।

६० नेत्ररोग—३०७ । ३२९ । ३५९ । ४०० ।

६१ पक्षाघात—४७८ । ५५३ ।

६२ पाण्डु—२० । ६८ । ७२ । ८० । १०५ । १३१ । १४६ । १४८ । १६४ । १६५ । १६६ । १७५ । १७६ । १७७ । १८१ । २०० । २०५ । २०७ । २१८ । २३७ । २५५ । २६१ । २७२ । २७४ । २७७ । २७८ । २७९ । २८१ । २८२ । २८४ । २८५ । २९० । २९१ । २९२ । २९६ । २९७ । ३०१ । ३०७ । ३१३ । ३३३ । ३३६ । ३४८ । ३४९ । ३५० । ३५३ । ३५७ । ३७२ । ३९१ । ४०३ । ४१४ । ४१७ । ४१८ । ४४९ । ४५३ । ४५५ । ४५६ । ४५९ । ४६२ । ४६३ । ४६६ । ४६७ । ४६८ । ४६९ । ४७१ । ४७८ । ५५५ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

६३ पानात्यय--५१७।

६४ पित्तविकार--१३१, १६२, १६४, १७५, १७८, २४३, ३१५, ३३०, ३३१, ४०८, ४३४, ४४८, ५२६।

६५ प्रतिश्याय--१, १६८, २१२, २१३, २२४, २६५, ४१३, ४७६, ४७७, ४६६।

६६ प्रत्यष्ठीला--४६२।

६७ प्रदर—३७, ४६, ८०, ८८, ८६, १२१, १३०, १३५, १४१, १६२, १६६, १६४, २०३, २४२, २५१, २५४, २८१, २८४, ३१२, ३३३, ३३४, ३७३, ४२०, ४४५।

६८ प्रमेह—१५, २०, ३७, ४७, ५२, ६०, ६३, ६६, ७२, ८०, ८५, ६१, ६२, १०१, १०२, १०६, ११६, १२७, १४५, १६३, १६४, १६५, १६६, १७६, १७७, १८०, १८१, १८२, १८४, १८६, १६०, १६८, २०२, २०३, २०५, २०७, २१३, २२२, २२३, २२७, २३५, २४२, २५१, २८१, २८४, २७६, २६०, २६३, २६६, ३०१, ३०३, ३११, ६४६, ३४५, ३५३, ३५७, ३५६, ३७४, ४००, ४०८, ४११, ४४०, ४४७, ४४८, ४५८, ४६२, ४६३, ४७१, ४७२, ४७३, ४६२, ५२८, ५५४, ५५५।

६९ प्रसूतरोग—१११, १२८, १२६, १३२, १३३, १७६, २४७, २४८, २६७, २८४, ३०७, ३४१, ३६२, ३६३, ४६१, ५३४।

७० प्लीहा—८, १६, २०, २१, ३३, ६५, ६६, ७१, ८७, ६७, १००, ११०, १११, १२६, १३१, १४८, १४६, १५०, १५१, १५२, १५५, १५६, १५६, १६०, १६४, १७५, १८१, १८७, १६०, १६३, २१८, २२८, २२६, २३२, २३७, २३८, २४०, २४६, २७४, २६२,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३२४ । ३२५ । ३३२ । ३३५ । ३३६ । ३४९ । ३५० । ३५२ । ३५३ । ३५४ । ३६१ । ३६६ । ३६७ । ३६८ । ३६९ । ३७० । ३७२ । ४१८ । ४३२ । ४३६ । ४५३ । ४५४ । ४५५ । ४५६ । ४६८ । ४७१ । ४७८ । ५३८ । ५६० ।

७१ प्लेग—४६ । ९३ ।

७२ फुफ्फुस विकार—३५ । ४९ ।

७३ बलवर्धक—४ । ५ । ६ । १५ । १९ । ४४ । ४५ । ५७ । ५८ । १०३ । १३४ । १३८ । १३९ । १४५ । १६५ । १७६ । १८४ । १८५ । १८९ । २०४ । २१६ । २२३ । २३७ । २५७ । २६० । २६१ । २६३ । २६४ । २८१ । २८४ । २८८ । २९६ । २९७ । २९८ । २९९ । ३०१ । ३०२ । ३०३ । ३०७ । ३०८ । ३१८ । ३२१ । ३२९ । ३४१ । ३४६ । ३४८ । ३५० । ३५३ । २५८ । ३५९ । ३६१ । ३७६ । ३९७ । ३९८ । ४०० । ४२१ । ४२३ । ४२८ । ४२९ । ४४६ । ४४७ । ४७० । ४७९ । ४९६ । ५०४ । ५०८ । ५२७ । ५४३ । ५४७ । ५५५ ।

७४—वलिपालित नाशक—१०५ । १६६ । २११ । ३९९ ४०० । ४४६ ।

७५ वहुमूत्र—८८ । १०९ । ११९ । २३५ । २८६ । २९३ । ४७३ । ४४६ ।

७६ बालरोग—९ । १० । २७ । २८ । ४२ । ४५ । ९७ । ९९ । १०० । १०६ । १०७ । १३७ । १४४ । १४६ । १४७ । १४८ । १६६ । १९४ । १९६ । २२७ । २५३ । २६८ । ३०८ । ३१४ । ३३७ । ३८० । ३८१ । ३८२ । ३८३ । ३८४ । ३८५ । ३८६ । ४३३ । ४५२ । ५११ । ५२७ । ५३७ । ५५६ ।

७७ बुद्धिवर्धक—१७ । २३ । ४४ । १३५ । २९९ । ३२९ । ३९५ । ३९८ । ५२७ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

७८ भगंदर—४७ । ५९ । ८५ । १०१ । १०२ । १०६ । १६४ । १८० । १८१ । १८२ । २३४ । २८१ । २८४ । २९६ । ३५३ । ३५६ । ४१७ । ४१८ । ४४८ । ४५४ । ४६६ । ४७३ । ४७८ । ४९२ । ५२८ । ५५५ ।

७९ भ्रम—१६१ । १७८ । २७४ । ३५३ । ४९५ । ५०५ ।

८० मधुमेह—१२। २२।३६ । ५० । ६० । १०९ । ११९ । १२७ । १३५ । १९१ । १९२ । १९७ । २१० । २३५ । २३६ । २४१ । २४२ । २६३ । ३३९ । ३४० । ३८७ । ४०५ । ४०६ । ५५४ । ५५५ ।

८१ मसूरिका (चेचक)—७५ । ८५ । ९८ । १२४ । ३०६ ।

८२ मस्तिष्क विकार—२३ । ३६। ४२ । ४३ । १६१ । २२५ । २८३ । ३९५ ।

८३ मानसिक रोग—२८३ ।

८४ मासिकधर्म विकार—४३८। ४७२ । ५५३ ।

८५ मुखरोग—५६ । ४३८ ।

८६ मूत्रकृच्छ्रादिमूत्रविकार—१ । ५० । ६९ । ७५ । ९१ । ९८ । ११४ । १३० । १३५ । १३६ । १६२ । १६५ । १६६ । १६८ । १९७ । १९८ । २०२ । २०४ । २०५। २२२ । २४२ । २५१ । २८१ । २८३ । २८४ । २९३ । २९७ । ३०१ । ३३१ । ३७३ । ३९० । ४४० । ४६२ । ४६५ । ४७१ । ४७२ । ५५३ । ५५५ ।

८७ मूर्छा—४२ । ४५ । १३५ । १३८ । १६१ । १७८ । ३५३ ।

८८ मेदोरोग—७५ । १६३ । १६ । १८० । २४० । २७३ । ३५७ । ४१८ । ४७१ ।

८९ यकृत विकार—२१। २५ । ३३ । ६६ । ७१ । ९७ । १११ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१२६ । १३१ । १३४ । १४८ । १४९ । १५० । १५१ । १५२ । १५९ । १६० । २१३ । २१६ । २२८ । २३२ । २३७ । २४० २४६ । ३३४ । ३३५ । ३३६ । ३४८ । ३५४ । ३६१ । ३६६ । ३६९ । ४३२ । ४३६ । ४५७ । ४६६ । ४६८ । ४९५ । ५३८ । ५६० ।

९० रक्तपित्त—३७ । ५० । ८० । १०३ । १२१ । १३० । १६४ । १६६ । २०७ । २४४ । २८२ । २८७ । २९० । २९६ । ३०० । ३०७ । ३२८ । ३३१ । ४०८ । ४१५ । ४२५ । ४३१ । ४७२ । ४८५ । ४८६ । ४८९ ।

९१ रक्तविकार—१२ । १३ । १४ । १७ । ६१ । ७३ । ७४ । ८१ । ८२ । ९५ । १२२ । १६४ । १६६ । १७२ । १८३ । २२१ । २२२ । २२३ । २२७ । २५५ । २७१ । २९३ । ३०२ । ३१९ । ३२१ । ३४५ । ३५६ । ३५९ । ३६१ । ३६४ । ३६५ । ३६८ । ३७७ । ३७८ । ३९४ । ३९७ । ३९९ । ४०१ । ४०२ । ४१५ । ४२२ । ४३७ । ४४० । ४४१ ४४२ । ४४३ । ४५४ । ४७८ । ४९२ । ५२८ । ५२९ । ५३१ । ५४९ । ५५३ ।

९२ रक्तालपता—१३१ । २००।२३७ । २८८ । ३०५ ४४४। ४६८ ।

९३ लू (आतपज्वर)—८० । १७८ । २०२ । ३१५ । ४३४ ।

९४ वन्ध्यादोष—१२ । ९४ । १२१ । २८१ । २८४ । ४०० । ४७८ ।

९५ वमन—२८१ । २८४ । २९२ । २९७ । ३२८ । ३८९ । ४५३ । ४७८ । ५५५ ।

९६ वाजीकरण—४ । ५ । ६ । १८८ । २०७ । २०८ । २०९ । २१० । २२२ । २४३ । २९९ । ३०१ । ३१६ । ३१८ । ३४१ । ३५९ । ४४७ । ४७९ ।

९७ वातपित्त--२९६ ।

९८ वातरक्त-१४ । २२ । १७१ । १८१।२१३ । ३१३ । ३७७।५२८ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

९९ वातविकार--१, ३१, ४२, ४५, ५७, ६६, ६७, १०८, १११, १२५, १२६, १३५, १४६, १२७, १४७, १६४, १६६, १६७, १८२, २०७, २२२, २३३, २४४, २४५, २७१, २८१, २८३, २८४, २६३, २६४, २६७, ३०२, ३३२, ३५३, ३६१, ३७६, ४१०, ४१३, ४२०, ४२८, ४३८, ४४८, ४५०, ४५१, ४८०, ४८१, ५०२, ५३६, ५४४, ५५३, ५५५, ५५८।

१०० वायगोला--११०, ३४६।

१०१ विद्रधि--३५०, ४७८, ४६२।

१०२ विशूचिका--२४, ३२, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ७५, ११३, ११४, ११५, ११६, ११७, १७६, १८३, २१०, २२८, २४३, २४८, २६२, २८०, ३२७, ३३७, ३३८, ४२४, ४२६, ४२७, ४२६, ४६०, ४६७, ४६८, ५०३, ५०५, ५४०, ५५१।

१०३ विषविकार--४६, ११४, १३२, २६२, ४५०, ५०६।

१०४ विसर्प—२२, ८५, २६०, ३४५, ५२६।

१०५ वीर्यविकार—२३, ४२, ५७, ६४, ८८, ८६, ६२, १००, १२६, १३८, १४३, १४८, १६२, १६६, १७८, १८८, १६७, २०४, २०५, २०६, २११, २२६, २५१, २८१, ३५०, ४५८, ५४४।

१०६ वेदनाशामक—३०६, ३१०, ३४१, ३४४, ३६२।

१०७ वृक्क विकार—६८, २५२।

१०८ वृश्चिक विषहर—४६६।

१०९ व्रण—११, १२, ५६, ८५, ३०७, ३७७, ३७८, ४७३, ५०१, ५४८।

११० शीतपित्त—२२, ८५, ६८, १०६, १६४, ५१२।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१११ शुक्रमेह (सुजाक)—१८४ । १९४ । २०४ ।

११२ शूल—२१ । २४ । ३३ । ५० । ६५ । ७१ । ७८ । ८३ । ८४ । ९५ । १०० । १११ । ११३ । ११५ । १२६ । १२८ । १४५ । १४७ । १५० । १५८ । १५९ । १७९ । २२८ । २२९ । २३२ । २४३ । २४८ । २८१ । २८४ । ३१० । ३२४ । ३३५ । ४२७ । ४३० । ४३२ । ४४८ । ४५३ । ४७८ । ५०२ । ५०५ । ५१३ । ५३२ । ५३८ । ५३९ । ५४१ । ५५५ । ५५७ । ५५८ ।

११३ शोथ—११ । १९ । २० । ३७ । ४९ । ५९ । ८० । ९७ । १०२ । १०९ । १०६ । १४८ । १५० । १५९ । १६२ । १६५ । १७६ । १७७ । १८१ । १८२ । १९० । १९८ । २१६ । २१८ । २५७ । २७३ । २७५ । २८१ । २९२ । २९५ । २९६ । ३३३ । ३३६ । ३४८ । ३४९ । ३५३ । ३५४ । ३५५ । ३५६ । ३५७ । ३६६ । ३८७ । ३९० । ४०३ । ४१४ । ४५६ । ४६६ । ४७१ । ४७३ । ४७४ । ४८७ । ५१६ । ५३९ । ५४८ । ५५८ ।

११४ श्लीपद (फीलपांव—१८९ ।

११५श्वास—७ । १६ । २१ । २९ । ३० । ३४ । ३५ । ४७ । ५० । ५२ । ६२ । ७० । ८५ । ९० । ९८ । १०१ । १०२ । १०३ । १०४ । १०६ । १०७ । ११३ । १३७ । १४६ । १४७ । १४८ । १६५ । १६८ । १७० । १९० । २०५ । २१० । २१४ । २३८ । २७२ । २८२ । २८४ । २९४ । २९७ । ३०० । ३०१ । ३०२ । ३०६ । ३१० । ३१३ । ३२२ । ३४४ । ३५३ । ३६१ । ३७४ । ३७५ । ३९१ । ३९२ । ४०३ । ४१० । ४१३ । ४१७ । ४१९ । ४५० । ४५४ । ४६६ । ४६९ । ४७८ । ४८२ । ४८३ । ४८४ । ४८५ । ४८६ । ४८७ । ४८९ । ५१९ । ५२० । ५२१ । ५२२ । ९५२ । ५५३ । ५५५ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

११६ श्वासमार्ग के विकार—३०९ । ३९३ । ४३८ । ४६५ । ४७५ ।

११७ सन्निपात—५२३ ।

११८ सर्पविष—५२५ ।

११९ सर्वरोगनाशक—११८ ।

१२० सिरोरोग—९४ । १७६ । २८८ । ३०५ । ३०७ । ३५९ । ३७४ । ४९१ । ४९५ ।

१२१ सोमरोग—४७३ ।

१२२ स्तन्यविकार—३५० ।

१२३ स्तम्भक—५६ । ५७ । ७९ । १८८ । २०७ । २५१ । २७१ । ३०१ । ३०९ । ३१६ । ३४१ । ३५९ । ४२८ । ४७३ । ४७९ । ५४२ । ५५२ ।

१२४ स्त्रीरोग—२ । ३७ । ३८ । ३९ । ४० । ४१ । ८६ । १११ । १२१ । १२६ । १२८ । १२९ । १३१ । १३५ । १४७ । १४८ । २२६ । २३५ । २८४ । ४३८ । ४४५ । ४६० । ४६१ । ४६२ । ४६३ । ४६४ । ४७२ । ५०४ । ५३७ । ५५३ ।

१२५ स्नायुक (नहरुआ)—१७९ ।

१२६ स्मृतिवर्धक—३९६ । ३९७ । ३९८ । ४०० । ४२८ । ४७० । ५२७ ।

१२७ स्वरविकार—३९६ । ४१३ । ५२७

१२८ स्वप्नदोष—४७३ ।

१२९ हनुस्तम्भ—४९२ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१३० हलीमक—३३६ । ३५३ । ४६६ । ४७८ ।

१३१ हिक्का—१३८ । १४८ । १८२ । २९५ । ३१३ । ३५३ । ४१७ । ४२६ । ४७८ ।

१३२ हिस्टीरिया (योषापस्मार)—५। १२३ । १२५ । १३५। १६१ । २०६ । २२४ । २३९ । २८३ । ३९३ । ४९१ । ५०७ । ५५३।

१३३ ह्रद्रोग—१९ । ३४ । ३५ । १०५ । १२५ । १३१ । १४६ । १६५ । १७५ । १७६ । १९५ । १९९ । २०४ । २२७ । २२८ । २६० । २७२ । २७४ । २८२ । २८३ । २९१ । २९२ । २९६ । ३१३ । ३४४। ३४६ । ३४९ । ३५३ । ३७२ । ४१४ । ४२५ । ४४० । ४५३ । ४५४। ४५६ । ४५९ । ४६६ । ४७१ । ४७५ । ४८३ । ५२७ ।

१३४ क्षय (राजयक्ष्मा)—७ । १९ । २३ । २५ । ३५ । ४२। ४३ । ४७ । ४९ । ८९ । १०१ । १०२ । १४२ । १४५ । १४६ १४७ । १४८ । १६४ । १६५ । १६८ । १७६ । १७७ । १८१ । १८४ । २११ । २१३ । २१४ । २९४ । २८७ । २९२ । २९५ । २९६ । २९८ । २९९ । ३०० । ३०१ । ३०३ । ३०६ । ३४६ । ३४८ । ३५० । ३५६ । ३०४ । ३९१ । ४०० । ४१३ । ४१५ । ४१८ । ४१९ । ४४९ । ४७६ । ४८२ । ४८४ । ४८९ । ५०६ । ५२२ । ५३७ । ५५५ । ५५९ ।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सूचना ।

—*—

यथाविधि बने हुए सब प्रकार के आसव और अरिष्ट हमारे यहाँ से सुलभ मूल्य में प्राप्त होसकते हैं।

वैद्य-शंकरलाल हरिशंकर

आयुर्वेदोद्धारक औषधालय

मुरादाबाद ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्रीः

बृहदासवारिष्ट संग्रह ।

(आसवारिष्ट-रत्नमाला)

वैद्यं व्याधि विषाकुलो, धनपति दारिद्र्यदुष्टोजनः,
खाद्यञ्चक्षुधितो हिमाम्बु तृषितच्छायातरुंतापितः ।
शोकार्त्तस्वजनं वियोग विधुरोवत्सोयथामातरम्,
तद्वत तत् सततं स्मरामि परमं ब्रह्माभिधेयं महः ॥
ध्यात्वा हरि गुरुचरणम् संशोध्य सर्वशास्त्रार्थं ।
ग्रथ्नाभ्यासवारिष्टम्, अकारादिक्रमेणतु ॥
माला सर्वरसाला व्यालीव सर्व रोगाणाम् ।
कृष्णप्रसाद ग्रथितासेयं भवतुसुरम्यरत्नमाला ॥

१ अकरकराद्यासव--१ (स्वकृत) अश्मर्यादि मूत्र विकारे ।

विधि- अकरकरे का स्वरस अथवा अष्टमांस क्वाथ १३ सेर, और उत्तम मिश्री ५ सेर लेकर शुद्ध चिकने मटके में भरे, जब मिश्री घुलजाय तब उसमें गोखरू की जड, कैथ (कपित्थ) की जड़, अपामार्ग की जड़, पाषाणभेद, तुलसीपत्र, एरंड की जड़, मुलैठी, पपिल, कांस(तृण विषेष) की जड, निर्गुण्डी, लोंग, और सोंठ प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोळ मिळा, विधि युक्त संधान कर लगभग १५ दिन एकान्त शुद्ध स्थान में रक्खे ◉ पश्चात् बोतलों में छानकर भर देवे ।

◉ संधान क्रिया एवं आसवारिष्टके विषय में विशष विवरण भूमिका में देखिये । संपादक-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—१ से २॥ तोले तक।

गुण—मूत्राश्मरी (पथरी) मूत्रकृच्छ, मूत्र में चूना जैसे पदार्थ का जाना आदि दूर हो कर प्रतिश्याय, शोथ और वात विकारों में लाभ होता है।

अकरकराद्यासव नं० २ देखिये आकारकरभासव ।

२—अखरोटारिष्ट—(स्वकृत) आर्तव प्रवर्त्तक।

विधि—अखरोट फल के छिलकों का अष्टमांस क्वाथ कर और छानकर १ सेर क्वाथ में १ पाव गुड़ और १० तोले शहद मिलाकर कांच की शीशी में भर रक्खे। १५ दिन बाद छानकर काम में लावे।

मात्रा—२ से ४ तोले तक।

गुण—स्त्रियों का मासिक स्राव विना किसी कष्ट के होजाता है, तथा कोष्ठबद्धता दूर होती है।

३ अगस्त्यासव—(स्वकृत) कफ़ विकारे।

विधि—लाल अगस्त (अगस्तिया) की जड़ की छाल का स्वरस १ सेर, गुड़, १ पाव और शहद १० तोले सब को एकत्र मिलाकर शुद्ध चिकनी मटकी में सन्धान कर रक्खे। १ मास के बाद छानकर शीशियों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ से २ तोले तक शक्ति अनुसार। बालकों को ५ से १० बून्द तक देना चाहिये।

गुण—कास श्वासादि कफ के सब विकारों को शीघ्र दूर करता है।

४—अंगूरासव—नं० १ (स्वकृत) अपूर्व बलदायक; कामशक्ति वर्धक।

विधि—उत्तम मीठे अंगूर १॥ सेर, किसमिस १ पाव, कन्धारी मीठे अनार १ सेर, मुनक्का २ पाव, पिंडखजूर २ पाव, पिस्ते २ पाव,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आमकी छाल १ पाव; धाय के फूल १ पाव, उत्तम शकर ११ सेर, शहद २। सेर और बादाम की गिरी २ पाव, सब को जवकुट कर शुद्ध चिकने घड़े में १ मन जल के साथ मिलावें, और उसमें इलायची, लोंग, दालचीनी, आमला, वायविंडग, जायफल, जावित्री, धनिया, मुलैठी, बीजबंद, सफेद मुसली, कालीमुसली, असगंध, तालमखाना, शंखपुष्पी, गोखरू, कालीमिरच, श्वेतचन्दन; पत्रज, चीता, नागकशर कंकोळ, नागरमोथा, और सौंफ प्रत्येक ४—४ तोळे,सबका महीन चूर्ण कर मिला देवें । मटकी का सन्धान कर १ मास तक बन्द रक्खे । पश्चात् छानकर बोतलों में भरदे ।

मात्रा—१ से २ तोले तक ।

गुण—शीतकाल में उचित मात्रानुसार सेवन करने से शरीर बलवान और पुष्ट होता है । कामशक्तिवर्धक और परम वाजीकरणीय है। और कोष्ठबद्धता नाशक है ।

---

६ अंगूरासव—नं० २ बलवर्धक वाजीकरणीय ।

(पं० बावूरामजी शर्मा वैद्य)

विधि—लोंग, जायफल, जावित्री, नागकेशर, कंकोळ, शीतलचीनी, वीपल, पीपळामूल, रेणुका, सफेद इलायची, अकरकरा, सोंठ, कालीमिरच, मुलैठी, असगंध, दालचीनी, शतावर, सफेद मुसळी, उटंगन के बीज, और तेजपात ये प्रत्येक ३—३ तोळे, बबूल की छाल एक छटांक, कचनार की छाल एक छटांक, छुहारे दो छटांक, सुपारी पूर्वी एक छटांक, पिस्ते एक छटांक, चिरौंजी दो छटांक, बादाम की गिरी दो छटांक, अंगूर पांच सेर, नासपाती २॥ सेर, सेव २॥ सेर,अनार २॥ सेर, संतरे १॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सेर, शहद २ सेर, केशर १ तोला, कस्तूरी ३ माशे, धायके फूल दो छटांक, खांड ४ सेर और जळ २५ सेर ।

संधानावधि—१॥ मास ।

गुण—अति वाजीकरण, बळ, क्षुधा, रक्त तथा मांस वर्धक, स्फूर्त्तिकारक, हृदय-बलवर्धक, प्रसन्नताकारक और वीर्यवर्धक है ।

(आसवारिष्ट संग्रह)

६—अंगूरासव—नं० ३ शक्तिवर्धक ।

(कविराज श्री पं० शशिकान्तजी मिश्र भिषगाचार्य)

विधि—अंगूर का रस ३ सेर, सन्तरे का रस २ सेर, अनार का रस २ सेर, नासपाती का रस २ सेर, इनको अलग रखे । और निम्नलिखित औषधियों का क्वाथ तैयार करे—

असगंध १ सेर, पिंडखजूर १ सेर, तथा जटामांसी, मूसली, सतावर, आध आध सेर, कीकड़ और बड़की छाल २-२ सेर और मुलेठी १ पाव इन को कूटकर २६ सेर जल में पकावे । जब ८ सेर शेष रहे, तब शीतल होने पर उसमें ४ सेर खांड, १ सेर शहद, तथा धाय के फूल, मीठा कूठ, चीता, सफेद तोदरी, श्वेतचन्दन, लाल बहमन, मीठाबच, बीजबंद, प्रत्येक का चूर्ण ५-५ तोले और त्रिजातक, त्रिकुटा तथा पंचकोल प्रत्येक औषधि का चूर्ण १०-१० तोळ (नोट-प्रक्षेप द्रव्योंकी मात्रा अधिक है, प्रत्येक ४-४ तोळे लेना ठीक होगा-सं०) मिला देवे और उक्त रसों को भी मिळा पात्र का मुख बन्दकर, शीतकाल में १ मासतक और ग्रीष्मकाल में १५ दिन तक सुरक्षित रखे । पश्चात् छान कर काम में लावे ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(मात्रा आदि उपर्युक्तानुसार)

७–अंगूरासव नं० ४—निमोनिया, यक्ष्मादि रोगोंपर।

विधि–अंगूरों का रस १६ सेर; गुड़ १२॥ सेर, धाय के फूल, आध सेर, तथा–कंकोल, लौंग; जायफल; कालीमिरच, असली नागकेसर, पीपल, चित्रक; पीपलामूल; दालचीनी; इलायची, तेजपात; वायविडंग, फूलप्रियंगु; काकड़ासिंगी, बासा और मुलेठी प्रत्येक का चूर्ण १॥–१॥ तोले, सब को एकत्र मिला; शुद्ध चिकने मटके में भर; उसमें कस्तूरी १ माशे, और केशर ३ माशे, दोनों की एक पोटली बना कर डाल देवे। पात्र का मुख बन्द कर जमीन में गाढ़ दे। १ मास या २२ दिन बाद छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१। तो० से २॥ तोले तक। सबल एवं आरोग्य व्यक्ति के लिये २॥ तो० से ४ तो० तक।

गुण—निमोनिया; खांसी, श्वास, राजयक्ष्मा और उरःक्षत नाशक है।

यह प्रयोग 'हाड' नामक पुस्तक का है, जो कि सैंकड़ों वर्ष की पुरानी है। (जीवनसुधा)

अंगूरासव नं० ५—देखिये दाड़िमाद्यासव नं ३।

८—भृङ्गीरासव—प्लीहा, उदर विकारे।

विधि—अंजीर ४० तोले, अंगूरी सिरका २ सेर, नमक १५ तोले, नौसादर, सुहागा, फटकरी, छोटी पीपल प्रत्येक ३–३तोले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और चूक १ तो० लेकर, प्रथम पीपल, नमक और क्षारों को महीन कूट कर एक मिट्टी की चिकनी हांडी में डाल कर सब दवाइयाँ एकत्र मिला देवे। अंजीर वैसे ही डाल दे। हांडी का मुख बन्द कर, गेंहू के ढेर में गाढ़ दे। १५ दिन के बाद छानकर शीशियों में भर रखे। अंजीरों को बीन कर अलग निकाल लें और सुखा कर चूर्ण कर लें। आसव के साथ ही इस अंजीर चूर्ण का सेवन करे।

मात्रा—आसव १ तो० से २॥ तोले तक। और उक्त अंजीर चूर्ण २ माशे की मात्रा से सेवन करे।

गुण—प्लीहा, उदर विकार और निर्बलतानाशक है।

पथ्यापथ्य—मूंग; चावल; परवल, गाय या बकरी का दूध; आदि पदार्थ हितकर हैं। जल कम पीना चाहिये। तैल, धूम्रपान, रुधिर का निकालना, भारी पदार्थ खाना, दिन में सोना यह त्याग देने चाहिये।

(प्रयोग साहस्री)

अजूवारिष्ट—देखिये, पर्णबीजारिष्ट।

अडूसासव—देखिये—वासकासव।

९—अतिविषासव नं० १—(स्वकृत) ज्वरातिसार नाशक।

विधि—अतिविषा (अतीस), कुड़े की छाल, सोंठ, नागरमोथा और गिलोय प्रत्येक का चूर्ण ५-५ तोले लेकर, शुद्ध चिकने मटके में डाल, उसमें १५ सेर गुड़, आध सेर धाय के फूल और २६ सेर जल मिलाकर पात्र का मुख अच्छी तरह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बन्द कर, १ मास तक रखा रहने दे, पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रखदे ।

मात्रा--१ तो० से २॥ तोले तक । बालकों को ६ मासे से १ तो० तक ।

गुण--कफ एवं पित्त के विकार दूर होते हैं । अतिसार युक्त ज्वर में बहुत लाभ होता है । बालकों के लिये यह अमृत की समान है ।

---

१० अतिविषासव नं० २—ज्वर नाशक ।

विधि—अतीस का चूर्ण १ भाग और मद्य (६० प्रतिशत वाली) ५ भाग एकत्र मिला, बोतल में भर, मज़बूत कार्क लगा कर, ७ या १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे । बीच में हिलाते रहना चाहिए, पश्चात् फलालैन के कपड़े में छानकर शीशियों में भर कर रखले ।

मात्रा—३० बूंद से ६० बूंद तक ।

गुण—यह आमाशय के लिये बल्य है तथा आमाशय और आँतों के पित्त प्रकोप को शान्त करता है । ज्वर नाशक है । बालकों के वमन और अतिसार को शीघ्र शांत करता है ।

(औषधि-विज्ञान)

---

११ अतिविषासव नं० ३—व्रणपूरक, शोथ नाशक ।

(कविराज हरिश्चन्द्र आयुर्वेद भूषण)

विधि—२॥ तोले अतीस का चूर्ण चौगुने (१० तोले) नीबू के स्वरस में खरल करे, और उसमें दस गुनी (२५ तोले)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैथीलेटेड स्प्रिट मिलाकर बोतल मे भर, अच्छी तरह बन्द करके रख देना चाहिए। इसका केवल बाह्य प्रयोग करे।

गुण—यह व्रणपूरक, शोथ और जलन नाशक अपूर्व टिंचर है।

(आयुर्वेद मार्तण्ड)

---

१२ अद्भुतासव नं० १—रक्त शोधक।

(श्री योगीराजजी आयुर्वेदालंकार, अमृतसर)

विधि—कीकड़ वृक्ष का पंचाङ्ग ५ तोले लेकर, महीन पीस ले। तथा एक तरबूज में छिद्र कर, उसमें इसे भर देवे, छिद्र को उसी काटे हुये तरबूज के टुकड़े से बन्द कर दे। फिर मिट्टी लगा छेद को खूब जकड़ देवे। इस तरबूज को पुरानी रुई के ढेर में २२ दिन तक दबा रक्खे। फिर सावधानी से तरबूज को निकाल, उसमें से दवा निकाल ले, और छानकर बोतल में भर कर रखदे।

मात्रा—१ तोला, समभाग जल मिलाकर सेवन करे।

गुण—भारी जिरयान, आतशक, रक्तविकार, मधुमेह, दुष्ट-व्रण (कारबंकल) के लिये यह अकसीर चीज़ है। यदि बंध्या को पुत्र जन्म के योग्य बनाना हो तो उक्त तरबूज में ८ माशे मुश्क और कपूर भर दे। अद्भुत लाभदायक है।

(धन्वन्तरि)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अद्भुतासव नं० २—देखो कालिन्दासव नं० १ और २।

* १३—अनन्तमूलासव नं० १—रक्त विकार नाशक।

विधि—अच्छे प्रकार परिपक्व हुई एवं नवीन अनंतमूल की जड़ लेकर, उसका जवकुट चूर्ण बनालें, वह १ भाग और मद्य (जिसमें ४० से ६० प्रतिशत मद्य और शेष जल हो) ४ भाग, दोनों को मिलाकर चीनी या कांच के पात्र में भर, मुख मुद्रा कर ७ दिन तक रक्खे, बीच २ में उस पात्र को हिलाते रहना चाहिये, जिससे सत्व का संग्रोलन ठीक २ होजाय। यदि शीत या वर्षा का मौसम हो तो पात्र को किंचित् उष्णता देना आवश्यक है। अवधि के पश्चात् इस मद्यासव को बनात या फलालेन की छलनी में छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—युवावस्था वाले मनुष्यों को ४ से ८ मासे तक इसमें जल मिला कर सेवन करे।

गुण—अनेक प्रकार के रक्त विकारों तथा चर्म रोगों में इसके सेवन से लाभ होता है। इन रोगों में इसे यदि भूनिम्बासव, निम्बासव, या सारिवाद्यासव के साथ मिलाकर सेवन कराया जाय तो इसकी और भी गुण वृद्धि होती है।

(मद्यासव)

---

* इस मार्क के जितने आसव इस पुस्तक में संकलित किये गये हैं, वे सब विश्वनाथजी शास्त्री वैद्यराज, भास्कर आयुर्वेदिक फार्मेसी; देहली से प्रकाशित 'मद्यासव' नामक पुस्तिका के आधार पर लिखे गये हैं। ये सब 'मद्यासव' अर्थात् टिंक्चर्स हैं; जिनका प्रचार पाश्चात्य वैद्यक में बहुलता से पाया जाता है।

संपादक—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनन्तमूलाद्यासव नं० २ देखिये सारिवाद्यासव।

१४—अनन्तमूलाद्यारिष्ट नं० १—रक्तशोधक।

(श्री० पं० शालिग्रामजी देव शुक्ल वैद्यराज)

विधि—अनन्तमूल, उशवा मगरबी, खैर की छाल, गोरख-मुंडी; इन्द्रायन की जड़, प्रत्येक १-१ सेर, मजीठ, हरी गिलोय, उन्नाव (बीज निकाल कर), सरफोंका, चिरायता, सिरस की छाल, चोपचीनी और गुलाब के फूल ये प्रत्येक आध-आध सेर लेकर जबकुट कर, ६४सेर जलमें पकावे। १६सेर जल शेष रहने पर, छान कर, ठंडा होने पर, शुद्ध चिकने घड़े में भर; उसमें-२॥ सेर शहद, २॥ सेर गुड़, धाय के फूल ४० तोले; मुनक्का ४० तोले, इन्द्रायन की जड़ १० तो० तथा सौंफ; नीम के फूल, खैरसार, मेंहदी की पत्ती, उन्नाव (बीज रहित), कासनी और गुलबनपसा प्रत्येक २॥-२॥ तोले; सब को कूट पीस कर मिलादे। और पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १ मासतक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१। तो० से २॥ तोले तक। अनुपान-दूना ताजा जल (या उसवा, मुण्डी और खैर की छाल का भबके से निकाला हुआ अर्क) और ६ माशे असली शहद मिला कर सेवन करे।

गुण—रक्त विकार, कुष्ठ; फोड़े, फुन्सी, दूषित रुधिर, वात-रक्त, उपदंश के चकत्ते आदि बीमारियों पर अकसीर है। यह आयुर्वेदीय सालसा बहुत ही प्रसिद्धता पाये हुए पेटेन्ट अंग्रेजी सालसों से कई गुना अधिक लाभप्रद है।

(धन्वन्तरि)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनन्तमूलाद्यारिष्ट नं० २ देखिये सारिवाद्यरिष्ट।

१५—अनन्तासासव—धातुदोष निवारक।

(वैद्यराज पं० देवकरणजी वाजपेयी, वैद्यशास्त्री, कानपुर)

विधि—अनन्तास का २सेर रस लेकर शुद्ध चिकने घड़ेमें भर; उसमें १ सेर शहद, २० तोले धाय के फूल; इलायची का चूर्ण १ तोला और केशर ६ माशे, मिला, मुख मुद्रा कर धरती में गाड़ देवे, या वैसे ही जमीन पर सुरक्षित करके २० दिन तक रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—बलानुसार २॥ तोले तक।

गुण—प्रमेह आदि धातु दोष शीघ्र दूर होते हैं। और शरीर में बलवीर्य की वृद्धि होती है। स्त्री और पुरुष दोनों के लिये समान लाभप्रद है।

अपस्मारहरासव—देखिये स्वर्णासव नं० २।

१६ अपामार्गाद्यासव—श्वासविकारे।

(श्री० वैद्यवर नोराताराम्जी जालफ)

विधि—अपामार्ग की जड़ (अथवा पंचाङ्ग), अड़ूसे के (बासा) पत्ते, घृतकुमारी का गूदा (इसे डालने की विशेष जरूरत नहीं), केले के नरम पत्ते, जंगली बेरी की जड़ की छाल प्रत्येक ताज़े दो-दो सेर लेकर जबकुट कर ले। प्रथम गुड़ (देशी-पुराना) ४ सेर लेकर, ६ सेर जल घोल, शुद्ध चिकने मटके में भरे, पश्चात् उसमें उक्त द्रव्यों का कल्क मिला देवे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दूसरे दिन (२४ घंटे बाद) उसमें-२॥ तोले नौसादर, ५ तोले जवाखार, और १० तोले सज्जी मिला, पात्र का मुख बन्द कर रक्खे। ध्यान रहे यदि इसे बहुत तेज़ नं० १ बनाना हो तो ६ सेर जल काफ़ी है, अन्यथा १२ सेर जल मिलाने से नं० २ की होगी। मद्यांश उत्पन्न होजाने पर वारुणी यन्त्रद्वारा अर्क खींच लेवे।

मात्रा—नं० १-२ बूंद से ७ बूंद तक, और नं० २ की मात्रा १५ बूंद तक है।

गुण—श्वास पर अकसीर है। यह आसव बहुत तेज़ होने से नशा करता है, अतएव इसे पीने के ३ घंटे बाद बादाम और खसखस की ठंडाई जरूर पीनी चाहिये।

नोट—यदि अर्क न खींचना हो तो १५ दिन तक संधान कर रखने के बाद, मोटे कपड़े से छान बोतलों में बन्द कर रक्खे। इसे १ तोले तक की मात्रा से दे सकते हैं।

(धन्वन्तरि)

---

१७ अपामार्गारिष्ट—रक्तशोधक।

विधि—अपामार्ग का पंचाङ्ग ४०० तोले। (५ सेर) जवकुट कर, ४००० तोले (५० सेर) जल में पकावे। १२॥ सेर जल शेष रहने पर, उतार कर छान लेवे, पश्चात् शक्कर २॥ सेर, शहद २॥ सेर, धाय के फूल ५० तो०; इलायची, कालीमिरच, शीतलचीनी, छोटी पीपल, नागकेशर और तज प्रत्येक का ५-५ तोले महीन चूर्ण कर मिलावे। शुद्ध चिकनी मकटी में भर, मुख मुद्रा कर लगभग दो मास तक रक्खा रहने दे। पश्चात्

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छान कर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१। तोला से २॥ तोले तक। प्रातः और सायंकाल दोनों समय जल के साथ।

गुण—रक्तशोधक, मस्तिष्क की ऊष्मा, आखों की गर्मी और शरीर के किसी भी भाग से खून का गिरना बन्द होजाता है। दीमागी ताकत को बढ़ाता है। अर्शरोग (बवासीर) में जो रक्त गिरता है, उसमें यह विशेषरूप से लाभदायक है। बुद्धि को बढ़ाता है।

नोट—चिकित्सासार नामक ग्रन्थसे उद्धरण कर वैद्यराज पं० बालकृष्ण जी शर्म्मा (भूपाल) द्वारा प्रेषित इस प्रयोग को 'काकजंघारिष्ट' नाम से पुकारा गया है। किंतु इसमें काकजंघा बिल्कुल न होने से हमने इसका नाम 'अपामार्गारिष्ट' रख दिया है।

अपामार्गारिष्ट—देखिये, मयूरकाद्यरिष्ट।

अभयासव—देखिये, हरीतक्यासव।

* १८ अभयारिष्ट नं० १—अर्शादिविकार नाशक।

---

* अभयायास्तुलामेकां मृद्वीकाद्य तुलां तथा। बिडंगस्य दश पलं मधूक कुसुमस्य च॥ चतुर्द्रोणे जले पक्त्वा द्रोणमेवावशेषयेत्। शीतीभूते रसे तस्मिन् पूते गुडतुलां क्षिपेत्॥ श्वदंष्ट्रा त्रिवृता धान्यं धातकी मिन्द्रवारुणीम्। चव्यं मधुरिकां शुण्ठीं दन्ती मोचरसं तथा॥ पलयुग्ममितं सर्वं पात्रे महति मृण्मये। क्षिप्त्वा संरुध्य तत्पात्रं मासमात्रं निधापयेत्। ततो जातरसं ज्ञात्वा परिश्राव्यं रसं नयेत्॥ बलं कोष्ठञ्च वन्हिञ्च वीक्ष्य मात्रां प्रयोजयेत्। अर्शांसि नाशयेच्छीघ्रं तथाष्ठावुदराणि च। वर्चोमूत्र विबन्धघ्नो वन्हिं सन्दीपयेत्परम्॥ —भै० रत्नावली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—हरड़ ५ सेर, दाख (मुनक्का) ३॥ सेर, वायविडंग आध सेर और महुये के फूल आध सेर लेकर; जवकुट कर १ मन १२ सेर जल में २४ घंटे भीगने के बाद, मंदाग्नि पर क्वाथ विधि से पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें ५ सेर गुड़, तथा गोखरू, निसोथ, धनिया, धाय के फूल, इन्द्रायण, चव्य, मुलैठी, सोंठ, दन्तीमूल और मोचरस प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर, एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २ तो० तक।

गुण—अर्श, आठ प्रकार के उदर रोग, मलमूत्र की रुकावट तथा अग्निमांद्य नाशक है।

---

* १६ अभयारिष्ट नं. २—अर्श, ग्रहणी, पाण्डु आदि नाशक।

---

* हरीतकीनां प्रस्थार्द्धं प्रस्थमामळकस्य च। स्यात्कपित्थाद्दशपलं पलार्द्धेनेन्द्र वारुणी॥ विडंगं पिप्पली लोध्रं मरिचं सैळ वालुकम्। द्विपलांशं जलस्यैतच्चतुर्द्रोणे विपाचयेत्॥ द्रोणशेषे रसे तस्मिन् पूते शीते समावपेत्। गुडस्य द्विशतं तिष्ठेत् तत्पक्षं घृतभाजने॥ पक्षादूर्द्धवं भवेत्पेया ततो मात्रा यथा बलम्। अस्याभ्यासादरिष्टस्य गुदजा यान्ति संक्षयम्॥ ग्रहणी पाण्डु हृद्रोग प्लीह गुल्मोदरापहः। कुष्ट शोफा रुचि हरो बलवर्णाग्नि वर्द्धनः॥ सिद्धोऽयमभयारिष्टः कामलो श्वित्र नाशनः। क्रिमि ग्रन्थ्वर्बुदव्यङ्ग राजयक्ष्मज्वरान्तकृत्॥

—च० चि० अ० १४

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—हरड़ ३२ तोले, आमला ६४ तोले, कैथ की छाल ८ छटांक, इन्द्रायन की जड़ ४ छटांक (यदि इन्द्रायन के फल लेने हों तो केवल दो तोला ही लेवे), वायविडंग, पीपल, लोध, कालीमिरच और शीतलचीनी, प्रत्येक ८-८ तोले लेकर सब को जवकुट कर १ मन १२ सेर जल में क्वाथ विधि से पकावे। १३ सेर शेष रहने पर, छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें १० सेर गुड़ मिला, यथाविधि सन्धान कर १५ दिन तक सुरक्षित रखे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—शक्त्यनुसार १ तो० से २ तो० तक।

गुण—अर्श, ग्रहणी, पाण्डु, हृद्रोग, प्लीहा (तिल्ली), गुल्म, उदर रोग, कोढ़, सूजन, और अरुचि का नाशक है। बल, वर्ण और अग्नि की वृद्धि करता है, तथा, कामला; श्वेत कुष्ठ, क्रिमि, ग्रन्थि, अर्बुद, झाँई, क्षय और ज्वर को नष्ट करता है।

---

* २०-अभयारिष्ट नं. ३—प्रमेह, अर्शादे निवारक।

---

* अष्टौ पलानि वर्षाभू दशमूलार्क चित्रकात्। दन्तीश्यामा त्रिवृद्द्रास्नाश्चैवं स्युस्त्रिफलाढकम्॥ अम्बु द्रोणाष्टके पक्त्वा पादशेषे रसे स्थिते। द्वे गुडस्य तुले पूते तत्पश्चाद् घटके क्षिपेत्॥ गवां मूत्रादकं प्रस्थौ द्वावयोरजसस्तथा। विडंगं कुटजं कुष्ठं चित्रकं मरिचं वचाम्॥ संचूर्ण्य द्विपलान्यस्मिन्दत्वा मासस्थितं पिवेत्। अभयारिष्ट नामायं मेहार्शः कुष्ठ शोफहा। प्लीहपाण्ड्वामयान् गुल्मान् जठराणि च नाशयेत्॥

—गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—पुनर्नवा (बिसखपरा), दशमूल, आक, चीता, दन्ती, कालानिसोथ और रास्ना प्रत्येक ३२ तोले, तथा त्रिफला ३। सेर लेकर; जवकुट कर, २ मन २४ सेर जल में काथ विधि से पकावे। चतुर्थांश शेष रहने पर, छान कर उसे शुद्ध चिकने घड़े में भर उस में १०सेर गुड़, ३। सेर गोमूत्र, १सेर १० छटांक शुद्ध लोहचूर्ण, तथा वायविडंग, कुड़े की छाल, कूठ, पीता, कालीमिरच और बच प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले मिला, यथा विधि संधान कर, एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २॥ तोले तक।

गुण—प्रमेह, बवासीर, कुष्ठ, सूजन, प्लीहा, पांडु, गुल्म और उदर रोग नाशक है।

नोट—वास्तव में इसे पुनर्नवाद्यरिष्ट कहना चाहिये। गदनिग्रहकार ने इसे अभयारिष्ट नाम से शायद इसलिये कहा है कि यह उक्त रोगों पर अभय प्रदान करता है।

आसवारिष्ट संग्रहकार वैद्यराज जगदीशप्रसाद जी गर्ग की सूचना है कि यह अरिष्ट पित्तज-प्रमेह में हानिकारक होगा। किंतु यह हानिकारक नहीं होता। "उष्णमुष्णेन शमयेत्" इस न्याय से यह उष्ण एवं पित्तक्षोभक अरिष्ट अन्त में पित्तजन्य विकारों को शमन ही करता है, ऐसा हमारा अनुभव है।

—सम्पादक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२१—अभयारिष्ट नं० ४—सर्व उदररोग हर।

(कविराज पं० रामस्वरूप जी वैद्य शास्त्री कृत)

विधि—छोटी हरड़ ६ छटांक, पोदीना हरा १ सेर, अदरख १ पाव, सौंफ आध पाव, लाल इलायची १ पाव, ईख के रस का उत्तम पुराना सिरका १२ सेर लेकर पोदीने को छोड़ अन्य औषधियों को कुचल लेना चाहिए। पश्चात् पोदीना सहित सब औषधियों को दो सेर सिरके में, रात्रि के समय भिगो देना चाहिए। प्रातः इसी में १० सेर सिरका और मिला कर भवके में चढ़ा दे और धीमी धीमी आँच से १० बोतलें अर्क खींच लेनी चाहिए।

मात्रा—१ तो० से २ तो० तक है।

गुण—यह अभयारिष्ट सर्व प्रकार के उदररोग, गुल्मशूल, वृक्शूल (दर्द-गुर्दा), अन्तर वृक्शूल, उदरशूल, कुक्षिशूल, पार्श्वशूल, वस्तिशूल, यकृत, प्लीहा, आध्मान, अजीर्ण, मन्दाग्नि, वमन, श्वास, खांसी, उद्गार, उदावर्त आदि की महौषधि है।

(अनुभूतयोगमाला)

अभयारिष्ट नं० ५—देखिये, फलारिष्ट।

अमृत वल्ली कषाय—देखिये, प्राणामृतारिष्ट।

२२—अमृतासव नं १—वातरक्तादिनाशक।

विधि—गिलोय ५ सेर जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, छान कर चिकने पात्र में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भर देवे। ठंडा होने पर उसमें हरड़, मुलैठी, खस, आमला, देवदारु, दोनों अनंतमूल, और शीतलचीनी का चूर्ण प्रत्येक ४-४ तोले और शहद ५ सेर, धाय के फूल १३ छटांक मिला, अच्छी तरह सन्धान कर रक्खे। १ मास के बाद छान कर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक। अनुपान- जल।

गुण—वातरक्त, मधुमेह, चर्मरोग, साधारण कुष्ठ, जीर्ण-ज्वर, विसर्प, शीतपित्त नाशक है।

२३—अमृतासव नं २—जीर्णज्वर, प्रमेह आदि नाशक।

विधि—उत्तम गिलोय का शुद्ध स्वरस निकाल, उसमें चौथाई भाग रेक्टिफाइड स्प्रिट मिला, चीनी मिट्टी के पात्र में या कांच की शीशी में भर कर रख दे। १४ दिन बाद छान कर काम में लावे।

मात्रा—५ बूंद से ३० बूंद तक। अनुपान—जल।

गुण—जीर्णज्वर, क्षय, वीर्यविकार, मस्तिष्क की दुर्बलता नपुंसकता, चक्कर आना, हाथ पैरों की दाह आदि दूर होते हैं।

---

२४ अमृतबिन्दवासव—अजीर्ण, अग्निमांद्यादिनाशक।

विधि—कपूर, सत्त पोदीना, टिंचर क्लोरोफार्म प्रत्येक २-२ तो०, नवसादर, सत अजवायन, कार्बोलिकएसिड, जौहर लोबान, शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक प्रत्येक १-१ तो० (पारद गंधक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की कज्जली कर लेवे) एक शीशी में सब को मिला कर रक्खे । ४ या ७ दिन के बाद, हल होजाने पर प्रयोग करे ।

मात्रा—१ से ५ बूंद तक, किसी पाचक अर्क में मिलाकर सेवन करे ।

गुण—अजीर्ण, अग्निमांद्य, उदरशूल, विसूचिका (हैजा), दांत के दर्द आदि में लाभदायक है ।

(भै० चि० संग्रह)

---

* २९ अमृतारिष्ट नं० १—ज्वर एवं यकृत विकार नाशक ।

विधि—ताजी गिलोय ५ सेर, और दशमूल ५ सेर लेकर, जवकुट कर सब को १ मन १२ सेर जल में काथ विधि से पका कर चतुर्थांश (अर्थात् १३ सेर) जल शेष रहने पर शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें १५ सेर गुड़, १३ छटाँक श्वेतजीरा, ८ तोले पित्तपापड़ा, तथा सतौने की छाल, त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल) नागरमोथा, नागकेशर, कुटकी, अतीस, और इन्द्रजौ प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिला, यथाविधि सन्धान कर, एक मास तक सुरक्षित रक्खे । फिर छानकर बोतलों में भर कर रख दे ।

---

* अमृतायाः पञ्चशतं दशमूलीशतं तथा । चतुर्द्रोणे जले पक्त्वा कुर्यात्पादावशेषितम् ॥ शीते तस्मिन् रसे पूते गुडस्य त्रितुलाः क्षिपेत् । अजाज्याः षोडशपलं पर्पटस्य पञ्चयम् । सप्तपर्णं त्रिकटुकं मुस्तकं नागकेशरम् । कटुकातिविषाचेन्द्र यवञ्च पलसम्मितम् ॥ एकीकृत्य क्षिपेद्भाण्डे निदिध्यान्मासमात्रकम् । अमृतारिष्ट इत्येष सर्वज्वर कुलान्तकृत् ॥

—भै० रत्नावली ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—१ तो० से २ तोले तक।

गुण—सब प्रकार के ज्वर नष्ट होते हैं। जिस ज्वर में यकृत की वृद्धि हुई हो, उसमें यह अरिष्ट अमृत के समान कार्य करता है। क्षय रोगी के ज्वर को भी यह लाभ दायक है। इसकी मात्रा के साथ लाइकर आर्सेनिक २ से ५ बून्द तक मिला कर सेवन करने से ज्वर की बारी शर्तिया रुक जाती है।

---

२६ अमृतारिष्ट नं० २—ज्वर नाशक।

(वैद्यराज पं० गौरीशंकरजी आनन्द)

विधि—गिलोय ५ सेर, दशमूल (सरिवन, पिठवन, दोनों कटेरी, गोखरू, बेल, सोनापाठा, कुंभेर, पाढ़ल और अरणी इन सब की जड़) ५ सेर, चिरायता, नीमका पंचाङ्ग, पित्तपापड़ा और सुदर्शन चूर्ण १-१ सेर, सबका जवकुट चूर्ण कर, १२० सेर जल में भिगो कर क्वाथ करे। चौथाई भाग शेष रहने पर छान लेवे, और शुद्ध चिकने मटके में भर, उस में कालाजीरा ६४ तो, पित्तपापड़ा ८ तो० पटोलपात, कुटकी, सफसनतीन (मुसल्यारा) सातला (सप्तपर्ण) सोंठ, मिरच, पीपल, नागरमोथा, करंजुआ, नागकेशर, अतीस, इन्द्रजौ, हरड़, बहेड़ा, आमला, प्रत्येक ४-४ तोले, सुदर्शन चूर्ण १६ तोले, सब का चूर्ण कर मिलावे। गुड़ २० सेर घोल देवे। मुख मुद्रा-कर १ मास तक रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर देवे।

मात्रा—१ से ४ तोले तक। समान भाग जल मिलाकर सेवन करे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—ज्वर, विषमज्वर, जीर्णज्वर इत्यादि में लाभप्रद है।

(अ० चि० संग्रह)

अरलूमूलासव—देखिये, तुण्डुकासव।

* २७ अरविन्दासव नं०१—बाल रोग नाशक।

विधि—कमलपुष्प (श्वेत अथवा लाल), खस, खम्भारी के फल (गम्भारी की छाल लेना उत्तम है), नीलोफ़र (कुमुद-पुष्प), मजीठ, छोटी इलायची, खिरैंटी, जटामांसी (बालछड़) नागरमोथा, अनन्तमूल, हरड़, बहेड़ा, आमला, बच, कचूर, काली सारिवा (श्यामा से यहाँ कोई २ निसोथ ग्रहण करते हैं, किन्तु इस प्रयोग में निसोथ डालने से, इस आसव का पुष्टि-कारक गुण कम होजाता है, ऐसा हमारा अनुभव है) जंगली नील (सरफोंका), परवल के पत्ते, पित्त पापड़ा, अर्जुन की छाल, मुलैठी, महुआ, मुरामांसी (मुरमुकी) प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले तथा १ सेर मुनक्का, १३ छटाँक धायके फूल, ५

---

* अरविन्द मुशीरं च काश्मरीं नीलमुत्पलम्। मंजिष्ठैला बला मांसी रस्नुदं सारिवां शिवाम्॥ विभीतक वचा धात्रीः शठी श्यामां सनीलिनीम्। पटोल पर्पटं पार्थं मधूकं मधुकं मुराम्॥ पल मानेन संगृह्य द्राक्षायाः पल विंशतिम्। धातकीं षोडशपलां जलद्रोणद्वयेक्षिपेत्॥ शर्करायास्तुलां तत्र तुलार्धं माक्षिकस्य च। मासं संस्थापयेट् भाण्डे मृत्तिकापरिनिर्मिते॥ बालानां सर्वरोगघ्नो बलपुष्ट्याग्निवर्द्धनः। अरविन्दासवः प्रोक्त आयुष्यो ग्रह दोष हृत्॥

—भै० रत्नावली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सेर शक्कर, २॥ सेर शहद और २६ सेर जल, सब को एकत्र मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर, यथाविधि सन्धान कर, एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ से ३ मास के बच्चे को १० बून्द, ३ मास से १ वर्ष तक के बच्चे को ३० बून्द तक, १ से ५ साल तक के बच्चे को १ तोला तक, ५ साल से अधिक उमर वाले को दो तोला तक, प्रतिबार दूध में मिला कर सेवन करावे। बड़े बच्चों को जल के साथ देवे।

गुण—बालकों के समस्त रोगों पर उत्तम लाभदायक है। बल, पुष्टि, आयु एवं अग्नि को बढ़ाने वाला, सूखा रोग, पसली चलना (डिब्बा रोग), खांसी एवं अतिसार नाशक तथा ग्रहदोष निवारक है।

२८—अरविन्दासव नं २—(राजीव कुमुद)—बालरोगनाशक।

(वैद्यराज उमादत्त जी मिश्र, मिर्जापुर)

विधि—कमल के फूल १०० नग और संतरे का रस ४० तोले एकत्र मिला, शुद्ध मटके में भर, २४ घंटे रखने के बाद, मलकर, साफ़ वस्त्र से छान, चीनी—मिट्टी के पात्र में भर कर उसमें—जवासे का अर्क २५ प्रतिशत् (देखो नोट नीचे) ४० तोले, तथा मुनक्का, सूखे आंवले, मुलैठी, सफेद अतीस, काकड़ासिंगी, नागरमोथा, बड़ी पीपल, कुटकी और प्याज का रस इन ८ द्रव्यों को एकत्र मिला २५ प्रतिशत वाला अर्क ४० तोले, शहद २ पाव, और मृतसंजीवनी—सुरा आध पाव मिला कर पात्रका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा--२० बूंद से १ तोला तक। आवश्यकतानुसार या दिन में दो बार।

गुण—बालकों के सम्पूर्ण रोगों को नष्ट कर, उन्हें हृष्ट पुष्ट बनाता है।

नोट—फल, फूल, पत्रादि शुष्क द्रव्यों में ६ गुना जल तथा शुष्क काष्ठ द्रव्यों में ८ गुना जल मिला, २४ घंटे तक भिगोकर भवके के द्वारा अर्क खींचे, जब अर्क द्रव्य से चौगुना खिंच आता है, तब वह २५ प्रतिशत कहलाता है।

२९—अरितमंजर्यासव—श्वास, कास नाशक।

(श्री० पं० श्यामनारायण जी चतुर्वेदी, वैद्यराज)

विधि—जड़ सहित * अरित मंजरी (मुक्तवर्च्चा) के ७॥ तोले पंचाङ्ग को, २॥ पाव स्प्रिट में मिलाकर, कागदार बोतल में ७ दिन तक रक्खे, तथा प्रतिदिन दो तीन बार हिला दिया करे। फिर छान कर, और उसमें २॥ पाव स्प्रिट मिलाकर दूसरी कागदार बोतल में कर रख दे।

मात्रा—१० से ३० बूंद तक, शहद में मिला कर दिन में २—३ बार सेवन करावे।

---

* इसे हिन्दी में मुक्तवर्च्चा, कुप्पी, मराठी में—खोखली, गुजराती में बिछकांटा और बंगला में—मुक्तझुरी कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण--श्वास कास को शीघ्र भगाता है।

(धन्वन्तरि-बूंटी-अंक)

३०—अरितमंजर्यारिष्ट—(स्वकृत)-श्वास कास नाशक।

विधि—अरितमंजरी के कोमलपत्र, डंठल और पुष्प एकत्र ५ सेर तक लेकर, जवकुट कर, क्वाथ विधि से १ मन १२ सेर जल में पकावे। चतुर्थांश शेष रहने पर छान कर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें-१२ सेर गुड़, १३ छटांक धाय के फूल तथा अतीस, काकड़ासिंगी, हरड़, बहेड़ा, और आमला प्रत्येक का चूर्ण ४-४तोले मिला, एक मास तक यथाविधि सन्धान कर रक्खे। पश्चात् छान कर, बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—छोटे बच्चों को २० से ६० बूंद तक, बालक तथा बड़ों को १ तोले से २ तोले तक, दूध या जल के साथ देवे।

गुण—कास और श्वास को शीघ्र दूर करता है।

अरिष्टकासव—देखिये, सर्पविषहरासव।

३१—अरिष्टफलाद्यासव—वातपीड़ा शामक।

(श्री० स्वामी चैनदास जी वैद्यराज)

विधि—नीम के हरे फल २५ तोले, बच्छनाग विष २५ तोले, लहसुन १० तोले और कपूर ४० तोले, इन सब को कूट पीस कर, प्रसारिणी के १ मन क्वाथ जल में डाल शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें ३० बूंदे खटाई के तेजाब की मिला, पात्र का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

मुख बन्द कर, खाद के ढेर में गाड़ देवे। १५ दिन के बाद, निकाल कर यन्त्र से अर्क खींच लेवे। जब सब अर्क खींच चुके, तब उस अर्क को पुनः यन्त्र में डाल, इसीप्रकार दूसरी बार और अर्क खींच शीशी में भर कर रखले।

व्यवहार—शरीर पर मालिश करे।

गुण—अत्यन्त तीव्र बात की पीड़ा को शीघ्र शान्त करता है।

(भ० योगमाला)

---

३२ अर्कासव—हैजा नाशक।

(श्री० डा० रामगोपालजी मिश्र, वैद्यशास्त्री)

विधि—आक की जड़ को महीन पीसकर २॥ तोला कल्क तयार करे, फिर उसमें रेक्टीफाइडस्प्रिट पानी मिली हुई २३ तोले मिला, बोतल में भर, मुख बन्द कर, दो दिन या १ दिन रख कर, पुनः छानकर शीशीयों में भर कर रखले।

मात्रा—अवस्था विशेष में १ बूंद, सोंठ के ४ रत्ती चूर्ण के साथ या केवल जल से १-१ घंटे के अन्तर से ३। ४ बार देवे।

गुण—हैजे पर अपूर्व लाभदायक है। पेट में जलन, वेदना के साथ दस्तों का होना, शरीर में कनकनाहट, आक्षेप आदि लक्षण हों तथा चेहरे का रंग बदल गया हो, आंखें धंसी हुईसी होगई हों, शरीर ठंढा मालूम होरहा हो, स्वर विकृत होगया हो, हाथ पांव में भड़कन, नाड़ी की क्षीणता आदि उपद्रवों की अवस्था में यह अमोघ रामबाण बत् कार्य करता है। इसे ब्रांडी या सामन्य मदिरा में भी बनाकर काम में ला सकते हैं। इसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

केवल ३ या ४ बार ही देना चाहिये। अधिक उपयोग नहीं करना चाहियें। यह अपना गुण प्रथम या द्वितीय बार में ही दिखा देता है।

(धन्वन्तरि)

३३-अर्कासव—शूलादि नाशक।

(श्री पं० त्रिभुवननाथ वैद्य, भिषग्रत्न)

विधि—अर्क (आक-मदार) के पत्ते ५ सेर, अदरख, छोटी पीपल, कालीमिरच, हरड़, बहेड़ा, आंवला, चित्रक, नागरमोथा, सफेदजीरा, धनिया, अजवायन, लहसुन, हल्दी, दारुहल्दी, सोंफ, सनाय की पत्ती, सैंधानमक, और बायबिडंग, प्रत्येक १—१ सेर तथा सोराकलमी, काला जीरा, सफेद फिटकरी पीपलामूल, और कसीस, प्रत्येक आध-आध सेर, लेकर सब को जवकुट कर मिट्टी के पात्र में डाल, उसमें, दो मन पक्का जल डालकर, मुख-मुद्रा कर देवे। ३ दिन के बाद भबके से अर्क खींच कर बोतलों में भर कर रख दे। २५ बोतल आसवार्क निकाले।

मात्रा—१ से २ तोले। थोड़ा सैंधा नमक मिला कर सेवन करे। जवान बच्चे को आधा तोला देवे। बलावल देखकर ५ तोले तक की मात्रा से शूल रोगी को दिया जा सकता है।

गुण—शूल, प्लीहा, यकृत, रक्तगुल्म, वातगुल्मादि उदर सम्बन्धी समस्त रोगों पर बिजली के समान गुण करता है।

(धन्वन्तरि)

नोट—प्रयोग लेखक ने इसका नाम पारिजातकार्क रक्खा है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३४ अर्जुनारिष्ट नं० १—हृदय को बलदायक।

(वैद्यराज गौरीशंकरजी आनन्द, हरिपुर)

विधि—अर्जुन की छाल १० सेर, द्राक्षा ५ सेर, महुये के फूल दो सेर लेकर जबकुट कर, ३ मन १६ सेर जल में मिला, १२ घंटे के बाद क्वाथ करे। चौथाई भाग शेष रहने पर छान कर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें १० सेर गुड़, २ सेर धाय के फूल, तथा मुलैठी, छोटी इलायची, आमला, सफेद चन्दन, गाजवाँ के फूल प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोले मिला, पात्रका मुख अच्छी तरह बन्द कर ऋतु अनुसार ३० दिन या १५ दिन तक भूसे में दबाकर रक्खे। बाद सिद्ध होने पर, निकाल कर, छान कर, काली बोतलों में भर कर रख दे। ध्यान रहे पूरी बोतल न भरकर बोतल का तिहायी भाग ही भरे। ७ दिन बाद दूसरी बोतलोंमें सावधानी से डाले, जिसमें बोतल की तलैटी में बैठा हुआ मैल दुबारा दूसरी बोतलों में न चला जावे। इसीप्रकार ७ दिन बाद फिर छान लेवे। पश्चात् काम में लावे।

मात्रा—१ तोले से ४ तोले तक। अनुपान-जल, या शर्बत गावजवाँ, सन्दल आदि में मिला कर सेवन करावे।

गुण—हृदय को बल देता है। कास, श्वास, क्षय, हृदय की निर्बलता, धकड़न आदि में उत्तम लाभदायक है।

(अनुभूत-चिकित्सा संग्रह)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३५ अर्जुनारिष्ट नं० २—हृद्रोग नाशक।

(श्री बालकृष्णजी शर्म्मा वैद्यराज भोपाळ)

विधि—अर्जुन की छाल १० सेर, असगंध का पंचाङ्ग ५ सेर, कंटकारी पंचाङ्ग १। सेर, कसौंदी पंचाङ्ग १। सेर, वासा पंचाङ्ग १। सेर और मधूक पुष्प (महुये के फूल) १। सेर, लेकर, सब को जबकुट कर, १० गुने जल में डाल क्वाथ करे। चौथाई भाग शेष रहने पर मोटे कपड़े से छान लकड़ी के शुद्ध पीपे में भरे, और उसमें ५० तोले धाय के फूल तथा दालचीनी, इलायची, नागकेशर, लौंग, सोंठ, मिरच, पीपल, प्रत्येक का चूर्ण १०-१० तोले, कपूर ३ तोले, और पुराना गुड़ १५ सेर मिला कर (गुड़ को अच्छी तरह घोल देवे), पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १॥ मास तक सुरक्षित रक्खे। किन्तु बीच में दस २ दिन के बाद हिला दिया करे। पश्चात् सावधानी से मुख खोलकर ऊपर का स्वच्छ जल निथार या छानकर बोतलों में भर लेवे। यह जितना ही पुराना होगा, उतना ही गुणकारी होगा।

मात्रा—१ तो० से ३ तोले तक, दुगुने जल के साथ।

गुण—हृदय के सम्पूर्ण रोग, दर्द, उरःक्षत, खांसी और फुफ्फुस आदि के विकारों पर रामबाण है।

(अ० योगमाळा)

---

३६ अर्जुनारिष्ट नं० ३—(स्वकृत) मधुमेह नाशक।

विधि—अर्जुन की छाल १ सेर, तथा आम की छाल, खैर की छाल, कुड़े की छाल, बेल की छाल, सेमर की छाल, आमले की गिरी, वासा (अड़ूसा) के पत्ते, मरोड़फली, बबूल की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फली, पठानी लोध, अनार की बकली, बायविडंग, नागरमोथा, महुआ और पीपल की लाख प्रत्येक १०-१० तोले तथा जामुन की छाल, और गूलर की छाल प्रत्येक २०-२० तोले, लेकर सब को जवकुट कर, दो मन २४ सेर जल में क्वाथ विधि से पकाकर, चतुर्थांश शेष रहने पर, छान कर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें-१ सेर धाय के फूल, तथा जामुन की गुठली, जायफल, कालीमुसली, लौंग, नागकेशर, नागरमोथा, और धनिया प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले मिला कर, यथाविधि सन्धान कर, एक मास तक सुरक्षित जमीन में गाड़ कर रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २॥ तोले तक।

गुण—मधुमेह को शीघ्र दूर करता है। मस्तिष्क की कम-ज़ोरी पर भी उत्तम लाभदायक है।

अर्जुनारिष्ट नं० ४—देखिये, पार्थाद्यरिष्ट।

* ३७—अशोकारिष्ट नं १—रक्तप्रदरादिनाशक।

---

* अशोकस्य तुलामेकां चतुर्द्रोणे जले पचेत्। पादशेषे रसे पूते शीते पलशतद्वयम्॥ दद्याद् गुडस्य धातक्याः पलषोडशिकं मतम्। अजाजी मुस्तकं शुण्ठी दार्व्युत्पल फलत्रिकम्॥ आम्रास्थि जीरकं वासा चन्दनं च विनिक्षिपेत्। चूर्णयित्वा पलांशेन ततो भाण्डे निधापयेत्॥ मासादूर्ध्वञ्च पीत्वैनमसृग्दररुजां जयेत्। ज्वरं च रक्तपित्तार्शो मन्दाग्नित्वमरोचकम्॥ मेह शोथारुचिहरस्त्वशोकारिष्ट संज्ञितः॥

—भै० रत्नावली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—अशोक की छाल ५ सेर (अशोक वृक्ष के तने की उस छाल को लेना चाहिए, जिसके ऊपर की सुर्दार छाल छील कर अलग कर दी गई हो) जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में काथ विधि से पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, छान कर, शुद्ध चिकने घड़े में भरे, और ठंडा हो जाने पर, उसमें-१० सेर गुड़ अच्छी तरह घोल कर मिलावे, तथा १३ छटांक धाय के फूल, कालाजीरा, नागरमोथा, सोंठ, दारुहल्दी, नीलोफर (नील कमल), हरड़, बहेड़ा, आमला, आम की गुठली की गिरी, सफेद जीरा, बासा (अडूसा) और श्वेतचन्दन प्रत्येक का चूर्ण ४-४तोला मिला कर, यथाविधि सन्धान कर, १ मास तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छान कर, बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २ तो० तक, विशेष अवस्था में इसे ४ तोले तक भी देते हैं।

गुण—रक्तप्रदर, ज्वर, रक्तपित्त, बवासीर, मन्दाग्नि, अरुचि, प्रमेह, सूजन, आर्तव सम्बन्धी रोग, उदर, कटि एवं पेड़ू का दर्द, गर्भस्राव-विकार, निर्बलता आदि स्त्रियों के कतिपय विकारों के लिये रामबाण है। यदि यह अरिष्ट १ तो० और कुटजारिष्ट १ तो० एकत्र मिला, समभाग ताजे जल के साथ प्रातः सायं सेवन कराया जाय तो सब प्रकार के प्रदर २१ दिन में दूर होजाते हैं।

३८—अशोकारिष्ट नं २—स्त्रीरोग हारक।

(राजवैद्य डा० इन्द्रदत्त जी शर्म्मा)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—अशोक की छाल ५ सेर, बासे (अड़ूसा) के पत्ते आध सेर, अड़ूसे के फूल, गूलर की छाल, कमलपुष्प, शतावर का स्वरस, पीपल की लाख प्रत्येक १-१ सेर, लक्ष्मणा, काला-जीरा, सफेद जीरा, नागरमोथा, नागकेशर, सोंठ, छोटी इलायची के बीज, शिवलिङ्गी प्रत्येक ५-५तोले, हरड़, बहेड़ा, आमला प्रत्येक १-१ पाव, उत्तम मधु ५ सेर और पुराना गुड़ ५ सेर लेकर, प्रथम काष्टादिक औषधियों को जवकुट कर, एक मन जल में काथ विधि से पकावे, चतुर्थांश शेष रहने पर, छान कर, उसमें शतावरीक स्वरस, गुड़ और मधु मिला, किसी शुद्ध चिकने मटके में भर, मुख मुद्रा कर, जमीन में गाड़ देवे। ४० दिन बाद निकाल कर छान ले, और बोतलों में भर, १० दिन धूप में रक्खे। पश्चात् पुनः छान कर भर कर रख दे।

मात्रा--१ तो० से २ तो० तक। अनुपान-आवश्यकतानुसार, अथवा शुद्ध जल।

गुण—अनुपान भेद से स्त्रियों के सम्पूर्ण रोगों पर सेवन कराया जाता है। तत्काल अपना चमत्कारी प्रभाव दिखलाता है। साधारणतया सब प्रकार के प्रदर, योनिविकार, संतान का न होना अथवा हो होकर मर जाना, मासिक ऋतु की खराबी आदि पर उत्तम है।

(धन्वन्तरि-सिद्धयोगांक)

३९—अशोकारिष्ट नं० ३—स्त्री-रोग-नाशक।

(स्वर्गीय पं० सोहनलाल जी रसवैद्य)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—अशोक की छाल ३ सेर लेकर, १८ सेर जल में क्वाथ करे। ६ सेर जल शेष रहने पर, छान कर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें-४ सेर गुड़, १० तोले धाय के फूल, ३ तोले त्रिफला, तथा लोध, दशमूल, बिदारीकंद, नागकेशर, बनपसा, असगंध, गुलाब के फूल, बासा (अड़ूसा), कमल, जीरा, मजीठ, शतावरी, और पीपल प्रत्येक का चूर्ण १-१ तोला, तथा बाजारू सुरा (मद्य) एक तोला, सब को मिला कर, मुख बन्द कर, ५ या ६ दिन तक सुरक्षित रक्खे, पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—आधा तोला से एक तोला तक। अनुपान-दूध, अथवा ताजा जल। प्रातः सायं देवे।

गुण—प्रदर, सोम रोग, गर्भस्राव, योनिविकार, मासिक-विकृति आदि, स्त्रियों के सब विकारों को दूर करता है।

(अ० योगमाला)

४०—अशोकारिष्ट नं० ४—स्त्री रोग हारक।

(वैद्यराज पं० बलवंत जी शर्म्मा)

विधि—अशोक की छाल १५ सेर लेकर जवकुट कर, क्वाथ विधि से, सोलह गुने जल में पकावे। चतुर्थांश शेष रहने पर, छान कर, शुद्ध चिकने घड़े में भरे और उसमें ४० सेर शुद्ध देशी शक्कर तथा कमल के फूल, चमेली के फूल, शतावरी, असगंध, खिरेंटी की जड़, आमके नवीन लाल पत्ते, जामुन की गुठली की गिरी, अड़ूसे की जड़ की छाल, सफेदजीरा, कालाजीरा, श्वेत-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चन्दन का बुरादा, नागरमोथा, सोंठ, दारुहल्दी, कपूरकचरी, गूलर की जड़ की छाल, सेमल के फूल और कत्था, प्रत्येक १-१ पाव कूट पीस कर मिला देवे; और पात्र का मुख खूब मज़बूत बांध, कपड़ मिट्टी कर, गरम जगह में रखे। हर सप्ताह (प्रति ७ वें दिन) खूब ज़ोर से हिला देना चाहिए। बाद १ माह के निकाल, छान कर स्वच्छ अरिष्ट सुन्दर बोतलों में भर कर रख दे। पश्चात् १॥ या २ मास के बाद, इन बोतलों का अरिष्ट निथर कर, ऊपर साफ़ होजावेगा, किट्ट तलभाग में बैठ जावेगा, तब अन्य बोतलों में धीरे से शुद्ध साफ़ अरिष्ट निथार कर भर लेवे और गंदला भाग फेंक देवे।

मात्रा—१ तो० से २ तो० तक, २॥ तोले जल में मिला कर दे। दिन रात में दो बार। भोजन करने के एक घन्टा बाद पिलाना चाहिये।

गुण—सब प्रकार के प्रदर, हिस्टीरिया (योषापस्मार), सोम रोग, मासिकधर्म-विकृति चेहरे का पीलापन, अशक्ति, सिर का चकराना, मगज़ और कमर की पीड़ा, हाथ पाँव और आँखों की जलन, तालू का सूखना, मूर्च्छा, दुःस्वप्न देखना, ज्वर, रक्त पित्त, रक्तार्श मदाग्नि, अतिसार, संग्रहणी, खूनीदस्त ये सब रोग दूर होते हैं।

पथ्यपालन—अजीर्ण में भोजन, मैथुन, विशेष मार्ग चलना, शोक, उपवास, बोझ उठाना, दिनका सोना, दही, खटाई; गरिष्ठ पदार्थ, बाजार की मिठाई इत्यादि से सख्त परहेज़ करना चाहिए।

(बूटीदर्पण)

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४१ अशोकारिष्ट नं० ६--प्रदरादि नाशक।

(वैद्यराज गौरीशंकरजी आनन्द, हरीपुर)

विधि—अशोक की छाल ५ सेर, लोध २॥ सेर, शतावर, असगंध, कुड़े की छाल और मुलैठी प्रत्येक १०—१० छटाँक लेकर, महीन चूर्ण कर, ८० सेर जल में भिगो २४ घन्टे बाद क्वाथ करे। चौथाई भाग शेष रहने पर, छानकर शुद्ध चिकने मटके में भरे, और उसमें ८ सेर गुड़, १ सेर धाय के फूल तथा सोंठ, कालाजीरा, नागरमोथा, दारुहल्दी, हरड़, बहेड़ा, आमला, आमकी गुठली की गिरी, सफेदजीरा, अड़ूसा (बासा), सुपारी, माजूफल, लालचन्दन, भांग, नागकेशर, और रसौत प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले, पुष्यानुग चूर्ण * ३२ तोले, इन सब को मिला कर, पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक।

गुण—रक्तप्रदर, श्वेतप्रदर, क्षीणता, तथा गर्भाशय के रोगों पर उत्तम लाभदायक है।

(अ० चि० संग्रह)

---

* पाठा, जामुनकी गुठली की गिरी, आमकी गुठली की गिरी, पाखानभेद, रसौत, अम्बष्ठा, मोचरस, मजीठ, कमल केसर, केसर, अतीस, नागरमोथा, बेलगिरी, लोध, गेरू, कायफल, काळीमिरच; सोंठ, सुनक्का, लालचन्दन, सोनापाठा (अरलू) की छाल, इन्द्रजौ, अनन्तमूल, धाय के फूल, मुलैठी और अर्जुन की छाल, इन सब को 'पुष्य नक्षत्र' में संग्रह कर, समान भाग एकत्र कर चूर्ण करे। इस ही "पुष्यानुगचूर्ण" कहते हैं।

—संपादक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अशोकारिष्ट नं० ६—देखिये, रमणीसुधासव।

* ४२ अश्वगन्धारिष्ट नं० १—मूर्च्छापस्मारादि नाशक।

विधि—नागौरी असगन्ध २॥ सेर, सफेदमुसली १ सेर तथा मजीठ, हरड़, हल्दी, दारुहल्दी, मुलैठी, रास्ना; विदारीकंद, अर्जुन की छाल, नागरमोथा, निसोथ, ये प्रत्येक आध-आध सेर, श्वेत अनन्तमूल; काली सारिवा (मूल में श्यामा पद है, इससे कोई श्यामलता या कोयल ग्रहण करते हैं। हमारे मत से कृष्ण सारिवा ही इस स्थान में विशेष गुणदायक है), श्वेतचन्दन, लालचन्दन, मीठीवच और चीते की जड़ की छाल ये प्रत्येक ३२-३२ तोले लेकर, सबको जवकुट कर, क्वाथ विधि से, २ मन २४ सेर जल में पकावे। अष्टमांश अर्थात् १३ सेर जल शेष रहने पर; छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर दे। और ठंढा हो जाने पर उसमें १० सेर शहद, १३ छटाँक धायके फूल, तथा

---

* तुलार्धं चाश्वगन्धाया मुसल्याः पल विंशतिः। मंजिष्ठाया हरीतक्या रजन्योर्मधुकस्य च॥ रास्ना विदारी पार्थानां मुस्तक त्रिवृतारपि। भागान् दशपलान् दद्यादनन्ताश्यामयोस्तथा॥ चन्दन द्वितयास्यापि वचायाश्चित्रकस्य च। भागानष्टपलान् क्षुण्णानष्ट द्रोणेऽम्भसः पचेत्॥ द्रोणशेषे कषायेऽस्मिन् पूते शीते प्रदापयेत्। धातक्याः षोडशपलं माक्षिकस्य तुला द्वयम्॥ व्योषस्य द्विपलं चापि त्रिजातक चतुःपलम्। चतुःपल प्रियंगोश्च द्विपलं नागकेशरम्॥ मासादूर्ध्वं पिबेदेनं पलार्धं परिमाणतः। मूर्च्छामपस्मृतिशोषमुन्मादमपि दारुणम्॥ कार्श्यमर्शांसि मन्दत्व भग्नेर्वातिभवान् गदान्। अश्वगंधाद्यऽरिष्टोयं पीतो हन्यादसंशयम्॥

—भै० रत्नावली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सोंठ, मिरच, पीपल और नागकेशर प्रत्येक ८-८ तोले. दालचीनी; छोटी इलायची, पत्रज और प्रियंगु प्रत्येक १६-१६ तो० इन सब का चूर्ण कर मिलावे। पात्रका मुख यथाविधि सन्धान कर, एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक। जल या दूध के साथ।

गुण—मूर्च्छा, मृगी (अपस्मार), क्षय, उन्मादादि मस्तिष्क सम्बन्धी विकार, कृशता, बवासीर, मन्दाग्नि, वातरोग, वीर्य दोष, नपुंसकता आदि नाशक है।

ताक़त एवं पुष्टी के लिये इसे ५ से १० तो० तक गाय के गरम दूध में मिला कर हिलावे। जब दूध फट जाय तब उसे छानकर मिश्री मिला कर सेवन करे, शीघ्र ही बल वीर्य की पुष्टी होती है। इसके सेवन से स्नायुतन्तु सबल होकर, शरीर के सब यन्त्र बलवान होते हैं। रज एवं वीर्य की शुद्धि होकर गर्भोत्पादक कीटाणु पुष्ट होते हैं।

निर्बल एवं कृश बालकों पर भी इसका प्रयोग उत्तम लाभदायक देखा गया है। बालकों को न्यून मात्रा में देना चाहिये यथा-१ माह से ३ माह तकके बालक को ५ से १० बून्द तक,

३ „ „ २ साल „ „ „ १० से ३० „ „
२ साल „ ५ साल „ „ „ ३० से ६० „ „
५ „ „ १२ „ „ „ „ १ तोला तक।

दूध के अनुपान से देवे।

हिस्टोरिया (योपापस्मार) में इसके साथ योगराज गग्गुल देने से शीघ्र लाभ होता है। प्रसूतज्वर, एवं सूतिका रोगों में इसकी उचित मात्रा के साथ दशमूलारिष्ट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिश्रण कर, समभाग जल मिलाकर भोजन के पश्चात् सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है।

---

* ४३ अश्वगंधारिष्ट नं० २—क्षयरोग नाशक।

विधि—इसे प्रस्तुत करने की बिधि उपर्युक्तानुसार ही है। केवल फर्क इतना ही है कि-रास्ना, बिदारीकंद और अर्जुन की छाल इसमें नहीं डाली गई है। शेष सब द्रव्य अश्वगंधारिष्ट नं०१ के अनुसार ही लेकर, काथ्य जल १२ मन ३२ सेर डाल, पकावे। अवशिष्ट जल अष्टमांश अर्थात् ६४ सेर रहने पर उसमें प्रक्षेप द्रव्य-धाय के सूखे फूल ४ सेर, शहद ३८ सेर, छोटी इलायची ६४ तोले, शेषत्रिजात, त्रिकुटा, प्रियंगु और नागकेशर का प्रमाण ऊपर (नं० १) में कहे अनुसार ही मिला यथाविधि एक मास तक अच्छी तरह सन्धान कर रखने के पश्चात् छान लेवे और उसमें ३ तोले 'स्वर्णद्रुति' मिलाने को कहा गया है।

स्वर्णद्रुति की विधि—३ तोले शुद्ध स्वर्ण को आतशी शीशी में डाल स्पिट लेम्प पर गरम करे। स्वर्णका चतुर्थभाग नमक और शोरे का तेजाब, बहुत धीरे २ तथा बहुत थोड़ा २ करके उस वक्त तक दूर से डालते रहे, जब तक संपूर्ण स्वर्ण पिघल न जाय। पिघलने पर, ४ तो० सैंधानमक का चूर्ण और डाले, जब जल सूख जाय और स्वर्ण का रंग नारंगी के समान

---

* यह एक नवीन प्रकार, जिसमें अरिष्ट के साथ स्वर्णद्रुति का मिश्रण किया जाता है, श्रीमान् रसवैद्य शास्त्री पं० भैरवलाल जी ने प्रकाशित कराया है। यह प्रयोग विचारणीय है।

—संपादक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मालूम होने लगे, तब शीशी को उतारकर स्वर्ण-लवण निकाले। यही "स्वर्ण-द्रुति" तैयार हो गई। इसे उक्त अश्वगंधारिष्ट में मिला बोतलें भर कर रख लेवे।

मात्रा—रोगी के बलानुसार ६ माशे से दो तोले तक।

गुण—क्षय में अत्यन्त हितकर है।

(धन्वन्तरि)

४४—अश्वगंधारिष्ट नं० ३—स्मरणशक्ति की वृद्धि के लिये।

विधि—असगंध १ पाव, ब्राह्मी १ पाव, शंखपुष्पी १ पाव, तीनों को १२ सेर जल में डाल कर पकावे। ३ सेर जल शेष रहने पर, उसे अच्छी तरह मल कर छान लेवे, फिर उसमें ३ सेर अंगूर का रस और दो सेर मिश्री मिलाकर पकावे। जब पक कर ६॥ सेर शेष रह जाय, तब उतार कर, उसमें ३०।० रेक्टिफाइड स्प्रिट मिला कर बोतलों में बन्द कर रख देवे। ७ दिन के बाद काम में लाना चाहिए।

मात्रा— २॥ तोला, अनुपान जल।

गुण—नष्ट हुई स्मरण शक्ति की वृद्धि होती है। यद्यपि आयुर्वेद में स्मरण शक्ति को बढ़ाने वाली सैंकड़ों औषधियाँ हैं, परन्तु इसका शतांश भी वे लाभदायक नहीं होतीं। यदि इसका सेवन करते समय, छोटी इलायची १०, बादाम की मींग दो तोला तथा सौंफ १ तो० सब को एकत्र पीस छान कर और उसमें शुद्ध खांड डाल कर, आध पाव जल में ठंडाई बना कर संध्या के समय पीवे और यथेष्ट आहार करे तो बलवीर्य और स्मरणशक्ति की अत्यन्त वृद्धि होती है।

("वैद्य"—से उद्धृत)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

४९—अश्वगन्धारिष्ट नं० ४—हिस्टीरिया, मूर्छादिनाशक।

(वैद्यराज गौरीशंकर जी आनन्द, हरीपुर)

विधि—असगंध ५ सेर, मुसली २ सेर, शतावर, मजीठ, हरड़, हल्दी, दारुहल्दी, मुलैठी, रास्ना, बिदारीकन्द, नागरमोथा, अर्जुनकी छाल, निशोथ, बालछड़, नेत्रवाला और मुनक्का प्रत्येक १-१ सेर, तथा सारिवा, श्वेतचन्दन, लालचंदन, बच और पिप्पली प्रत्येक ३२-३२ तोले, सब का यवकुट चूर्ण कर, ६ मन १६ सेर जल में भिगो, १२ घंटे के बाद क्वाथ करे, ३२ सेर शेष रहने पर, छान ले, और ठंडा होने पर, शुद्ध मटके में भर, उसमें धाय के फूल १२८ तोले, शहद ३० सेर, त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल) १६ तोले, तथा दारचीनी, इलायची, तेजपात और प्रियंगु प्रत्येक ३२-३२ तो० नागकेशर, गम्भारी के फल १६-१६ तोले, बिदारीकंद, गोखरू, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, अतीस, काकड़ासिंगी, सौंफ और द्राक्षा (मुनक्का) प्रत्येक ८-८तोले, सब का चूर्ण कर मिलावे और १ मास तक, यथाविधि सन्धान कर रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक। अनुपान—सौंफ का अर्क या शुद्ध जल।

गुण—रसायन है। मूर्च्छा, वातरोग, हिस्टीरिया, बालशोष आदि में लाभकारी है।

(अ० चि० संग्रह)

नोट—यह अश्वगंधारिष्ट नं० ४, उत्तम स्वादिष्ट, एवं शीघ्र गुणदायक है।

—संपादक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४६—अश्वगंधारिष्ट नं० ६—प्लेग तथा ज्वरों पर लाभकारी।

विधि—असगन्ध १ पाव, नीम की छाल १ पाव, सोंठ, मिरच, पीपल और चिरायता प्रत्येक २॥—२॥ तोले, गिलोय ५ तो०, भटकटैया की जड़ ५ तो०, बिसौंटा ५ तो० सब को एकत्र कर (जवकुट कर), १६ सेर जल में डाल कर पकावे। ३ सेर जल शेष रहने पर, अच्छी तरह मल कर छान लेवे। फिर एक कलई की हुई कढ़ाईमें डाल और उसमें आधसेर शहद मिलाकर पकावे। जब पक कर दो सेर प्रमाण शेष रह जाय, तब उतार कर छान लेवे और उसमें १००/० (प्रतिशत १० के प्रमाण से) रेक्टिफाइड स्प्रिट मिला, बोतलों में भर कर एक मास तक रखा रहने देवे।

मात्रा—१० बूंद से आधा तोला तक। अनुपान जल।

गुण—कैसा ही प्लेग क्यों न हो, दूर हो जाता है। प्लेग के मौसम में १०—१५ बूंद नित्य सेवन करते रहने से, उसके आक्रमण का भय नहीं रहता। इसके द्वारा मलेरिया ज्वर तथा अन्य सब प्रकार के ज्वर, शीतज्वर, सन्निपात आदि भी दूर होते हैं।

———— ("वैद्य" से उद्धृत)

४७—अश्वत्थारिष्ट—(स्वकृत) कुष्ठनाशक।

विधि—अश्वत्थ वृक्ष (पीपल) की ताजी छाल ५ सेर और खैर की छाल २॥ सेर, कूट कर, १ मन १२ सेर जल में काथ करे। चतुर्थांश अर्थात् १३ सेर जल शेष रहने पर, छान लेवे, और उसमें—धाय के फूल, हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, काली मिरच, पीपल, हल्दी, दारुहल्दी, नागरमोथा और गिलोय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रत्येक ३२-३२ तोले सब का चूर्ण कर मिट्टी के चिकने पात्र में भर, यथा योग्य सन्धान कर, एक महीने तक रक्खा रहने देवे पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ से ४ तोले तक। जल के साथ देवे!

गुण—महाकुष्ठ तथा साधारण कुष्ठ दूर होकर शरीर कांतिमान होता है। अर्श, भगंदर, प्रमेह, कास, श्वास और क्षय पर भी यह लाभदायक है।

---

* ४८ अष्टशतोऽरिष्ट—शोथादि नाशक।

विधि—खम्भारी (गंभारी) के फल, आमला, कालीमिरच, हरड़, बहेड़ा, मुनक्का, पीपल और पुराना गुड़ प्रत्येक ५—५ सेर लेकर जवकुट कर १३ सेर जल मिला, पुराने चिकने मट के में शहद का लेप कर, भर देवे।

नोट—इसमें जल का प्रमाण बहुत कम होता है।

---

* काश्मर्य धात्री मरिचाभयाक्ष द्राक्षाफलानां च स पिप्पलीनाम्। शतं शतं जीर्ण गुडात्तुलां च संक्षुद्यकुम्भेमधुनाप्रलिप्ते ॥ स प्ताहमुष्णे द्विगुण तु शीते स्थितं जलद्रोणयुतं पिबेन्ना। शोफान्विबन्धान्कफवातजांश्च स हन्त्यरिष्टोऽष्टशतोऽग्निकृच्च ॥ (चरक)

नोट—कहीं २ 'द्राक्षाफलानां' के स्थान पर 'क्षुद्राफलानां' पाठ है। यदि क्षुद्राफळ (भटकटैया) कटेरी के फल लिये जांय, तब तो इस प्रयोग में गुड़ के साथ शहद भी मिलाना योग्य है (२॥ सेर पुराना गुड़ और २॥ सेर शहद मिलावे) इसके समर्थन में हमें एक पाठान्तर भी मिला है "शतं शतं क्षौद्रगुडात् पुराणात्तुलातु कुम्भे मधुना प्रलिप्ते ॥"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यदि जल ७ सेर (१ मन ३८ सेर मिलाया जाय तो ठीक आसव क्रिया होती है। इसे अरिष्ट के बजाय आसव ही कहना योग्य हैं।

उक्त मटके का यथा योग्य संधान कर रक्खे। ग्रीष्म ऋतु में ७ दिन तथा शीतकाल में १४ दिन रक्खे रहने से यह आसव तैयार होजाता है।

मात्रा—१ तो० से २ तोले तक।

गुण—सूजन कब्जी तथा कफ वातज रोगों का नाश कर, अग्नि को प्रदीप्त करता है इसे 'काश्मर्याद्यरिष्ट' (काश्मर्याद्यासव) भी कहते हैं।

---

* ४९ अस्त्रहरारिष्ट—क्षय पर अपूर्व लाभदायक।

विधि—विशल्यकर्णी (निर्विषी) का स्वरस (इसके अभाव में कोई २ मजीठ का स्वरस लेते हैं) और मृतसंजीवनी सुरा दोनों समभाग (कम से कम दोनों ४-४ तोले) लेकर, चिकने चीनी मिट्टी के पात्र में अथवा शीशी में भर, पात्र के मुख को अच्छी तरह मिट्टी से बन्द कर ७ दिन तक, रक्खा रहने देवे। पश्चात् मोटे वस्त्र से छानकर शीशी में यत्न से रक्खे।

---

* अस्त्रघ्नीस्वरसं चैव मृतसंजीवनी तथा। पलमेकं समादाय प्रत्येकं मानतो भिषक्॥ मृदालिप्तमुखे भाण्डे स्थापयेत्सप्तवासरान्। ततः स्थलपटापूतः क्षौद्रलेन जलेन च॥ सेव्यो मात्रामितो नित्यं यामे यामे प्रयत्नतः। उरःक्षत रक्तपित्त कासरक्तातिसारकम्॥ नाशयेद् राजयक्ष्माणं रक्तप्रदरमेव च॥

—भैषज्य रत्नावली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—५ बून्द से २० बूंद तक, अथवा अधिक से अधिक १ मासा तक, शीतल जल के साथ, एक २ प्रहर के बाद सेवन करावे। बच्चों को १ से २ बूंद तक देवे।

गुण—उरःक्षत, खांसी, रक्तातिसार, रक्तप्रदर और राजयक्ष्मा नष्ट होता है।

नोट—यदि 'मृतसंजीवनी सुरा' न प्राप्त हो तो निर्विषी के जवकुट किये हुये १ भाग चूर्ण में 'अल्कोहल'—मद्य (जिसमें ४० से ६० प्रतिशत मद्य हो) ४ भाग मिला, चीनी या कांच के पात्र में मुख मुद्रा कर ७ दिन तक रक्खा रहने देवें, पश्चात् बनात या फलालैन में छान शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१० से ३० बूंद तक बड़ों के लिये, छोटे बच्चों को कम मात्रा में देवे।

इसके सेवन से उरःक्षत, रक्तपित्त, यक्ष्मा, कास, रक्तप्रदर, रक्तातिसार तथा अनेक प्रकार के स्थावर और जंगम विष, रोगों में बड़ा लाभ होता है। इसे आवश्यकतानुसार उरःक्षत, रक्तपित्त, यक्ष्मा और कासादि, फुफ्फुस रोगों में वासारिष्ट, द्राक्षारिष्ट, उशीरासव तथा कूष्माण्डासवादि के साथ, और रक्तातिसार में कुटजारिष्ट के साथ तथा विष रोगों में शिरीषारिष्ट के साथ मिला कर भी दे सकते हैं।

---

* ९० अहिफेनासव—ईजे पर रामबाण।

---

* तुलां मधूक मद्यस्य शुभे भाण्डे परिक्षिपेत् । फणिफेनस्य कुडवं मुस्तकं पलसम्मितम् ॥ जातीफलञ्चेन्द्रयवं तथैलां तत्र दापयेत्। रुद्ध्वा भाण्डं मासमात्रं यत्नतः परिरक्षयेत् ॥ हन्त्यतीसारमत्युग्रं विषूचीमपि दारुणाम् ॥ —भैषज्य रत्नावली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—महुवे की शराब (सुरा या मद्य) ५ सेर, अफीम १६ तोले, नागरमोथा, जायफल, इन्द्रजौ और बड़ी इलायची के दाने प्रत्येक ४-४ तोले लेकर, सब का यथाविधि चूर्ण कर, एवं एकत्र मिला, शुद्ध मटके में (चीनी मिट्टी के पात्र में) भरे। अच्छी तरह सन्धान कर एक मास तक सुरक्षित रक्खे।

मात्रा—२ बूंद से १० बूंद तक, शहद अथवा जल के साथ सेवन करावे।

गुण—अत्यन्त प्रबल अतिसार (पेचिश) तथा दारुण, भयंकर विषूचिका (हैजा) को शीघ्र दूर करता है। मधुमेह के उपसर्ग तथा शर्करामेह को भी यह शीघ्र भगाता है।

नोट-इसआसव के लिये उक्त सुरा (शराब) ऐसी होनी चाहिये। जिसमें ७० से ९० प्रतिशत तक मद्य हो। इसकी सन्धानावधि कम से कम ७ दिन और ज्यादा से ज्यादा १ मास है। सत्वों के संघोलनार्थ पात्र को बीच २ में हिलाते रहना चाहिये।

अवधि के समाप्त होने पर किसी वस्त्र या फलालेन की चलनी से छान शीशियों में भर कर रख दे। इसकी मात्रा युवावस्था वालों को १५ से ६० बूंद तक और बालक तथा वृद्धों को २ से १५ या ३० बूंद तक दे सकते हैं।

अतिसार, आमातिसार, रक्तातिसार, ज्वरातिसार और अन्त्रशूलादि उदर रोगों पर आवश्यकतानुसार अहिफेनासव को यदि मुस्तकारिष्ट, कुटजारिष्ट, बिजयासव, कर्पूरासव या सुदर्शनासव के साथ मिला कर सेवन कराया जाय तो इसकी प्रथम मात्रा ही अपना पूर्ण चमत्कार दिखलाती है। जिन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रोगियों को अनेक बार थोड़ा २ दस्त होता हो, उन्हें प्रातः सायं इसकी ५ या १० बूंदें गर्म जल के साथ, विचारपूर्वक देने से शीघ्र लाभ होता है।

विसूचिका (हैजा) की प्रथमावस्था में इसे कर्पूरासव और मुस्तकारिष्ट के साथ मिलाकर सेवन कराने से बड़ा लाभ होता है।

शुष्क कास पर इसे वासारिष्ट के साथ देने से तत्काल लाभ होता है।

प्रत्येक स्थान के शूल, अनिद्रा, वेदना और बहक के लिये इसका सेवन विशेष लाभदायक है। इन रोगों में इसे यदि विजयासव या 'पारसिक यवान्यासव' के साथ मिलाकर दिया जाय तो तत्काल वेदना कम होकर, रोगी को आनन्द की नींद आती है।

यह पित्तनाशक है, अतएव पित्त से सम्बन्ध रखने वाले, उदर रोगों में इसके सेवन से बड़ा लाभ होता है। ऊर्ध्वग रक्तपित्त पर—इसकी ५ बूंदे, शुद्ध फटकरी ५ रत्ती और जल २॥ तोले मिश्रण कर थोड़ा २ पिलावे और कुरले करावे।

शोथ पर—पुनर्नवारिष्ट या काकमाच्यासव के साथ मिला कर इसका सेवन लाभप्रद माना जाता है।

श्वास पर—धुस्तूरासव के साथ मिलाकर इसे देने से श्वास का दौरा तत्काल कम हो जाता है।

गर्भपात, गर्भस्राव तथा रक्तप्रदर में भी इसके सेवन से लाभ होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मधुमेह—इसे जम्बूकासव के साथ मिलाकर देने से मधुमेह में शर्करा की मात्रा बहुत कम हो जाती है।

ध्यान रहे अहिफेन (अफीम) अत्यन्त थाही होती है, अतएव किसी रोग में, इसके सेवन से यदि बद्धकोष्ठ का भय हो तो इसे अरण्डी (रेंडी) के तैल के साथ मिलाकर देना चाहिये।

इसे रेंडी के शुद्ध तैल के साथ मिलाकर देने से मूत्रावरोध में विशेष लाभ होता है। घेय्याशी से उत्पन्न हुए मूत्रावरोध पर या अधिक देर तक पानी में भीगने के कारण उत्पन्न हुई मूत्र की रुकावट पर अहिफेनासव को रेंडी के तैल में मिलाकर सेवन करावे।

५१—अहिफेनासव नं २—अतिसार और हैजानाशक।

विधि—विशुद्ध उत्तम सुरा १ सेर, अफीम २। तोले, शुद्ध कर्पूर २। तोले, इलायची, सोंठ, नागरमोथा, जायफल और सफेद अतीस प्रत्येक ७-७ माशे लेकर, महीन चूर्ण कर, सबको सुरा में मिला दे और उस पात्र का मुख अच्छी तरह बन्दकर, एक मास तक एकान्त स्थान में पड़ा रहने देवे। बाद में पात्र का मुख खोल कर, उसमें से सुरा को निकाल, साफ़ वस्त्र से एक पात्र में छान कर, शीशियों में भर ले।

मात्रा—५ से १० बूंद तक, दोषानुसार, आवश्यक अनुपान के साथ या वैसे ही सेवन करावे।

गुण—अत्यन्त प्रबल धारावत् बहते हुए अतिसार को तथा हैजे को बन्द करने में उत्तम महौषध है। किंतु एक साथ दस्त बन्द करने से होने वाले उपद्रवों का ध्यान रखना चाहिए।

(धन्वन्तरि से)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

* ५२—अहिफेनासव नं ३—विशूचिका, अतिसारादि नाशक।

विधि—शुद्ध अफीम ३ तोला लेकर, ५० तोले मृतसंजीवनी सुरा में डाल, कांच की शीशी में रख, मुख मुद्रा कर, ७ दिनतक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् काम में लावे।

मात्रा—रोगी के बलाबल का विचार कर, ६ बूंद से १५ बूंद तक, दोषानुसार अनुपान के साथ देवे।

गुण—हैजा, अतिसार, दन्तशूल, श्वास, कास, प्रमेह, कर्णशूल, अंगों का टूटना, आदि विकारों को शीघ्र नष्ट करता है।

५३—अहिफेनासव नं ४—विशूचिका नाशक।

(श्री० प० शालिग्राम जी देव शुक्ल, वैद्यशास्त्री)

विधि—अफीम १ तोला लेकर, नीबू का रस १ सेर और देशी शक्कर १ सेर, तीनों को एकत्र कर, बोतल में भर, अच्छी तरह बोतल का (अथवा चीनी मिट्टी के पात्र में भर, उसका) मुख बन्द कर, २१ दिन तक रक्खा रहने देवे। पात्र को रोज़ एकबार अच्छी तरह हिला देना चाहिये। किंतु आखिरी ७ दिन

---

* संशुद्धमहिफेनं च कर्षत्रयमितं तथा। घृत संजीवनीं चात्र पंचाशत् कर्ष सम्मितम्॥ गृह्य काचभवायां तु कूप्यां संस्थापयेत् भिषक्। मुखे पिधानकं दत्वा दिनानि सप्तस्थापयेत्॥ षड्बिन्दुभ्यो बलं दृष्ट्वा दधात्पंच दशावधि। यथादोषानुपानेन हन्ति वृद्धां विसूचिकाम्॥ अतीसारं दन्तशूल श्वासं कासं प्रमेहकम्। कर्णशूलङ्गमर्दमहिफेनासवो नृणाम्॥

—सिद्धप्रयोग भा० २।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

डसे न हिलावे। २१ दिन बाद छान कर बोतलों में भर कर रख देवे।

मात्रा—१० बूंद से ६० बूंद तक।

गुण—चाहे जैसे कै, दस्त क्यों न हों, फ़ौरन बन्द होजाते हैं।

नोट—लेखक ने, अ० योगमाला में, अतिसंक्षेप में इसे लिखा था, हमने सम्पूर्ण विधि बढ़ाकर लिख दी है। —सम्पादक।

५४—अहिफेनासव नं० ९—अतिसारादि नाशक।

विधि—अफीम १ भाग, गरम शुद्ध जल २॥ भाग और मद्य-सार (६० प्रतिशत वाली) २॥ भाग, सब को एकत्र मिलाकर, बोतल में भर, दृढ़ काग लगा कर रक्खे। दो दिन बाद छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—२ से १० बूंद तक।

गुण—उपर्युक्तानुसार। (औषधि-विज्ञान)

५५—अहिफेनाद्यासव—(स्वकृत)—हैजा आदि नाशक।

विधि—अफीम ३ माशे, लोबान का सत्त ३ माशे, कपूर २ माशे और सौंफ का शुद्ध तैल ३० बूंद तथा रेक्टिफाइड स्पिट ५० तोले सब को एकत्र मिला, कांच की शुद्ध बोतल में भर, अच्छी तरह मुख मुद्राकर, ७ दिन सुरक्षित रक्खे। पश्चात् फलालैन से छान कर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१५ बूंद से ६० बूंद तक।

गुण—उपर्युक्तानुसार। इसे अंग्रेज़ी (ल्याटिन) में "टिंकच्यूरा क्यांफरीकंपाफिटा" कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आ

* ५६ आकारकरभासव—मुखपाक, दंतशूल पर।

विधि—१ तोला अकरकरे को अधकुट कर, उसमें ५ तोले मद्य (जिसमें ७० से ९० प्रतिशत मद्य हो) मिला, चीनी या कांच के पात्र में भर, सन्धान कर ७ से १५ दिन तक रक्खे। विशेष सर्वविधि अनंतमूलासव के समान करे।

मात्रा—१० से ३० बून्द तक।

गुण—इसके लगाने से मुख में एक प्रकार की शून्यता सी आजाती है। अतएव इससे मुखपाक और दन्तशूल में बड़ा लाभ होता है। यदि इसका अल्प मात्रा में सेवन किया जाय तो अग्निमांद्य और अरुचि में भी लाभ होता है। यह कामोत्तेजक और स्तंभक भी माना जाता है।

अश्मर्यादि मूत्र विकारों के लिये हमारा 'अकरकराद्यासव' देखिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

५७ आम्रासव नं० १—बल, वीर्य वर्धक।

(श्री० विष्णुकांतजी जैन वैद्य, संपादक—'वैद्य' कृत)

विधि—अच्छे पके हुये कलमी आमका गूदा १० सेर, मुनक्का १ सेर, सेव १ सेर, नासपाती १ सेर, बादाम-गिरी १ पाव, छुआरे १ पाव, खांड २॥ सेर, शहद १ सेर, सब को अच्छी तरह एक मजबूत मटके में भर कर, उसमें धायके फूल ३२ तोले तथा जावित्री, जायफल, दारचीनी, लौंग, इलायची और धनिया प्रत्येक ४-४ तोले महीन चूर्ण कर डाले एवं २६ सेर जल डाल कर, यथाविधि सन्धान कर २० दिन तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् उसका अर्क खींच लेवे। भबके के द्वारा अर्क खींचते समय एक-तोला केशर और ३ मासे कस्तूरी एकत्र मिला, पोटली में बांध कर, नीचे के मुख में, अर्थात् भबके के अन्दर के नालमुख पर इसे बांध देवे।

नोट—यदि अर्क न खींचना हो तो वैसे ही साधारण आसव विधि से १ मास तक इसे सुरक्षित रखना चाहिये। यह भी उत्तम लाभदायक है।

मात्रा—१ से २ तोला तक, प्रातः सायं,। दूध या जल के साथ, भोजन के बाद, सेवन करे।

गुण—अपूर्व बल, वीर्य और कान्ति की वृद्धि होती है। भूख खूब लगती है, चित्त में प्रसन्नता उत्पन्न होती है। यह वातरोग नाशक, पुष्टि-कारक, कामोद्दीपक, आनन्ददायक तथा स्तंभक भी है।

---

५८ आम्रासव नं० २—नवजीवन संचारक।

(श्री हकीम गंगासहायजी पाठक)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि--पके हुये तथा मीठे आमका रस १ मन, गुठली निकाले हुये छुहारे, सूखे अंजीर, मुनक्का, केले की पकी फली का गूदा और फालसे प्रत्येक २-२ सेर, खांड़ ५ सेर, शहद ५ सेर, लेकर कूटने योग्य द्रव्यों को कूट पीसकर, सब को एकत्र मिला, मिट्टी के बड़े और मजबूत चिकने पात्र में भर कर, मुख बन्द कर, अनाज़ के ढेर में दबा देवे। २१ दिन बाद निकाल कर, भबके के द्वारा इसमें से २४ बोतल अर्क खींच लेवे और बोतलों का मुख बन्द करके, कुए में डाल दे, अथवा पानी के कुण्ड में रख दे। ७ दिन बाद निकालकर काम में लावे।

मात्रा—५ तोले से १० तोले तक, दोनों समय, भोजन से पहले सेवन करे। अभ्यास के बाद इसे अधिक मात्रा में भी सेवन कर सकते हैं।

गुण—यह एक अद्भुत चीज़ है। यदि बल हो तो १ साल लगातार सेवन करके देखिये, नया जीवन आजावेगा।

(धन्वन्तरि—बूटीचित्राङ्क)

---

५६ आम्रासव (टिंचर)—फोड़ा, फुंसी नाशक।

(हकीम पं० गंगासहायजी पाठक)

विधि—आमके कच्चे फलों को जिनमें गुठली सख्त न हुई हो कुचल कर, मोटे कपड़े में डालकर, रस निचोड़ लेवे। जितना यह रस हो उसका चौथाई भाग मेथोलिटिड स्प्रिट या खालिस देशी शराब मिलाकर, शीशे, या चीनी मिट्टी के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पात्र में भर रक्खे। तीसरे दिन से यह लगाने लायक हो जाता है।

गुण—दाद, चुंबल जो कि बरसों से तङ्ग कर रहे हों और जिस्म को अपना घर बना बैठे हों, इसके लगाने से दूर होजाते हैं। गहरे से गहरे नासूर भी इसे दिन में दो बार लगाते रहने से दूर होजाते हैं। यह निहायत तेज़ दवा है, इसलिये ज़ख्मों पर बहुत लगती है, दिन में दो बार इसी प्रकार (रुई की फुरहरी से) लगाते रहने से फूटे हुये कंठमाला, भगन्दर, पुराने से पुराने मुगलई फोड़े आदि जड़ से दूर होजाते हैं। पर अर्शके मस्सों पर सावधानी से लगावे, ताकि दूसरी जगह न लगजावे। इससे मस्से भी सूखजाते हैं।

(धन्वन्तरि)

---

६० आमलकासव—प्रमेहनाशक।

विधि—आमले की छाल का काथ कर रस छान लेवे अथवा कूटकर स्वरस निकाले, फिर आमले की पत्तियों को कूटकर जल योग से रस निकाले और आमलों को भी कूटकर स्वरस निकाले। इन तीनों स्वरसों को समभाग लेकर, कलईदार पात्र में पकावे। जब आधा शेष रहजावे तब उसे शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें अर्धभाग शहद, और धायके पुष्पों का चूर्ण अंदाज़ से मिला कर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, ७ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर काम में लावे।

मात्रा—३ माशे से १॥ तोले तक। ऊपर से धारोष्ण गौ दुग्ध पिलावे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—प्रमेह और मधुमेह को शर्तिया दूर करता है। किंतु रोगी पथ्य से रहे और व्यायाम करता रहे।

(अ० योगमाला)

आमलक्यारिष्ट—देखिये, धात्र्यरिष्ट ।

६१ आयुर्वेदिक सालसा—रक्त शोधक ।

विधि—अनन्तमूल आध सेर, कौंच के बीज आध सेर, उसवा, डीकामाली, छोटी हरड़, सरफोंके की जड़, ब्रह्मदण्डी बूंटी और नीम की छाल प्रत्येक १०-१० तोले तथा चिरायता मुलैठी, मकोय, इन्द्रायन की जड़, भटकटैया की जड़ और कचनार की छाल प्रत्येक ५-५ तोले तथा गुलाब के फूल की कलियाँ, बड़े गोखरू, बड़ी हरड़, धनिया, कासनी, लौंग, सोंफ, बड़ी इलायची, दारचीनी और ईसबगोल प्रत्येक ३-३ तोले तथा चोबचीनी, पद्मकाष्ठ और कासमर्द प्रत्येक २-२ तोले एवं अजमोद, कालीमुसली, तुख्म बालंगा, रेवन्दचीनी, बीही-दाना, तालमखाना, प्रत्येक १॥—१॥ तोले और कालादाना, शीरेख़िस्त, तेजपात, बीजबन्द, सालममिश्री, जावित्री, हरड़, बहेड़ा और आमला प्रत्येक १-१ तोला, रक्तचंदन ६ तोले, इन सब द्रव्यों को कूट कर, चौगुने जल (१२ सेर) में डाल देवें, उसी में ३ सेर गुड़ और एक सेर शहद मिला, पात्र का यथा-विधि सन्धान कर, जमीन में गाड़ देवे, तथा ४० दिन बाद निकाल भवके के द्वारा अर्क निकाल लेवे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक, चौथाई मधु मिलाकर प्रातः सायं सेवन करावे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—पूर्णतया रक्त को शुद्ध करता है। हजारों प्रकार के सालसों के गुण इसके सामने हेच हैं।

(अ० योगमाला)

आयुर्वेदिक सालसा नं २—देखिये, अनन्तमूलारिष्ट।

६२—आरग्वधासव—(मन्थान कुमुद)—श्वास रोग नाशक।

(वैद्यराज श्री उमादत्त जी मिश्र, मिर्जापुर)

विधि—अमलतास के फूल ४०० नग और पान (देशी पान या मगही या केताकी) का स्वरस ४० तोले, एकत्र शुद्ध मटके में भर, २४ घंटे रखने के बाद, मसल कर, साफ़ वस्त्र से छान, चीनी मिट्टी के पात्र में भर कर, उसमें अर्क गावजुवाँ, अर्क मकोय, अर्क मुलैठी, अर्क चिरायता और अर्क दशमूल प्रत्येक २५ प्रतिशत वाले अर्क (देखो नोट अरविन्दासव नं० २) आध—आध सेर, तथा मिश्री १॥ सेर मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक। अनुपान—शीतल जल के साथ, २४ घंटे में ४ बार सेवन करावे।

गुण—श्वास रोग की सर्वदशाओं में लाभदायक है।

६३—आरग्वधारिष्ट—उदर रोग नाशक।

(श्री० पं० कैलाशनाथ जी शर्मा)

विधि—अमलतास का गूदा १ सेर दंती (जमालगोटे की जड़) १ सेर, लेकर, प्रथम ३२ सेर जल में दंती का काथ बनावे,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब चौथाई शेष रह जाय, तब छानकर उसी शुद्ध चिकने मटके में भर उस में उक्त अमलतास का गूदा, गुड़ १ सेर, तथा धाय के फूल, मिरच, सोंठ और पीपल प्रत्येक का चूर्ण ५-५ तोले मिलाकर, पात्र का मुख सन्धान कर, जमीन में गाड़ देवे। एक मास के बाद निकाल और छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ से २॥ तोले तक। प्रातः सायं।

गुण—उत्तम रेचक है, कोष्ठ साफ़ करता है, उदर, गुल्म, प्रमेह, उदावर्त आदि के लिये विशेष लाभदायक है। बहुपरीक्षित है। इसके साथ में नारायण चूर्ण का सेवन कराने से चाहे जैसा उदर रोग हो, शीघ्र दूर हो जाता है।

(धन्वन्तरि, बूंटी-चित्रांक)

---

६४ आरोग्यामृतासव—वीर्यवर्धक, नपुंसकता नाशक।

(वैद्यराज लक्ष्मीनारायणजी कृत)

विधि—प्रथम मिट्टी के नवीन मटके को जामुन के नवीन पत्तों के क्वाथ से अच्छी तरह धोकर उसके भीतर लाख का रंग पोत दीजिये। फिर उसे खांड और अगर की धूनी देकर ज़मीन में गाड़ दीजिये। आधा मटका जमीन के भीतर और आधा बाहर रहे और सूर्य की धूप व चन्द्रमा की चांदनी भी उस पर पड़ती रहे। पश्चात् उस मटके में धायके नवीन फूल साफ़ किये हुये ७ छटाँक, सुपारी मानिकचन्दी कुटी हुई १० छटाँक, खैरसार १० छटाँक (खैरसार के अभाव में साफ़ किया हुआ कत्था लेवे) और पान उत्तम-देशी पके हुये पीसकर १५०० लेवे, शहद-देशी १। सेर, अंगूर ताजे मथे हुये २॥ सेर, ताजा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुए का जल ४ सेर, कंकोल दो छटाँक, छोटी पीपल दो छटाँक, तथा जायफल, इलायची, लौंग, दारचीनी, तेजपात, असली, नागकेशर, जावित्री, केशर, वाय्यबिडंग और चित्रक प्रत्येक २-२ तोले लेकर, सब को जवकुट कर, मटके में डाल देवे। और तीन दिन तक मल मल कर हिलाते रहें। जब सब चीजें एक रस होजाँय और उसमें शब्द होने लगे तब उसमें उत्तम गुड़ ४ सेर, देशी खाँड सफेद ४ सेर, जल १६ सेर में अच्छी तरह घोल कर और आंच पर गर्म करके डाल दें, तथा मुख बंद कर रख देवे। एक मास के बाद छान कर बोतलों में भर कर रख ले। इसका रंग, सुगन्ध व स्वाद अत्युत्तम होगा।

व्यवहार—मात्रा एक २ तोला, प्रातः सायं, भोजनोपरान्त।

गुण—इससे भोजन अच्छी तरह पचता है, भूख बढ़ती है, शीतकाल में होने वाले रोग, कफ, खाँसी, जुकाम, समस्त वात कफ से होने वाले रोग, तथा धातु सम्बन्धी रोग, जैसे-प्रमेह, नपुंसकता, आदि नष्ट होकर शुक्र की वृद्धि होती है। वृद्धावस्था में होने वाले रोग, अथवा किसी प्रकार से आई हुई कमज़ोरी, जैसे कमर का दर्द, बहुमूत्र, घुटनों का दर्द, अर्श आदि नाशक है। एक वर्ष पर्यन्त सेवन करें तो कायाकल्प सा हो जाता है।

(धन्वन्तरि से उद्धृत)।

---

६९ आर्द्रकाद्यासव—(स्वकृत) उदर रोग नाशक।

विधि—अदरख का रस १ सेर, ग्वारपाठे का रस १ सेर और शहद असली १ सेर, किसी उत्तम चिकने मटके में भर, उसमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धाय के फूल १० छटांक, पीपलामूल, छोटी पीपल, लाल चीते की जड़ की छाल, अपामार्ग की जड़, जवाखार, सज्जीखार, पांचो नमक, सरफोंके की जड़ और अजवायन प्रत्येक २-२ तोले, महीन चूर्ण कर मिलावे यथाविधि मुखमुद्रा-सन्धान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशी में भर कर रख दे।

मात्रा—२ माशे से दो तोले तक, शक्ति एवं अवस्थानुसार जल में मिला कर देवे।

गुण—समस्त उदर रोग, गुल्म, प्लीहा, शूल, आध्मान आदि शीघ्र दूर होते हैं।

---

६६ आर्द्रकाद्यासव नं० २—उदर व्याधि पर।

विधि—अदरख का रस, नीबू का रस, घी कुवार के गूदे का रस, असली शहद, चारों को समभाग लेकर किसी शुद्ध कांच की भरनी में भर कर और अच्छी तरह उसका मुख संधान कर १० दिन तक धूप में रक्खा रहने देवें। पश्चात् उसे छान कर दूसरी शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २ तोले तक।

गुण—पेट का अफारा, शूल, गुड़गुड़ाहट, जी मिचलाना, जलन, वमन, यकृत और प्लीहा के विकार नष्ट होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

६७ * आवर्तक्याद्यासव—दद्रु नाशक।

विधि—सनाय की जड़ ३२ तोले, एलुआ ६ तो० (कोई २ 'इलायची' लेते हैं, किन्तु 'एलुआ' यहाँ शीघ्र इष्ट फलदायक होता है), रूमी मस्तगी दो तोले, रेवन्दचीनी दो तोले (कोई २ 'नागकेशर' लेते हैं, किन्तु हम रेवन्दचीनी ही डालना पसन्द करते हैं) और जल १३ सेर एकत्र मटके में भरे। इसमें शहद २॥ सेर तक अवश्य मिला देवे, नहीं तो आसव-क्रिया ठीक न होगी। मटके का मुख अच्छी तरह सन्धान कर रक्खे। यह ३ दिन में ही सेवन योग्य होजाता है। ३ दिन के बाद थोड़ा २ छानकर पिलाना चाहिए।

मात्रा—१ से ४ तोले तक।

गुण—कमर का दाद, दो मास में दूर होजाता है।

---

* नेत्रभेषजशीफाफलाष्टकं सार्धमेलफलमर्धमस्तकीम्। हेमजार्धपल-मेकतः कृतं द्रोणवारिमिलितं दिनत्रयम्॥ यः पिबेद् द्विपलकं दिनोदये नीरमस्तसमये समाहितः। तस्य नश्यति कोटिसमुद्भवं दद्रु मास युगलेन निश्चितम्॥

—गदनिग्रहे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इ

६८ इन्द्रयवाद्यासव—(स्वकृत) अतिसारादि नाशक।

विधि—इन्द्रजौ का चूर्ण ५ सेर और गुड़ १० सेर एकत्र, ९६ सेर जल में घोलकर, चिकने मटके में रख, उसमें-शहद २॥ सेर तथा धाय के फूल १३ छटांक, नागरमोथा, वेलगिरी, पठानीलोध और नागकेशर प्रत्येक ४-४ तोले महीन चूर्ण कर मिला देवे। अच्छी तरह सन्धान कर १ मास तक रखा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २ तो० तक, जल के साथ।

गुण—सब प्रकार के अतिसार तथा पांडु और कामला नाशक है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

६६ इन्द्रयवाद्यासव नं० २—(स्वकृत) प्रमेहादि नाशक।

विधि—इन्द्रजौ, हल्दी, दारुहल्दी, मजीठ, रास्ना, नागरमोथा, दन्तीमूल, सिरस की छाल, अर्जुन की छाल और बायविडंग प्रत्येक एक एक सेर, गिलोय, श्वेतचन्दन कुड़े की छाल और बांसे की जड़ आध आध सेर लेकर जवकुट कर, उत्तम शुद्ध मटके में भर उसमें २६ सेर जल डाल कर खूब अच्छी तरह मिला देवे। फिर उसमें धाय के फूल १३ छटांक, शहद १० सेर, दारचीनी, इलायची, पत्रज और नागकेशर प्रत्येक ८-८ तोले महीन चूर्ण कर मिलावे। अच्छी तरह मुख मुद्रा एवं सन्धान कर ४० दिन पड़ा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर सुरक्षित कर रक्खे।

मात्रा—१ तोले से २ तोले तक।

गुण—प्रमेह, वायु रोग, ववासीर, संग्रहणी तथा मूत्रकृच्छ्र को नष्ट करता है।

७०—इन्द्रवारुण्यासव नं० १—कफ, श्वास नाशक।

(श्री० मोहनलाल जी आयुर्वेद विशारद, हरसोर)

विधि—इन्द्रायण का एक बड़े से बड़ा पका फल लेकर, उस में युक्तिपूर्वक छिद्र करके, अन्दर की गिरी और बीजों को एक लोह सलाक से मन्थन करे। जब अन्दर का सब भाग ढीला हो जाय, तब उसके अन्दर उत्तम बनारसी शक्कर जितनी आ सके भर कर, छिद्र का मुख बन्द कर, ऊपर से ७ कपरौटी कर, सुखा कर, कूड़े करकट के ढेर में दबा देवे। ८ दिन के बाद उसे निकाल कर, शुद्ध शीशी में अन्दर का अर्क चुआ लेवे। २४ घंटे बाद निथार कर काम में लावे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—५ माशे से १॥ तो० तक, रोग के बलानुसार देवे। अनुपान-दूध, या शक्कर।

गुण—कफ़, श्वास, कास के लिये रामबाण है, इससे जुलाब होते हैं। यदि ज्यादा दस्त हों तो घी खिचड़ी खावे, विरेचन द्वारा यह कफ को निकाल बाहर करता है।

---

७१ इन्द्रवारुण्यासव नं० २—यकृत, प्लीहादि विकार नाशक।

(आयुर्वेदज्ञ आर० के० शर्मा रसायनाचार्य, जगराओं-पंजाब)

विधि—इन्द्रायण के फल २० सेर लेकर टुकड़े २ कर शुद्ध चिकने मटके में कर उसमें ५ सेर गुड़ को ३० सेर जल में घोल कर मिलावे और पात्र का मुख सन्धान कर २१ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१॥ तोला तक। प्रातः सायं।

गुण—यकृत, प्लीहा, जलोदर, कृमि, गुल्म, बिबन्ध (कोष्ठ बद्धता), ज्वर, उदरशूल और आमवात पर अत्यन्त लाभप्रद है।

---

७२ इन्द्रवारुण्याद्यारिष्ट नं० १—(स्वकृत) प्रमेहादि नाशक।

विधि—इन्द्रायन के फल २॥ सेर तथा इन्द्रायन की जड़ का चूर्ण १ सेर (फल छोटी इन्द्रायन के लेवे, जो छोटे २ कचरियों जैसे और खूब बीजों वाले तथा विशेष लाल नहीं होते और जड़, बड़े अथवा छोटे फल वाले किसी भी, इन्द्रायन की ले सकते हैं) लेकर, फलों को खूब महीन कतर कर तथा उसी में चूर्ण मिला, १ मन १२ सेर जल में पकावे, जब १३ सेर जल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शेष रहे तब छानकर, उसमें-शहद ५ सेर तथा धोहकरमूल, लोध, बड़ी इलायची, हरड़, बहेड़ा, आमला, हल्दी, दारुहल्दी, अतीस, पाठा, प्रियंगु, तगर और बायविडङ्ग प्रत्येक ४-४ तोले तथा धाय के फूल १३ छटाँक चूर्ण कर मिलावे। अच्छी तरह सन्धान कर१ मास, बाद छानकर शीशियों में भर कर रख ले।

मात्रा—१ से २ तो० तक। अनुपान-नीबू का रस और जल एकत्र मिला लेवे।

गुण—यह अरिष्ट अपने शोधन प्रभाव द्वारा बस्तियंत्र को शुद्ध कर प्रमेह को नष्ट करता है, तथा उपदंश, पांडु, ग्रहणी, अर्श और चर्म रोगों पर भी लाभप्रद है।

---

७३ इन्द्रवारुण्याद्यरिष्ट नं० २—रक्त शोधक।

(श्री पं० अनन्तदेवजी दीक्षित, वैद्यशास्त्री)

विधि—इन्द्रायन की जड़ ४० तोले, फल २० तोले, बांस के पीले पत्र, मुण्डी, मजीठ और ब्रह्मदण्डी प्रत्येक २०-२० तोले, छोटी कटेरी का पञ्चाङ्ग, बकायन की छाल और निम्ब पंचांग छाल प्रत्येक ४०-४० तोले लेकर सब को जबकुट कर, १८ सेर जल में १ दिन रात भिगो कर, मंदाग्नि से पकावे। चतुर्थांश शेष रहने पर, छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें पुराना गुड़ (३ साल का) १०० तोले मिला (मुख मुद्राकर रक्खे, १५ दिन बाद छानकर) बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—बलानुसार २ तो० से ५ तोले तक।

गुण—इसके सेवन से १-२ दस्त भी साफ होते हैं तथा फोड़े, फुन्सी, दाद, खुजली आदि समस्त रुधिर विकारों के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिये यह रामबाण है। जितना रोग बलिष्ठ हो उतने ही अधिक दिन सेवन करना चाहिये। कुष्ठ रोग भी इससे दूर होजाता है। पथ्य में जौ, चना, गेंहू, मूंग और दूध देना चाहिए। शेष सब वस्तुएँ अपथ्य हैं।

---

७४ इन्द्रवारुण्यारिष्ट नं० ३—रक्त शोधक।

(श्री वैद्य मोहनलालजी हरसोर)

विधि—इन्द्रायन की जड़ आध सेर, चिरायता १ पाव तथा नीम की छाल, बकायन की छाल, बबूल की छाल, गोरखमुंडी, हरड़, बहेड़ा, आमला प्रत्येक १॥-१॥ पाव, झरबेरी की छाल १ पाव, दोनों चन्दन का बुरादा १ पाव; सनाय और गुलाब पुष्प ३-३ छटाँक, रोहिड़े की छाल आध पाव लेकर जबकुट कर, १ मन जल में भिगो दे, उसी में १॥ सेर मुनक्का भी डाल देवे। ३ दिन तक भीगने के बाद सब द्रव्यों से चौगुना गुड़ मिला कढ़ाई में पकावे; आधा शेष रहने पर छानकर ठंढाकर शुद्ध मटकी में भर २। सेर शहद मिला, मुख मुद्राकर जमीन में गाड़ देवे। ७ दिन बाद छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—रोग शक्त्यनुसार २॥ तोला तक।

गुण—रक्त को शीघ्र शुद्ध करता है, उपदंश के उपद्रवों को नष्ट करता है।

इन्द्रायनासव—देखिये, इन्द्रवारुण्यासव।

इमलीआसव—देखिये, तिन्तिड़ीकासव।

इस्पन्दासव—देखिये, हरमलासव।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

७९—इक्षुरसासव-(सिरका)—(स्वकृत) मेदोऽग्निमांद्यादिनाशक।

विधि—ईख (गन्ने) का रस १२ भाग, गुड़ १ भाग, शहद दो भाग तथा शुद्ध जल ४ भाग, एकत्र मिला चीनी मिट्टी के पात्र में अच्छी तरह संधान कर रक्खे। १ मास के बाद छान लेवे। फिर प्रत्येक दो मास के बाद छान लेना चाहिये। यह जितना पुराना होगा उतना ही तेज एवं शीघ्र गुणकारी होगा।

मात्रा—१ तो० से २ तो० तक। जल के साथ देवे।

गुण—मेदे के रोगों में इसके सेवन से विशेष लाभ होता है। ज्वर की अवस्था में जब तृष्णा की अधिकता हो तथा शरीर में विशेष दाह हो, तब १ तोला आसव में १० तोले जल मिला, थोड़ा २ पिलावे, तृष्णा कम होकर ज्वर का वेग मंद होजाता है। मूत्रकृच्छ्र में तीन माशे आसव में चौगुना जल मिला कर पिलावे। प्रत्येक ३—३ घंटे के बाद इस प्रकार पिलाने से मूत्र साफ़ होने लगता है। हैज़े (कालरा)-की अवस्था में जब मूत्र रुक जाता है, इसका सेवन लाभ दायक होता है। चेचक-मसूरिका या मंथरज्वर में जब ज्वराधिक्य के कारण शरीर लाल हो जाता है, तब इसका बाह्यप्रयोग विशेष लाभदायक होता है—एक भाग आसव (सिरका) में ३ भाग जल मिला, हलके हाथों से ज्वर—रोगी के शरीर पर लगावे, इससे ज्वर हलका पड़ जाता है तथा चेचक का उभार जोर से नहीं होने पाता, और यदि जोर का उभार हो तो इसके लगाने से खुजली आदि का कष्ट नहीं भोगना पड़ता। श्वास, कास एवं कफ के विकारों में भी उक्त बाह्य प्रलेप (विशेषतः छाती और पेट पर) करने से लाभ होता है। शिरःशूल पर उक्त प्रलेप की पट्टी मस्तों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर बांधने से लाभ होता है। उसी प्रकार अकाल के गर्भस्राव के कारण, जब रक्त का स्राव विशेष होता है, तब उक्त प्रलेप की पट्टी योनि मार्ग पर धारण की जाती है।

अग्निदग्ध पर—आग से जहाँ जल गया हो, वहाँ उक्त प्रलेप को पट्टी रखने से जलन शांत होती है। इस आसव जल की पट्टी का प्रयोग जहरीले कीड़ों के दंश पर भी लाभदायक होता है। ज्वर की दशा में 'कोलन वाटर' के समान इसका उपयोग किया जा सकता है। और भी इसके कई प्रयोग हैं, जो विस्तार भय से यहाँ नहीं दिये जा सके।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

७६—ईश्वरी—आसव—ज्वर नाशक।

(श्री० पं० अनन्तदेव जी शर्म्मा, वैद्यशास्त्री)

विधि—ईश्वर मूल १० तो०, सूखी गिलोय १० तो० तथा चिरायता, कुटकी, लौंग और इलायची प्रत्येक ५-५ तोले, लेकर, सब को बारीक कूट पीस कर, उत्तम २॥ सेर सुरा में डालकर, कपूर ५ तोले मिला, बोतलों में भर कर दृढ़ कार्क लगा कर, ७ दिन तक सूर्य ताप में तपावे, पश्चात् फलालैन में छान कर रख लेवे, सरदीके स्थान से बचावे।

मात्रा—६ माशे से १ तोले तक, आवश्यकतानुसार, प्रातः सायं पानी में मिला कर सेवन करावे।

गुण—सब प्रकार के ज्वर शीघ्र नष्ट हो जाते हैं।

(धन्वन्तरि-बूटी चिह्नांक)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उ

उदरसुधासव—देखिये, सुधासव नं० २।

७७ उदरासव—उदररोग नाशक।

विधि—घीकुवार का गूदा (रस) ऽ।, मूली रस ऽ।, नीबू का रस ऽ।, अदरक का रस ऽ।, भुना हुआ सुहागा, नौसादर, भुना जीरा, अजवायन, फौलाद-भस्म और भुनी हींग प्रत्येक १-१ तोला, त्रिकुटा (सोंठ मिरच पीपल,)२ तो० इन सब का चूर्ण कर एक बोतल में डाल देवे। ७ दिन धूप में रक्खे। बोतल का मुख मज़बूत काग लगा कर रस्सी से कस कर बांध देना चाहिये। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख ले।

मात्रा—३ माशे से १ तोला तक।

गुण—समस्त उदर व्याधि नष्ट करने में अद्वितीय है।

(धन्वन्तरि—प्रयोगाङ्क)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

७८ उदरामृतासव नं० १—उदर रोग नाशक।

(कविराज शम्भुदत्त शर्मा, कौशिक)

विधि— सूखा पोदीना २० तो०, प्याज २० तो०, हींग १० तो०, लालमिरच ६ तो०, छोटी इलायची १० तो० और शुद्ध लहसुन १२॥ तो० (लहसुन की गिरी को साफ कर, ३ सेर गाय के मट्ठे में भिगो देवे, ७ दिन बाद छाया में सुखा लेवे, शुद्ध हो जावेगा) सब को कूट कर १२ सेर जल में ५ दिन तक भिगो रक्खे, पश्चात् भवके के द्वारा अर्क खींच कर (नीले रंग की) शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २॥ तोले तक।

गुण—आध्मान, शूल, मल—विबन्ध, मन्दाग्नि, अजीर्ण, अम्ललपित्त, परिणामशूल, आमशूल और उदर सम्बन्धी सब प्रकार के विकारों का नाशक है। जल, वायु के दोष से होने वाले विकार भी इसके सेवन से दूर होजाते हैं, दस्त साफ़ आता है और खूब भूख लगती है।

('वैद्य')

नोट—उक्त उदरामृतासव और जोरकाद्यासव नं० २ प्रत्येक १।-१। तोला एकत्र मिला, जल २॥ तो० के साथ सेवन करने से विशेष लाभ होता है।

उदरामृतासव नं० २—देखिये, क्षुधामृतासव नं० २।

७९—उन्मत्तासव—(अर्क) पौष्टिक, वीर्य वर्धनार्थ।

(वैद्यराज बालकृष्ण जी शर्मा, भूपालकृत)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—धतूरे के बीज, भांग, जावित्री, कपूर और पोस्त के डोडे प्रत्येक १०-१० तोले, खुरासानी अजवायन ६० तोले, सब का महीन चूर्ण कर, १२ सेर गो दुग्ध में मिला २४ घंटे तक संधान कर रक्खे। इसे भवके के यन्त्र में संधान करना ठीक होता है। पश्चात् नालिका यन्त्र उस पर लगा कर, मंदाग्नि पर चढ़ा अर्क खींच लेवे। प्रथम २ या ३ बोतल अर्क नं० १ जो निकले उसे अलग रक्खे, और फिर २ या ३ बोतल अर्क जो बाद में निकले वह नं० २ का अर्क जाने।

मात्रा—आसव नं० १ को २॥ से ५ तोले तक और नं० २ को ५ से १० तोले तक, दूध में मिलाकर सेवन करे।

गुण—वीर्यवर्धक, उत्तम वाजीकरण है, तथा वीर्य स्तंभन भी इससे अच्छा होता है।

---

* ८० उशीरासव—रक्तपित्तादि नाशक।

विधि—खस, सुगन्धवाला (नेत्रवाला), लाल कमल के फूल, खम्भारी (गंभारी के फल), नीलोफर (नीलकमल),

---

* उशीरं बालकं पद्मं काश्मरीं नीलमुत्पलम्। प्रियंगुं पद्मकं लोध्रं मंजिष्ठां धन्वयासकम्॥ पाठां किरात तिक्तञ्च न्यग्रोधोदुम्बरं शठीम्। पर्पटं पुण्डरीकञ्च पटोलं कांचनारकम्। जम्बू शाल्मलि नियासं प्रत्येकं पल सम्मितम्। सर्वं संचूर्णितं कृत्वा द्राक्षायाः पल विंशतिम्॥ धातकीं षोडशपलां जलद्रोण द्वये क्षिपेत्। शर्करायास्तुलां दत्वा क्षौद्रस्यार्धतुलां तथा॥ मासं संस्थापयेद् भाण्डे मासीं मरिच धूपिते। उशीरासव इत्येष रक्तपित्त विनाशनः। पांडु कुष्ठ प्रमेहार्शः कृमिशोथ हरस्तथा॥

—भैषज्य रत्नावली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फूलप्रियंगु, पद्माख, पठानीलोध, मजीठ, धमासा (यवासामूल), पाठामूल, चिरायता, कुटकी, बड़ की जटा (अथवा छाल), मूलर की छाल, कचूर (कपूरकचरी), पित्तपापड़ा (स्यातरा), श्वेतकमल (कोई २ कुष्ठ या कूठ लेते हैं), पटोलपत्र (परवल के पत्ते), कचनार की छाल, जामुन की अन्तर छाल और सेमर का गोंद (मोचरस) इनमें से प्रत्येक ४—४ तोले लेकर महीन चूर्ण कर लेवे और दाख (मुनक्का बीज निकाले हुए) एकसेर, आय के फूल १३ छटांक, चीनी ५ सेर, शहद २॥ सेर तथा जल २६ सेर, सब को एकत्र कर, जटामांसी और मरिच से धूपित मिट्टी के पात्र में भर कर, यथाविधि संधान कर १ मास तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छान कर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा-२ से ४ तोले तक। जलके साथ मिलाकर सेवन करे।

गुण—रक्तपित्त, पांडु, कुष्ठ, प्रमेह, बवासीर, कृमिविकार, शोथ (सूजन) तथा पित्तजन्य रोगों पर अतीव लाभदायक है। कालीखांसी या पुरानी खांसी पर उशीरासव २॥ तोले, शर्बत बनपसा और अर्क गुलाब दोनों २॥ तोले एकत्र मिला, भोजन के पश्चात् रोगी को सेवन करावे शीघ्र लाभ होता है। इसे चन्दनादि चूर्ण के साथ सेवन कराने से रक्तपित्त और प्रदर पर शीघ्र लाभ होता है। आतपज्वर या लू लगने पर जब रोगी की मुखचर्या लालवर्ण की होकर, सिरदर्द हो, ज्वर-वेग एक समान रहता हो, तथा हाथ पाँवों में, नेत्रों में या सर्वांङ्ग में जलन या दाह हो तो ऐसी अवस्था में उशीरासव की एक मात्रा (दो तोला) में, त्रिभुवनकीर्तिरस १ से २ रत्ती तक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिला तथा ४ तोले जल मिला दिन में ४ बार सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है।

---

८१ उसवासव—नं० १ (स्वकृत)—रक्तदोषनाशक।

विधि—उसवा मगरवी १ सेर लेकर, जवकुट कर १६ सेर जल में पकावे। ६ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भरे और ठंडा होने पर, उसमें मिश्री ४ सेर, शहद ३ सेर और धाय के पुष्पों का चूर्ण १ सेर मिला, अच्छी तरह मुख मुद्रा कर, २१ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रखदे। प्रत्येक बोतल में ५-५ तोले रेक्टिफाइड स्प्रिट मिला देवे। ४ दिन बाद काम में लावे।

मात्रा—१ तो० से २॥ तोले तक।

गुण—खुजली, फोड़ा, फुंसी, जोड़ों का दर्द और रक्त विकार को दूर करता है।

८२—उसवासव नं २—रक्तशुद्धिकारक।

विधि—उसवा १ पाव लेकर, जवकुट कर, १ सेर रेक्टीफाइड स्प्रिट में मिला, बोतल या चीनी मिट्टी के पात्र में भर कर रख दे। १५ दिन के बाद मसल छान कर बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—३० बूंद से ६० बूंद तक।

गुण—फोड़ा, फुंसी, खुजली, रक्तविकार नाशक है। जोड़ के दर्द को भी दूर करता है।

(सुधानिधि)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

८३ एलाद्यासव नं० १—(स्वकृत)-उदरशूल नाशक।

विधि—बड़ी इलायची के दाने, सोंठ और दारचीनी प्रत्येक दो २ तोले, तथा असली सत पोदीना, असली सत अजवायन, शुद्ध कपूर, असली केशर, असली हींग और अफीम प्रत्येक १-१ तोला लेकर, सब का चूर्ण कर, १ पौंड मद्यसार (स्प्रिट रेक्टीफाइड) में मिला, बोतल में भर, मज़बूत कार्क लगा, १५ दिन तक धूप में रक्खे। पश्चात् फिल्टर द्वारा छान-कर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—५ बून्द से १५ बूंद तक, उष्ण जल में मिलाकर देवे।

गुण—उदर के तीव्र शूल को एकदम शान्तकर देता है, इसे पीते ही ऐसा अनुभव होता है कि जैसे आग पर ठंडा जल पड़ गया हो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

८४ एलाद्यासव नं० २—शूल, अग्निमान्द्यादि नाशक।

विधि—छोटी इलायची ८ तोले तथा जावित्री, दारचीनी, केशर और क्षीरकाकोली (अभाव में असगंध की जड़) प्रत्येक का चूर्ण ४-४ माशे लेकर, 'रेक्टीफाईड स्प्रिट' अथवा मद्य (७० से ९० प्रतिशत वाली) २४ तोले में मिला, बोतल में भर, ढट्ट काग लगा कर, ७ या १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। बीच २ में हिलाते रहना चाहिये। पश्चात् फलालेन या बनात से छान लेना चाहिए।

मात्रा—आधा माशा से ४ माशे तक।

गुण—शूल, अग्निमान्द्य, अजीर्ण, अरुचि, अम्लपित्त और अरुणी आदि उदर रोगों के लिये अत्यन्त लाभप्रद है।

(मद्यासव)

एलाद्यासव नं० ३—देखिये, सूक्ष्मैलासव।

८९ * एलाद्यरिष्ट—विसर्प, मसूरिका आदि पर।

---

* पंचाशत्पलमेलायाः वासायाः पलविंशतिम्। मंजिष्ठां कुटजं दन्ती बुहूचीं रजनीद्वयम्॥ रास्ना सुशीरं मधुकं शिरीषं खदिरार्जुनौ। भूनिम्ब निम्बवन्हींश्च कुष्ठं मधुरिकां तथा॥ गृहीत्वा दिक्पलोन्मित्याजलद्रोणाष्टके क्षिपेत्। द्रोणशेषे कषाये च पूते शीते विनिक्षिपेत्॥ धातक्याः षोडशपलं माक्षिकस्य तुलात्रयम्। चातुजातं त्रिकटुकं चन्दनम् रक्तचन्दनम् मांसीं मुरां मुस्तकं च शैलेयं सारिवाद्वयम्। पलप्रमाणतश्चात्र क्षिप्त्वा मासं निधापयेत्॥ एलाद्यरिष्टो हन्त्येष विसर्पाश्च मसूरिकाम्। रोमान्तिकां शीतपित्तं विस्फोटं विषमज्वरम्॥ नाडीं व्रणं व्रणं दुष्टंकासंश्वासं च दारुणम्। भगन्दरोपदंशौ च प्रमेह पिडिकास्तथा॥

—भैषज्य रत्नावली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—बड़ी इलायची २॥ सेर, बासा (अड़ूसे की छाल) १ सेर, मजीठ, इन्द्रजौ (अथवा कुड़े की छाल), दन्तीमूल, गिलोय, हल्दी, दारुहल्दी, रास्ना, खस, मुलैठी, सिरस की छाल, खैर (खदिरकाष्ठ), अर्जुन की छाल, चिरायता, नीम की छाल, चीते की अड़ कूठ और सौंफ ये प्रत्येक ४०-४० तोले (आध सेर) लेकर तथा जवकुट कर, दो मन २४ सेर जल में पकावे। जब अष्टमांश अर्थात् १३ सेर जल शेष रहे तब छानकर शुद्ध मटके में भर उसमें (ठंडा होने पर) धाय के फूल १३ छटाँक, शहद १५ सेर, दालचीनी, तेजपात, नागकेशर, छोटी इलायची, सोंठ, मिरच, पीपल, श्वेतचन्दन, लालचन्दन, जटामांसी (बालछड़), मुरामांसी (मुरमकी अथवा कपूरकचरी), नागरमोथा, सिलारस (भूरि छरीला या छैलछरीला) और अनन्तमूल (सारिवा) दोनों प्रकार का प्रत्येक ४-४ तोले महीन पीसकर मिला देवे। यथाविधि सन्धान कर १ मास तक रखा रहने देवे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रखदे।

मात्रा—१। तोला से २॥ तोले तक। जल के साथ सेवन करावे।

गुण—विसर्प, मसूरिका (चेचक), रोमान्तिका, शीतपित्त, विस्फोटक (फोड़ा फुन्सी), विषमज्वर, नाडीव्रण (नासूर) दुष्टव्रण, दारुण खांसी और श्वास, भगन्दर, उपदंश तथा प्रमेह पिड़िकाओं को इसके सेवन से लाभ होता है।

---

८६ एलुवासव—कोष्ठबद्धता नाशक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि--एलुवा १ भाग और मद्य (४० से ६० प्रतिशत वाली) ८ भाग दोनों को एकत्र कर, बोतल में भर दृढ़ काग लगा कर, ७ या १५ दिन तक रखा रहने देवे। बीच २ में हिलाते रहना चाहिये। पश्चात् फलालेन या बनात से छानकर रख लेवे।

मात्रा—आधा माशा से ४ माशे तक।

गुण—बद्धकोष्ठ (कब्जी) को शीघ्र दूर करता है। पेट की ऐंठ मरोड़ आदि दोष दूर करने के लिये इसे पारसिक यवान्यासव और शुण्ठ्यरिष्ट के साथ मिलाकर देना चाहिये। स्त्रियों के रजोरोध में भी इसके सेवन से बड़ा लाभ होता है।

(मद्यासव)

---

८७ एलुवाद्यासव—प्लीहा नाशक।

(वैद्यराज गौरीशंकरजी आनन्द)

एलुवा (मुसब्बर), लहसुन का रस, हीराकसीस और नवसादर प्रत्येक १-१ तोला लेवे। प्रथम एक बोतल में या शुद्ध चिकने मटके में-दो बार की खैंची हुई शराब १ पाव और पुराना (अंगूरी) सिरका दो तोले एकत्र मिलावे, और फिर उसमें लहसुन का रस तथा एलुवा आदि का चूर्ण मिला, पात्र का मुख बन्द कर ४० दिन तक धूप में रक्खे। इसे मटके की अपेक्षा बोतल में अच्छी तरह काग लगाकर रखना अच्छा है। ४० दिन के पश्चात् छान कर रख दे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—५ से २० बून्द तक। दिन में २। ३ बार, भोजन के पश्चात् सेवन करे।

गुण—प्लीहा वृद्धि को शीघ्र नष्ट करता है। बहुत उत्तम है।

(अ० चिकित्सा संग्रह)

नोट—अंगूरी सिरका जो पेशावर से आता है, उसे लेना चाहिये। ईख का सिरका भी यदि तेज हो तो डाला जा सकता है। तेजाब डालकर जो सिरका बनाया जाता है, वह भी लाभप्रद होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE.

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ओं

८८ औदुम्बरासव—(स्वकृत) प्रदर, वीर्यविकारादि नाशक ।

विधि—कच्चे गूलर को कूट पीस कर, उसमें थोड़ा २ करके ४ सेर तक जल मिला, स्वच्छ वस्त्र में छान लेवे (गूलरों का वज़न ३ सेर तक होना चाहिये) और एक शुद्ध किये हुये मटके में डाल, उसमें मिश्री ३ सेर, धाय के फूल ८ छटाँक, मद्य (महुवे की जिसमें ७० से ९० प्रतिशत मद्य हो) १६ सेर मिला, यथा योग्य सन्धान कर १५ दिन तक रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रखदे।

मात्रा—१० से ३० बूंद तक, जल मिला कर सेवन करावे।

गुण—दोनों प्रकार के प्रदर, तथा वीर्यस्राव को तत्काल दूर करता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

८९—औदुम्बरारिष्ट—(स्वकृत)—प्रदर, बहुमूत्रादि नाशक।

विधि—गूलर की छाल ५ सेर और छाया शुष्क कच्चे गूलर का चूर्ण २ सेर लेकर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। जब १३ सेर जल शेष रहे तब उसे अच्छी तरह छान कर, शुद्ध किये हुए मटके में भरे, और उसमें-धाय के फूल १३ छटांक, मिश्री २ सेर, तथा आम की गुठली की गिरी, जामुन की गुठली, बंस-लोचन, पीपल की लाख, पठानी लोध, इलायची (छोटी), धनियाँ और कालीमिरच प्रत्येक ४—४ तोले, महीन चूर्ण कर मिलावे। यथाविधि सन्धानकर १५ दिन से १ मास तक रक्खे। उष्णकाल में १५ दिन में ही यह सिद्ध हो जाता है, शीतकाल में १ मास तक रखना पड़ता है। फिर छान कर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—२ से ४ तोले तक, जल के साथ।

गुण—प्रदर पर बहुत ही मुफ़ीद है। यक्ष्मा या क्षय की उस हालत में जब गले मे खराश अधिक हो, श्वास रुकता हो तथा यक्ष्मा के कीटाणु पाये जाते हों, इस अरिष्ट के सेवन से अपूर्व लाभ होता है। इससे बहुमूत्र के कई रोगी अच्छे किये हैं। वीर्यक्षीणता, स्वप्नधातुस्राव आदि वीर्य सम्बन्धी कई शिकायतें दूर हो जाती हैं।

९०—औदुम्बरारिष्ट नं० २—श्वास नाशक।

विधि—गूलर के फल, गूलर के पत्ते और उसी की छाल प्रत्येक २—२ सेर लेकर, अध कुटा कर १३ सेर जल में पकावे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पकाने के पहिले ४८ घंटे तक भिगो रखना चाहिये। जब ४ सेर जल शेष रहे, तब छान कर, शुद्ध मटकी में भर देवे, और उसमें खजूर की बनी हुई खांड दानेदार ५ सेर, शहद २॥ सेर, धायके फूल, २० तोले, सोंठ, मिरच, पीपल, नागकेशर (असली), प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोले, तथा बासा ६ माशे मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर, एक मास तक रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रक्खे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—श्वास (दमा) को शीघ्र ही समूल नष्ट करता है।

(एक प्राचीन हस्त लिखित पुस्तक से)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क

९१ * कङ्कोलासव नं० १—प्रमेहादि नाशक।

विधि—शीतलचीनी (कबाबचीनी) का चूर्ण एक भाग और मद्य (७० से ९० प्रतिशतवाली) ५ भाग दोनों को एकत्र कर, बोतल में भर, दृढ़ काग लगाकर, ७ दिन तक रक्खा रहने देवे। बीच में हिलाते रहना आवश्यक है। पश्चात् छानकर, बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—आधा माशे गु ४ माशे तक।

गुण—मूत्रल और कीटाणु नाशक है। इसके सेवन से पूय-मेह और मूत्रकृच्छ्रादि मूत्राशय सम्बन्धी रोगों में बहुत लाभ होता है। गलक्षत, स्वरकार्कश्य, कास और अग्निमान्द्य में भी इसका प्रयोग किया जाता है।

(मधासव)

नोट—इसे 'सुगन्धमरिच्यासव' भी कहते हैं। कबाबचीनी का मोटा चूर्ण ७ तो० तक लेकर, उसमें रेक्टिफाइडस्प्रिट ५० तोले मिला, उक्त विधि से यह तैयार किया जाता है, यह ३ दिन में ही तैयार हो जाता है। यदि स्प्रिट ५० तो० से कम होजाय तो ऊपर से और मिला कर शीशियों में भर कर रख दे। इसे अंग्रेजी (लैटिन) में टिंक्चूरा-क्युबेबा' कहते हैं।

—सम्पादक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

९२ कङ्कोलासव नं० २–(स्वकृत)–वीर्यस्राव, स्वप्नदोषादि नाशक।

विधि– शीतलचीनी (कबाबचीनी), लौंग, जायफल, नागकेशर, छोटी इलायची, अकरकरा, मुलहठी, असगंध और शतावरी प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले, शहद दो सेर, धाय के फूल आध सेर, शक्कर ५ सेर तथा जल २५ सेर, एकत्र शुद्ध मटकी में सन्धान कर रक्खे। सन्धान करते समय उसमें कपूर ४ तो० और अफीम ४ तोले एकत्र पीस कर मिला देवे। १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ माशा से १॥ तोला तक। जल के साथ।

गुण—कैसा भी वीर्यस्राव, स्वप्नदोष आदि हो इसके सेवन से शीघ्र दूर होजाता है। पित्तजन्य जो ६ प्रमेह हैं, वे भी नष्ट होजाते हैं। जो बालक सोते समय बिस्तरे पर पेशाब करते हैं, उनका मूत्र सम्बन्धी बिकार भी इससे दूर होजाता हैं।

कचनारारिष्ट—देखिये, काञ्चनारारिष्ट।

९३ कटुफलाद्यासवार्क—निमोनिया पर प्रभावशाली।

(वैद्यराज श्री उमंगूलालजी भिषक्, बिजनौर)

विधि—कायफल, खस, नागरमोथा, धनिया, वच, बड़ी हरड़, चिरायता, दालचीनी, भारंगी, पीपलामूल, हींग, शाहतरह, बबूल की जड़, पाढ़ की जड़, कुटकी, कचूर, पीपल, इन्द्रजौ बलामूल, काकड़ासिंगी और एरण्ड की जड़ प्रत्येक १-१ तोला और दशमूल १० तोले लेकर, सब को जवकुट कर, १२ सेर जल में भिगो देवे। २४ घन्टे के बाद काथ कर, ६ सेर शेष रहने पर,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छानकर शुद्ध चिकने मिट्टी के पात्र में भर कर, मुंह बन्द कर, जमीन में गाड़ देवे। एक मास बाद निकाल कर भवके के द्वारा इसका दो सेर अर्क खींच लेवे।

मात्रा—आधा-तोला, अनुपान दूध दो तोला।

गुण-फुफ्फुससन्निपात में जब नाड़ी और हृदय की अत्यन्त दुर्बलता हो और अकस्मात् स्वेद की अधिकता से रोगी की हालत भयंकर हो तब मकरध्वज और कस्तूरी आधी २ रत्ती इन दोनों को पीस शहद में मिला कर चटावे और ऊपर से उक्त कट्फलादि आसवार्क दो तोले की मात्रा से सम० भाग जल मिला कर पिलावे, अथवा मृतसंजीवनी सुरा पिलावे। उक्त आसवार्क को वैसे भी पिलाने से बहुत लाभ होता है।

(राकेश)

नोट—उक्त प्रयोग चिकित्सक के 'प्रयोग साहस्री' में प्रकाशित है। मालूम नहीं वैद्यराज उमंगूलालजी ने इसे कैसे अपना लिया और डकार तक नहीं ली, इस आसव के गुणों के विषय में प्रयोग साहस्री में लिखा है कि प्लेग पर इसके सेवन से गिल्टी बैठ जाती है, सन्निपात शांत होजाता है। इसे प्लेगहरासव भी कह सकते हैं।

---

९४ कट्फलारिष्ट—(स्वकृत)-वंध्यादोष, अतिसारादि निवारक।

विधि—कायफल वृक्ष की नवीन छाल ५ सेर लेकर जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल मिला क्वाथ सिद्ध करे। १३ सेर जल शेष रहने पर, उसमें-मिश्री १२ सेर, शहद ६॥ सेर, धाय के फूल १३ छटाँक, दालचीनी, तेजपात, नागकेशर, छोटी इलायची और लौंग प्रत्येक ४-४ तो० मिला, ठीक २ सन्धान कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भरकर रक्खे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—१ से २॥ तोले तक । जल के साथ ।

गुण—जिस स्त्री को गर्भ धारण न होता हो, उसे मासिक धर्म के उपरांत ३ दिन इसे दोनों शाम सेवन करावे और पश्चात् मैथुन कर्म करे, गर्भस्थापना होकर ईश्वर कृपा से पुत्र संतति होती है। पथ्य में स्त्री को केवल दूध भात खिलावे।

यदि कफ दोष, पाचनदोष या वातदोष के कारण सिर में दर्द हो तो इसके सेवन से शीघ्र दूर होजाता है। पाचन दोष से होने वाला धातुपात, मूत्र में सफेदी का जाना अतिसार, आध्मान (अफारा) पेट का भारीपन आदि विकार तथा शीत वायु-एवं कफ जन्य विकार इसके सेवन से शीघ्र दूर होते हैं। तिजारी आदि विषम ज्वरों में भी इससे लाभ होता है।

कटसरैयासव—देखिये, कटसारिकासव ।

९९—कटसारिकासव—(स्वकृत), शूल, कास निवारक ।

विधि—कटसरैया (पियाबासा) का पंचाङ्ग (इसमें जड़ अधिक लेनी चाहिये) लगभग ५ सेर लेकर, कूट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे । १३ सेर क्वाथ जल शेष रहने पर अच्छी तरह निचोड़ छान कर, घृत से चिकने किये हुए मटके में भर देवे। और ठंडा हो जाने पर उसमें मिश्री ५ सेर, शहद १५ सेर, धाय के फूल १ सेर, पीपल ८ तोले, बड़ी इलायची, दालचीनी, तेजपात और नागकेशर प्रत्येक ४-४ तोले चूर्ण कर मिलावे। यथाविधि सन्धान कर १ मास तक रक्खे। पश्चात् छान कर काम में लावे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छानकर शुद्ध चिकने मिट्टी के पात्र में भर कर, मुंह बन्द कर, जमीन में गाड़ देवे। एक मास बाद निकाल कर भबके के द्वारा इसका दो सेर अर्क खींच लेवे।

मात्रा—आधा-तोला, अनुपान बूध दो तोला।

गुण-फुफ्फुससन्निपात में जब नाड़ी और हृदय की अत्यन्त दुर्बलता हो और अकस्मात् स्वेद की अधिकता से रोगी की हालत भयंकर हो तब मकरध्वज और कस्तूरी आधी २ रत्ती इन दोनों को पीस शहद में मिला कर चटावे और ऊपर से उक्त कट्फलादि आसवार्क दो तोले की मात्रा से समभाग जल मिला कर पिलावे, अथवा मृतसंजीवनी सुरा पिलावे। उक्त आसवार्क को वैसे भी पिलाने से बहुत लाभ होता है।

(राकेश)

नोट—उक्त प्रयोग चिकित्सक के 'प्रयोग साहस्री' में प्रकाशित है। मालूम नहीं वैद्यराज उमंगूलालजी ने इसे कैसे अपना लिया और डकार तक नहीं ली, इस आसव के गुणों के विषय में प्रयोग साहस्री में लिखा है कि प्लेग पर इसके सेवन से गिल्टी बैठ जाती है, सन्निपात शांत होजाता है। इसे प्लेगहरासव भी कह सकते हैं।

---

९४ कट्फलारिष्ट—(स्वकृत)-वंध्यादोष, अतिसारादि निवारक।

विधि—कायफल वृक्ष की नवीन छाल ५ सेर लेकर जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल मिला क्वाथ सिद्ध करे। १३ सेर जल शेष रहने पर, उसमें-मिश्री १२ सेर, शहद ६॥ सेर, धाय के फूल १३ छटाँक, दालचीनी, तेजपात, नागकेशर, छोटी इलायची और लौंग प्रत्येक ४-४ तो० मिला, ठीक २ सन्धान कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भरकर रक्खे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—१ से २॥ तोले तक । जल के साथ ।

गुण—जिस स्त्री को गर्भ धारण न होता हो, उसे मासिक धर्म के उपरांत ३ दिन इसे दोनों शाम सेवन करावे और पश्चात् मैथुन कर्म करे, गर्भस्थापना होकर ईश्वर कृपा से पुत्र संतति होती है। पथ्य में स्त्री को केवल दूध भात खिलावे।

यदि कफ दोष, पाचनदोष या वातदोष के कारण सिर में दर्द हो तो इसके सेवन से शीघ्र दूर होजाता है। पाचन दोष से होने वाला धातुपात, मूत्र में सफेदी का जाना, अतिसार, आध्मान (अफारा) पेट का भारीपन आदि विकार तथा शीत वायु-एवं कफ जन्य विकार इसके सेवन से शीघ्र दूर होते हैं। तिजारी आदि विषम ज्वरों में भी इससे लाभ होता है।

कटसरैयासव—देखिये, कटसारिकासव ।

९५—कटसारिकासव—(स्वकृत), शूल, कास निवारक ।

विधि—कटसरैया (पियाबासा) का पंचाङ्ग (इसमें जड़ अधिक लेनी चाहिये) लगभग ५ सेर लेकर, कूट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे । १३ सेर क्वाथ जल शेष रहने पर अच्छी तरह निचोड़ छान कर, घृत से चिकने किये हुए मटके में भर देवे। और ठंडा हो जाने पर उसमें मिश्री ५ सेर, शहद १५ सेर, धाय के फूल १ सेर, पीपल ८ तोले, बड़ी इलायची, दालचीनी, तेजपात और नागकेशर प्रत्येक ४-४ तोले चूर्ण कर मिलावे। यथाविधि सन्धान कर १ मास तक रक्खे। पश्चात् छान कर काम में लावे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—कमर का दर्द, रक्तविकार, और खांसी को नष्ट करता है। बच्चों की काली खांसी पर इसे थोड़ा २ चटाने से तुरन्त लाभ होता है।

नोट—इसे 'झिण्टिकासव' भी कहते हैं।

कटहरासव—देखिये, पनसासव।

* कटुकासव—मन्दाग्नि नाशक।

विधि—कुटकी ८ तोले, सन्तरे के छिलके ३ तोले, इलायची के दाने १ तोला, इनका चूर्ण कर मद्य (४० से ६० प्रतिशत वाली) १२० तोले मिला, चीनी या काँच के पात्र में भर, यथा विधि सन्धान कर ७ से १५ दिन तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रखदे।

मात्रा—४ से ८ माशे तक। बड़ी अवस्था वाले रोगियों को शक्ति अनुसार देवे। जल मिला कर सेवन करावे।

गुण—मन्दाग्नि, अजीर्ण, अरुचि और अम्लपित्तादि रोगों में बड़ा लाभदायक है। इन रोगों में आवश्यकतानुसार इसे चित्रकाद्यासव, और विषतिन्दुकासव तथा अन्य आसवारिष्टों के साथ मिला कर प्रयोग करना चाहिये।

(मद्यासव)

---

९७ कटुकाद्यरिष्ट—(स्वकृत) यकृत, पांडु आदि नाशक।

विधि—कुटकी का चूर्ण १ सेर १० छटाँक, मुनक्का (दाख) ५० तोले नीम की छाल ४० तो०, हरड़, बहेड़ा, आमला प्रत्येक,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

द्रव्य ५-५ छटाँक लेकर जवकुट कर १ मन १२ सेर जल में काथ विधि से पकावे। जब लगभग १३ सेर तक जल शेष रहे तब उसे छानकर, शुद्ध मटकीमें भरे, और फिर उसमें-गुड़ १० सेर, धाय के फूल १३ छटांक, कटुपटोलपत्र, दारुहल्दी, गिलोय, सोंठ, पीपल और बायबिडंग प्रत्येक ४-४ तोले महीन चूर्णकर मिला देवे तथा ठीक प्रकार से सन्धान कर १ मास तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ३ तोले तक। जल के साथ।

गुण—इसके सेवन से यकृत में से पित्तस्राव ठीक २ होने लगता है, यकृत की अशक्तता, सूजन, पीड़ा आदि विकार दूर होते हैं। कामला रोग जो प्रायः यकृत में पित्त द्रव्य के अधिक संचय हो जाने से उत्पन्न होता है, इसके सेवन से शीघ्र ही दूर हो जाता है। यकृत की अशक्ति से उत्पन्न मन्दाग्नि, अतिसार, उदरशोथ, नलाश्रित वातादि विकार इससे शीघ्र दूर हो जाते हैं।

बालकों की यकृत वृद्धि पर यह रामबाणवत् कार्य करता है। प्लीहा और जलोदर का तो यह काल ही है। जलोदर में इस कटुकाद्यरिष्ट की मात्रा २ से ४ तोले तक दोनों शाम विना जल मिलाये देवे। यदि सहन न हो तो किंचित् गाय का दूध इसमें मिलाकर देवे, यदि रोगी बहुत ही अशक्त हो तो आधी रत्ती स्वर्णचन्द्रोदय इसके साथ देवे, रोगी को केवल दूध पर ही रखना चाहिए। यह अरिष्ट कासश्वासयुक्त विषमज्वर, कफप्रधान-पित्तज्वर, कृमिजन्य हृद्रोग, बद्धकोष्ठता आदि रोगों को शीघ्र ही नष्ट करता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कण्टकरंजारिष्ट—देखिये, करञ्जारिष्ट।

कण्टकार्याद्यासव—देखिये, कूष्माण्डासव नं० ३ और व्याघ्र्यासव

कठूमरारिष्ट—देखिये, काकोदुम्बरिकारिष्ट।

९८ कण्टकार्यरिष्ट—(स्वकृत)—कास, श्वास, मूत्रविकार आदि नाशक।

विधि—कटेरी (छोटी भट कटैया) का पंचाङ्ग ४ सेर, और अडूसे की जड़ आध सेर, खूब जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। जब जल लगभग ८ या १० सेर रहे, तब उतार कर छान लेवे। और एक शुद्ध मटकी में भर, उसमें-मिश्री १० सेर, शहद १५ सेर, धाय के फूल १० छटांक, छोटी पीपल, कालीमिरच, काकड़ासिंगी, कूठ और मुलैठी प्रत्येक ४-४ तोले महीन चूर्ण कर मिलावे, और यथाविधि सन्धान कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। फिर छान कर शीशियों में भरकर रख दे।

मात्रा—२ से ४ तो० तक।

गुण—शुष्क खांसी, क्षयकी अथवा पुरानी खांसी और श्वास पर अत्यन्त लाभ दायक है। यह शीघ्र ही कफ को निकाल देता है। वृक्क के रोग, मूत्रकृच्छ्र तथा मूत्राघात पर भी लाभदायक है। शीतला (मसूरिका) का वेग इसके सेवन से शांत होजाता है। शीतपित्त तथा साधारण खुजली भी इसके सेवन से दूर हो जाती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

९९. कणासव—* बालराग ।

विधि—छोटी पीपल, वायविडङ्ग, नागरमोथा, मुलैठी का सत, जायफल, जावित्री, काकड़ासिंगी, अतीस, केशर और दूधवच प्रत्येक १-१ तोला, कस्तूरी ४ माशे सब को कूटकर, ४० तोला उत्तम सुरा (बराण्डी) में डाल देवे, और पात्र का मुख बन्द कर ७ दिन रक्खा रहने दें, बाद को छानकर बोतल में भर कर रखले। इसकी २ । ३ बूंद बालकों को देने से तमाम विकार शीघ्र नष्ट होजाते हैं । यदि मूर्च्छावशात् बालक न पी सकें तो 'सिरिञ्ज' द्वारा इसी का इन्जेक्शन करना चाहिये। बड़ी उत्तम औषधि है।

(धन्वन्तरि से उद्धृत)

१०० कदम्बारिष्ट—(स्वकृत) ज्वरनाशक, पौष्टिक ।

विधि—कदम्ब की छाल (खास कर जमुना नदी के किनारे के कदम्ब वृक्ष की छाल विशेष गुणवर्धक होती है) ५ सेर लेकर जवकुट, कर २६ सेर जल में पकावे जब ६॥ सेर जल शेष रहे तब

---

* कणा विडङ्गम् वर मुस्तकञ्च सत्वं तथा वै मधुकस्य चापि । जातीफलं तत्वगपीहशृङ्गीघुणाप्रयो कुङ्कुमजं वचां च ॥ १ ॥ कर्षं पृथक् चापि समस्तमेतत् दत्वाच शाणं मृगजं मदञ्च । प्रस्थार्ध मात्रां परितः प्रसन्नाम् सुरांसमादाय विनिक्षिपेच्च ॥२॥ सप्ताहमेन परितो विमुद्रय मुखं पिदध्यात् भिषगत्र युक्तः । पश्चात् समुद्घाट्य पटेन पूत्वा प्रयोजयेत् बालगदेषु विद्वान् ॥ ३ ॥ कणासवोऽयं विविधान् निहन्ति, बालामयान् शीघ्रमयो प्रयुक्तः । मूर्च्छादिना पातुमयोह्यसक्ते सूच्याप्रदेयं धमनीसु रक्ते ॥ ४ ॥

—काव्यतीर्थ श्री पं० उमादत्तजी शर्मा ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उतार कर छान लेवे। शुद्ध चिकने घड़े में भर कर उसमें गुड़ १० सेर अच्छी तरह घोल देवे, और धाय के फूल ८ छटाँक, जीरा, बायबिडङ्ग, हरड़, बहेड़ा और आमला प्रत्येक का चूर्ण ४—४ तोला मिला, अच्छी तरह सन्धान कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे, पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रक्खे।

मात्रा—१ से २ तो० तक।

गुण—वीर्यवर्धक, पौष्टिक, ज्वरनाशक, तथा प्लीहा, अग्निमांद्य, और शूल नाशक है। बच्चों का अतिसार-युक्त ज्वर, जिसमें तृष्णाधिक्य और तालु-स्थान अत्यधिक फड़कता है, इस अरिष्ट के सेवन से शीघ्र दूर होता है।

---

१०१ कनकविंद्वरिष्ट * नं०१—कुष्ट, अर्शादि नाशक।

विधि—खैर की छाल ५ सेर को जवकुट कर १ मन १२ सेर जल में पकावे। जब १३ सेर जल शेष रहे तब छानकर, शुद्ध चिकने पात्र में भर, उसमें त्रिफला, त्रिकुटा, (सोंठ, मिरच, पीपल), बायविडङ्ग, हल्दी, नागरमोथा, बासा (अड़ूसा), इन्द्रजौ, दारुहल्दी, और गिलोय प्रत्येक का चूर्ण ३२-३२ तोले मिलावे। (इसमें धतूरे की जड़ की छाल ३२ तोला चूर्ण कर मिलाने

---

* खदिर कषायद्रोणं कुम्भे घृत भाविते समारोप्य। द्रव्याणि चूर्णितानि त्वष्टपलिकान्यत्र देयानि॥ त्रिफला व्योष विडंग रजनी मुस्ताटरुष-केन्द्रयव सौवर्णीच। तथा त्वक् छिन्नरुहा चेति तन्मासं निदधीत धान्य-मध्येतु॥ प्रातः प्रातः पिबेत्ततो युक्त्या मासेन महाकुष्ठं हन्त्येयार्श्य तु। पक्षेणार्शः श्वास भगन्दर कास किलास प्रमेह शोषांश्च॥ ना भवति कनकवर्णः पीत्वारिष्टं कनक बिन्दुम्। —चरक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से यह पूर्ण प्रभावशाली, यथानाम तथा गुणकारी होजाता है।) पश्चात् उस पात्र का मुख बन्द कर, धान्य की राशि में गाढ़ देवे। एक महीने के बाद निकाल कर, शीशियों में छानकर भर लेवे।

मात्रा—यदि इस अरिष्ट में धतूरे की जड़ की छाल न मिलाई गई हो तो, इसकी मात्रा २ से ४ तोले तक है। अन्यथा १ मासा से १ तोला तक जल के साथ सेवन करावे।

गुण—नियम पूर्वक १ मास तक नित्य प्रातःकाल इसका सेवन किया जाय तो महाकुष्ट (गलितकुष्ट) और यदि केवल १५ दिन तक इसका सेवन कराया जाय तो साधारण कुष्ट, अर्श (बवासीर), श्वास, खाँसी, भगन्दर, किलासकुष्ट, प्रमेह तथा क्षय नष्ट होजाते हैं। शरीर की कान्ति अपूर्व निर्मल, शोभायमान होजाती है।

---

१०२ कनकबिन्दुनामारिष्ट * नं० २—कुष्ट, श्वासादि नाशक।

विधि—खैर का क्वाथ १३ सेर सिद्ध करके, घी के चिकने बासन में भर कर, उसमें त्रिफला, सोंठ, मिरच, पीपल, हलदी, नागरमोथा, भिलावे, वायविडङ्ग, बावची, धतूरे की छाल,

---

* खदिर कषाय द्रोणं कुम्भे घृतभाविते समावाप्य। प्रक्षेप्याः पृथक् पलिकाः सर्वास्तु चूर्णितास्तानिन् ॥ १ ॥ त्रिफला त्रिकटुक रजनी मुस्ता-रुक्करविडङ्गवाकुचिकाः। सुवर्णत्वक् छिन्नरुहा धातकी मधुशतपलं मासम्॥ २॥ विदर्भातं धान्यमध्ये प्रातः प्रातः पिबेत्ततो युक्त्या। मासेन महाकुष्ठं हन्त्य-नल्पश्च पक्षेणार्शः ॥ ३ ॥ श्वास भगन्दर कास किलास प्रमेह शोफांश्च। स भवति कनकवर्णः पीत्वारिष्टं कनकबिन्दुश्च ॥ ४ ॥

—वंगसेन।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गिलोय और धाय के फूल प्रत्येक का चूर्ण ४-४तोले (धाय के फूल लगभग ३२ तो० डालना अच्छा होगा) और शहद ४०० तोले डाल देवे। पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर, उसे १ मास पर्यन्त धान्यराशि में गाड़ देवे, पश्चात् निकाल और छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ मासा से १ तोला तक। २ तो० जल में मिलाकर नित्य प्रातःकाल सेवन करावे।

गुण—यह अरिष्ट १ महीने में कुष्ट को, और १५ दिन में बवासीर को दूर कर देता है। तथा इसके सेवन से श्वास, भगन्दर, खांसी, किलासकुष्ट, (श्वित्र कुष्ट या सफेद कोढ़), प्रमेह और सूजन ये सब रोग शमन हो जाते हैं। जो मनुष्य इस 'कनकबिन्दुअरिष्ट' का सेवन करता है उसके शरीर की कान्ति, सुवर्ण के समान शोभायमान हो जाती है।

कनकशिरोमण्यासव—देखिये, कनकासव नं० १

१०३ कनकासव * नं० १—कास श्वासादि नाशक।

---

* संक्षुद्य कनकं शाखामूल पत्र फलैः सह। ततश्चतुष्पलं ग्राह्यं वृषमूलत्वचस्तथा ॥ १ ॥ मधुकं मागधी व्याघ्री केशरं विश्वभेषजम्। भार्ङ्गी नालीसपत्रञ्च संचूर्णेषां पलद्वयम् ॥ २ ॥ संगृह्य धातकी प्रस्थं द्राक्षायाः पल विंशतिम्। जलद्रोणद्वयं दत्वा शर्करायास्तुलां तथा ॥ ३ ॥ क्षौद्रस्यार्धतुलाञ्चापि। सर्वं संमिश्य यत्नतः भाण्डे निक्षिप्य चावृत्य निदध्यान्मासमात्रकम् ॥ ४ ॥ निहन्ति निखलान् श्वासान् कासं यक्ष्माणमेव च। क्षत क्षीणं ज्वरं जीर्णं रक्तपित्तमुरः क्षतम् ॥ ५ ॥

—भैषज्य रत्नावली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—शाखा, मूल, पत्र और फल सहित कुटा हुआ धतूरा और बांस (अङ्कुसे) की जड़ की छाल १६-१६ तोले, मुलैठी, पीपल, कटेरी (भटकटैया), नागकेसर, सोंठ, भारंगी और तालीसपत्र प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले, धाय के फूल १३ छटाँक, मुनका १ सेर, चीनी (खांड) ५ सेर, शहद २॥ सेर और जल २६ सेर, लेकर सब को एकत्र करके, यथाविधि सन्धान करके एक मास तक रक्खा रहने देवे। अथवा जमीन में गाड़ देवे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१० से ३० बूँद तक, जल में मिलाकर सेवन करावे। यदि उक्त विधि में जल दुगुना अर्थात् १ मन १२ सेर मिलाया जाए तो इसकी मात्रा १। तोला तक हो सकती है।

गुण—सब प्रकार के श्वास, खांसी, बच्चों की कुकुरखांसी या काली खांसी, राजयक्ष्मा (क्षय), क्षत-क्षीणता, जीर्णज्वर, रक्तपित्त और उरःक्षत नाशक है। इसे कनकशिरोमणिआसव भी कहते हैं। यह प्रमेहनाशक और बल वीर्य वर्धक भी है।

---

१०४ कनकासव नं० २—कास श्वास आदि नाशक।

(वैद्यराज पं० गौरीशंकरजी आनन्द हरिपुर)

विधि—धत्तूर पंचांग, वासा पंचाङ्ग, खिरेटी पंचाङ्ग, दश मूल, मधुयष्टि, अर्जुन, द्राक्षा, बहेड़ा इनका यवकुट चूर्ण ४०-४० तोले लेकर, ६४ सेर जल में डाल, २४ घंटे भिगोकर काढ़ा पकावे। चौथाई भाग शेष रहने पर छान लेवे, और शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें सोंठ, मिरच, पीपल, तेजपत्र, जटामांसी, हरड़, बहेड़ा, आमला, खुरासानी अजवायन, इलायची, ताली-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सपत्र, दारचीनी, नागकेशर, भारंगी, काकड़ासिंगी, पोहकर-मूल, नागरमोथा, वायबिडंग, बहेड़ा, और रास्ना प्रत्येक ४-४ तोले, महीन चूर्ण कर मिलावे तथा गुड़ २ सेर, और शहद २ सेर घोलकर मिलादेवे। पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक। अनुपान—शर्बत बनपशा, जल मिला कर।

गुण—कास, श्वास में अत्यन्त उपयोगी है। श्वास के दौरे में लाभप्रद है।

—अ० चि० संग्रह।

---

१०५ कनकारिष्ट * नं० १—अर्श, ग्रहण्यादि नाशक।

---

* नवस्यामलकस्यैकां कुर्याज्जर्जरितां तुलाम्। कुष्ठवांशश्च मागध्या विडंगं मरिचानि च॥ यवासः पिप्पलीमूलं (पाठां मूलं च पिप्पल्याः इति पाठः चरके) क्रमुकं चव्य चित्रकौ। मंजिष्ठैल्वालुकं लोध्रं पलिकान्युप कल्पयेत्॥ कुष्ठं दारुहरिद्रां च सुराह्वं सारिवाद्वयम्। मुस्तमिन्द्रयवांश्चैव कुर्यादर्धपलोन्मितम्। चत्वारि नागपुष्पस्य पलान्यभिनवस्य च॥ जलद्रोण द्वयेनैतत्साधयित्वावतारयेत्। द्रोणावशेषे (पादावशेषे इति चरके) पूते च शीते तस्मिन्प्रदापयेत्॥ मृद्वीकाद्व्याढकरसं शीतं निर्यूहसाधितम्। शर्करायाश्च शुद्धायाः दद्यात् द्विगुणितां तुलाम्॥ कुसुमस्वरसस्यैव मर्धप्रस्थं नवस्य च। त्वगेलाप्लवपत्राम्बुसेव्यक्रमुककेसरान्। मतिमांश्चूर्णयित्वा तु कार्षिकान् संप्रदापयेत्॥ तत्सर्वं स्थापयेत्पक्षं शुचौ च घृत भाजने।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—नवीन ताजे आँवले कुटे हुए ५ सेर, पीपल १६ तोले, बायविडंग, कालीमिरच, जवासा (इसके स्थान में पाठा ले सकते हैं), पीपलामूल, सुपारी, चव्य, चीता, अजीठ, एलुआ, लोध प्रत्येक ४-४ तोले (चरक के पाठानुसार बायविडंग और मिरच इसमें प्रत्येक १६-१६तोले लिया जाता है), कूठ, दारुहल्दी, देवदारु, दोनों प्रकार की सारिवा, नागरमोथा, इन्द्र जौ ये प्रत्येक २-२ तोले और नवीन नागकेशर १६ तोले सब को एकत्र जवकुट कर, २६ सेर जल में पकावे। जब १३ सेर जल शेष रहे, तब उसे छानकर, एक शुद्ध घृत से चिकने एवं खांड तथा अगर से धूपित मटके में भर देवे। जब वह ठंडा हो जाय, तब उसमें मुनक्का का क्वाथ ६॥ सेर (इसके लिये ६॥ सेर मुनक्का लेकर, बीज निकाल २६ सेर जल में पकावे, चतुर्थांश अर्थात् ६॥ सेर जल शेष रहनेपर, छानकर डाले), उत्तम खांड १० सेर, नवीन शहद ६॥ छटांक, दालचीनी, बड़ी इलायची के दाने, भद्रमोथा, तेजपात, नेत्रवाला (सुगन्धवाला), खस, सुपारी और नागकेशर प्रत्येक का चूर्ण १-१ तो० मिलाकर पात्र के मुख को ठीक प्रकार से सन्धान कर १५ दिन तक रक्खा रहने दे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख ले।

प्रलिप्ते सर्पिषा किंचिच्छर्करागुरुधूपिते। पक्षादूर्ध्वमरिष्टोऽयं कनको नाम-विश्रुतः। पेयः स्वादुरसो हृद्यः प्रयोगाद्रुक्करोचकः॥ अर्शांसि ग्रहणीदोष-मानाहमुदरं ज्वरम्। हृत्पाण्डुरोगशोथांश्च गुल्मवर्चोऽनिलग्रहान्॥ कासान्कफाभ्यांश्चोग्रान्सर्वानेवापकर्षति। वलीपलित खालित्यं दोषजं च व्यपोहति॥

—मदनिग्रह और चरक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—२ से ४ तोला तक। यथोचित जल मिलाकर सेवन करना चाहिए।

गुण—यह मधुर, हृदय को प्रिय, अन्न में रुचि बढ़ानेवाला अरिष्ट, बवासीर, संग्रहणी, अफारा, उदररोग, ज्वर, हृदय के विकार, पाण्डु, सूजन, गुल्म, खाँसी, कफजन्यरोग, वली (झुर्री) पलित (बालों का सफेद होना) तथा गंजनाशक है। इसके सेवन से मल तथा अपान वायु का ठीक २ निस्सरण होता है।

---

१०६ कनकारिष्ट * नं० २—कुष्ठ, शोथ, प्रमेहादिनाशक।

विधि—खैर का क्वाथ १३ सेर सिद्ध कर (इसके लिये ५ सेर खैर की छाल जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे १३ सेर जल शेष रहने पर छान लेवे) घृत से चिकने किये हुए मिट्टी के घड़े में भर, उसमें—हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, मिरच, पीपल, हलदी, निर्मली, दालचीनी, बावची, गिलोय और बायविडंग प्रत्येक का महीन चूर्ण ४-४ तोले; शहद १० सेर

---

* खदिर कषाय द्रोणं कुम्भे घृतभाविते समावाप्य । पलिकां मात्रां क्षेप्यां कृत्वा तामेव सूक्ष्मचूर्णं तु ॥ १ ॥ त्रिफला त्रिकटुक रजनी कतकस्व-ग्वाकुची गुडूच्याश्च। स विडङ्गमत्रं मधुपल शतद्वयं प्रक्षिपेत्सर्वम्॥२॥धात-कीपलान्यष्टौ क्वाथे चास्मिन्प्रदेयानि । प्रातः प्रातस्तु पिबेन्नाशयति चि-रोत्थितं कुष्ठम्॥३॥मासेन सर्वरोगान्निहन्ति च शोफमेहांश्च । निर्जित कास-श्वासो गुदकीलभगन्दरैर्विनिर्मुक्तः॥४॥कनकारिष्टं प्रपिबन्भवति पुमान्कनक कान्तिश्च ।

—गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तथा धाय के फूलों का चूर्ण ३२ तोले डालकर, अच्छी तरह सन्धान कर, १५ दिन तक धान्यराशि में गाढ़ कर रक्खे। यदि धान्यराशि में न गाढ़े तो किसी सुरक्षित उष्ण स्थान में १ मास तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलोंमें भरकर रखदे।

मात्रा—१ से ४ तोले तक, यथोचित जल के साथ मिला कर सेवन करावे।

नोट—यह 'अरिष्ट' कनकविन्दुनाभारिष्ट नं० २ के अनुसार ही है, किन्तु गुणों में उससे सौम्य है। बालकों के लिये बहुत लाभकारी है।

गुण—इसे नित्य नियमपूर्वक प्रातःकाल सेवन करने से पुराने से पुराना कुष्ठरोग एक मास के पश्चात् नहीं रह सकता। तथा सूजन, प्रमेह, खांसी, बालकों की भयंकर काली खांसी, श्वास, बवासीर के मस्से और भगन्दर आदि समस्त रोग नष्ट होकर, शरीर कुन्दन के समान कान्तिमान हो जाता है।

---

१०७ कन्थार्यासव—(स्वकृत)—कास, श्वास नाशक।

विधि—नागफ़नी, थूहर के अच्छे पके हुए लाल फलों को लेकर, युक्तिपूर्वक उनके कांटों को निकाल, मोटे खादी के स्वच्छ वस्त्र में रख पोटली सी बना और दबा २ कर सब स्वरस निकाल लेवे, फिर इस रस को २। ४ बार और छानकर, मजबूत बोतल में भर या चीनी मिट्टी के पात्र में भर, अच्छी तरह दृढ़ता से मुख मुद्राकर, जमीन में एक हाथ का गड्ढा खोदकर दबा कर रक्खे। २१ दिन के बाद निकालकर काम में लावे। पुनः छानने की आवश्यकता नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—बलाबल के अनुसार १ माशा से १॥ तोला तक। अनुपान शक्कर का शर्बत।

गुण—खांसी, काली खांसी, कुकुरखांसी और श्वास को शीघ्र नष्ट करता है। छोटे बच्चों की खांसी पर इसमें इलायची या सौंफ का चूर्ण मिला कर सेवन कराना चाहिए।

नोट—३ या ४ मास के बाद यह बिगड़ जाता है, अतएव इसमें रेक्टिफ़ाइडस्प्रिट मिलाकर रखनी चाहिए।

१०८ कपिकच्छ्वारिष्ट—(स्वकृत) वातव्याधि नाशक।

विधि—कौंच (केंवाच) की जड़ ५ सेर और कौंच के बीज ५ सेर दोनों को जबकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। जब १३ सेर जल शेष रहे तब उसे उतार और छान कर, घी से चिकनी की हुई मटकी में भर, उसमें—गुड़ ५ सेर, शहद २॥ सेर, धाय के फूल १३ छटांक, एरंड की छाल ८ तो०, रोहिषतृण ४ तो०, रास्ना ४ तो०, और असगंध ४ तो०, महीन चूर्ण कर मिला देवे, और मटकी का मुख उत्तम प्रकार से सन्धान कर एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर शीशियों में भरकर रख ले।

मात्रा—१ से ४ तोले तक। यथावश्यक जल या दूध अथवा रेंडी के तैल के अनुपान से देवे।

गुण—अर्धांगवात, कंपवात इत्यादि वीर्य क्षीणता जनित वातविकारों पर यह उत्तम लाभदायक है। यदि वात की अत्यन्त प्रबलता हो तो इसे रेंडी के तैल के अनुपान से देवे। ७ या १४ दिन में ही वात से जकड़ा हुआ अङ्ग वातमुक्त होकर, शरीर में चैतन्यता आती है। वस्तिगत वात पर भी यह अच्छा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कार्य करता है। तीव्र और जीर्णज्वर में इसके सेवन से मूत्र साफ़ होकर ज्वर, भ्रम आदि लक्षण शीघ्र दूर होते हैं।

---

१०९ कपित्थकासव—(स्वकृत) मधुमेह, बहुमूत्रादि नाशक।

विधि—कैथ वृक्ष की छाल दो सेर, उसी की (कैथ की) पत्तियाँ ३ सेर, और बेलपत्र २ सेर महीन पीसकर, वल्दी, दारुहल्दी, शीतलचीनी और अगर ४-४ तोला महीन चूर्णकर एकत्र २६ सेर जल में मिला, धूप से सुवासित शुद्ध मटके में भरे, और उसमें धाय के फूल १३ छटांक, मिश्री ५ सेर, तथा शहद ३ सेर मिला, यथाविधि सन्धान कर १ मास तक जमीन में गाड़ कर रक्खे। पश्चात् निकाल और छान कर, शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ से ४ तो० तक। यथोचित जल के साथ।

गुण—यह आसव मधुमेही के मूत्र की शर्करा को तथा बहुमूत्र रोग को शीघ्र नष्ट कर देता है।

अश्मरी (पथरी) में भी लाभदायक है और शीतपित्तनाशक है।

कफारिष्ट—देखिये, वासारिष्ट।

कबाबचीन्यासव—देखिये, कङ्कोलासव।

कमरखासव—देखिये, कर्मरङ्गासव।

११० करञ्जारिष्ट * नं० १—अर्श, प्लीहादि नाशक।

---

* द्रोणेऽपां पूतिवल्कद्वितुलभयपचेत्पादशेषे च तस्मिन् देयाशीति-गुडस्य प्रतनुकरजसो व्याशतोऽष्टौ पलानि। एतन्मासेन जातं जनयति-परमस्मूक्ष्मणः पक्तिशक्तिं शुक्तं कृत्वानुलोम्यं प्रजयतिगुदज प्लीह गुल्मोदराणि॥

—वाग्भट।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—कण्टकरंज (करंजुआ) की छाल १० सेर लेकर जवकुट कर, २६ सेर जल में पकावे। जब ६॥ सेर जल शेष रहे, तब उसे छानकर, उत्तम शुद्ध पात्र में भरे, और फिर उसमें गुड़ ४ सेर, सोंठ, मिरच, और पीपल प्रत्येक ४-४ तोले मिलावे (पाठ में त्रिकुटा ३२ तोले लिखा है, हमारे अनुभव से अत्यधिक है, अरिष्ट अत्यन्त ही तीक्ष्ण हो जाता है) तथा धाय के फूल लगभग ५ छटांक इसमें मिला कर, ठीक २ संधान कर, १ मास तक उष्ण स्थान में सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ से २ तो० तक। यथोचित जल के साथ।

गुण—अर्श (बवासीर), प्लीहा, वायगोला, उदररोग नाशक है। और अग्नि प्रदीपक है।

---

१११ करञ्जारिष्ट नं० २--(स्वकृत)—ज्वरादि नाशक।

विधि---करंजुए के पत्ते ६ सेर, और उसी के बीजों का चूर्ण १ सेर, दोनों को १ मन १२ सेर जल में पकावे, १३ सेर जल शेष रहने पर उसे छान, शुद्ध मटकी में भर देवे। फिर उसमें-गुड़ ५ सेर, मिश्री ५ सेर, धायके फूल १३ छटाँक, सौंफ ८ तोला दारचीनी ४ तो०, छोटी पीपल ४ तो० तथा छोटी इलायची ४ तो० चूर्ण कर मिलावे। यथाविधि मुख संधान कर १ मास तक रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ से ४ तो० तक। यथोचित जल के साथ।

गुण—यह मलेरिया ज्वर को शीघ्र ही नष्ट करता है। अतः, यकृतविकार तथा कोष्ठगत वात विकार को दूर करता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है। प्रस्वेदक और मूत्रल है। क्विनाइन मिकचर की अपेक्षा अधिक लाभदायक है। उपदंश पर भी लाभदायक है। आन्त्र पर इसका स्तम्भनकार्य बहुत उत्तम होता है। मलेरिया के पश्चात् किसी २ रोगी को आंत्र शैथिल्य के कारण संग्रहणी विकार होजाता है, उसे यह शीघ्र ही दूर कर देता है। गर्भाशय के विकारों को भी यह दूर करता है, सूतिका ज्वर को लाभप्रद है। मासिकधर्म को साफ़ करता है। वातजन्य शूल। तथा उदर के कृमि विकारों पर भी इसका उत्तम असर होता है

---

११२ करञ्जादि अरिष्ट- * नं० ३-अर्श आदि नाशक।

विधि—करञ्जुए की छाल ५ सेर, चित्रक छाल ५ सेर और कटेरी (भटकटैया) की जड़ ५ सेर लेकर एकत्र जवकुट कर, ३= सेर ३२ तो० जल में पकावे। चौथाई भाग शेष रहने पर, छान लेवें, और घृत से चिकने किये हुए मटके में भर देवे। उसमें ½ सेर गुड़ को घोल देवे तथा दालचीनी, इलायची, तेजपात, सोंठ, मिरच, पीपल, पीपलामूल, अनार के दाने, पाषाणभेद, पेहकरमूल, धनिया, चव्य, हाऊबेर, अदरख, अम्लबेत प्रत्येक

---

* पचेत्तुला पूतिकरंज कल्कद्वि मूलतश्चित्रक कण्टकार्योः। द्रोणत्रयेऽपां चरणावशेषे पूते शतं तत्र गुडस्यदद्यात् ॥१॥ पलिकन्च सुचूर्णितं त्रिजात त्रिकटुग्रान्थिक दाड़िमाद्दम भेदम्। परपुष्करमूल धान्यचव्यं हपुषामार्द्रक-अम्लबेतसंच ॥२॥ शीतीभूतं क्षौद्रार्द्धविंशत्युपेतमार्द्रद्राक्षा बीजपूरार्द्धकैश्च ॥३॥ युक्तं कामं गण्डिकाभिस्तयेक्षोः सर्पिः पात्रे मास मात्रेण जातम्। अरिष्टं ऊकचामिवेदं दुर्नाम्नां बन्हिदीपनं परमम् ॥४॥ पाण्डु गरोदरगुल्म प्लीहानाहश्मकृच्छ्रघ्नम्।

—वाग्भट।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—करटकरंज (करंजुआ) की छाल १० सेर लेकर जवकुट कर, २६ सेर जल में पकावे। जब ६॥ सेर जल शेष रहे, तब उसे छानकर, उत्तम शुद्ध पात्र में भरे, और फिर उसमें गुड़ ४ सेर, सोंठ, मिरच, और पीपल प्रत्येक ४-४ तोले मिलावे (पाठ में त्रिकुटा ३२ तोले लिखा है, हमारे अनुभव से अत्यधिक है, अरिष्ट अत्यन्त ही तीक्ष्ण हो जाता है) तथा धाय के फूल लगभग ५ छटांक इसमें मिला कर, ठीक २ संधान कर, १ मास तक उष्ण स्थान में सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ से २ तो० तक। यथोचित जल के साथ।

गुण—अर्श (बवासीर), प्लीहा, वायगोला, उदररोग नाशक है। और अग्नि प्रदीपक है।

---

१११ करञ्जारिष्ट नं० २--(स्वकृत)—ज्वरादि नाशक।

विधि---करंजुए के पत्ते ६ सेर, और उसी के बीजों का चूर्ण १ सेर, दोनों को १ मन १२ सेर जल में पकावे, १३ सेर जल शेष रहने पर उसे छान, शुद्ध मटकी में भर देवे। फिर उसमें-गुड़ ५ सेर, मिश्री ५ सेर, धायके फूल १३ छटाँक, सौंफ ८ तोला दारचीनी ४ तो०, छोटी पीपल ४ तो० तथा छोटी इलायची ४ तो० चूर्ण कर मिलावे। यथाविधि मुख संधान कर १ मास तक रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ से ४ तो० तक। यथोचित जल के साथ।

गुण—यह मलेरिया ज्वर को शीघ्र ही नष्ट करता है। प्लीहा, यकृतविकार तथा कोष्ठगत वात विकार को दूर करता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है । प्रस्वेदक और मूत्रल है । क्विनाइन मिक्चर की अपेक्षा अधिक लाभदायक है । उपदंश पर भी लाभदायक है । आन्त्र पर इसका स्तम्भनकार्य बहुत उत्तम होता है । मलेरिया के पश्चात् किसी २ रोगी को आंत्र शैथिल्य के कारण संग्रहणी विकार होजाता है, उसे यह शीघ्र ही दूर कर देता है । गर्भाशय के विकारों को भी यह दूर करता है, सूतिका ज्वर को लाभप्रद है । मासिकधर्म को साफ़ करता है । वातजन्य शूल । तथा उदर के कृमि विकारों पर भी इसका उत्तम असर होता है

---

११२ करञ्जादि अरिष्ट- * नं० ३-अर्श आदि नाशक ।

विधि—करञ्जुए की छाल ५ सेर, चित्रक छाल ५ सेर और कटेरी (भटकटैया) की जड़ ५ सेर लेकर एकत्र जवकुट कर, ३२ सेर ३२ तो० जल में पकावे । चौथाई भाग शेष रहने पर, छान लेवें, और घृत से चिकने किये हुए मटके में भर देवे । उसमें ५ सेर गुड़ को घोल देवे तथा दालचीनी, इलायची, तेजपात, सोंठ, मिरच, पीपल, पीपलामूल, अनार के दाने, पाषाणभेद, पोहकरमूल, धनिया, चव्य, हाऊबेर, अदरख, अम्लबेत प्रत्येक

---

* पचेत्तुला पूतिकरंज कल्काद्वि मूलतश्चित्रक कण्टकार्यो: । द्रोणत्रयेऽपां चरणावशेषे पूते शतं तत्र गुडस्यदद्यात् ॥१॥ पलिकन्च सुचूर्णितं त्रिजात त्रिकटुप्रान्यिक दाड़िमाम्ल भेदम् । परपुष्करमूल धान्यचव्यं हपुषामार्द्रक-मम्लबेतसंच ॥२॥ शीतीभूतं क्षौद्रविंशत्युपेतमार्द्रद्राक्षा बीजपूरार्द्रकैश्च ॥३॥ युक्तं कामं गण्डिकाभिस्तयेक्षो: सर्पिः पात्रे मास मात्रेण जातम् । अरिष्टं ऊकचामिवेदं दुर्नाम्नां वन्हिदीपनं परमम् ॥४॥ पाण्डु गरोदरगुल्म प्लीहानाहश्मकृच्छ्रघ्नम् ।

—वाग्भट ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का चूर्ण ४-४ तो० शहद १ सेर, दाख ४० तोले, बिजौरे नीबू का गूदा ४० तोले और ईख की गंडेरियाँ इच्छानुसार मिला पात्र के यथाविधि सन्धान कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रक्खदे।

मात्रा—१ से ४ तो० तक। उचित जल के साथ।

गुण—बवासीर को शीघ्र दूर करता है, और जठराग्नि को दीपन करता है, तथा पाण्डु, गरोदर, गुल्म, हृद्रोग, पथरी, अफारा और मूत्रकृच्छ्र नाशक है।

करंजाद्यरिष्ट नं० ४—देखिये, विषमज्वरारिष्ट।

११३ कर्पूरफेनासव—अजीर्ण, विसूचिकादिनाशक।

(कविराज पं० गौरीशंकरजी आनन्द, हरिपुर)

विधि—विशुद्ध सुरा १० सेर, अफीम ३२ तो०, कपूर ६४ तो० छोटी इलायची, नागरमोथा, जायफल, लौंग, इन्द्रजौ, सोंठ, अजवायन, कालमिरच प्रत्येक ८-८ तोले, महीन चूर्ण कर, सुरा में मिला, पक्व चीनी के पात्र में डालकर मुख बन्द कर रक्खे। १ मास पश्चात् निकाल कर छान लेवें।

मात्रा—५ से २० बून्द तक। अनुपान जल।

गुण—अजीर्ण, हैजा, संग्रहणी, उदरशूल, खाँसी, और श्वास में उत्तम है। बहुत गुणकारी योग है।

—अ० चि० संग्रह।

---

११४ कर्पूरासव * नं० १—विसूचिका (हैजा) नाशक।

विधि—उत्तम मद्य) रेक्टिफाइडस्प्रिट अथवा मृत संजीवनी सुरा) पांच सेर लेकर, शुद्ध चीनी मिट्टी के पात्र में भर कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसमें-शुद्ध कपूर (अथवा भीमसेनी कपूर) ३२ तोले, इलायची छोटी, नागरमोथा, सोंठ, अजवायन और कालीमिरच प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिला, उत्तम प्रकार से मुख सन्धान कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—५ से २० बून्द तक। बतासा, मिश्री अथवा सौंफ के अर्क के साथ।

गुण—हैजा और अतिसार को शीघ्र ही नष्ट करता है। तथा अनेक प्रकार के उदर रोगों को भगाता है। कुचला विष का शीघ्र प्रतिकारक है, यदि किसी को कुचले के विष की बाधा हो तो इसकी २ या ३ मात्रा से ही विष बाधा दूर होती है। मूत्रावरोध पर इस आसव को पेड़ू पर मल कर सेंकने से मूत्र खुल कर आता है। यदि इतने पर भी मूत्र खुल कर न आवे तो शिश्न के मुख के अन्दर इस आसव से भिगोई हुई बत्ती को अन्दर प्रविष्ट करे शीघ्र ही मूत्र खुलकर आवेगा। अमृतधारा या अर्ककपूर के समान भिन्न २ अनुपानों के साथ, विविध विकारों में इसका सेवन किया जा सकता है।

---

* तुळां प्रसन्नां परिगृह्य शुद्धां पलाष्टकं चोडुपतेः क्षिपेच्च । एला च सूक्ष्मा घनश्चन्दनैरै यमानिकावेल्लजमत्रसर्वम् ॥ पलप्रमाणं पिहितं च भाण्डे मासं निदध्यात् भिषगत्रयत्नान्। विषूचिकायाः परमौषधं तद्विहन्ति चान्यान् विविधान्विकारान् ॥

—भैषज्य-रत्नावळी ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

११५ * कर्पूरासव नं० २—विसूचिका, अजार्णादि-नाशक।

विधि—कपूर १ तोला, सत्वलोबान १॥ तोला, अफीम ३ माशे, सौंफ ६ माशे, इलायची ६ माशे, सोंठ ६ माशे, कालीमिरच ६ माशे, और अजवायन ६ माशे, चूर्ण कर ५० तोला मद्य (७० से ९० प्रतिशत वाली) में मिला किसी शुद्ध कांच या चीनी मिट्टी के पात्र में भर कर रख दे। ७ या १५ दिन के पश्चात् छान कर काम में लावे। मात्रा—नं० १ के अनुसार। बड़ी अवस्था वालों को २ से ४ माशे तक भी दे सकते हैं।

गुण—विसूचिका, अग्निमांद्य, अजीर्ण, अम्लपित्त, उदर शूल, अतिसार, आमातिसार; रक्तातिसार तथा श्वासकासादि रोगों में बड़ा लाभदायक है। इन्हीं रोगों से सम्बन्ध रखनेवाली अन्य औषधियों के साथ मिलाकर देने से इसकी और भी गुण-वृद्धि होजाती है। यह आसव नं० १ की अपेक्षा कुछ अधिक गुणदायक है। (मद्यासव)

---

११६ कर्पूरासव नं ३—(स्वकृत)—विसूचिका नाशक।

विधि—देशी कपूर १५ तोले लेकर, कूटकर एक बोतल में भर, उसमें मद्य (रेक्टिफाइडस्पिरिट) ३० तोले और शुद्ध अफीम ३ तोले डालकर, बोतल का मुख, अच्छी तरह बन्द कर रक्खा रहने देवे। ७ दिन के पश्चात् काम में लावे।

मात्रा—१ बूंद से ३ बूंद तक। शक्कर या बतासे के साथ।

गुण—हैजे की उल्टी और दस्तों को शीघ्र बन्द कर देता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

११७ कर्पूरासव नं. ४--विसूचिका नाशक ।

(डॉ० श्री बी० एल० कश्यप, आयुर्वेदभूषण)

विधि—देशी कपूर ४ तोले को बारीक पीसकर एक बोतल में डालकर, ऊपर से १२ तोले रस का सिरका डाल देवे, और कार्क लगाकर, एक महीने तक धूप में रक्खा रहने दे, परन्तु रोज एक बार हिला दिया करे । १ मास के बाद छान कर, नीली बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—४ या ५ बून्द से १० बून्द तक । अर्क गुलाब दो तोले के साथ सेवन करावे ।

गुण—हैजे पर तुरन्त लाभ करता है ।

(अ० योगमाळा-सिद्ध योगाङ्क)

---

११८ कर्पूरासव नं. ५—(स्वकृत)-सर्वरोग नाशक ।

विधि-कपूर १५ तोले, पोदीने का फूल (सत्व), अजवायन का सत्व और सत्व लोबान प्रत्येक २॥-२॥ तोले एकत्र १ बोतल में मिला धूप में रक्खे, सब एक जीव होजाने पर उसमें अहिफेना-सव ८ माशे मिला, बोतल का मुँह बन्द कर रख दे । ७ दिन बाद काम में लावे ।

गुण—रोगानुसार अनुपान भेद से यह सर्व रोगों पर लाभदायक है ।

---

११९ कर्मरङ्गासव—मधुमेह नाशक ।

विधि—कमरख की छाल १ सेर और हल्दी ४ तोले, जव कुट कर, ३२ सेर जल में पकावे । ४ सेर काथ-जल शेष रहने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर, छानकर शुद्ध चिकने घड़े में भर देवें, ठंडा होने पर उस में १ सेर शहद और २० तोले धायके फूलों का चूर्ण मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर काम में लावे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक। अनुपान—चूने के निथरे हुए चौगुने जल के साथ।

गुण—मधुमेह, प्रमेह, और बहुमूत्र रोग को शीघ्र दूर करता है। रोगी को पथ्य से रहना, और व्यायाम करते रहना चाहिये।

(अ० यो० माला)

कल्पनाथासव—देखिये, यवातिक्तासव।

कस्तूरिकासव—देखिये, मृगमदासव।

कसौंदीआसव—देखिये, कासमर्दासव।

१२० काकमाच्यासव नं० १—जलोदर नाशक।

(श्रीमान् स्वामी विभूतिनन्दजी महाराज)

विधि—मकोय (शायद पंचाङ्ग) ७॥ सेर अच्छी तरह कुचल कर शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें १ मन (४० सेर) जल, ५ सेर गुड़, २॥ सेर लोहचूर्ण और कीकड़ की छाल (कुचली हुई) २ सेर मिलाकर, चार दिन पीछे मुख बन्द कर रख दे। ४० दिन बाद खोलकर, छानकर बोतलों में भर ले।

मात्रा—५ तोले। केवल प्रातःकाल ही लेवे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—जलोदर, जहरबाद को शर्तिया दूर करता है।

नोट-कोई २ इसमें जल २५ सेर ही डालते हैं, और कोई २ एक मन जल में गुड़ १० सेर डालते हैं। लेखक ने इसका नाम जहरबाद अर्क रक्खा है।

(धन्वन्तरि—वृटी चित्रांङ्क)

काकमाच्यासव नं २—देखिये, माक्षिकासव।

११२ काकोदुम्बरिकारिष्ट—(स्वकृत) प्रदरहर।

विधि—कठूमर की जड़ ५ सेर और कठूमर के फल २ सेर, जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर क्वाथ शेष रहने पर, छान लेवे और शुद्ध चिकने मिट्टी के पात्र में भरकर, ठंडा हो जाने पर उसमें धाय के फूल १० छटांक, शहद ३ सेर, मिश्री ६ सेर, श्वेत चन्दन ४ तो०, लाल चन्दन ४ तो०, लौंग ४ ता० और नागरमोथा ४ तो० चूर्ण कर मिला देवे। ठीक प्रकार मुख सन्धान कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे, पश्चात् छानकर शीशियों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ से ४ तोले तक। यथोचित जल के साथ देवे।

गुण—रक्तप्रदर, रक्तपित्त, कुष्ठ विकार निवारक है। गर्भकारक है। ऋतु स्नान के पश्चात् चतुर्थ दिन से केवल ३ दिन तक इसका सेवन करावे, फिर गर्भाधान करे। यह गर्भपातावरोधक भी है जिस स्त्री को गर्भपात हो जाता हो, उसे कुछ दिनों तक इसका सेवन कराना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१२२ काञ्चनारारिष्ट—(स्वकृत)—गंडमालादि बिकारे।

विधि—लाल कचनार की छाल जवकुट कर ५ सेर लेवे। १ मन १२ सेर जल में पकाकर काथ करे। जब १३ सेर जल शेष रहे, तब छानकर, चिकने तथा गुग्गुल से धूपित मटके में भर कर उसमें—धाय के फूल आध सेर, शहद १० सेर तथा सोंठ, सफेद जीरा, कालीमिरच और शुद्ध गूगल प्रत्येक ४—४ तोले चूर्ण कर मिला दे। मटके का मुख अच्छी तरह सन्धान कर, १ मास तक रक्खा रहने दे। पश्चात् छानकर शीशियों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ से ४ तोले तक। अनुपान जल।

गुण—यह शीघ्र ही रक्त को शुद्ध करता है। गण्डमालापर रामबाण है। कुष्ठादि चर्मरोग, दाह, अतिसार, तथा आन्त्र के कृमियों का नाशक है।

---

१२३ कामिनीविलासारिष्ट—योषापस्मार नाशक।

विधि—चीते की छाल, दुग्ध बच, उसवा अगरवी, लाल चन्दन, श्वेत चन्दन, अनन्तमूल प्रत्येक ८—८ तोले, अजीठ, निशोथ, हल्दी, नागरमोथा, दारुहल्दी, रास्ना (असली), विदारीकन्द, मुलैठी का घनसत्व, बड़ी हरड़ का छिलका और अर्जुन की छाल प्रत्येक १०—१० तोले, सफेद मुसली १२॥ तोले तथा असगंध ५० तोले, इन १८ द्रव्यों को अधकुट कर, नाड़ी (नेत्रवाला) के ५० सेर स्वरस में मिला, कढ़ाई में मंदाग्नि पर पकाव। जब चौथाई अर्थात् १२॥ सेर जल शेष रहे, तब उतार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ले ठंडा होने पर, हाथ से मलकर छान लेवे। इस छने हुए अर्क में त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल) ३ तोले, नागकेशर (असली), दारचीनी, फूलप्रियंगु (असली), तेजपात और छोटी इलायची ४-४ तोले, शिलाजीत शुद्ध ८ तो०, धाय के फूल १६ तो० उत्तम शहद (मधु) ३०० तो०, इन द्रव्यों को मिला, चीनी के पात्र में भर देवें, और मुख बन्दकर, १ मास तक रखा रहने दे। फिर छानकर बोतलों में कुछ खाली रख कर भर देवे।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक। अनुपान-जल।

गुण—इसके सेवन से स्त्रियों की जरायुज-मूर्च्छा (हिस्टीरिया) अर्थात् योषापस्मार अवश्य ही आराम होजाता है।

(धन्वन्तरि, अनुभूतयोगाङ्क)

कायफलाद्यासव—देखिये, कट्फलाद्यासव।

कायफलारिष्ट—देखिये, कट्फलारिष्ट।

१२४ कारवेल्लासव—(स्वकृत)-मसूरिका नाशक।

विधि—करेले के पत्तों का अथवा फलों का स्वरस १ सेर निकाल शुद्ध चिकनी मटकी में भर उसमें धाय के फूलों का चूर्ण ५ तोले, शहद आध सेर और हल्दी का महीन चूर्ण २ तोले मिला, मुख मुद्रा कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे, पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—आधा तोला से १ तोला तक। दुगुना जल मिला दिन में दो वार सेवन करावे।

गुण—चेचक में शान्ति कर, उपद्रव बढ़ने नहीं पाते, दस्त साफ़ लाता है। स्वस्थ व्यक्ति भी यदि चेचक के दिनों में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसका सेवन करता रहे तो उसे चेचक का भय नहीं रहता, यदि चेचक का हमला हो भी जाय तो उसे विशेष कष्टों का सामना नहीं करना पड़ता।

---

१२५ कारस्कराद्यासव—वातव्याधि पर।

(लो० श्रीमती ब्रह्मदेवीजी विशारदा कृत)

विधि—कुचला १५ तोले (इसे शुद्ध करने की आवश्यकता नहीं, यों ही कूट लेवे), अर्जुन की छाल ३ तोले, त्रिफला ६ तो०, नागौरी असगंध ३ तोले, चिरायता कड़वा ३ तोले, गिलोय ३ तोले इनको जवकुट कर अलग रखे। नागरमोथा, छोटी इलायची, दारचीनी, जटामांसी, लताकस्तूरी प्रत्येक २-२ तोले इन सुगन्धित द्रव्यों को कूट पीस कर पृथक् रखे। लोह चूर्ण ५ तोले लेकर प्रथम हरों के साथ खरल कर तीन चार दिन भीगने देवे, फिर क्रमशः आमले और बहेड़े के स्वरस में घोट सुखा कर अलग रखे। पश्चात् १४ सेर जल को आग पर खूब खौलावे और उसमें गुड़ ४ सेर घोल देवे, साथ ही में साफ़ की हुई मुनक्का ६ तोले पीस कर डाल देवे, गुड़ के घुलजाने पर उसमें उक्त लोहचूर्ण घोल देवे, फिर उसे उतार कर किसी चीनी के पात्र में भर देवे। ध्यान रहे चीनी के पात्र में उक्त आसवीय घोल भरने से पहिले उसे चूने के पानी से धोकर, लोबान, कपूर, गूगल और चन्दन की धूनी दे देनी चाहिए। फिर उसमें कुचला से लेकर गिलोय तक के कुल ८ द्रव्यों का चूर्ण मिला देवे, और कपड़े से ढक देवे। जब अन्दर का घोल ठंडा हो जाय, तब सन्धान कर, सील रहित शुद्ध स्थान में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुरक्षित कर रक्खे । २० वें दिन खोलकर, उसमें नागरमोथादि ५ सुगन्धि द्रव्यों के चूर्ण को मिला, पुनः सन्धान कर रख देवे, और ८। १० दिन बाद खूब अच्छी तरह छानकर बोतलों में भरकर रख दे । बोतलों में भरने के बाद, प्रत्येक बोतल में थोड़ी थोड़ी केशर, कस्तूरी अल्कोहल में घुली हुई (अल्कोहल अर्थात् मद्य अथवा मृतसंजीवनी सुरा २॥ तो०, केशर ३ माशे और कस्तूरी ३ माशे एकत्र मिलाकर सब घोट लेवे) डाल देवे । फिर काग लगा कर उसके मुँह पर कपरौटी कर देवे ।

मात्रा—१० बूंद तक । अनुपान—जल ।

गुण—यह नाड़ी मण्डल के रोगों की (वातव्याधि को), और पट्ठों की दुर्बलता की उत्तम औषधि है । हृदय, आमाशय और गुर्दों को बल देता है । गर्भाशयोन्माद (हिस्टेरिया) पर इस आसव को अश्वगंधारिष्ट नं० १ के साथ, उचित मात्रा में मिला कर सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है ।

[राकेश—गर्भाङ्क से]

---

१२६ कारस्करासव नं० २—(स्वकृत) ज्वरादि नाशक ।

विधि—कुचले का चूर्ण वज़न में जितना हो उससे ग्यारह गुनी रेक्टिफाइडस्पिरिट अर्थात् मद्य लेकर, चीनी मिट्टी के पात्र में एकत्र मिला १५ दिन तक, सन्धान कर रक्खे । फिर अच्छी तरह दबाकर, निचोड़ ले और फिर छानकर शीशियों में भर कर रख दे ।

मात्रा—५ बूँद से १५ बूँद तक । अनुपान—जल ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—शीघ्र ही ज्वर को दूर करता है। पाचनशक्ति बढ़ाता है। इन्द्रिय शैथिल्य, स्वप्नदोष, ध्वजभंग, प्रमेह, वीर्यस्राव आदि विकारों को शीघ्र नष्ट करता है। स्त्रियों के रोग, जैसे-रज की कमी, ऋतुकाल में कष्ट, जरायु के दोष, अधिक रक्तस्राव आदि नाशक है। तीव्र वेदना, शूल, एकांगवात, कंपवात, उन्माद और अर्श पर उत्तम लाभकारी है। जीर्णज्वर, यकृत, प्लीहा, अजीर्ण, अग्निमांद्य पर भी विशेष उपकारी है।

---

१२७ कारस्करासव नं ३—प्रमेह, मधुमेहादि नाशक।

(श्री स्व० पं० परशुराम जी शास्त्री विद्यासागर)

विधि—१ तोला कुचले, बारीक कतर कर, जल में भिगो देवे। फिर कूटकर, शीशी में ६ तोले एलकोहल (मद्य) के साथ, डाल कर, मुख मुद्राकर, १५ दिन तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छान कर शीशी में भर कर रख दे।

मात्रा—४ बूँद, ४ तोले पानी में मिलाकर सेवन करावे।

गुण—प्रमेह तथा मधुमेह को शीघ्र नष्ट करता है।

(अ० योगमाला)

नोट-इसे 'विषतिन्दुकासव' भी कहते हैं। यह अग्निमांद्य, अजीर्ण, अरुचि, बद्धकोष्ठ एवं रोगजन्य दुर्बलता पर उत्तम लाभदायक है। इन रोगों में इसे कट्फलासव और चित्रकासवासव के साथ मिलाकर सेवन करना चाहिए। निमोनियाँ और सूखी खाँसी आदि जिनमें कफ निकलने की आवश्यकता होती है, इसका सेवन लाभदायक होता है। पुराने अर्धाङ्ग में भी इसके सेवन से लाभ होता है, किन्तु नवीन एवं शोथसहित अर्धाङ्ग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में इसे कभी सेवन नहीं कराना चाहिये। उत्तेजक होने के कारण नपुंसकत्व में भी इससे लाभ होता है, किंतु अति मैथुन जनित नपुंसकता में इससे हानि की ही संभावना है।

—(मद्यासव)

कारस्करासव नं ४—देखिये विषमुष्ट्यासव।

१२८ * कार्पासाद्यासव—स्त्री रोग नाशक।

विधि—कपास के पौधों की जड़ की छाल ८ तोले, अरगट (ये अर्गट नामक वृक्ष के बीज हैं, जो इन्द्रजव के समान ही लम्बे और चौड़े होते हैं, इन पर सड़ान की फफूंदी सी चढ़ी हुई होती है, औषधि कर्म के लिये इन्हीं बीजों का चूर्ण बनाकर रख लिया जाता है) ८ तोले, इन दोनों के चूर्ण को ६८ तोले मद्य (७० से ९० प्रतिशत वाली) घोलकर, चीनी मिट्टी के पात्र में भरकर, सन्धान कर ८ से १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख देवे।

मात्रा—२ से ८ माशे तक। बालकों को कम मात्रा में दे। अनुपान-जल।

गुण—इसके सेवन से स्त्रियों के गर्भाशय के पिछले भाग में, निश्चित रूप से एक प्रकार का संकोच होता है, जिससे गर्भस्थ शिशु सुगमता से वेगपूर्वक बाहर आ जाता है। प्रसव काल में जिन निर्बल स्त्रियों के शूल (प्रसववेदना) अधिक पैदा न होने के कारण प्रसव कष्ट-प्रद होता है, उनके लिये यह आसव बड़ा लाभदायक है। मक्कलशूल, और रक्तस्राव में यह लाभप्रद है।

(मद्यासव)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१२९ कार्पासारिष्ट—स्त्री रोगे।

(श्री० पं० घनानन्द जी पन्त, विद्यार्णव कृत)

विधि—कार्पासमूल त्वक् (कपास की जड़ की छाल), ३ सेर, बांस की जड़ की छाल (वेणुमूलत्वक्) २ सेर, शोभांजन (सहिंजने) की छाल १॥ सेर, लाल चित्रकमूल १॥ सेर, अशोक की छाल १॥ सेर और दशमूल १॥ सेर, जवकुट कर, २ मन ८ सेर जल में पकावे। २२ सेर जल शेष रहने पर, छान लेवे, और शुद्ध चिकने मटके में भर कर, उसमें बाबूना के फूल १ सेर, धाय के फूल आध सेर, लोध्र १० तोले, गुग्गुल, एलुआ, देवदारु, पुनर्नवा, जटामांसी, दारुहल्दी, सुगन्धमरिच, सदा-रुहा (बेल वृक्ष की छाल) सफेद चन्दन, लाल चन्दन प्रत्येक १०-१० तोले, द्राक्षा (मुनक्का) १। सेर, शहद २॥ सेर और गुड़ १० सेर मिलाकर, सन्धान कर एक मास तक रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—२ तोले से ४ तोले तक। अनुपान-जल।

गुण—प्रसवकाल में, गर्भाशय की निर्बलता हो जाती है, वह इसके सेवन से शीघ्र दूर होती है। तथा प्रसूति समय का कष्ट दूर होता है और प्रसव रोगपूर्वक सुगमता से होजाता है।

कालमेघासव—देखिये, यवतिक्तासव।

१३० कालिन्दासव नं० १—रक्तपित्तादि नाशक।

(वैद्यभूषण श्री० पं० मक्खनलाल जी शर्म्मा—खेरली)

विधि—एक बड़ा तरबूज लगभग १० सेर, वजन वाला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लेकर, तेज चाकू से उसमें गहरा छेद करे, और उसमें १। सेर मिश्री, तथा सौंफ, कासनी, नीलोफ़र, कमल के फूल, खस, गुलाब के फूल, छोटी इलायची के दाने और गुलबनपसा प्रत्येक का चूर्ण २॥-२॥ तोले, तथा कपूर १ तो० चूर्ण कर डाल देवे, और छिद्र के मुख को उसी के टुकड़े से बन्द कर, अच्छी तरह चारों ओर से डोरी से कस देवे। इस तरबूज को काठ या पत्थर के बड़े पात्र में, ८ दिन तक, दिन में धूप और रात्रि के समय शरद चांदनी या ओस जहाँ पड़ सके ऐसे खुले शुद्ध स्थान में सुरक्षित रक्खे। इसमें कभी २ उबाल सा उठकर अन्दर का द्रव्य बाहर निकलता है। ८ दिन के बाद ऊपर का छिलका अलग कर, शेष सबको मसल और छानकर, बोतलों में भर देवे। इसे बीच २ में छानते रहना चाहिये। यह ज्यादह दिन बाद खराब होजाता है।

मात्रा—१ तोला। ६ माशे शहद में मिला कर पीवे।

गुण—रक्तपित्त, सूजाक, मूत्रकृच्छ्र, रक्तप्रदर, दाह, जलन, घबराहट, बेचैनी पर लाभदायक है।

---

१३१ कालिन्दासव नं० २—पाण्डु, यकृतादिविकार नाशक।

(श्री वैद्यशास्त्री पं० देवदत्तजी शर्मा, शकरगढ़)

विधि—अच्छे पके हुये तरबूज की गिरी २६ सेर लेकर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें हरड़, बहेड़ा, आमला, मेंहदी, हस्तिशुण्डी, सनाय, बनपसा, मजीठ, धनिया, अपामार्ग की जड़, अडूसे की जड़, छोटी हरड़, कचूर, सोंठ, और संतरे के ऊपर का छिलका प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले, तथा गुलाब के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फूल १० तो०, गोरखमुण्डी और सौंफ़ प्रत्येक का चूर्ण १२-१२ तोले, जौ का चूर्ण १६ तोले, मंडूरभस्म १ पाव, कीकड़ की छाल १। सेर, पुराना गुड़ ५ सेर, और देशी कांड २॥ सेर, मिला कर मुख मुद्रा कर, एक मास तक सुरक्षित रक्खे। फिर छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—३ तो०, से ५ तोले तक।

गुण—पाण्डु, यकृतविकार, रक्त की कमी, हृदय की धड़कन आदि विकारों पर रामबाण है। किसी भी कारण से उत्पन्न हुई रक्तकी कमी (एनिमिया) इससे अवश्य दूर होजाती है। यह अत्यन्त पित्तनाशक होने से, पित्तविकार बढ़कर चाहे कैसा भी रूप धारण करचुके हों, इसके सेवन से शीघ्र ही दूर होजाते हैं। दाह के लिये यह एक मानी हुई औषध है। ज्वरों के बाद में हुई दुर्बलता इससे अवश्य नष्ट होजाती है। प्लीहा एवं उदर विकारों पर भी इसका उत्तम अनुभव अनेक बार किया जाचुका है। जिन स्त्रियों को पित्त विकृति के कारण मासिक स्राव कम आता है, शरीर में बेचैनी रहती है, मासिक कष्ट भी होता है, सन्तान नहीं होती, ऐसी स्त्रियों के लिये यह एक चुनी हुई औषध है।

कालिन्दासव नं० ३—देखिये, अद्भुतासव।

काश्मर्यारिष्ट—देखिये, अष्टशतोऽरिष्ट।

१३२ कासमर्दासव—(स्वकृत)—उपदंशादि विष विकारे।

विधि—कसौंदी की जड़ ५ सेर और पत्र दो सेर जवकुट कर, १ मन १२ सेर जलमें पकावे, १३ सेर जल शेष रहने पर,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उतार कर छान लेवे। उसे शुद्ध चिकने मिट्टी के पात्र में भर, उसमें शहद १० सेर, धायके फूल ४० तोले, कालीमिरच का चूर्ण और श्वेत जीरा प्रत्येक ४-४ तोले मिला, ठीक प्रकार से सन्धान कर, १ मास तक रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—२ से ४ तोले तक। अनुपान—जल।

गुण—उपदंश, आमवात नाशक, शीघ्र प्रसूतिकारक है। पारे का विष शरीर में पहुंच गया हो तो इस आसव के सेवन से शीघ्र दूर होजाता है। अफीम के विष को भी यह दूर करता है। रक्तार्श पर भी लाभदायक है।

---

१३३ किनगिचासव—(स्वकृत)—प्रसूत रोग नाशक।

विधि—किनगिच या वाल की ताज़ी पत्तियों का स्वरस १ भाग लेकर, उसमें ५ गुना मद्यसार (६० प्रतिशतवाला) मिला कर, बोतलों में भर कर रख दे। कार्क अच्छी तरह मजबूती से बन्द करना चाहिये। ७ दिन बाद छानकर काम में लावे।

मात्रा—५ से ६० बून्द तक।

यदि किनगिच के ताज़े पत्ते न मिलें तो इसके छाया में सुखाये हुये शुष्क पत्ते ५ सेर लेकर तथा कूटकर, १३ सेर जल

---

* किनगिच का बेलदार क्षुप लगभग ४–५ फीट तक लम्बा होता है, इसके पत्ते और कांटे कंजा (कताकरंज) के जैसे होते हैं। इसमें जो फलियाँ लगती हैं, उनके अन्दर रत्ती या गुंजा से दुगुने बड़े लाल वर्ण के बीज होते हैं, उन्हे 'वाल' कहते हैं। सुनार लोग इन्हें तौल के काम में लाते हैं। दक्षिण में इसे वाल का पौधा या बेल कहते हैं। उत्तर की ओर इसे ही किनगिच कहते है। —लेखक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में पकावे, लगभग ४ सेर क्वाथ जल शेष रहने पर, उसे छान कर, एक शुद्ध चिकने मटके में भरे। ठंडा होजाने पर उसमें शहद ३ सेर, कालीमिरच, सोंठ, अजवायन और कङ्कोल का चूर्ण ४-४ तोले मिला कर यथाविधि सन्धान करके रक्खे। १ मास के बाद छानकर काम में लावे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—स्त्रियों के प्रसूतजन्य उपद्रवों को शीघ्र नष्ट करता है। प्रसूत ज्वर में जब ज्वर का वेग अत्यंत तीव्र हो और अन्य उपद्रव बढ़े हुये हों, इस आसव का सेवन महान् लाभदायक है। ७ दिन में ही जच्चा को पूर्ण शान्ति प्राप्त होती है। किन्तु इस पर पथ्य से रहना चाहिये। गाय का दूध, गेंहू की रोटी, दलिया, और गो घृत के सिवाय दूसरी कोई चीज़ नहीं देनी चाहिये। नमक को तो विषवत् त्याग देना चाहिये।

---

१३४ किरातितिक्तासव—(स्वकृत)-ज्वरादि विकारे।

विधि—चिरायता ८ तोले, गिलोय ४ तोले और मुनक्का ६ तोले, अच्छी तरह कूट पीस कर, ८० तोले अल्कोहल या मद्य में मिला, शुद्ध चीनी मिट्टी के पात्र में, या कांच के पात्र में भर तथा यथाविधि सन्धान कर १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात अच्छी तरह दबाते हुये छानकर शीशियों में भर कर रख ल।

मात्रा—२ से १५ बून्द तक। अनुपान-जल।

गुण—यह ज्वर नाशक कोष्ठबद्धता नाशक, और पौष्टिक है। जीर्णज्वर, पित्तज्वर को दूर करते हुये यकृतवृद्धि को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शमन करता है। मलेरिया ज्वर जिसमें अग्निमांद्य की प्राधान्यता रहती है उस पर यह विशेष लाभदायक है।

किरातितिक्तासव नं० २--देखिये, चिरतिक्तासव।

१२५ कुङ्कुमासव नं० १—(स्वकृत)—योषापस्मारादि विकारे।

विधि--असली शुद्ध काश्मीरी केशर, छोटी पीपल, नागकेशर (असली), बच, कूठ, जावित्री, असगंध, अदरख और बायबिडंग प्रत्येक ४-४ तोले, दारचीनी, लौंग, अनन्तमूल, दारुहल्दी और बेलगिरी प्रत्येक २—२ तोले, तथा पतंग और खैरसार १-१ तोला, महीन चूर्ण कर २६ सेर खौलते हुए जल में डालकर पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर देवे। ३ घंटे के पश्चात् पात्र का मुख खोल कर, उसमें शहद २॥ सेर, धाय के फूलों का चूर्ण १३ छटांक, और बीज निकाली हुई मुनक्का १ सेर मिलाकर, पुनः अच्छी तरह सन्धान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक। अनुपान-जल या दूध।

गुण—योषापस्मार (हिस्टेरिया), मूर्च्छा, आर्तवरोधजन्यशूल, प्रदर तथा वातपीड़ा नाशक है। रक्तशोधक, वीर्यस्तंभक एवं बुद्धिवर्धक है। आमाशय की दुर्बलता इससे शीघ्र दूर होती है। इसे द्राक्षासव के साथ सेवन कराने से पथरी, मधुमेह, तथा मूत्रकृच्छ्र पर विशेष लाभ होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१३६ कुङ्कुमासव नं० २—(स्वकृत)—मूत्राघातादि नाशक।

विधि—शुद्ध चिकने मिट्टी के पात्र में, १८ सेर खौलता हुआ गरम जल डालकर, उसमें उत्तम असली केशर ४ तोले, जल में घोटकर मिला देवे। पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर देवे। ३ या ४ घंटे के पश्चात् मुख को खोल कर उसमें-धाय के फूल, चूर्ण कर ४० तोले और शहद ३ सेर मिलाकर, दृढ़तापूर्वक मुख सन्धान कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक। अनुपान-जल।

गुण—इसके सेवन से मूत्राघात, मूत्र के समय होने वाली पीड़ा, चिनक दाह आदि विकार शीघ्र ही दूर होकर, शुक्र की वृद्धि होती है।

---

१३७ कुङ्कुमासव * नं० ३—बालशोष रोगे।

विधि—उत्तम काश्मीरी केशर १ तोला लेकर, काली गौ के ६४ तोले मूत्र में अच्छी तरह घोट कर मिला देवे। पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर ८ दिन तक सुरक्षित स्थान में रक्खे, पश्चात् छान कर बोतल में भर कर रख दे।

---

* कृष्णायाः सुरभेर्मूत्रे प्रस्थमात्रे भिषग्वरः।
कर्षं कुङ्कुममाक्षिप्य स्थापयेत् दिवसाष्टकम्॥
यथावयः प्रदत्तोऽसौ मात्रया पयसासमम्।
कुङ्कुमासव आहन्यात् बालशोषं सुदुस्तरम्॥
—सि० भै० स० बालरोगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—१० बूँद से २० बूँद तक। बालकों को अवस्थानुसार, दूध के साथ पिलावे।

गुण—इसके सेवन से बालकों का सूखा रोग शीघ्र दूर होकर, वे हृष्ट पुष्ट होजाते हैं।

---

१३८ कुङ्कुमासव नं० ४—(बाल्हीक-कुमुद)—शक्तिवर्धक।

(वैद्यराज श्री पं० उमादत्त जी मिश्र मिर्जापुर)

विधि—केशर (सूर्य मार्का) दो तोले, जायफल १ तो०, और कस्तूरी आधा तोला सब का एकत्र मोटा चूर्ण कर, कांच के पात्र में डाल कर, उसमें-मीठे अनार का स्वरस २० तोले, शहद ५ तोले और बराण्डी नं० १ (एक्शाछाप की) ५ तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, ४ सप्ताह (लगभग १ मास तक) सुरक्षित रक्खे। प्रति सप्ताह हिलाते रहना चाहिए। अवधि के समाप्त होने पर छान ले तथा १ सप्ताह में साफ़ होने के लिये पुनः बन्द करके रख देवे। पश्चात् निथार कर, कीट रहित द्रव भाग काम में लावे।

मात्रा—१० बिन्दु से ६० बिन्दु तक। अनुपान जल।

गुण—रोगों की जीर्णावस्था में इसका सेवन सुखकर होता है। वीर्यविकार, सिरदर्द और सान्निपातिक अवस्था में तथा कास, श्वास, हिक्का और मूर्छा में अत्यन्त लाभदायक है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१३९. कुङ्कुमासव नं० ५—(स्वकृत)—उत्तेजक।

विधि—उत्तम सूर्यमार्का केशर २॥ तोले लेकर, ५० तोले रेक्टिफाइड स्प्रिट में मिला, बोतल में भर, दृढ़ कार्क लगा मुख बन्द कर रख दे। ३ दिन के बाद खोल कर, फलालैन में खूब निचोड़ छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—३० बूंद से १२० बूंद तक।

गुण—उत्तेजक और पौष्टिक है।

कुचलासव—देखिये, कारस्करासव और विषमुष्ट्यासव।

कुटकीआसव—देखिये, कटुकासव।

१४० कुटजासव—(स्वकृत) अतिसारादि नाशक।

विधि—कुड़े की छाल ५ सेर लेकर, जवकुट कर १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, उसे छान कर, चिकने मटके में भर देवे। फिर उसमें सोंठ, जायफल, माजूफल, लौंग, काकड़ासिंगी, बहेड़े की छाल, कालीमिरच, छोटी पीपल, वायविडंग, बेलगिरी और नागकेशर प्रत्येक ४-४ तोले महीन चूर्ण कर डाले। धाय के फूल और महुये के फूल प्रत्येक आध-आध सेर उसी में डाल कर, अच्छी तरह सन्धान कर, १ मासतक सुरक्षित रखे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक। अनुपान लज।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—रक्तातिसार, ज्वरातिसार नाशक है। कफानुबन्धी रक्तार्श का रक्तस्राव इसके सेवन से शीघ्र ही बन्द हो जाता है।

---

१४१ कुटजारिष्ट * नं० १—अतिसार, ज्वर आदि नाशक।

विधि—कुड़े की जड़ की छाल (ताज़ी) ५ सेर, मुनक्का २॥ सेर, महुये के फूल और गंभारी के फल (अभाव में गंभारी की छाल) आध-आध सेर लेकर जवकुट कर १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर उतार कर छान लेवे इस क्वाथ में धाय के फूल १ सेर तथा गुड़ ५ सेर मिलाकर, यथाविधि मिट्टी के बरतन में सन्धान करके १ मास तक रक्खा रहने दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक। अनुपान-जल।

गुण—सर्व प्रकार के ज्वरों का नाशक, रक्तातिसार और दुस्साध्य संग्रहणी नाशक तथा अग्नि प्रदीपक है। विषमज्वर और आंत्र के कृमियों को शीघ्र दूर करता है। अन्य औषधियों से ज्वर दूर होजाने पर, उसकी पुनरावृत्ति टालने के लिये अर्थात् उसे समूल नष्ट करने के लिये, उसीप्रकार कृमियों के बाहर निकल जाने पर अग्निमांद्य अरुचि, कास, अशक्ति इत्यादि

---

* तुलां कुटजमूलस्य मृद्वीकार्धतुलां तथा। मधूक पुष्प काश्मर्योर्भागान् दशपलोन्मितान्॥ चतुर्द्रोणेऽम्भसः पक्त्वा द्रोणञ्चैवावशेषितम्। धातक्या विंशतिपलं गुडस्य च तुलां क्षिपेत्॥ मासमात्रं स्थितोभाण्डे कुटजारिष्ट संज्ञितः। ज्वरान् प्रशमयेत्सर्वान्कुर्यात्तीक्ष्णं धनञ्जयम्॥ दुर्वारां ग्रहणीं हान्ति रक्तातीसारमुल्वणम्।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विकारों को दूर करने के लिये 'कुटजारिष्ट' का बहुत ही अच्छा उपयोग होता है। इस अरिष्ट के सेवन से नवीन विकार तो दूर होते ही हैं, किन्तु विकार जितने अधिक दिनों के हों उतना ही इसका विशेष उत्तम उपयोग देखा गया है। जीर्णातिजीर्ण संग्रहणी, आमातिसार या ज्वर पर यह 'अरिष्ट' विशेष प्रभावशाली है। 'प्रवाहिका' के लिये भी यह बहुत उपयोगी है। विशेषतः वह प्रवाहिका जिसमें 'अमीबा' पाये जाते हैं और जिसके लिये एमेटीन (वामक, जीवाणुनाशक) औषधियाँ दीजाती हैं। रक्तार्श और रक्तप्रदर में इसके देने से रक्तस्राव शीघ्र बन्द होजाता है। आन्त्रिक क्षय पर भी यह उत्तम कार्य करता है। मलेरिया ज्वर पर भी इसका अच्छा प्रभाव देखा गया है। यदि अतिसार पीड़ित रोगी को रक्तमिश्रित या आम के साथ दस्त आते हों तो उसे प्रातःसायं दोनों समय इसकी मात्रा समान जल के साथ तथा बीच २ में कर्पूर रस की मात्रा देने से शीघ्र लाभ होता है। यदि दस्त के समय पेट में दर्द, मरोड़ा अधिक हो तो बीच २ में ग्रहणीशार्दूल वटिका देना हितकर है। कभी २ अतिसार के साथ ही साथ या अतिसार के बन्द होने पर कारण विशेष से अकस्मात् शोथ की उत्पत्ति होजाती है ऐसी अवस्था में कुटजारिष्ट के साथ शोथारिमण्डूर उष्णजल मिला कर सेवन कराना लाभप्रद है। यदि इस प्रकार की शोथ युक्त अवस्था में (विशेषतः दस्त बन्द होकर जो शोथ हो उसमें) ज्वर भी हो तो प्रातः सायं अमृतारिष्ट का भी सेवन कराते रहना चाहिये। सब प्रकार के प्रदर पर कुटजारिष्ट और अशोकारिष्ट १-१ तोला मिश्रण कर,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समभाग जल मिला प्रातः सायं देते रहने से २१ दिन में पूर्ण लाभ होता है।

---

१४२ कुटजारिष्ट नं० २—अतिसार, संग्रहणी आदि नाशक।

(वैद्यराज गौरीशंकरजी आनन्द हरिपुर)

विधि—कुड़े की छाल १० सेर, मुनक्का ५ सेर, महुए के फूल, कुम्भेर की छाल, लोध्र, बिल्व (बेल) और कीकड़ (बबूल) की छाल प्रत्येक १-१ सेर लेकर सबका यवकुट चूर्ण कर, ४ मन जल में, २४ घंटे तक भिगोकर क्वाथ करे। चौथाई भाग शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भरे, और उसमें धाय के फूल २ सेर, तथा लोध, छोटी इलायची, कत्था, मोचरस, अतीस, कीकड़ की छाल, बेल, सोंठ, मिरच, पीपल, लौंग, जायफल, धनियाँ, नेत्रवाला, वायविडंग, नागकेशर, इन्द्रजौ, दोनों जीरे, पाठा, नागरमोथा, अजवायन, रसौत, जामुन की गुठली और आम की गुठली प्रत्येक २-२ तोले, बृहत् गंगाधर चूर्ण १० तोले, गुड़ ८ सेर, सब का चूर्ण कर मिलावे। यथा-विधि-पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर, १ मास तक रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक।

गुण—अतिसार, प्रवाहिका, संग्रहणी, रक्तातिसार और यक्ष्मातिसार में लाभप्रद है।

(अ० चि० संग्रह)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१४३ कुब्जकासव * —सन्निपातादि ज्वरनाशक।

विधि—श्वेत गुलाब अथवा सेवती की जड़ ५ सेर, मुनक्का २॥ सेर, महुये के फूल आध सेर और गंभारी (फल अथवा छाल) आध सेर लेकर, साधारण कूटकर, सब को, १ मन १२ सेर जल में पकावे। जब १३ सेर जल शेष रहे, तब उसे छानकर, ठंडा होने पर, उसमें धाय के फूल १ सेर, गुड़ १५ सेर, धतूरे के बीज १६ तोले, बड़ी इलायची, पतरज (तेजपात), सोंठ, कालीमिरच, छोटी पीपल, जावित्री, कक्कोल, दारचीनी और लौंग प्रत्येक का चूर्ण ४—४ तोले मिलाकर यथाविधि सन्धान करके एक मास तक सुरक्षित रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक। अनुपान—जल।

गुण—सन्निपातादि सर्व प्रकार के ज्वरों को नष्ट करता है। यह आसव वीर्यवर्धक है, और कफ तथा शीतजन्य विकारों को शीघ्र दूर करता है।

---

* शतं कुब्जकमूलस्य मृद्वीकायार्द्धशतं तथा। मधूकपुष्पकाढकमर्द्धभागान् दशपलोन्मितान्॥ चतुर्द्रोणेऽम्भसः पक्त्वा शीते पादावशेषिते। धातक्या विंशतिपलं गुडस्य च शतत्रयम्॥ कनकस्य तु चत्वारि त्र्योषं कंकोलमेव च। एलात्वक्पत्रजातीनां त्वङ्नस्य तथैव च॥ भागान्पलप्रमाणांश्च सूक्ष्मचूर्णान्तु कारयेत्। कौब्जमूलासवो ह्येष मासमात्रं विधारितः॥ शमयेत्सन्निपातोत्थान् ज्वरान् सर्वान् न संशयः।

—गदनिग्रहे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१४४ कुमारकल्याणासव—बालरोग हर ।

(श्री० वैद्यराज श्यामबिहारीलाल जी त्रिपाठी)

विधि—छोटी पीपल, अतीस, मुलैठी, मुनक्का, काकड़ासिंगी, नागरमोथा प्रत्येक एक एक सेर सब को अधकचरा करके ८० सेर पानी में डाल कर औटावे, जब २० सेर पानी शेष रहे, तब उतार कर छान ले। इस छने हुए काढ़े में-शहद ६ सेर, धाय के फूल १ सेर डालकर, मिट्टी के चिकने बरतन में भर कर, मुँह बन्द कर दे, और एक महीने तक रखा रहने दे, फिर छान कर बोतलों में भर दे, और कड़ी डाट लगाकर रख छोड़े।

मात्रा—इसकी पूरी मात्रा ४ वर्ष के बालक के लिये ४ माशे की है। बलाबल अनुसार मात्रा घटाई बढ़ाई भी जा सकती है। समय-दिन में कई बार। अनुपान-जल में मिला कर दे।

गुण—बच्चों के ज्वर, खांसी, वमन, दस्त, अपचन, पेट का शूल आदि अनेक रोगों को नष्ट कर उन्हें हृष्ट पुष्ट और ताक़तवर बनाता है।

(धन्वन्तरि)

---

१४५ कुमार्यासव * नं० १—बलवर्धक, उदररोग नाशक ।

---

* सुपक्वरस संशुद्धं कुमार्याः पत्रमाहरेत्। यत्नेन रसमादाय पात्रे पाषाणमृण्मये ॥ द्रोणे गुडतुलां दत्वा घृतभाण्डे निधापयेत्। माक्षिकं पक्व-लोहं च तास्मिन्नर्धतुलां क्षिपेत् ॥ कटुत्रिकं लवंगञ्चचातुर्जातिकमेव च। चित्रकं पिप्पलीमूलं विडंग गजपिप्पली ॥ चाविकं हपुषाधान्यंकमुकं कटु-रोहिणी। मुस्ता फलत्रिकं रास्ना देवदारु निशाद्वयम् ॥ मूर्वा मधुरसा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—अच्छे पके हुये घीकुआर के पट्ठे का रस १३ सेर निकाल कर, किसी शुद्ध पत्थर के या चीनी मिट्टी के पात्र में भरकर, उसमें-गुड़ ५ सेर, शहद २॥सेर, शुद्ध लोहचूर्ण २॥ सेर सोंठ, मिरच, पीपल, लौंग, दारचीनी, इलायची, पत्रज, नागकेशर, चित्रकमूल, पीपलामूल, बायविडंग, गजपीपल, चव्य, हाऊबेर, धनिया, सुपारी, कुटकी, नागरमोथा, हरड़, बहेड़ा, आमला, रास्ना, देवदारु, हल्दी, दारुहल्दी, मूर्वा, मुलैठी, जटालगोटे की जड़, पोहकरमूल, खिरेंटी, कंघी, कौंच के बीज, गोखरू, सौंफ, डीकामाली, अकरकरा, उटंगन के बीज, रक्तपुनर्नवा, लोध, और स्वर्णमाक्षिक भस्म प्रत्येक २-२ तोले, तथा धायके फूल ३२ तोले सब का चूर्ण कर मिला देवे। यथाविधि सन्धान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खा रहने दे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक। अनुपान—जल।

गुण—बल, वर्ण अग्निवर्धक, पुष्टिकारक, रुचिकारक, वीर्य वर्धक है। परिणामशूल, सर्वप्रकार के उदररोग, क्षय, प्रमेह,

---

दन्तीमूलंपुष्करसंभवम्। बलाचातिबला चैव कपिकच्छुश्चिरंटकम्॥ शतपुष्पा हिंगुपत्री आकल्लकमुटिंगणम्। पुनर्नवाद्वयं लोध्रं धातुमाक्षिकमेव च॥ एषां चार्धपलं दत्वा चैव धातक्यास्तु पलाष्टकम्। पलं चार्धपलं चैव पलद्वयमुदाहृतम्॥ वपुर्वयः प्रमाणेन बलवर्णाग्निदीपनम्। बृंहणं रोचनं वृष्यं पंक्तिशूल निवारणम्। अष्टाबुदरजान् रोगानुदावर्तमपस्मृतिम्॥ मूत्रकृच्छ्रमपस्मारं शुक्रदोषं तथाश्मरीम्। कृमिजं रक्तपित्तं च नाशयेत्तु न संशयः॥

—शार्ङ्गधर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उदावर्त, अपस्मार, मूत्रकृच्छ्र, शुक्रदोष, पथरी, कृमिरोग, स्मरणशक्ति की न्यूनता, रक्तपित्त तथा जलोदर नाशक है। जलोदर पर-इस आसव की मात्रा १ तोला में अपामार्गक्षार १ माशा मिला कर सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है।

नोट—अ० चि० संग्रह में उक्त आसवविधि में-लोहचूर्ण के स्थान में मंडूरचूर्ण (मंडूर को गोमूत्र में शुद्धकर, १सेर घृतकुमारी रस मिला गजपुट दे मिलावे) तथा उक्त प्रक्षेप द्रव्यों के सिवाय रोहितक छाल, मरोड़फली, सैंधव, रेवंदचीनी, बालछड़, नवसादर, अजवायन, सोया, सम्भालु के पत्ते, सौंफ की जड़, कासनी की जड़, अफसीन तीन, दोनों जीरे, चिरायता और मकोय का चूर्ण २-२ तोले मिलावे, ऐसा लिखा है।

---

१४६ कुमार्यासव * नं० २—गुल्मादि नाशक।

---

* द्रोणमानं कुमार्यास्तु रसं भाण्डे निधापयेत्। तुळार्धं दशमूलं तु तदर्धं पौष्करीं जटाम्॥ तत्समं धन्वयासं च चित्रार्धं च परिक्षिपेत्। प्रस्थार्धममृताज्ञेया तदर्धमभयातथा॥ लोध्रकामळकं पथ्यं मंजिष्ठा च कालिद्रुमः। चव्यं च कुष्ठमधुकं कपित्थं सुरदारुकम्॥ कृमिशत्रुः कणाचैव भार्ङ्गीस्यादष्टवर्गकः। जीरकं क्रमुको राम्ना शटी रेणुकमेव च॥ शृंगी निशा प्रियंगुश्च मांसी मुस्ता च सारिवा। शक्रवीजं वरीवासा नागकेसरमेव च॥ पुनर्नवा समांशानि षड्भिर्द्रोणर्जळस्य तु। क्वाथयेदनया रीत्या चतुर्थांशं जळं नयेत्। त्रिंशत्पला च मृद्वीका दन्तसंख्यापलं मधु। गुडात्तुलाचतुष्कं च तदर्धाधातकी भवेत्॥ पलद्वयं लवंगानि कंकोलं मलयोद्भवम्। चातुर्जातं तथा कृष्णा मरिचं जातिपत्रकम्॥ आकल्लकं फलं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि-दशमूल २॥ सेर, पोहकरमूल १। सेर, धमासा १। सेर, चीते की जड़ १० छटांक, गिलोय ६॥ छटाँक, हरड़ १६ तोले, लोध, आमले, चौलाईकी जड़, मजीठ, वहेड़ा, चव्य, कूठ, मुलैठी, कैथ, देवदारु, वायविडंग, पीपल भारंगी, अष्टवर्ग (जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, ऋद्धि, वृद्धि, काकोली, क्षीरकाकोली), सफेदजीरा, सुपारी, रास्ना, कपूरकचरी, रेणुका (मालवे के बीज), काकड़ासिंगी, हल्दी, फूलप्रियंगु, जटामांसी (बालछड़), नागरमोथा, सारिवा, इन्द्रजौ, शतावर, बांसा, नागकेशर, पुनर्नवा प्रत्येक १६-१६ तोले लेकर, चूर्ण कर, सब को १ मन ३८ सेर जल में पकावे। जब चतुर्थांश अर्थात् १६॥ सेर जल शेष रहे, तब छानकर, उसमें घी कुआर का रस १३ सेर, मुनक्का १॥ सेर, शहद १॥= सेर, गुड़ २० सेर, धाय के फूल १० सेर, लौंग, कंकोल, श्वेतचन्दन, दारचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेशर, पीपल, मिरच, जावित्री, अकरकरा, जायफल, कौंच के बीज, अजमोद, वच, खैरसार, चीता, जीरा, अजवायन, नेत्रवाला (सुगंधवाला), सोंठ, नागरमोथा, धनिया, हरड़, हाऊवेर, और इमली अथवा अमलवेंत ये प्रत्येक ८-८ तोले चूर्ण कर मिलावे, और सब को किसी चिकने, पुराने सुगंधित औष-

---

जात्याः कपिकच्छुश्च दीप्यकम्। वचा खदिरसारश्च दहनोजीरकं तथा॥ यवानी बालकं विश्वा मुस्ताधान्यं हरीतकी। हपुषा तिन्तड़ीक च चूर्णमेषां प्रदापयेत्। भाण्डे पुराणे सुस्निग्धे धूपिते गन्धभेषजैः॥ कोष्ठसारे तथा तस्मे भूमौ मासं विनिक्षपेत्। इत्यादि—

—गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धियों से धूपित मिट्टी के पात्र में, यथाविधि सन्धान कर, गरम स्थान में गाढ़ देवे।

एक मास पश्चात् निकाल कर, और छान कर शीशियों में भर कर रख ले।

मात्रा—१ से ४ तोले तक। नित्य प्रातःकाल सेवन करावे। अनुपान—जल अथवा दूध।

गुण—धातुक्षय, खांसी, पांच प्रकार के श्वास, बवासीर, वातव्याधि, संग्रहणी, पाण्डु, कामला, हलीमक, उदावर्त, पांच प्रकार के शुल्म, अफारा, कुक्षिशूल (कोख का दर्द), प्रत्याध्मान, अष्ठीला, गुदग्रह (गुदा में पीड़ा और जकड़न) तथा हृदय के रोगों को नष्ट करता है।

इसे बालकों के कफ़, कास, श्वास, ज्वर, अपचन, डब्बा, किरम, कामला; नलाश्रितवात, अरुचि, जीर्णज्वर आदि विकारों पर दे सकते हैं। मात्रा–५ बूँद से १ तोला तक। अनुपान–दूध के साथ। ज्वर में पसीना लाने के लिये गर्म जल में मिलाकर पिलावे और रोगी को रजाई ओढ़ा कर सुला देवे।

---

१४७ कुमार्यासव * नं० ३—गुल्म, उदरशूलादि नाशक।

---

* कुमार्याश्च रसद्रोणे गुडं पलशतं तथा। तुलांघ्रिसंख्यां विजयां क्वाथयेतज्जलार्णवे ॥ चतुर्थांशावशेषं तु पूते तस्मिन्निधापयेत्। मधुनश्चाढकं दत्वा धातक्या द्विपलाष्टकम् ॥ स्निग्धभाण्डे विनिक्षिप्यकल्कं चैव प्रदापयेत्। जातीफल लवंगंच कंकोलं च कवाबकम् ॥ जटिलाचव्यचित्रं च जातिपत्री सकर्कटम्। अक्षं पुष्करमूलं च प्रत्येकं च पलं पलम् ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—१। सेर भांग को १३ सेर जल में पकावे, जब चौथाई भाग ३। सेर शेष रहे तब उतार कर छान लेवे और शुद्ध चिकने मिट्टी के पात्र में भर कर, उसमें घीकुआर का छना हुआ रस १३ सेर, गुड़ ५ सेर, शहद ३। सेर, धाय के फूल १३ छटांक, जायफल, लौंग, कंकोल, कबाबचीनी, जटामांसी (बालछड़) चव्य, चीता, जावित्री, काकड़ासिंगी, बहेड़ा, पोहकरमूल ये प्रत्येक ४-४ तोले। लोहभस्म और ताम्रभस्म प्रत्येक २-२ तोले सब का चूर्ण कर मिला देवे। यथाविधि सन्धान कर भूमि में अथवा अनाज के ढेर में दबा कर रक्खे। २० दिन पश्चात् निकाल छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—आधा तोला से १ तोला तक। अग्नि-बलानुसार सेवन करावे। अनुपान-जल या दूध।

गुण—पांच प्रकार की खाँसी, श्वास, क्षय, आठ प्रकार के उदर रोग, छः प्रकार की बवासीर, वातव्याधि, अपस्मार, अग्निमांद्य, कोष्ठशूल, आठ प्रकार का गुल्म, तथा नष्टपुष्प (स्त्रियों को मासिकधर्म न होना) इत्यादि अनेक दारुण रोगों को केवल

मृतं शुल्वं तथालोहं शुक्तिमात्रं प्रदापयेत्। भूम्यां वा धान्यराशौ वा स्थापयेद्दिनविंशतिम् ॥ तदुद्धृत्य पिबेन्मात्रां यथा चाग्निबलावलं। पंचकासं तथाश्वासं क्षयरोगं च दारुणम्। उदराणि तथाष्टौ च षड्पौंसि च नाशयेत् ॥ वातव्याधिमपस्मारमन्यान् रोगान् सुदारुणान्। जाठरं कुरुते दीप्तं कोष्ठशूलं च नाशयेत् ॥ गुल्माष्टकं नष्टपुष्पं नाशयेदेकविंशतिः। कुमारिकासवो ह्येष बृहस्पति विनिर्मितः ॥

—योगरत्नाकर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१५ दिन के सेवन से यह नष्ट कर देता है। इस कुमार्यासव में विजया (भांग) का योग होने से यह अग्निमांद्य, संग्रहणी, अजीर्ण के अतिसार, और प्रवाहिका पर उत्तम लाभदायक है। ज्वर की हालत में अथवा हैजे की अवस्था में या अन्य रोगों में रोगी को यदि निद्रालाने की आवश्यकता हो तो इसकी यथोचित मात्रा, रात को ७ या ८ बजे देकर, ऊपर से पथ्य का भोजन आदि करा देने से उत्तम निद्रा आजाती है। जिन छोटे बच्चों को अफीम दीजाती हो, उन्हें अफीम के स्थान में इस आसव का सेवन कराना महान् उपयोगी है। इसके सेवन कराने से अन्न या दूध का ठीक २ परिपाक होता है, पेट में किसी प्रकार का विकार उत्पन्न नहीं होने पाता, यदि पहले का कोई विकार हो तो वह भी दूर होजाता है। इसके सेवन कराने से यदि कदाचित् कोष्ठबद्धता हो तो अरंडी का तेल पिला देना चाहिये। एक मास के बच्चे को इसकी १ बून्द नित्य एक या दो बार देवे, दूसरे मास में दो बून्द, तीसरे में ३ बूंद इसी तरह बढ़ाते हुए देवे। शराब या अफीम का व्यसन छुड़ाने के लिये इसका युक्ति पूर्वक सेवन कराना हितकारक है।

दुर्बल, अशक्त या उष्णप्रकृति के व्यक्ति को इसका सेवन जरा सोच विचार कर करना चाहिये। उदररोग निवारणार्थ कोष्टशुद्धि कराने के बाद इसका सेवन करावे।

नोट—इस आसव में कई मनुष्य विजया अर्थात् भांग के स्थान में हरड़ मिलाकर इसे बनाते हैं। किंतु विजया (भांग) युक्त यह आसव जितना प्रभावशाली होता है, उतना विजया (हरड़) युक्त नहीं, यह हमारा खास अनुभव है। दूसरी बात इस आसव के विषय में यह है कि इसकी कृति में कई लोग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पाठानुसार ही घीकुआर का रस, गुड़ और विजया एकत्र कर, चतुर्थांश क्वाथ तैयार कर, फिर उसमें-धायके फूल, शहद, जायफल इत्यादि प्रक्षेप की औषधियाँ मिला, सन्धान कर रखते हैं। किंतु इसप्रकार की क्रिया से यह आसव, अरिष्ट में परिणत होजाता है, और विशेष लाभप्रद नहीं होता।

---

१४८ कुमार्यासव * नं० १—गुल्म, उदावर्तादि नाशक।

विधि—घी कुँआर का रस २॥ सेर, गुड़ १। सेर, तेजपात, दारचीनी, इलायची, नागकेशर, लौंग, सैंधानमक, हल्दी, दारु-हल्दी, करंज, पीपल, मिरच, धाय के फूल, अकरकरा, बच, जावित्री और वायविडंग प्रत्येक का चूर्ण ४—४ तोले, तथा हरड़ का चूर्ण ८ तोले, एकत्र किसी शुद्ध चिकने मटके में भर, यथाविधि सन्धान कर, १५ दिन तक (ज्यादा से ज्यादा दो मास में उत्तम आसव तैयार होता है) रक्खा रहने दे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक। अनुपान—जल।

---

* रसस्तुलार्धं कौमारस्तदर्धं गुड मिश्रितः। चातुर्जात लवंगानां सैंधवस्य निशाद्वयोः॥ कुबेरकृष्णा मरिच धातकीनां पलं पलम्। पथ्या-चूर्णं पळ युगं पलं चाकल्लकस्य तु॥ उग्रगंधा जातिपत्री विडङ्गानां पलं पलम्। एकीकृत्य शुचौ भाण्डे पक्षमेकं निधापयेत्॥ पलार्द्धं भक्षये-न्नित्यं गुल्मोदावर्त नाशनः। आध्मानं पार्श्वशूलं च जठराग्निं कफं हरेत्॥ मन्दाग्निं शमयेच्छ्वासकासं हिक्कां क्षयं तथा। यकृत्प्लीहं तथा शोफं नाश-येत्येषसेवितः॥

—गदनिग्रहे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—गुल्म (गोला), उदावर्त, अफारा, पसली का दर्द, उदरव्याधि, कफदोष, मन्दाग्नि, खांसी, श्वास, हिक्का (हिचकी) क्षय, जिगर (यकृत का विकार), तिल्ली (प्लीहा) और सूजन को नष्ट करता है। जलोदर, कृमि विकार, पाण्डु, अशक्ति, वीर्यविकार, स्त्रियों के विकार तथा गर्भवती के विकारों पर भी यह उत्तम लाभदायक है। इसे बाल रोगों पर भी दे सकते हैं।

---

१४९ कुमार्यासव * नं० ५—यकृत, प्लीहा विकारे ।

विधि—घी कुआर का रस ३। सेर किसी शुद्ध कांच के पात्र में भर कर, उसमें—पुराना गुड़ ३२ तोले, शुद्ध मंडूर, सुहागा, सज्जी, जवाखार, पाँचों नमक, और नौसादर प्रत्येक ४—४ तोले, महीन चूर्ण कर मिलावे। पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर, ८ दिन तक धूप में रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—६ माशे से १ तोला तक। अनुपान-शक्कर, बतासा, अथवा जल।

---

* कन्यारसाढके प्रत्नगुडतः कुडवद्वयम्। मण्डूरं टंकणं क्षारौ पंचैव लवणानि च ॥ नवसादर इत्यस्माद्वर्गादेयं पलं पलम्। कांचकोषे समाधाय मुखमस्य विमुद्रयेत् ॥ अष्टाहमातपन्यस्तमेकीभूत रसं पिबेत्। यकृत्प्लीहोदरेष्वेनं कुमार्यासवभाख्यया ॥

—सिद्धभेषजमणिमाला।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—यकृत् के तथा प्लीहा के सम्पूर्ण विकारों को, और उदर रोगों को यह शीघ्र नष्ट करता है।

---

१५० कुमार्यासव नं० ६—शूल, यकृत आदि नाशक।

(श्री० वैद्यराज पं० टीकादत्त जी भिषग्तम मुरादाबाद कृत)

विधि—घीकुआर का रस ६। सेर, किसी कांच की शुद्ध शीशी में भरकर उसमें सोंठ, मिरच, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला, बायविडंग, अजवायन, अजमोद, नागरमोथा, चीता, पीपलामूल, कचूर, धनिया, लौंग, जायफल, जावित्री और भुनी हुई हींग प्रत्येक ५-५ तोले, सुहागा भुना हुआ, सज्जी, नवसादर, प्रत्येक १०-१० तोले, कालानमक, सैंधानक, खारीनमक और सांभर नमक प्रत्येक ३—३ छटाँक सब का चूर्ण कर मिला देवे। यथाविधि सन्धान कर १ मास तक रक्खा रहने दे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २ तोले तक। अनुपान-जल।

गुण—शूल, यकृत, प्लीहा, आँतों की गाठें तथा उदरशोथ आदि रोगों में अत्यन्त लाभप्रद है।

---

१५१ कुमार्यासव नं० ७—(स्वकृत)-अग्निप्रदीपक, यकृत आदि विकार नाशक।

विधि—घीकुआर का रस १० सेर, गुड़ ५ सेर, सुहागा १२ छटांक, सोंठ, मिरच, पीपल प्रत्येक ७-७ छटांक, काला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नमक ८ छटांक, नौसादर, कलमी सोरा, और कांच नमक प्रत्येक ६—६ छटांक एकत्र कर, किसी शुद्ध चिकने चीनी मिट्टी के पात्र में अथवा कांच की शीशी में भरकर, १ मासतक अनाज के ढेर में गाढ़कर रक्खे। फिर निकाल और छानकर, शीशियों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ माशा से ६ माशे तक। अनुपान—जल।

गुण—उदर, यकृत तथा प्लीहा के सम्पूर्ण विकारों को नष्ट करता है, रुचि को बढ़ाता है, जठराग्नि को तेज करता है। दस्त साफ़ लाता है। मलेरिया ज्वर पर इसे देने से, ज्वर का वेग शीघ्र शांत होता है।

---

१५२ कुमार्यासव नं ८—प्लीहा, यकृत विकार नाशक।

विधि—घी कुंआर का गूदा १ सेर, पीपल १ तोला, काला नमक १ तो० और गुड़ १ सेर सब को एक चिकनी हांडी में भरकर, मुँह बन्द कर दे। एक मास के बाद छान कर बोतलों में भर लेवे।

मात्रा—१ तो० से ४ तो० तक। अनुपान—जल।

गुण—इसे प्रातःसायं, अवस्थानुसार उचित मात्रा सेवन कराने से प्लीहा और यकृत के विकार शीघ्र दूर होते हैं। ज्वर पर भी लाभदायक है।

(प्रयोग साहस्री)

---

१५३ कुमार्यासव नं० ९—पांडु, श्वासादि नाशक।

(वैद्यराज श्री० पं० अर्जुनदत्त जी भिवानी)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—ग्वारपाठे का रस १ सेर, कालानमक १० तो०, कालीदाख २० तोले, और पिसी हुई हल्दी ४ तोले, सब को एकत्रकर २४ घंटे तक रख छोड़े, फिर कपड़े से छानकर, सबका रस निकाल लेवे। द्राक्षा का रस सब निकल आवे ऐसा छानना चाहिये। फिर बोतलों में भरकर दवा के समान भाग उत्तम शहद मिला देवे।

मात्रा—२ माशे से १ तोला तक। वैसे ही चटावे।

गुण—पेट की तमाम व्याधियाँ ७ दिन के अन्दर दूर कर देता है।

---

१९४ कुमार्यासव नं० १०—सुजाक नाशक।

(वैद्यराज श्री रामगोपाल जी मिश्र, गोंदिया)

विधि—घृतकुमारी का गूदा १ सेर, भुना सोरा १० तोले, शिलाजीत २ तो०, जवाखार २ तोले, लाहौरी फिटकरी २ तो०, सब को एकत्र कर बड़े मुँह की बोतल में बन्द करके रख देवे। एक मास बाद निकाल कर, काम में लावे।

मात्रा—३० बूँद से ६० बूँद तक। अनुपान-जल। दिन में ३ बार।

गुण—सुजाक की किसी भी अवस्था में पूर्ण गुण दिखलाता है।

---

१९५ कुमार्यासव नं० ११—प्लीहा नाशक।

(श्री पं० रामेश्वर जी शर्मा वैद्य)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—घृत कुमारी का रस १ सेर और उत्तम मधु (शहद) २ सेर एकत्र मिलाकर बोतलों में भर, ठीक प्रकार से मुख का सन्धान कर, एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर काम में लावे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक। अनुपान-जल।

गुण—प्लीहा (तिल्ली) की विकृति पर बहुत ही अच्छा कार्य करता है।

नोट-उक्त बोतलका मुख विशेष दृढ़तापूर्वक सन्धान न कर, मुँह पर केवल वस्त्र लपेट, कस कर बाँध देने से ही आसव का उठान उत्तम प्रकारसे होता है, और वह बिगड़ने नहीं पाता।

---

१५६ कुमार्यरिष्ट नं० १२—प्लीहादि नाशक।

(पं० अनन्तदेवजी दीक्षित, वैद्यशास्त्री, खीरी)

विधि—घृतकुमारी (ग्वारपाठा) का गूदा ४ सेर, पुराना गुड़ २ सेर, शहद आध सेर, पांचों नमक २० तोले, लोह चूर्ण २० तोले, नौसादर ५ तोले तथा-सोंठ, कालीमिरच, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला, चित्रक, नागरमोथा, वायविडंग, अजबायन, सुहागा, सज्जीखार और फटकरी प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोले, तथा हींग और जवाखार १—१ तोला, सब को एकत्र मिला शुद्ध चिकने घड़े में भर, अच्छी तरह मुखमुद्रा कर धूप में २१ दिन तक रख छोड़े। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक। प्रातः भोजन से पूर्व

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और सायंकाल भोजन के बाद सेवन करे।

गुण—लीहा (तिल्ली तथा उदर रोगों पर रामबाण है।

नोट—लेखक महोदयने इसे 'लीहान्तकार्क' नाम से धन्वन्तरि में प्रकाशित किया है। योग बहुत लाभदायक है।

—सम्पादक।

---

१५७ कुमार्यासव नं० १३—उदररोग नाशक।

(राजवैद्य श्री बनवारीलालजी जैन)

विधि—घृतकुमारी (ग्वारपाठे) का स्वरस १॥) मन लेकर एक शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें शहद) ३॥ सेर, धायके फूलों का चूर्ण) २ सेर, तथा सोंठ, कालीमिरच, छोटी पीपल, तेज, पत्रज, चव्य, छोटी इलायची, चित्रक, कचूर, नागकेशर, आऊ की जड़, अजमोद, सफेद जीरा, झड़बेरी की जड़, असगंध, रास्ना, बिधारा और इन्द्रजौ प्रत्येक का चूर्ण ६-६ तोले, तथा बबूल का कस) ॥ मुनक्का) २॥ सेर, लाल या श्वेत पुनर्नवा) ॥ भर चूर्ण कर मिला देवे। पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, एक मास तक जमीन में गाढ़ रक्खे। फिर निकाल, भबके में डाल कर अर्क खींच लेवे।

मात्रा—रोगी के बलानुसार २-२ तोले। दोपहर को १२ बजे और रात्रि को १० बजे सेवन करावे।

गुण—बहुत सुगंधित और गुणकारी है। उदरविकारों से ही प्रायः प्रमेह, प्रदर, शोथ, प्रतिश्याय, जीर्णज्वर, यकृत्, तिल्ली, अष्ठीला, कब्जी, बात और पित्त के विकार होते हैं, अतः उचित अनुपान से इस कुमारी आसव को उक्त सब रोगों पर दे सकते हैं। (धन्वन्तरि)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१५८ कुमार्यासव नं० १४—उदरशूल नाशक ।

(श्री पं० प्रभुनारायण जी त्रिपाठी 'सुशील')

विधि—किसी शुद्ध चिकने मटके में ग्वारपाठे का गूदा १ सेर और सैंधानमक २० तोले भरकर रख देवे, जब सब गूदा गल जाय तब उसमें नीबू का अर्क और अदरख का अर्क प्रत्येक २०-२० तोले, कालानमक ४ तोले और हींग १ तोला मिलाकर पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, २१ दिन तक जमीन में गाढ़ रक्खे। फिर निकाल और छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—६ माशे से १ तोला तक।

गुण—उदर में कैसी भी पीड़ा हो, इसके सेवन से तत्काल दूर होजाती है।

---

१५९ कुमार्यासव नं० १५—गुल्मादिनाशक ।

(आयुर्वेदज्ञ श्री आर० के शर्मा रसायनाचार्य, जगराओं)

विधि—घीकुआर का गूदा ३ सेर, सुहागा १२ तोले, नौसादर १२ तो०, सैंधानमक ४ तो०, दारचीनी २ तो० और सोरा १ तोला सब को शुद्ध चिकने मटके में भर मुख संधान कर १० दिन तक सुरक्षित रक्खे। फिर छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—२॥ तोला तक।

गुण—गुल्म, उदावर्त, अफारा; पसली का शूल, उदर व्याधि,

---

* कुमार्यासव के शेष प्रयोग देखिये झीहादिहरासव और मंदाग्नि हरासव।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मंदाग्नि, यकृत विकार, प्लीहारोग और शोथ (सूजन) को नष्ट करता है।

---

१६० कुमार्यारिष्ट—मन्दाग्नि, प्लीहा आदि नाशक।

(आयुर्वेदाचार्य श्री पं० रामेश्वर प्रसाद जी कृत)

विधि—घृतकुमारी का गूदा २५ सेर, कैथ का गूदा २५ सेर, गुड़ १० सेर, अजवायन कुटी हुई १ सेर नवसादर आध सेर, हरड़ छोटी कुटी हुई, सोंठ का चूर्ण, चित्रक चूर्ण, पीपलामूल का चूर्ण, सुहागा चौकिया और हरा कसीस प्रत्येक २०-२० तोले लेकर सब को मिट्टी के पात्र में भर कर जमीन में गाड़ दे। ६। ७ दिन बाद अर्क खींच लेवे। १६० तोला अर्क में चित्रक, अजवायन, दोनों जीरे, भुनी हींग, नवसादर, चौकिया सुहागा भुना हुआ, पोदीना सूखा, यवक्षार, इमलीक्षार, नीबू का सत्व, अमलवेंत, निशोथ, सज्जीक्षार, अपामार्गक्षार, सोंठ, धनियां मूलीक्षार, पलाशक्षार, सैंजनक्षार और मंडूर, भस्म प्रत्येक १-१ तोला, पांचों नमक २५ तोले, जंबीरद्राव १० तोले और शंखद्राव ६० बून्द ये सब अच्छी तरह मिला देवे। पश्चात् अच्छी तरह बंद करके रक्खे। २-३ दिन के बाद इसे काम में ले सकते हैं।

मात्रा—१ तोला। अनुपान—जल।

गुण—मंदाग्नि दूर होती है। भूख खूब लगती है। और प्लीहा, यकृत विकार शीघ्र नष्ट होते हैं।

(राकेश)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१६१ कुमुदासव—मूर्च्छा, अपस्मारादि नाशक ।

विधि-कमल, खस, खस्खारी के फल, मजीठ, नीलोफर, इलायची, खिरेंटी, जरामांसी, नागरमोथा, अनन्तमूल, त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आमला), बच, कचूर, गौरीसर, नीलोत्पल, पटोलपत्र, पित्तपापड़ा, अर्जुन की छाल, महुआ, मुरामांसी, प्रत्येक का चूर्ण एक एक पल (४-४ तोले), मुनक्का २० पल (१ सेर), धायके फूल १६ पल (६४ तोले), पानी २ द्रोण (२६ सेर), खांड १०० पल (५ सेर) और शहद ५० पल (२॥ सेर), सब द्रव्यों को एकत्र कर, शुद्ध चिकने मिट्टी के पात्र में भर, अच्छी तरह सन्धान कर लगभग १ मास तक सुरक्षित रक्खे । पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक। अनुपान—दूध या जल ।

गुण—मूर्च्छा, मृगी, योषापस्मार (हिस्टेरिया), उन्माद (पागलपन), भ्रम, चक्कर आना, मस्तिष्क की दुर्बलता आदि रोग दूर होते हैं । मूर्च्छा और मृगी में अनेक बार इस आसव के सेवन से उसी समय रोग दूर होकर, रोगी सुख की नींद सोता है ।

नोट—वैद्यराज श्रीयुत रामेश्वरजी शर्म्मा ने उक्त प्रयोग धन्वन्तरि (भाग ४, अंक ६ में) प्रकाशित कराया है, और बतलाया है कि कविराज नगेन्द्रनाथसेन कलकत्ता वालों का पेटेन्ट कुमुदासव या कुसुमासव यही है । इस प्रयोग में नीलोफर और नीलोत्पल एक ही पदार्थ है। दो बार लिखे गये हैं, अतएव दुगुना लेना ठीक होगा। सन्धानावधि, मात्रा, गुण आदि के विषय में प्रयोग प्रेषक ने कुछ भी नहीं लिखा था, हमने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपने विचार से लिख दिया है। यदि कुछ त्रुटि हो तो विज्ञजन हमें सूचित करने की कृपा करें।

(कृष्णप्रसाद त्रिवेदी)

---

१६२ कुशासव--(स्वकृत)--प्रदर हर।

विधि—कुश (दर्भ-डाभ) की जड़ का अधकचरा चूर्ण ५ सेर लेकर १ मन-१२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर चिकने मिट्टी के पात्र में भरे, और उसमें धाय के फूल १३ छटांक, केले के कद का निचोड़ा हुआ जल ४ सेर, दारुहल्दी, नागरमोथा, श्वेतजीरा, तगर और लवंग प्रत्येक ४-४ तोले चूर्ण कर डाले, शहद ४ सेर मिला देवे। योग्य विधि से सन्धान कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे, पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तो० तक। अनुपान—जल।

गुण—अत्यन्त बढ़ा हुआ रक्तप्रदर शीघ्र दूर होता है। मूत्रावरोध भी इसके सेवन से नष्ट होता है। अत्यन्त बढ़ी हुई गरमी, और पित्तजन्य विकार दूर होते हैं। वीर्यस्राव को भी यह रोकता है।

कुष्ठहरासव—देखिये, महामंजिष्ठाद्यासव।

१६३ कुष्ठनाशकारिष्ट—* कुष्ठ, प्रमेहादि नाशक।

---

* पूतीक चव्य चित्रक सुरदारु सारिवा दंती त्रिकटुकानां प्रत्येकं षट्-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—पूतिकरंज, चव्य, चित्रक, देवदारु, सारिवा, दन्ती, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, प्रत्येक का चूर्ण २४-२४ तोले और बेर की छाल, हरड़, बहेड़ा, आमला प्रत्येक का चूर्ण १६-१६ तोले लेकर, शुद्ध घृत से चिकने किये हुए एवं पीपल, शहद और घृत से लेप किये हुए मटके में भर कर उसमें-७ कुडव (१ सेर ३२ तो०) जल (जल कम से कम १० सेर तक मिलाना ठीक होगा), ८ तोले लोहचूर्ण और २॥ सेर गुड़ मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, जौ की राशि में ७ दिन तक दबा रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—यथाशक्ति १ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—कुष्ठ (कोढ़) प्रमेह, मेदोरोग (स्थूलता), पांडु, और शोथ (सूजन) को दूर करता है।

नोट—वास्तव में इसे अरिष्ट नहीं बल्कि आसव ही कहना उपयुक्त होगा। ७ दिन में यह पूर्णतया सिद्ध नहीं होता। कम से कम १५ दिन तक इसे बन्द रखना चाहिए।

कुसुमासव—देखिये, कुमुदासव।

पलिका भागा बदर कुडवस्त्रिफला कुडव इत्येतेषां चूर्णानि ततः पिप्पली मधुघृताभ्यां प्रलिप्ते घृतभाजने प्राकृत संस्कारे। सलोदक कुडवान्नयोरजो ऽर्द्ध-कुडवमर्द्धतुलां च गुडस्याभिहितानि चूर्णान्यावाप्यस्वनुगुप्तं कृत्वा यवपल्ले सप्तरात्रं वासयेत्ततो यथाबलमुपयुंजीतैषारिष्टः कुष्ठमेहभेदः पांडुरोगश्वय-थूनपहन्ति ॥

—सुश्रुत।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१६४ कूष्माण्डासव * नं० १—क्षय, प्रमेहादि नाशक ।

विधि—पेठे को कूट कर निकाला हुआ रस १३ सेर, गुड़ ६॥ सेर, सोंठ, मिरच, पीपल, लौंग, दारचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेशर, जायफल, कंकोल, जावित्री, फूल प्रियंगु, कैथ, इन्द्रजौ, गोखरू, गिलोय का सत, भारंगी, खिरेंटी के बीज, हाऊबेर, सुपारी, देवदारु, लताकस्तूरी (अभाव में धाय के फूल),

---

* कूष्माण्डं जर्जरीकृत्य रसमादाययत्नतः । द्रोणं गुडार्धं दातव्यं चूर्णमेषां विनिक्षिपेत् ॥ कट्वङ्गिकं लवंगं च चातुर्जातं तथैव च । जातीफलं च कंकोलं जातिपत्री प्रियंगुकम् ॥ कापित्थ वत्सकं चैव बीजं गोक्षुरकस्य च । अमृतासत्व भार्ग्यौ च बलाबीजं तथैव च ॥ हपुषा क्रमुकं चैव देवदारु मदावहम् । मुस्तं खदिरसारं च चित्रकं च फलत्रिकम् ॥ रास्ना यष्ट्याह्वकं चापि तुम्बरु नागकेसरम् । ग्रन्थिकंचाजमोदा च कारवी दीप्यकस्तथा ॥ कट्फलं च तुगाक्षीरीह्याकल्लकमुटिङ्गणम् । कापित्थबल्कलं चैव शताह्वा गजशेलुकम् ॥ कलिंगकाश्च काकोली शठी मोचरसं वनम् । कोकिलाक्षस्य बीजानि कसेरूः सहदेविका ॥ भूनिंब चाविका स्पृक्का पद्मकं च निशाद्वयम् । धान्यकं सुरदाली च क्षीरकन्दं तथैव च ॥ एतानि चाक्षमात्राणि लोहचूर्णं पलाष्टकम् । धातक्याः शोडषपलं घृतभाण्डे निधापयेत् ॥ मासार्धं च तथा भूमौ निक्षिपेदतियत्नतः । अनेन विधिना सिद्ध आसवः परिकीर्तितः ॥ पीत्वास्य पलमेकं तु प्रातरुत्थाय नित्यशः । धातुक्षयं च मन्दाग्निं प्रमेहं पांडुमेव च ॥ अर्शांसि ग्रहणीदोषान् सहोदरभगन्दरान् । आमवातं रक्तपित्त श्लेष्मरक्तं तथैव च । निहन्ति वातजान् रोगान् मेदः स्थौल्यापहासवः ॥

— गदनिग्रह ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नागरमोथा, खैरसार, चीते की जड़, हरड़, बहेड़ा, आमला, रास्ना, मुलैठी, तुम्बरु (नेपाली-धनिया), नागकेशर, पीपलामूल, अजमोद, कालाजीरा, सफेदजीरा, कायफल, वंसलोचन, अकरकरा, उटंगन के बीज, कैथ की छाल, सोये के बीज, गजपीपल, लिसोड़े, कुड़ेकी छाल, काकोली (अभाव में असगंध), कचूर (कपूर-कचरी), मोचरस, नागरमोथा, तालमखाना, कसेरु, सहदेई, चिरायता, चव्य, लाजवती की जड़, पद्माख, हल्दी, दारुहल्दी, धनिया, बन्दाल, बिदारीकन्द प्रत्येक औषधि का चूर्ण १—१ तोला, लोहे का बुरादा ३२ तोले और धाय के फूल १३ छटाँक । सब को शुद्ध चिकने मिट्टीके पात्र में भरकर, तथा ठीक प्रकार से सन्धान कर, १५ दिन तक भूमि में गड़ा रहने देवे । पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक । अनुपान—जल ।

गुण—धातुक्षय, मन्दाग्नि, प्रमेह, पांडु, अर्श (बवासीर), संग्रहणी, प्लीहा (तिल्ली), उदररोग, भगन्दर, आमवात, रक्तपित्त, कफदोष, खून और बादी के दोष, गठिया, मेदोवृद्धि (स्थूलता) नाशक है । और उष्णताशामक, शांतिदायक तथा क्षय रोगी के लिये परम लाभदायक है ।

---

१६९ कूष्माण्डासव * नं० २—कास, श्वास नाशक ।

---

* कूष्माण्डं च फलं पक्वं तस्मिंश्छिद्रं तु कारयेत् । छिद्रमध्ये गुडा देयो द्वितुलश्च शनैः शनैः ॥ त्वचावीजं च उत्कृष्य स्निग्धभाण्डे निधापयेत् । वदरीत्वक्पलान्यष्टौ तस्य क्वाथं प्रदापयेत् ॥ द्वौ कसेलौ च धातक्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—पके हुये पेठे के अन्दर का गूदा लगभग १३ सेर लेकर, उसके साथ गुड़ १० सेर, बेरी की छाल ३२ तोले, १ मन जल में डालकर मंदाग्नि से पकावे। २० सेर जल शेष रहने पर, चिकने घटके में भर उसमें दोनों प्रकार के कसेरू (राजकसेरू और चिचोड़), धाय के फूल, हाऊबेर, हरड़ बहेड़ा, आमला, सुगन्धवाला, काकड़ासिंगी, भारंगी, पोहकरमूल, कालीमूसली, कौंच के बीज, कंकोल, बन्सलोचन, मुलैठी, मोचरस, नागरमोथा, पीपलामूल, अष्टवर्ग-(मेदा, महामेदा, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि, वृद्धि, काकोली, क्षीरकाकोली), अष्टवर्ग की औषधियों के अभाव में-शतावरी, विदारीकन्द, असगन्ध और वाराहीकन्द लेवे। दारचीनी, इलायची, पत्रज, नागकेशर, बायविडंग, सोंठ, मिरच, पीपल, चित्रकमूल, केशर, जावित्री,

---

हपुषा च पलं पलम्। त्रिफला हीबेरं च शृंगी भार्ङ्गी च पुष्करम्॥ तालमूली स्वर्णगुडा कंकोलं वंसलोचनम्। यष्टी मोचरसं मुस्ता ग्रन्थिकं चाष्टवर्गकम्॥ चातुर्जातं विडंगानि व्योषं चित्रक कुंकुमम्। जातीपत्रं लवंगं च करभं मालतीफलम्॥ दशांघ्रि रक्तसारं च कट्फलं रेणुका शटी। तिक्तसार चतुःकर्षमाटरुष कुलिंजनम्॥ अजमोदाश्वगन्धा च चव्यं माजूफलं वरी। सारं सूरण तेजवलं ताळीसं श्याम पूगकम्॥ एतेषां कर्षमात्रं च सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत्। मृतभाण्डे क्षिपेत्सर्वं पलमेकं भजेन्नरः॥ कार्श्यं श्वासं च हृद्रोगं पाण्डुरोगं क्षतक्षयम्। गुल्मोदरं ग्रहण्यर्शो मूत्रकृच्छ्रं तथाश्मरी॥ प्रमेह शोफातीसार वातपित्तकफापहः। कूष्माण्डासव इत्येष बलकुसुमलशाधनः॥

—योगचिन्तामणि।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लौंग, अकरकरा, जायफल, दशमूल (सालवन, पिठवन, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, गोखरू, बेल की जड़, सोनापाठा, कुम्भेर, पाढ़ल और अरणी) लालचन्दन, कायफल, रेणुका (संभालू के बीज), कचूर, और कुटकी प्रत्येक ४-४ तोले, बांसा, कुलिंजन, अजमोद, असगन्ध, चव्य, माजूफल, शतावर, खदिरसार, जिमीकन्द, तेजबल, तालीसपत्र और चिकनी सुपारी प्रत्येक १—१ तोला, इन सब द्रव्यों का महीन चूर्ण कर मटके में डालें। योग्य रीति से सन्धान कर १ मास तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक। अनुपान-दूध या जल के साथ, प्रातः सायम् रोगी को सेवन करावे।

गुण—खांसी, श्वास (दमा), हृदय सम्बन्धी रोग, पाण्डु, उरःक्षत, राजयक्ष्मा (क्षय), गुल्मरोग, उदररोग, संग्रहणी, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, प्रमेह, सूजन, अतीसार नाशक है। त्रिदोषनाशक, बलवर्धक और मलशोधक है।

नोट-कोई २ उक्त सब द्रव्यों को १ मन जल में खूब खौला कर (पकाकर) फिर मटके में डालते हैं, और एक मास बाद इसका अर्क खींच कर काम में लाते हैं। यह आसवार्क भी श्रेष्ठ लाभदायक होता है।

—सम्पादक।

---

१६६ कूष्माण्डासव * नं० ३—प्रमेह, मूत्रकृच्छ्रादि नाशक।

---

* शतावर्यादिवगन्धा च गोक्षुरं दशमूलकम् । अश्मभेद कणा सुंठी

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—शतावरी, असगन्ध, गोखरू, सालवन, पिठवन, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, गोखरू, बेल की जड़, सोनापाठा, कुंभेर, पाढल, अरनी, पखानभेद, छोटी पीपल, सोंठ, धमासा, पुनर्नवा, हरड़, बहेड़ा, आमला, पोहकरमूल, भारंगी, रास्ना, चित्रकमूल, अडूसा, गोलोचन, हाथीकंद, दारुहल्दी, खस, बेर की छाल, ये प्रत्येक ८-८ तोले चूर्ण कर लेवे, और छोटी कटेरी १॥ सेर ४ तोले लेकर, सब को जवकुट कर १३ सेर जल में पकावे। (यहाँ जल का प्रमाण बहुत कम दिया है, चतुर्थांश काढ़ा बराबर नहीं उतर सकता, अतएव जल चौगुना १ मन १२ सेर डाल कर काढ़ा पकाना चाहिये) चौथाई जल शेष रहने पर, उतार कर छान लेवे, और शुद्ध चिकने मटके में भर कर उसमें दारचीनी, इलायची, पत्रज, नागकेशर, लौंग, बड़ी

धान्यवास पुनर्नवा ॥ त्रिफला पौष्करं भार्गी रास्ना चित्रक वासकम्। पित्तंकरेणुका दार्वी उशीरं बदरीत्वचम् ॥ एषां पलद्वयं कुर्यात्क्षुद्रा प्रस्थद्वयं तथा। द्रोणमेकं जलंदत्वा पादशेषंच कारयेत् ॥ चातुर्जातं लवंगानामेला जातीफलं तथा। लोहचूर्णस्य कुडवं कुडवं चाभ्रक वंगयोः ॥ एतेषां मेलितं पात्रं स्थापितं धान्य राशिके। मासमेकं परिस्थाप्य भक्षयेच्च द्विकार्षिकम् ॥ प्रमेहं मूत्रकृच्छ्रं च पाण्डुरोगं च कामलम्। रक्तपित्तं तथा वात रक्त निष्ठिवनं ततो ॥ नासारक्तं चार्बुदं च कृणत्वं च विनाशयेत्। क्षीणांच प्रदरं हन्ति जीर्णं रक्त प्रकोपजम् ॥ ये चान्ये वातजा रोगा ये चान्ये शोणितस्य च। धातुक्षयं धातुहानिं रक्तरोगविनाशनम् ॥ वलीपलितजं हन्ति बालानां पुष्टिकारकः। कुष्माण्डकासवो ह्येष विश्वामित्रेण पूजितः ॥

(श्री कैय्यदेव विरचित 'वैद्यक-व्यापार')

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इलायची, जायफल, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, और वंगभस्म प्रत्येक ४-४ तोले (पाठ में १६-१६ तोले लिखा है, जो कि अत्यधिक है) डाल कर, यथाविधि सन्धान कर अनाज की रास में, एक मास तक गाढ़ कर रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ से २ तोले तक। अनुपान—जल।

गुण—प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, पाण्डुरोग, कामला, रक्तपित्त, वातव्याधि, रक्तस्राव, नकसीर, रसौली, कालाकुष्ठ, स्त्रियों का चिरकालीन रक्तप्रकोपजन्य रक्तप्रदर, धातुक्षय, रक्तविकृति, बालों का झड़ना, बाल सफेद होना, इत्यादि रोग नाशक है। बालकों को पुष्टिदायक है।

नोट—इस प्रयोग में कूष्माण्ड (पेठा) किंचिन्मात्र, भी नहीं डाला गया है, अतएव इसे 'कूष्माण्डासव' न कहकर 'कण्टकार्यासव' कहना योग्य होगा। कारण कण्टकारी (कटेरी) इसमें अधिक प्रमाण में है। दूसरी बात-इसमें गुड़ शहद और धायके फूल वगैरा आसव को उपयुक्त उठाने वाले द्रव्य न होने से विशेष प्रभावशाली नहीं हो सकता। इसमें शहद ५ सेर और धायके फूल १३ छटाँक अवश्य मिला देने चाहियें।

—सम्पादक।

---

१६७ कृष्णजीरकाद्यरिष्ट—(स्वकृत)—विषमज्वरादि पर।

विधि—कालाजीरा (स्याहजीरा), नीम की छाल, हरड़, बहेड़ा, आमला और गिलोय प्रत्येक १५-१५ तोले, जवकुट कर, ३२ सेर जल में पकावे। जब लगभग ४ सेर जल शेष रहे,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तब उतार, और छानकर चिकनी हाँडी में भरे और उसमें शहद १३ छटांक, पुराना गुड़ आध सेर, अच्छी तरह घोलकर, सन्धान कर रक्खे। एक मास के पश्चात् छान कर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक। अनुपान-जल।

गुण—जिजारी, चौथिया आदि विषमज्वर, मंदाग्नि और वातव्याधि को शीघ्र दूर करता है।

कृष्णमध्वासव—देखिये मध्वासव नं० ३।

केंबाचारिष्ट—देखिये, कपिकच्छवारिष्ट।

केसरासव—देखिये, कुङ्कुमासव।

१६८ कोलकन्दासव—(स्वकृत)—कफघ्न, मूत्रल।

विधि—ताजे जंगली प्याज लाकर सुखाले, पश्चात् जवकुट कर या मोटे २ टुकड़े कर, ८ तोले लेवे, और उसमें रेक्टिफाइड स्पिट ५० तोले मिला, ३ दिन तक बन्द शीशी, या कांच के बड़े पात्र में रक्खे। पश्चात् फलालैन द्वारा खूब निचोड़ते हुए छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१० बूँद से ३० बूँद तक।

गुण—कफ प्रकोप निवारक, मूत्र साफ लाता है, एवं मूत्र-कृच्छ्र निवारक है। कास, प्रतिश्याय, श्वास, जलोदर और क्षय पर भी लाभदायक है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कौंछारिष्ट--देखिये, कपिकच्छ्वारिष्ट ।

१६६ क्विनीनासव--(स्वकृत)—ज्वरनाशक ।

विधि—नं० १-क्विनाइन हैड्रोक्लोरेट १० माशे तथा नारंग्यासव ५० तोले एकत्र मिला, कांच की बोतल में भर, मुख अच्छी तरह बन्द कर, ३ दिन तक सुरक्षित रक्खे । पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे ।

मात्रा—३० बून्द से १२० बून्द तक ।

गुण—शीतज्वर, मलेरिया ज्वरनाशक है । ज्वर के उतार पर इसे देना चाहिये ।

विधि-नं० २-क्विनाइन १० रत्ती, सैट्रिकएसिड (अथवा नीबू का सत) १५ रत्ती और नारंग्यासव ५० तोले एकत्र मिला बोतल में भर, अच्छी तरह कार्क बन्द कर, ३ दिन तक सुरक्षित रक्खे । पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे ।

मात्रा—३० बून्द से ६० बून्द तक ।

गुण—उपर्युक्तानुसार ।

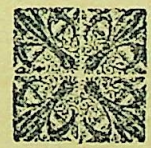

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ख

१७० खण्डासव नं० १—श्वास, कास नाशक।

(रसायनाचार्य श्री आर. के. शर्म्मा, जगराओं)

विधि—देशी खांड, फटकरी, और शहद प्रत्येक दो-दो सेर, छोटी इलायची का चूर्ण २॥ तोले और जल ३ सेर, सब को एकत्र मिला, किसी शुद्ध पीतल के पात्र में भर, मुख पर परई या सराव ढांक कर, ऊपर से अच्छी तरह वस्त्र लपेट कर, घास में दबा कर रक्खे। तीसरे या चौथे दिन डन्डे से हिला देना चाहिए। एक मास पश्चात् निकाल कर, ऊपर का निथरा हुआ आसव बोतलों में भर कर रख देना चाहिए।

मात्रा—१ तोला।

गुण—सब प्रकार के श्वास और कास पर अक्सीर है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

खण्डासव नं० २—देखिये, शर्करासव।

१७१ खदिरासव *—कुष्ठ नाशक ।

विधि—५ सेर खैर की छाल को जवकुट कर १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर उतार कर, छान लेवे, ठंडा होजाने पर शुद्ध चिकने मटके में भर कर, उसमें शहद ७॥ सेर, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला, पिण्ड-खजूर, दारुहल्दी, बावची, गिलोय, और वायविडंग प्रत्येक का महीन चूर्ण ४-४ तोले तथा धायके फूल आध सेर चूर्ण कर मिला देवे। पश्चात् अच्छी तरह हिला कर रख देवे, इसी तरह १६ दिन तक रोज एक या दो बार हिला दिया करे। १६ वें दिन उसमें ५ सेर उत्तम शहद और मिला, कर पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर, एक मास तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर कांच की शीशी या चीनी मिट्टी के पात्र में भर कर, उसमें १ माशा कस्तूरी और दो माशे शुद्ध कपूर मल-मल के कपड़े में बांध कर डाल देवे, और मुख अच्छी तरह

---

* खदिरस्य तुलाम्भसि विपचेच्चतुर्दोण संमिते शेषे।
पादे विगृह्य शीते दधान्मधुनस्तुलां सार्धाम् ॥
वस्त्र विपूते चूर्णं व्योष त्रिफला पिण्डखर्जूरी।
स्वर्ण त्वग्वाकुचिकामृता विडंग पलांशानाम् ॥
धातकी दशपलां दत्वा प्रविलोडितम् नित्यम्।
यावत्षोडश दिवसाः षोडशकं मधुतुलां दद्यात् ॥
मासात्परतः पेयो दत्वा मृगनाभि माषक पटबद्धम्।
कर्पूरमाषद्वयमेष खदिरासवो महाकुष्ठे ॥
—गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बन्द करके रख दे। लगभग १० या १५ दिन के बाद इसका सेवन प्रारंभ करना चाहिये।

मात्रा—१ से ४ तोले। अनुपान—जल।

गुण—यह महाकुष्ठ (गलित कुष्ठ), उपदंश, वातरक्त तथा त्वचा के विकारों को शीघ्र नष्ट करता है। कपाल, औदुम्बर, मंडल, सिध्म, काकणक, पुंडरीक और ऋक्ष जिव्हक ये ७ महा कुष्ठ इसके सेवन से दूर होते हैं।

---

१७२ खदिरसारासव नं० १—(स्वकृत)—कुष्ठ नाशक।

विधि—खैरसार (उत्तम कत्था) ५ सेर लेकर १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, घी से चिकने किये हुये मटके में भर कर, ठंडा होजाने पर, उसमें आमले का रस ५ सेर, शहद ८ सेर और घी २ सेर मिला, ठीक प्रकार से सन्धान कर १ मास तक रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले। अनुपान-जल।

गुण—कुष्ठ और रक्तविकार नाशक है।

---

१७३ खदिरसारासव नं० २—अतिसार नाशक।

विधि—कत्था ४ भाग, खैर की छाल १ भाग, मद्यसार (४५ प्रतिशत वाला) २५ भाग एकत्र मिला, बड़ी बोतल में भर ७ से १५ दिन तक रक्खे पश्चात् छानकर काम में लावे।

मात्रा—२ बून्द से ६० बून्द तक। अनुपान-जल।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—आमातिसार, रक्तातिसार नाशक है।

---

१७४ खदिरसाराद्यासव—(स्वकृत)-अतिसारादिनाशक।

विधि—कत्थे का चूर्ण ६॥ तोले, दारचीनी का चूर्ण २॥ तोले और रेक्टिफाइडस्प्रिट ५० तोले एकत्र मिला कांच की बोतल में भर, अच्छी तरह मुख बन्द कर रक्खे। २ दिन के बाद फलालेन से खूब निचोड़ते हुये छानकर बोतल में भर कर रख दे। यदि स्प्रिट ५० तोले से कम होजाय तो उसमें ऊपर से स्प्रिट और डाल देवे।

मात्रा—३० बून्द से १२० बून्द तक।

गुण—अतिसार, रक्तस्राव, कफस्रावादिनाशक है।

---

१७५ खदिरारिष्ट * नं १—कुष्ट, पाण्डु आदि नाशक।

---

* खदिरस्य तुलार्धं तु तत्तुल्यं देवदार्वपि। वराया विंशतिर्द्राक्ष्याः पलानां पंच विंशतिः॥ बाकुच्या द्वादशपलान्यष्टद्रोणेऽम्भसः पचेत्। द्रोणशेषे कषाये तु पूतशेषे विनिक्षिपेत्। धातक्या विंशतिपलं माक्षिकस्य शतद्वयम्। शर्कराया स्तुलामेकां चूर्णानिमानि दापयेत्॥ कङ्कोलकं लवंगं च एलाजातीफलत्वचम्। केशरं मरिचं पत्रं पालिकान्युपकल्पयेत्॥ पिप्पलीनां तु कुडवं स्थापयेद्घृतभाजने। मासादूर्ध्वं पिबेन्मात्रामपेक्ष्याग्निबलाबलम्॥ सर्वकुष्ठं हरो ह्येष पाण्डुहृद्रोगकासनुत्। कृमि ग्रंथ्यर्बुदग्रन्थि गुल्म प्लीहोदरान्तकृत्॥ एष वै खदिरारिष्टः कृष्णात्रेयेण पूजितः॥

—योगरत्नाकर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—खैर की छाल २॥ सेर, देवदारु २॥ सेर, हरड़, बहेड़ा, आमला तीनों मिलाकर १ सेर, दारुहल्दी १। सेर और बावची ४८ तोले लेकर, जवकुट कर, २ मन २४ सेर जल में क्वाथ पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, छान कर, ठंडा हो जाने पर उसमें-धाय के फूलों का चूर्ण १ सेर, शहद १० सेर, खांड ५ सेर, तथा कंकोल, लौंग, बड़ी इलायची, जायफल, दारचीनी, नागकेसर (असली), कालीमिरच और तेजपात ये प्रत्येक ४—४ तोले, पीपल का चूर्ण १६ तोले मिलाकर, घृत से चिकने किये हुए मटके में सन्धान कर रक्खे। एक मास के बाद निकाल कर छान लेवे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक। अथवा अग्निबलानुसार यथोचित मात्रा, जल के अनुपान से देवे।

गुण—सब प्रकार के कुष्ठ, पाण्डु, हृदय के रोग, खाँसी, कृमिरोग, ग्रन्थि, अर्बुद, गुल्म, प्लीहा, और उदर विकारों का नाशक है। यह अरिष्ट अत्यन्त पाचक और किंचित् सारक होने के कारण अजीर्ण, आमवात, गंडमाला, तथा पित्तजन्य विकारों का शामक है। श्वेतकुष्ठ और किलासकुष्ठ के निवारणार्थ इसका सेवन कई दिनों तक बराबर करते रहना चाहिये। यदि विकार का जोर ज्यादा हो तो रोज प्रातःकाल महामंजिष्ठादि क्वाथ का सेवन करावे और सायंकाल को इस अरिष्ट का सेवन कराना चाहिये। पथ्य में-घी, रोटी और दूध देवे। नमक, प्रवास और स्त्री-सेवन अपथ्य हैं। कोष्ठबद्धता में इसका सेवन नहीं करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खदिरारिष्ट नं० २—देखिये, कनकबिंदुरिष्ट नं० १ और २ ।

१७६ खर्जूरासव * नं० १ राजयक्ष्मा (क्षय) नाशक ।

---

* खर्जूरमुस्तामळकीनिकुम्भा द्राक्षाभया पूग. फलानि पाठा ।
भार्ङ्गी शटी कुण्ठ जलाजमोदं मूळं कणायाः सपळङ्कषां वै ॥
पुनर्नवा काथफलं त्रिशंगुः कर्चूरकं कृष्णमजाजि बिल्वे ।
त्रिवृच्छिवाच्छलिधमासकं च लज्जालुरोहीतकुलिंज मूळम् ॥
अमूनि सर्वाणि महौषधानि चत्वारि चत्वारि पलानि चैव ।
मांसी चतुर्जात कणा लवंगं जातीफलं चन्दन लोहचूर्णम् ॥
प्रमाणतो द्वि द्वि पलान्यमूनि सुधातकीपुष्प पळानिसप्त ।
गुडस्य सप्त त्रिगुणानि दद्यान्मणानि संचूर्ण्य ततः समस्तम् ॥
घृतस्य भाण्डे विपुळे निवेश्य दशोत्तरं प्रस्थशतं जलस्य ।
क्षिप्त्वा क्षिपेत्पंचदिनानि भूमौ निष्पन्न कल्पं हृदये विचार्य ॥
षष्ठे दिने तच्च सुयोजनीयं ताम्रस्य पात्रं द्वयमध्य भागे ।
शतत्रयं नागळतादलानां सहस्रयुग्मं शतपत्रकाणाम् ॥
प्रक्षाल्यदेयं विधिनाऽथसन्धि विमुद्रयचुल्ल्यां विनिवेश्ययन्त्रम् ।
निष्कासयेदर्कमतोयथावद्त्वाजलं चोपरियंत्रकस्य ॥
बळाबळं रोग निपीडितानां विमृश्य देयः पलक प्रमाणः ।
खार्जूर संज्ञः प्रिय आसवोऽयं विषूचिका यक्ष्मभयं निहन्ति ॥

हृद्रोग कास विषमज्वर शोफतर्ष,
श्वास प्रमेह बल संक्षय पांडुरोगान् ।
हिध्माश्च नाशयति सर्व शिरो विकारान्,
रुज्याग्नि वर्धन बलप्रद वृष्य एषः ॥

—गदनिग्रह ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—खजूर, नागरमोथा, आमला, जमालगोटे (दंती) की जड़, मुनक्का, हरड़, सुपारी, पोठा, भारंगी, कपूरकचरी, कूठ, अजमोद, सुगन्धवाला (नेत्रवाला) पीपलामूल, गूगल, पुनर्नवा (विसखपरा), कायफल, फूलप्रियंगु, बच, कालीमिरच, सफेदजीरा, हाऊबेर, निसोथ, हरड़की बकली, धमासा, लाजवन्ती के बीज, रुहेड़े की छाल, कुलिंजन की जड़ और सोंठ ये प्रत्येक औषधि १६-१६ तोले, बालछड़ (जटामांसी) दारचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेशर, पीपल, लौंग, जायफल, सफेदचन्दन और लोहे का बुरादा प्रत्येक औषधि ८—८ तोले, धाय के फूल २८ तोले, गुड़ १ सेर ५ तोले सब का चूर्ण करके २ मन ६ सेर जल में मिलाकर, अच्छे बड़े चिकने बरतन में सन्धान कर, भूमि में गाढ़ देवे। पश्चात् छठे दिन, जब आसव कुछ तयार हुआ जाने, तब उसमें ३०० पान, और २००० कमल के फूल डालकर तांबे के भबके से अर्क खींच लेवे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक, रोगी के बलाबल अनुसार, न्यूनाधिक मात्रा में देवे। अनुपान-जल।

गुण—राजयक्ष्मा (क्षय), हैजा, हृदय के रोग, खांसी, विषमज्वर, सूजन, प्यास, दमा (श्वास), प्रमेह, कमजोरी, पाण्डु, हिचकी तथा सिर के रोगों को दूर करता है, एवं अग्नि, बल, वीर्य और रुचिकारक है। निमोनिया आदि प्रबल व्याधियों के अन्त में दुर्बलता दूर करने के लिये इसका अच्छा उपयोग होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१७७ खर्जूरासव * नं० २—क्षय, शोथादिनाशक।

विधि—४ सेर खजूर बीज निकाले हुये लेकर, जवकुट कर, १३ सेर जल में पकावे। लगभग ६ सेर जल शेष रहने पर, छान कर, उसमें—हाऊबेर और धायके फूलों का चूर्ण मिला, उत्तम सुगंधित द्रव्यों से धूपित घड़े में भर कर, उसका मुख अच्छी तरह बन्द कर, जमीन में गाड़ देवे। १४ दिन पश्चात् निकाल कर, और छानकर बोतलों में भर कर रख ले।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक। अनुपान—जल।

गुण—क्षय, सूजन, प्रमेह, पाण्डु, कामला, ग्रहणी, पांच प्रकार के गुल्म और बवासीर को शीघ्र नष्ट करता है। क्षय का वह रोगी जो अत्यन्त क्षीण होगया हो, कफ ढेलादार बहुत प्रमाण में निकलता हो, तथा शरीर में सूजन हो, उसके लिये यह आसव अमृत के समान गुणदायक है।

---

१७८ खर्जूरासव नं० ३—(स्वकृत)—दाह, तृष्णादिनाशक।

विधि—बीज सहित खजूर ५ लेकर जबकुट कर, १ मन १२ सेर जल में क्वाथ करे। १३ सेर जल शेष रहने पर, उसे चिकने घड़े में भर देवे, और उसमें मुलैठी, गंभारी, मुनक्का, कमल-

---

* पंचप्रस्थं समादाय खर्जूरस्य विचक्षणः। द्रोणेऽम्भसि पचेत्सम्यगुत्तार्य गालयेत्ततः॥ कुंभीसुधूपितां कृत्वा प्रक्षिपेत्तं रसं शुभम्। हपुषां ताम्रपुष्पीं च कषाये तत्र निक्षिपेत्॥ द्वारं निरुध्य सुदृढं निक्षिपेद्वसुधातले। सप्तकद्वययोगेन सिद्धोऽयत्वासवो रसः॥ रोगराजं तथा शोफं प्रमेह पांडुकामलाम्। ग्रहणीं पंचगुल्मार्शो नाशयन्यातिवेगतः॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

केसर, फालसा, बड़ी कटेरी, खिरेंटी, श्वेतचन्दन और महुये के फूल ४-४ तोले चूर्ण कर डाले, तथा धायके फूल १३ छटांक शहद ३॥ सेर, और खांड ५ सेर मिला कर, अच्छी तरह संधान कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। फिर छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोले से ४ तोले तक। जल के साथ।

गुण-दाह, प्यास, मूर्च्छा, भ्रम, तथा लू एवं उष्णताजनक पैत्य-विकार नाशक और वीर्य-वर्धक है।

---

१७६ खुरसान्यासव—(स्वकृत)-कृमिविकारादि नाशक।

विधि—खुरासानी अजवायन २॥ सेर लेकर, जवकुट कर, २६ सेर जल में पकावे। ७ सेर जल शेष रहने पर, छानकर शुद्ध मटकी में भरे, और उसमें गुड़ १० सेर, सोंठ और बायविडंग का महीन चूर्ण ८-८ तोले मिलावे। अच्छी तरह संधान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख ले।

मात्रा—२ माशे से १ तोला तक। अनुपान-जल।

गुण—इसकी मात्रा रोगी के बलाबल को देखकर उचित प्रमाण से देने से उत्तम लाभ कारक है। आंत्रगत विविध प्रकार के कृमियों को, तथा उदरशूल, अपस्मार (मृगी), एवं नहरुआ को नष्ट करता है। उन्मादावस्था, शुष्क आक्षेपयुक्त कास, तथा प्रसव के बाद की ऐंठन में भी यह लाभप्रद है।

नोट—आगे देखिये, 'पारसीकयवान्यासव'।

खैरासवएवंअरिष्ट—देखिये, खदिरासव एवं अरिष्ट।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ग

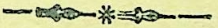

१८० गण्डिकाद्रोणासव *—अर्श, भगन्दरादि नाशक।

विधि—ईख के कटे हुये टुकड़े १३ सेर, और शुद्ध जल १३ सेर को, घृत के चिकने पात्र में (जिसमें बहुत काल तक घृत रक्खा रहा हो) भरकर, उसमें धनिया, अजवायन, अजमोद, कलौंजी प्रत्येक १६-१६ तोले, तथा गजपीपल, चव्य, चीता, और जीरा प्रत्येक ८-८ तोले, महीन चूर्ण कर मिलावे, तथा

---

* दद्यात्सलिलद्रोणं कृतमन्थेक्षुगण्डिकाद्रोणम्। धान्ययवानीदीप्यक पृथ्वीकाश्चेति कुडवांशाः ॥ द्विपलोनाः स्युर्देयास्तेजवती चव्य चित्रकाजाज्यः। मधुनः कुडवं दत्वा घृतरूढे भाजने स्थाप्यः ॥ एष काञ्जिकराजो लवणयुतः कृत्तृणार्द्रक सुगन्धः। दशरात्रात्पातव्यः साळिलं च पुनः पुनर्देयम् ॥ अर्शोभगन्दरगदग्रहणीभेदः प्रमेह दोषांश्च। नाशयति सेव्यमानो वन्हिकरो गण्डिकाद्रोणः ॥

—भा. भै. रत्नाकर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साथ हो शहद भी १६ तोले (नोट—कांजी की दृष्टि से शहद १६ तोले ठीक है, किंतु आसव के लिये शहद लगभग ५ सेर तक मिलाना चाहिये) मिला देवे। यथाविधि पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १० दिन तक रक्खा रहने देवे। किंतु यह आसव दो मास के बाद उत्तम सेवनीय होजाता है। इसे बीच २ में हिलाते और छानते रहना चाहिये।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक। अनुपान—जल। यदि यह कांजी के रूप में खट्टा हो तो सेवन करते समय इसमें जल सेंधानमक, अदरख, और मिर्चियाकंद का चूर्ण मिला लेना चाहिये।

गुण—अर्श, भगन्दर, ग्रहणी, मेदरोग (२१ रक्त) और प्रमेह नाशक है। यह उत्तम अग्निदीपक और भूख को बढ़ाने वाला है।

---

१८१ गण्डीरासव *—क्षय प्रमेहादि नाशक।

---

* जातसारं तु गण्डीरं सपुष्पं परिशोषयेत्। खंडशः क्षोदितं कृत्वा तस्य पंचाढकं पचेत्॥ त्रींश्चैव त्रिफलाप्रस्थान् दशमूली तुलां तथा। दद्यात् कुटजवल्कस्य पलानां पंचविंशतिम्॥ इन्द्रयवं सभल्लातं विडंगं घनमेव च। अर्धप्रस्थ समंभागानेकैकस्य समावपेत्॥ पाठा मधुरसा दन्ती पट्-ग्रन्था चित्रकस्तथा। एषां दशपलान् भागान्मृद्वीकायास्तथाढकम्। दशद्रोणेषु तोयस्य पचेद् द्विद्रोण शेषितम्। पूते तस्मिन् कषाये तु गुडस्यैकां तुलां क्षिपेत्॥ तथा तु शोधितस्यापि शुभे भाण्डे निधापयेत्। द्वौ प्रस्थौ मधुनश्चैव द्वावथो रजसस्तथा। अर्धप्रस्थो विडंगानां कुडवो मरिचस्य च। एतयोः सूक्ष्मचूर्णानि प्रतीवापार्थमाहरेत्॥ चूर्णं मरीचकानां च मधुना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—पुष्प युक्त सूखा हुआ मजीठ १६ सेर, त्रिफला २॥ सेर, दशमूल ५ सेर, कुड़े की छाल १। सेर, इन्द्रजौ, मिलावे, वायविडंग, नागरमोथा प्रत्येक ३२—३२ तोले, पाठा, मूर्वा, दन्तीमूल, बच, और चीता आध २ सेर, तथा मुनक्का ३। सेर, सब को कूटकर, ३ मन १० सेर जल में पकावे। २६ सेर जल शेष रहने पर, छान लेवे। पश्चात् घृताक्त (चिकने) मटके में (जिसके भीतर मरिच चूर्ण मिश्रित शहद का लेप कर दिया गया हो) भर कर, उसमें-गुड़ ५ सेर, शहद १ सेर ४८ तोले, शुद्ध लोहचूर्ण १ सेर ४८ तोले, वायविडंग ३२ तोले, काली-मिरच १६ तोले, चूर्ण कर मिलावे। फिर अच्छी तरह पात्र का मुख सन्धान कर, १ मास पर्यन्त रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर देवे।

मात्रा—रोगी और रोग के बलाबल का बिचार कर १ तोले से ४ तोले तक। अनुपान—जल।

गुण—क्षय, प्रमेह, गुल्म, उदररोग, कृमि, कुष्ठ, प्लीहा की वृद्धि, बवासीर, भगन्दर, शोथ, पांडु, ग्रहणी, ग्रन्थि, गलगण्ड,

---

सह योजयेत्। कर्तव्यो भाण्डलेपस्तु समासिच्य निधापयेत्॥ एष मास-स्थितः पेयो यथाव्याधि बलाबलम्। गण्डीरारिष्ट इत्येष व्यासतः परि-कीर्तितः॥ एष शोषान् प्रमेहाँश्च गुल्माँश्च जठराणि च। कृमि कुष्ठानि वर्ध्मानि प्लीहार्शांसि भगन्दरम्॥ क्षययून्पांडुरोगाँश्च ग्रहणी दोष मेव च। ग्रन्थींश्च गळगण्डं च गण्डमालां तथैव च। विषमज्वर कासांश्च विद्रधीन वातशोणितम्॥ अरिष्टः शमयत्याशु युधि शक्र इवासुरान्॥

—गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गंडमाला, विषमज्वर, खांसी, विद्रधि, तथा वातरक्त को नष्ट करता है। यह गण्डीरारिष्ट-उरुस्तम्भ (आढ्यवात पैरा लिलिस आफदी लोअर एक्ट्रे मिटीज़) रोग को शीघ्र ही नष्ट करता है। वृन्दमाधवमें कहाहै-उरुस्तम्भे प्रशंसन्ति गण्डीरारिष्टमेव च ॥

---

१८२ गण्डीराद्यरिष्ट * —शोथ, भगन्दरादि नाशक।

विधि—सेहुण्ड (थूहर), भिलावे, चीते की जड़, सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग, दोनों कटेरी प्रत्येक १४॥-१४॥ तोले चूर्ण कर—कूर्चिक मस्तु (६॥ सेर दही और ६॥ सेर जल एकत्र मिला मथ ले) १३ सेर में पकावे, इसे कण्डों की आग पर पकाना चाहिये। जब लगभग ६ सेर क्वाथ शेष रहे, तब उसे छानकर चित्रक और पिप्पली के चूर्ण से लिप्त मटके में भरकर, उसमें-मस्तु (द्विगुण जलयुक्त तक्र) १३ सेर, और मिश्री ५ सेर मिला, मुख बन्द करके १० दिन तक रक्खा रहने देवे। इसे खुली जगह मैदान में रखना चाहिए। पश्चात् छानकर काम में लावे।

---

* गण्डीर भल्लातक चित्रकांश्च व्योषं विडंगं वृहती द्वयञ्च। द्विप्रस्थिकं गोमय पावकेन द्रोणे पचेत्कूर्चिकमस्तुनस्तु ॥ त्रिभाग शेषं च सुपूत शीतं द्रोणेन तत्प्राकृतमस्तुना च सितोपलायाश्च शतेन युक्तं लिप्ते घटे चित्रक पिप्पलीनाम् ॥ वैहायसे स्थापितमादशाहात्प्रयोजयँस्तद्विनिहन्ति शोफान्। भगन्दरार्शः कृमि कुष्ठमेहान्वैवर्ण्य कार्श्यानिल हिक्कनं च ॥

—चरक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—१ तो० से २ तोले तक । अनुपान—समभाग जल ।

गुण—शोथ, भगंदर, ववासीर, कृमिरोग, कुष्ठ, प्रमेह, विवर्णता, कृशता (दुर्बलता), वातदोष, तथा हिचकी नाशक है।

---

१८३ गन्धकासव—विषूचिकादे नाशक ।

विधि—शुद्ध अमलासारगन्धक ३ सेर, चूना एक सेर, भृंगराज (भांगरा) के पंचाङ्ग का स्वरस २ सेर और जल १३ सेर, एक मिट्टी के पात्र में डाल, मंदाग्नि से पकावे। जब जल ६॥ सेर तक शेष रहे, तब उतार कर नीचे रख देवे। ठंडा हो जाने पर, ऊपर का कुल पानी धीरे २ दूसरी चिकनी मटकी में निथार लेवे या वस्त्र से छानकर भर देवे। फिर उसमें—शहद ५ सेर, सोंठ, काली मिरच, पीपल, वायविडंग, कपूरकचरी, श्वेत जीरा, सौंफ, लोंग और जायफल प्रत्येक ४-४ तोले चूर्ण कर मिलावे। धाय के फूल ३० तोले मिलाकर, अच्छी तरह सन्धान कर १ मास तक रक्खे। पश्चात् छान कर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—५ बूँद से ६० बूँद तक। अनुपान—चौगुना जल।

गुण—विशूचिका (हैजा) नाशक, रक्तशोधक, अजीर्ण, अग्निमांद्य नाशक है। खुजली, दाद पर ऊपर से लगाने से ही फायदा हो जाता है।

(एक प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ से।)

गन्धप्रसारण्यासव—देखिये, प्रसारण्यासव।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१८४ गर्ज्जरासव नं० १—(स्वकृत) वलवर्धक ।

विधि—५ सेर गाजर लेकर, अन्दर के बीजका काठ निकाल, और चाकू से महीन टुकड़े कर, मिट्टी के बरतन में डाल, २८ सेर जल मिला, मंदाग्नि पर पकावे । ७ सेर जल शेष रहने पर, उतार कर अच्छे प्रकार मसल कर छान ले, और चिकने घड़े में भरे, ठंडा होजाने पर, उसमें-शहद ४ सेर, लौंग, बाल-छड़, दारचीनी, कुलीजन और केशर महीन चूर्ण कर मिलावे । तथा धाय के फूलों का चूर्ण आध सेर मिला, अच्छी तरह मुख सन्धान कर, १५ दिन सुरक्षित रक्खे । पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तो० से ३ तोले तक । अनुपान-जल ।

गुण—कमजोर को शीघ्र पुष्ट कर देता है, कांतिवर्धक है, और, प्रमेह, सुजाक, तथा क्षय रोग को दूर करता है ।

---

१८५ गाजरासव नं० २--वल्वर्यि वर्धक ।

(वैद्य पंचानन श्री शंभुदत्तजी शर्मा कौशिक)

विधि—ताजी गाजर का रस ५ सेर, अङ्गूर का रस ५ सेर, मीठे संतरे का रस ५ सेर, ईख का रस ५ सेर, और हालों का चूर्ण ५ सेर, इन सब को चिकने मिट्टी के या चीनी के पात्र में डाल कर, मुख मुद्रा कर, अनाज या भूसे में ४० दिन दबा देवे । ४० दिन के बाद निकाल १० बोतल आसवार्क, यंत्र से खींच लेवे । फिर बोतलों को खूब बन्द कर, ४० दिन तक पानी में रक्खे । ध्यान रहे बोतलों को ऊपर तक नहीं भरना चाहिये, प्रत्येक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बोतल का आठवां हिस्सा खाली रहे, नहीं तो आसव कार्क में से बाहर आ जावेगा, या बोतल फोड़ देगा, और यह भी ध्यान रखना चाहिए कि पानी खराब न हो। ४० दिन के बाद पानी से निकाल काम में लाना चाहिये।

मात्रा— २ तोला से ५ तोले तक। अनुपान—जल।

गुण—जठराग्निवर्धक, रक्त, वीर्य-वर्धक, शरीर के सर्वांगों को पुष्टिकारक, कुछ दिन के सेवन से काया पलट देता है, शराब की आदत छुटा देता है। इसे प्रतिदिन प्रातः सायंकाल भोजन के मध्य में पीना चाहिये, आरोग्य मनुष्य सेवन करे तो नवजीवन का फल भोगे, इसका गुण अकथनीय है।

(अनुभूतयोगमाला)

---

१८६ गाजरासव नं० ३—कृमि नाशक।

विधि—ताजी गाजर का रस २० सेर, और पलास बीज का चूर्ण १ सेर दोनों को चिकने या चीनी मिट्टी के पात्र में भरकर दृढ़ मुख मुद्रा कर, अनाज या भूसे में ४० दिन दबा रहने दे, फिर निकाल कर, यंत्र द्वारा १० बोतल अर्क खींच लेवे।

मात्रा—१ तो०, से ४ तोले तक।

गुण—इसके सेवन से उदर के कृमि शीघ्र नष्ट होजाते हैं।

(अनुभूतयोगमाला)

---

१८७ गाजरासव नं० ४—प्लीहा नाशक।

विधि—गाजर का रस १६ सेर और नीबू का रस ८ सेर, दोनों को चिकने या चीनी मिट्टी के पात्र में डाल कर, मुख

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुद्रा कर, पृथ्वी में दबा देवे। ४० दिन के बाद, यन्त्र द्वारा अर्क खींच लेवे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोला तक। दाँतों को बिना लगाये कंठ में डाल पी लेना चाहिये, ऊपर से मुख शुद्धि के लिये भुने हुए चने चाबने चाहिये। हलका पथ्य सेवन करे।

गुण—सीहा (तिल्ली) शीघ्र नष्ट होजाती है।

(अ० योगमाला)

---

१८८ गाजरासव नं० ५—वाजीकरण, स्तंभक।

(हकीम श्री वसंतलालजी गंज निवासी)

विधि—दारचीनी, गुलसुर्ख, तुख्मरेहाँ, बालछड़, नरकचूर ये प्रत्येक ६-६ तोले, बादरंजबोया, गावजबाँ, आबरेशम, गुल गावजबाँ, बहमन सफेद, बहमन सुर्ख, चन्दन सफेद, ऊद हिंदी ये प्रत्येक ४-४ तोले, जावित्री २ तोले, जाफरान १ तोला, रुमी मस्तंगी १ तोला, चोवचीनी २० तोले, बड़ी हरड़ ५॥, पोस्त तुरंज ४ तोले, सोंठ १ तोला, तिल १ तोला, गाजर छिली साफ २ सेर, कीकड़ की छाल ३ सेर, गुड़ ३ सेर और जल ३० सेर।

सन्धानविधि—१५ दिन बाद भवके से अर्क खींच लेवे।

गुण—वाजीकरण, स्तंभक, वीर्यवर्धक, कफ, पित्त नाशक, स्फूर्तिकारक, मदकारक है।

(आ० संग्रह)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१८६ गाजरासव नं० ६—प्रमेहादि नाशक।

(वैद्यराज रामदेवप्रसादजी)

विधि—गाजर २० सेर लेकर महीन टुकड़े कर सुखा लेवे, और हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, मिरच, पीपल प्रत्येक २०-२० तोले, चन्दन का बुरादा २५ तोले सब को कूट पीस कर, २॥ मन जल मिला शुद्ध चिकने घड़े में भर, उसमें २॥ सेर गुड़ मिला कर पड़ा रहने देवे, ३ दिन बाद जब खमीर उठने लगे तब भभके के द्वारा अर्क खींच लेवे और उस अर्क में जावित्री, लौंग, छोटी इलायची १।-१। तोले, इलायची बड़ी २॥ तोले, कस्तूरी ३ माशे और केशर ५ माशे इन द्रव्यों का खूब महीन चूर्ण कर मिलावे तथा अच्छी तरह मुख मुद्राकर अर्क वाले पात्र को ३ दिन तक धूप में रक्खे। पश्चात् छानकर काम में लावे।

मात्रा—२ तोले से १० तोले तक।

गुण—सब प्रकार का प्रमेह नष्ट होजाता है, भूख लगती है, बलकी वृद्धि, धातुपुष्टता एवं पित्तज्वर का नाश होता है। मंदाग्नि, खूनी-बवासीर, फीलपाव, गण्डमाला आदि रोगों पर भी अति लाभदायक है।

(धन्वन्तरि-सिद्धयोगाङ्क)

१९०गुग्गुलासव *—उदररोग, भगन्दरादि नाशक।

---

* शतं हरीतकीनान्तु विभीतक शतं तथा। प्रस्थमामलकानां च गुग्गुलोश्च चतुष्पलम्॥ त्वगेला पिप्पलीमूल चव्य चित्रकदीप्यकम्। ताळीसपत्र त्रिकटु मुस्त केसर कट्फलम्॥ जलद्रोणे विपक्तव्यं पादशेषे जले ततः।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—गूगल, दालचीनी, बड़ी इलायची, पीपलामूल, चव्य, चीते की जड़, अजवायन, सोंठ, मिरच, पीपल, तालीस-पत्र, नागरमोथा, नागकेशर और कायफल प्रत्येक १६-१६ तोले, हरड़ ५ सेर, बहेड़ा ५ सेर, आमले १३ छटांक, सब को कूट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे (पाठ में जल का प्रमाण बहुत कम दिया है), १३ सेर जल शेष रहने पर, घृत से चिकने मटके में भर कर, उसमें धायके फूल १३ छटाँक, गुड़ १० सेर, मुनक्का आध सेर और अनारदाना आध सेर चूर्ण कर मिला देवे। पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर सुरक्षित रख देवे। कुछ दिन बाद उसे खोल कर देखे, जब उसमें, औषधियों का रस, वर्णादि प्रकट होजाय (यह क्रिया लगभग १ मास में होजाती है) तब उसे छानकर इक्षुरस या सिरके के पात्र में भर कर, मुख बन्द करके रख देवे और ६ मास के बाद निकाल कर सेवन करे।

मात्रा— रोगी के बलाबल का विचार कर १ तोला से

धातक्याः प्रस्थमेकन्तु तथागुडशतद्वयम्॥ द्राक्षा दाडिम खण्डानां भागान्दशपलान्मतान्। सर्वमेतत्समालोड्य स्थापयेद्भाजने शुभे॥ यदा युक्तरसः स्याच्च सुजातो गन्धवर्णतः। तम्पूरयेत्तदा भाण्डे शुक्तस्येक्षु रसस्य तु॥ षण्मास संयुतो ह्येष द्रवो पेयः प्रयोगतः। गुग्गुल्वासव इत्येष देयः सर्वेषु रोगिषु॥ प्राग्भक्तं मध्यभक्तं वा ग्रासे ग्रासान्तरे तथा। दद्यात्क्रमेण योगं तु वयः सात्म्यमपेक्ष्य च॥ नाशयेदुदरं प्लीहामूरुस्तम्भं सकामलम्। चिरोत्थितमपिश्वासं कास शोफ भगन्दरान्॥ कृमि कुष्ठ प्रमेहेषु हितश्चैवाग्नि दीपनः॥

—गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४ तोले तक। अनुपान-जल। भोजन के आदि में या मध्य में, प्रत्येक ग्रास में अथवा हर दूसरे ग्रास के साथ सेवन करावे।

गुण—उदर रोग, तिल्ली, उरुस्तंभ (आढ्यवात), कामला, पुराना श्वासरोग, खांसी, सूजन, भगंदर, क्रिमि, कुष्ठ और प्रमेह रोग नाशक है। तथा अग्निदीपक है।

---

१९१ गुडमारासव नं० १—मधुमेह नाशक।

विधि—गुड़मार बूटी का पंचाङ्ग ३॥ सेर जल में पकावे। लगभग ५ सेर जल शेष रहने पर, उसे छान कर, शुद्ध चिकने मटके में भर देवे, और उसमें—शहद ३ सेर, धाय के फूल ३० तोले, आँवले की गिरी, जामुन की गुठली, पीपल की लाख ४-४ तोले चूर्ण कर मिलावे। पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर २१ दिन सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—मधुमेह को शीघ्र नष्ट करता है।

(एक प्राचीन पुस्तक से।)

---

१९२ गुड़मारासव नं० २—मधुमेह-हारक।

विधि—गुडमार बूटी का स्वरस १ पाव, चूने का पानी १ पाव, भीमसेनी कपूर २ माशे, तथा सफेद इलायची के बीज ३ माशे लेकर, इलायची के बीजों का महीन चूर्ण कर, कपूर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिला और घोट कर बोतल में सब दवा एकत्र कर, मुख मुद्रा कर रक्खे। ७ दिन बाद छान कर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ से ३ तोले तक। प्रातःसायं सेवन करे।

गुण—मधुमेह यस्त रोगी का शरीर यदि विशेष क्षीण नहीं हुआ हो तो इस प्रयोग से अवश्य लाभ होता है। भोजन में घृत विशेष रूप से सेवन करना चाहिए।

(धन्वन्तरि से।)

गुडूहलासव—देखिये, जपाकुसुमासव।

गुडारिष्ट—देखिये, गौडोऽरिष्ट।

१९३ गुल्म प्लीहान्तकारिष्ट—गुल्म, प्लीहादि नाशक।

(श्री० चुल्हाय मिश्र जी वैद्य)

विधि—नीबू का रस ʃ॥=, घीकुआर का रस ʃ॥=, अदरख का रस ʃ॥=, शहद असली ʃ॥=, पीपल, हल्दी, दारुहल्दी, पीपलामूल, चाभ, चित्रकमूल (लाल), सोंठ, चिरचिटे (अपामार्ग) की जड़ की छाल, मुरैय का नमक, खाने का सोड़ा, पाँचों नमक, जवाखार, सज्जीखार, शरपुंखे का रस, खुरासानी अजवायन की जड़, पलाश का खार, और अजमोद प्रत्येक १-१ तोले, महीन कूट कर एक बर्तन में डाल मुँह बन्द कर १५ रोज धूप में रक्खे, जिस जगह जलाशय हो। पश्चात् दवा निकाले, और छान कर प्रयोग में लावे।

मात्रा—६ माशे से १ तोला तक। अनुपान-जल। मात्रा अवस्थानुसार, विचार कर देवे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—गुल्म, प्लीहा, और उदर रोगादि नाशक है।

(धन्वन्तरि।)

---

१९४ गैरिकासव—(स्वकृत)—सुजाकादि नाशक।

विधि—शुद्ध गेरू का चूर्ण ३ सेर (स्वर्ण गेरू के छोटे २ टुकड़े कर, तवे पर रख, मंदाग्नि से पकावे, खूब तप जाने पर उस पर थोड़ा गोघृत डाले, आध सेर घृत के गेरू में शोषित हो जाने पर, उसे उतार लेवे) शुद्ध चिकने घड़े में भर, उसमें इक्षुरस (गन्ने का रस) ५ सेर, घृतकुमारी का रस ३ सेर, कालीमिरच, हल्दी, दारुहल्दी, और आमला प्रत्येक का चूर्ण २० तोले मिला, संधान कर रक्खे। १५ दिन बाद छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ माशा से १॥ तोले तक। अनुपान—जल या दूध।

गुण—सुजाक को शीघ्र दूर करता है। शीतपित्त, रक्तप्रदर, तथा दाह नाशक है। छोटे बच्चों की कमजोरी, चेहरे का फीकापन, मंदज्वर, जीर्णज्वर, शरीर की दाह, पतले दस्तों का आना, पेट का फूलना, अजीर्ण तथा मिट्टी के खाने से उत्पन्न विकारों को शीघ्र नष्ट करता है। छोटे बच्चों को इसे माता के या गाय के दूध के साथ देना चाहिये।

---

१९५ गोजिह्वासव—हृद्रोग हारी।

(मुरादाबाद निवासी वैद्यराज पं० टीकादत्त जी त्रिवेदी कृत)

विधि—गावजवाँ १। सेर, और गावजवाँ के फूल १ पाव,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अच्छी तरह कूट कर, १० सेर जल में मिला, शुद्ध चिकने घड़े में भर देवे, और उसमें मुनक्का (बीज निकाल कर) १। सेर, गुड़ ४ सेर, मिश्री २॥ सेर, तथा गुलबनफसा, दारचीनी, अगर, सफेद छोटी इलायची के बीज, रूमीमस्तगी, सफेद चन्दन, लालचन्दन, छारछबीला, केशर, बंसलोचन, आमला और कचूर प्रत्येक का चूर्ण ३—३ तोले, मिलाकर, अच्छी तरह सन्धान कर रक्खे। २७ दिन के पश्चात छानकर बोतलों में भर लेवे।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक। अनुपान—जल।

गुण—हृदय रोगों पर अत्यन्त लाभ कारक है।

---

१९६ गोमूत्रासव—(स्वकृत)—बाल शोष नाशक।

विधि—श्यामा गौ अथवा जिस गाय का सर्वांग पीला हो, गर्भिणी न हो, हाल की ब्याही हुई न हो, और बच्चा भी न हो, ऐसी बछिया का मूत्र ४० तोले तक लेकर बोतल में भरे तथा उसी मूत्र से १ या २ तो० केशर (उत्तम काश्मीरी) घोटकर उसी में मिलाकर, कड़ी डाट लगा ३ दिन सूर्य की धूप में और ३ रात चन्द्रमा की चांदनी में रक्खे। फिर छान लेवे।

मात्रा—१ साल तक के बच्चे को ५ बूँद और २ साल तक के बच्चे को १० बूँद, माता के ६ माशे दूध में मिलाकर देवे। माता मूँग की दाल और गेहूँ की रोटी खावे और पति-सहवास न करे। मातृदुग्ध के अभाव में इसका सेवन बकरी के दूध के साथ करावे। शीघ्र ही लाभ होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१९७ गोक्षुरासव—(स्वकृत)—मूत्र विकार नाशक।

विधि—बड़े गोखरू का पंचाङ्ग ५ सेर, जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, उतारकर छान लेवे। और ठंडा होने पर, एक शुद्ध चिकने घड़े में भरकर, उसमें-शक्कर २॥ सेर, शहद ३ सेर, धाय के फूलों का चूर्ण १ पाव, तथा सोंठ, मिरच, पीपल, नागकेशर-अस्ली, तेजपात, कंकोल, तज, कालीमिरच, छोटी इलायची, तालीसपत्र, खरबूजे के बीज, इमली के बीज और बंसलोचन प्रत्येक ४-४ तोले महीन चूर्ण कर मिला देवे। अच्छी तरह सन्धान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक। अनुपान-जल।

गुण—मूत्रकृच्छ्र आदि मूत्र विकार, दुर्बलता, रक्तप्रेह, मधुमेह, मूत्रदाह, मलबद्धता, वीर्यदोष और धातुकी कमजोरी नाशक है।

---

१९८ गोक्षुरासव नं० २—मूत्रादिविकार नाशक।

विधि—गोखरू के १ भाग चूर्ण में ५ भाग मद्यसार (७० प्रतिशत वाला) मिला, १५ दिन तक बोतल में भर कर रक्खे। पश्चात् छानकर काम में लावे।

मात्रा—१० बूंद से ६० बून्द तक। अनुपान-जल।

गुण—मूत्राघात, सर्वाङ्गशोत (सूजन), और प्रमेह को शीघ्र नष्ट करता है।

(अ० योगमाळा)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१९९ गोक्षुरासव नं० ३—हृदय को बलदायक।

विधि—बड़े गोखरू का ताजा पंचाङ्ग १ सेर लेकर, छोटे २ टुकड़े बना, मिट्टी के पात्र में १६ सेर जल डालकर भिगो देवे, १२ घंटे के बाद मंदाग्नि पर औटावे। ४ सेर जल शेष रहने पर मोटे कपड़े में छान लेवे, और उसमें ८ सेर शहद मिला बोतलों में भर कर रख दे। १ मास के बाद फिलटर पेपर से छानकर काम में लावे।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक। अनुपान—जल।

गुण—दिल और दिमाग़ को पूरी ताकत देता है।

(अ० योगमाला)

---

२०० गौडोऽरिष्ट *—पाण्डुरोग नाशक।

विधि—मजीठ, हल्दी, मुनक्का, खिरैंटी की जड़, शुद्ध लोह चूर्ण, और लोध प्रत्येक का चूर्ण १६-१६ तोले लेकर, १६ सेर जल में पकावें। १३ सेर जल शेष रहजाने पर (पकाने की क्रिया शुद्ध मटके या मिट्टी के पात्र में, मन्दाग्नि से होनी चाहिये) उसी में गुड़ ५ सेर अच्छी तरह घोलकर, और सन्धान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। फिर छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक। अनुपान—समभाग जल।

---

* मंजिष्ठा रजनी द्राक्षा, वलामूलान्ययो रजः।
रौध्रं चैतेषु गौडः स्यादरिष्टः पाण्डुरोगिणाम्॥

—चरक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—यह गुड़ारिष्ट पांडुरोग, यकृत की निर्बलता और रक्ताल्पता को शीघ्र दूर करता है।

---

२०१ ग्रहणीहरासव—संग्रहणी, अतिसारादि नाशक।

(स्व० लाला नारायणदासजी वैद्यशिरोमणि)

विधि—पोदीना, सौंफ, और मकोय प्रत्येक एक-एक सेर, अजवायन ६० तोले, अमरबेल और गिलोय प्रत्येक ४० तोले, छोटी कटेरी के फल, बड़ी इलायची, और दाख प्रत्येक २०-२० तोले, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला, प्रत्येक १०-१० तोले, पोपलामूल ७॥ तोले तथा सफेद जीरा, कालाजीरा, चीते की छाल, वायविडंग, इन्द्रजौ, कुड़े की छाल, अतीस, बेलगिरी, दारचीनी, छोटी इलायची, लौंग, तालीसपत्र, जायफल, जावित्री, पाठा, मोथा, काकड़ासिंगी, भारंगी, धनिया, नेत्रबाला, नागकेशर, तज, तेजपात और कचलोना (कांचनमक) प्रत्येक ५-५ तोले, सब औषधियों को जवकुट कर अठगुने पानी में दो दिन भिगोकर भवके के द्वारा अर्क खींच कर अलग रख लेवे। पश्चात्—जौ ५ सेर, मूल की जड़ १ सेर, तथा राई कलौंजी, सेंधानमक, और चव्य ५-५ तोले, कालानमक ४ तोले जवकुट कर ३२ सेर पानी में मिला एक शुद्ध मटके में भर, उसमें पुराना गुड़ १ सेर, शहद आधा सेर और हींग १ तोला अच्छी तरह घोलकर, मुख मुद्रा कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर और साफ कर, ऊपर के भवके के द्वारा खींचे हुये अर्क में मिलाकर, बोतलों में भर कर रख दे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—१ तोला से ५ तोले तक। प्रातः सायं, थोड़ा २ जल मिला कर सेवन करावे।

गुण—पित्त तथा वात के ग्रहणी विकार में विशेष लाभ दायक है। इसके सेवन से अग्नि बढ़ती है, भोजन अच्छी तरह पाचन होता है, पतले दस्त बंद होजाते हैं, तथा दस्तों का दौरा रुक जाता है।

(धन्वन्तरि-प्रयोगाङ्क)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

च

२०२ चणकासव—(स्वकृत)–दाह, तृष्णादिनाशक।

विधि—उत्तम नवीन चने २ सेर और चने के पत्ते २॥ सेर लेकर, १३ सेर जल में, किसी मटके में भिगोकर जहाँ रात्रि में ओस गिरती हो, ऐसे खुले मैदान में रक्खे। सवेरे सब जल अच्छी तरह छान लेवे। फिर इस जल को उसी मटके में भर कर, उसमें शहद ५ सेर, धायके फूल १३ छटांक, जीरा सफेद ८ तोले और नागरमोथा ८ तोले चूर्ण कर मिला देवे। मुख सन्धान कर १५ दिन रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोले से ४ तोले तक।

गुण—दाह, प्यास, ग्रीष्म ऋतु का ताप, लू की बाधा, नाशक—है। प्रमेह और सुजाक पर भी लाभप्रद है। पेशाब खूब साफ़ लाता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२०३ चतुरबलारिष्ट—प्रदर हर।

विधि—बला, नागबला, अतिबला, महाबला (चारों प्रकार की खिरैंटी), इनका पंचाङ्ग और अशोक की छाल प्रत्येक एक-एक पाव लेकर जवकुट कर, २० सेर जल के साथ पकावे, जब क्वाथ जल ५ सेर शेष रहे तब एक शुद्ध चिकने घड़े में भर कर (छानकर भरे), ठंडा हो जाने पर उसमें मुलहठी, नागकेशर, नागरमोथा, सफेद जीरा, पठानीलोध तथा सफेद चन्दन प्रत्येक ४-४ तोले महीन चूर्ण कर मिलावे। और धायके फूल का चूर्ण १६ तोले, मुनक्का ३२ तोले एवं असली शहद २॥ सेर मिला कर, अच्छी तरह सन्धान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक। अनुपान—बुझुना जल।

गुण—सब प्रकार के प्रदर पर आश्चर्यजनक लाभ करता है, इसके अतिरिक्त प्रमेह पर भी लाभप्रद है।

(जीवनसुधा-महिलाङ्क)

---

२०४ चन्दनासव * नं० १—शुक्रमेह नाशक, पोषक।

---

* चन्दन बालकं मुस्तं गंभारीं नीलमुत्पलम्। प्रियङ्गुं पद्मकं लोध्रं मंजिष्ठां रक्तचन्दनम्॥ पाठां किराततिक्तञ्च न्यग्रोधं पिप्पलीं शटीम्। पर्पटं मधुकं रास्नां पटोलं कांचनारकम्॥ आम्रत्वचं मोचरसं प्रत्येकं पलमात्रकम्। धातकीं षोडशपलां द्राक्षायाः पलविंशतिम्॥ जलद्रोण द्वये क्षिप्त्वा शर्करायास्तुलां तथा। गुडस्यार्द्धतुलाञ्चापि मासं भाण्डे निधा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—चन्दन सफेद, सुगन्धवाला (नेत्रवाला), नागरमोथा, गंभारी (खम्भारी या कुम्हार) के फल, नीलकमल, फूलप्रियंगु, पद्माख, लोध, मजीठ, लालचन्दन, पाठा, चिरायता, बड़ की जटा (अथवा छाल), पीपल (अथवा पीपल वृक्ष की छाल), कचूर, पित्तपापड़ा (स्यातरा), मुलैठी, शरना, पटोलपत्र, कचनार की छाल, आम की छाल और मोचरस प्रत्येक ४-४ तोले लेकर महीन चूर्ण कर लेवे। तथा धाय के फूल १३ छटांक, मुनक्का १ सेर, खांड ५ सेर और गुड़ २॥ सेर लेकर, सब को कूट कर, २६ सेर जल में मिला, शुद्ध मिट्टी के पात्र में भरकर, उसके मुख को अच्छी तरह कपड़ मिट्टी से सन्धान कर, उष्ण स्थान में सुरक्षित रख देवे। १ मास पश्चात् निकाल कर छान लेवे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक। अनुपान—जल।

गुण—शुक्रमेह (पेशाब के साथ शुक्र जाना) शुक्रदोष, सोजाक आदि नाशक, बलकारक, पौष्टिक, हृदय को हितकारक तथा अत्यन्त अग्निवर्धक (मन्दाग्नि नाशक) है। सुजाक पर

पयेत् ॥ चन्दनासव इत्येष शुक्रमेह विनाशनः। बल पुष्टिकरो ह्यो वन्हिसन्दीपनः परः ॥ अभिष्यन्द्यतितीक्ष्णं च पानान्नं वन्हिसूर्ययोः। सन्तापं स्त्री प्रसक्तिञ्च वेगरोधं प्रजागरम् ॥ क्रोधं शोकं दिवा निद्रां लंघनं चाति चिन्तनम्। अत्यालस्यमसत्सङ्गं शुक्रमेहे विवर्जयेत् ॥ सुपाच्यं शुक्रकृच्चान्नं सत्संसक्तिञ्च सत्कथा। शान्ति ग्रन्थस्याध्ययनं हितान्वेश चिन्तनम् ॥

—भैषज्यरत्नावली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसे गोक्षुरादिगुग्गुल के साथ दिन में ३ बार देने से शीघ्र लाभ होता है। नोट—शुक्रमेह रोग या सुजाक आदि में अभिष्यंदि और तीक्ष्ण अन्नपान (दही, लालमिरच, सुरादि), धूप, अग्नि से तापना, स्त्री प्रसंग, मलमूत्रादि के वेगों का रोकना, जागरण, क्रोध, शोक, दिन को सोना, लंघन, अत्यन्त चिंता, अत्यालस्य और असत्सङ्ग का परित्याग करना चाहिये। इन रोगों में शीघ्र पचने वाला (लघु) और शुक्रवर्धक, अन्न पान, सत्संग, सत्कथा श्रवण, शांति एवं स्वाध्याय हितकारक है।

(सम्पादक)

नोट—रसवैद्य कविराज गौरीशंकर जी आनन्द ने चन्दनासव का एक प्रयोग भेजा है, उसमें उक्त सर्व द्रव्यों के साथ ही में, निम्नाङ्कित द्रव्य और मिलाये गये हैं—गोखरू, आमला, शीतलचीनी, बांसे की छाल, वरुण की छाल, कीकड़ की छाल, मेंहदी के पत्ते, कत्था, धनियाँ, सिरस की छाल और शुद्ध शिलाजीत प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले। शिलाजीत को प्रथम जल में अच्छी तरह घोल लेना चाहिये।

मात्रा—१ से २ तोले तक।

गुण—सुजाक, पित्त प्रमेह, मूत्र में जलन, मूत्र में रक्त का आना इत्यादि में लाभप्रद बतलाया गया है।

---

२०५ चन्दनासव * नं० २—प्रमेह नाशक।

---

* चन्दने सरलं देवदारु दारुनिशा निशा। त्रिवृत् चित्रकमूलं चागुरु धात्री सुरप्रियम्॥ शतमूल्यश्मभिद् वासात्वचश्च सारिवा द्वयम्।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—सफेदचन्दन, लालचन्दन, चीड़ वृक्ष का बुरादा, देवदारु का बुरादा, दारुहल्दी, हल्दी, निसोथ, चीते की जड़, अगर, आमला, अगस्ति के पुष्प (पाठ के अनुसार हथिया के फूल लेते हैं, किंतु इसके स्थान में यहाँ शीतलचीनी लेना और भी उत्तम है), शतावर, पखानभेद, बांसे की जड़ की छाल, दोनों प्रकार की सारिवा (अनन्तमूल), लदमणा की जड़, कीकड़ (बबूल) तथा बरने की छाल ४-४ तोले, प्रत्येक का चूर्ण कर लेवे, तथा मुनक्का १ सेर, धाय के फूल १३ छटांक, मिश्री ५ सेर और शहद २॥ सेर (यहां शहद के स्थान में कोई २ सोनामाखी की भस्म दो तोले डालते हैं, हमारी राय में दोनों डालना और भी उत्तम है), सब को एकत्र कर, २६ सेर शुद्ध जल में मिला, मिट्टी के पात्र में भर कर अच्छी तरह मुख सन्धान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

लक्ष्मणाद्यास्तथा मूळं बादरी वरुणत्वचौ ॥ प्रत्येकं पलिकं ज्ञेयं द्राक्षायाः पल विंशतिम् । धातकीं शोडषपलां तुलामानां सितां तथा ॥ माक्षिकार्धं तुलां सर्वं जळद्रोण द्वये क्षिपेत् । मासमेकं भाण्डमध्ये सपिधाने निधापयेत् । चन्दनासव इत्येष रोगान्सीक निहन्तनः । शुक्रदोषं रजोदोषं मूत्रदोषं सुदारुणम् ॥ निहन्ति विविधान् मेहान् कृच्छ्रमष्टविधं तथा ॥ चतस्राश्मरीस्तद्वन्मूत्राघाताँस्त्रयोदश ॥ अंत्रवृद्धिं पांडुरोगं कामळां च हळीमकम् । कासं श्वासं तथा कुष्टनाशिमांद्यमरोचकम् ॥ औपसर्गिक मेहाँश्च नाशयेदविकल्पतः । भाषितः श्री महेशेन लोकानां हितकारिणा ॥

—आयुर्वेद-विज्ञान ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक। अनुपान—जल।

गुण—वीर्य के, रज के तथा मूत्र के भयंकर विकारों को, अनेक प्रकार के प्रमेहों को, आठ प्रकार के मूत्रकृच्छ्र को, चार प्रकार की पथरी को १३ प्रकार के मूत्राघात को यह आसव नष्ट कर देता है। तथा अन्नवृद्धि, पाण्डुरोग, कामला, हलीमक, खाँसी, श्वास (दमा), कुष्ठ, अग्निमांद्य, अरुचि और सोजाक का यह नाशक है।

सुजाक पर निम्नलिखित चन्दनासव का मिश्रण उत्तम लाभदायक है—

उक्त चन्दनासव ४० तोले में, शीतलचीनी का तेल, बहरोजे का तेल और चन्दन का तेल प्रत्येक ४-४ माशे तथा शुद्ध फटकरी ६ माशे मिला कर, शीशी में भर कर रख दे। मात्रा-१ तोला, थोड़ा जल मिलाकर पिलावे, प्रातःसायं। सब प्रकार का सुजाक ७ दिन में दूर होता है। पथ्य में केवल दूध भात देवे।

---

२०६ चन्दनासव नं० ३—हिस्टीरिया नाशक।

विधि—मलयागिरी श्वेतचन्दन का बुरादा, मुनक्का बीज रहित, गाजर सुर्ख, कमल सुर्ख, लाख (पलास की या नीम की) ब्राह्मी (नई सूखी), शंखाहुली (नई), ब्रह्मदण्डी, जटामांसी, और जवाखार प्रत्येक २०-२० तोले, चूर्ण कर ३० सेर जल में, शुद्ध मटके में भर देवे (गाजर की अन्दर की लकड़ी निकाल देना चाहिये) २४ घंटे के बाद भवके से अर्क खींच लेवे। अर्क खींचते समय, कस्तूरी १॥ माशे और केशर ३ माशे, इन दोनों को नल के मुंह में बांध देना चाहिये। ताकि बाष्प जल टपकते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समय दोनों द्रव्यों से युक्त हो पात्र में टपके । फिर शीशी में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तो० से ५ तोले तक । दोनों समय । पथ्य में दूध भात देवे । स्नान जल में बैठकर करे ।

गुण—योषापस्मार रोग (हिस्टीरिया) अवश्य दूर होजाता है ।

(धन्वन्तरि-प्रयोगांक)

---

२०७ चन्द्रहासासव-नं० १—वाजीकरण, नपुंसकता नाशक ।

विधि—जायफल, लौंग, बड़ी इलायची, जावित्री, गजपीपल, दारचीनी, शीतलचीनी, कबाबचीनी, कालीमिरच, छोटी पीपल, उटंगन के बीज, अकरकरा, धनिया, हाऊबेर, लिसोड़े, अजमोद, चव्य, सोंठ, कचूर, दोनों चन्दन, पोस्त की जड़ और कौंचके बीज प्रत्येक ३॥-३॥ तोले । त्रिफला, देवदारू, जामुन की गुठली, कीकड़ (बबूल) की छाल, कसेरू, (कसेरू दोनों छोटे और बड़े), मोचरस, कालाजीरा, सफेदजीरा, भारंगी, गिलोय, कालीमुसलीस, फेदमुसली, कंकोल मिरच, वंसलोचन, रुमामस्तगी, कुलीजन, संभालु के पत्ते, बायविडंग, शंखाहुली, कपूरकचरी, सौंफ, नागकेशर, पोहकरमूल, तगर, पद्माख, त्रायमाण, जवासा, धमासा, दोनों कटेरी, मूर्वा, भौंफली (बहुफली), माजूफल, समुद्रसोख, कायफल, सिंघाड़े, गोखरू, धायके फूल, माई के फूल, पाषाणभेद, निसोथ, अंडी की गिरी, विजयसार की, जड़, भांग, असगंध, फूलप्रियंगु, नागरमोथा, बांसा, गंगेरन की छाल और लोध इन ५६ द्रव्यों को एक-एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तोला लेकर, बारीक कूट लेवे (इस योग में कुल ८६ द्रव्य हैं, सब को महीन कर लेवे) पश्चात् एक शुद्ध मजबूत मटके में डालकर उसमें जल २॥ मन, बादाम की गिरी १ सेर, मुनक्का १ सेर, किशमिश २ सेर, छुहारे (बीज निकाले हुये) १ सेर, चीनी २५ सेर, मिश्री ७ सेर, बेर की जड़ की छाल ५ सेर, आम की छाल १ सेर, गुड़ ३० सेर, मिला देवे। (मुनक्का के बीज निकाल डाले, और छालों को जवकुट करके मिलावे) तथा अभ्रकभस्म ५ तोले, वंगभस्म, ५ तोले, करतूरी ६ माशे, भीमसेनी कपूर ६ माशे उसी में डालकर, अच्छी तरह सन्धान कर रक्खे। एक मास बाद निकाल कर, भवके से अर्क खींच लेवे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—जठराग्नि को बढ़ाता, रुचिवर्धक, वाजीकरण, नपुंसकतानाशक, स्तंभक, बादी और खूनी बवासीर, कुष्ठ, रक्तपित्त, प्रमेह, गलरोग, जलोदर, तिल्ली, पथरी, वायगोला, गठिया, सब प्रकार के दर्द, सम्पूर्ण वायु सम्बन्धी रोग, उदररोग पांडुरोग और सन्निपात नाशक है।

(रामविनोद)

---

२०८ चन्द्रहासासव न० २—वाजीकरण, उत्तेजक।

विधि—जायफल, लौंग, बड़ी इलायची, छोवचीनी, जावित्री, पीपल, बाकुची, कालीमिरच, उटंगनके बीज, अकरकरा, धनिया; हाऊबेर; पित्तपापड़ा, अजवायन, अजमोद, सोंठ, कचूर, पोस्त की जड़, कौंच की गिरी, त्रिफला; देवदारु; मोचरस, दोनों जीरे;

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

भारंगी, सफेदमुसली, कालीमुसली, कंकोल, मस्तगी, चीड़का-बुरादा, वंसलोचन, कुलीजन, कपूरकचरी, नागकेशर, सोंफ, पोहकरमूल, तगर, पद्माख, अतीस, कालीअगर, दारुहल्दी, मजीठ, बालछड़, चीता, कुड़े की छाल, इन्द्रजौ, महुआ, कटेरी, मुरडी, सफेद दूब, मरोड़फली, दोनों सुपारी; माजूफल, समुद्र-शोष, कायफल, असगन्ध, नागरमोथा, फूलप्रियंगु, सुगन्धवाला, गंगेरन की छाल प्रत्येक ३—३ तोले लेकर चूर्ण कर लेवे, और वेलगिरी, कत्था, विधारा, पाषाणभेद, विदारीकंद, निसोथ, दोनों चन्दन, भांग की जड़, बच, लोध, सम्भालू, धायके फूल, अरलू की जड़, सेंभल के बीज, समुद्रझाग, कपूर ये प्रत्येक ४-४ तोले, चूर्ण करे, तथा छुहारे, मिश्री और खस १-१ सेर, मुनक्का २ सेर, किशमिश २ सेर, केशर ३ तोले, गुड़ ६ सेर और पानी ४० सेर, शुद्ध मटकी में भर कर, १ मास तक सान्धन कर रक्खे। बाद में अर्क खींच लेवे, अर्क खींचते समय भवके के नल में केशर की पोटली लगा देवे।

मात्रा—१ तोला से ३ तोले तक।

गुण—महापौष्टिक, उत्तेजक है।

(राकेश)

---

२०९ चन्द्रहासासव नं० ३—पौष्टिक, कामोत्तेजक।

(भिषग्वर मुन्नालाल जी गुप्त, कानपुर)

विधि—जायफल, दारचीनी, छोटीपीपल, अजवायन, पोस्त की जड़, मोचरस, कालीमिरच, अकरकरा, हाऊबेर, छोटी इलायची, जावित्री, बावची, उटंगन के बीज, धनिया, पित्त-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पापड़ा, सोंठ, कौंच के बीज, देवदारु, कालाजीरा, सफेदजीरा, सफेदमुसली, बिदारीकन्द, निसोथ, कालीमुसली, सफेदचन्दन, लालचन्दन, कंकोलमिरच, रूमीमस्तगी, कुलीजन, चीड़ का बुरादा, कपूरकचरी, नागकेशर, पोहकरमूल, सौंफ, तगर, पद्माख, अतीस, बालछड़, इन्द्रजौ, महुये के फूल, सुरंडी, सुपारी, माजूफल, समुद्रशोष, असगन्ध, नागरमोथा, बेलगिरी, बिधारा, हरड़, बहेड़ा, आमला और पाषाणभेद ये ५२ द्रव्य प्रत्येक ३-३ तोले, तथा छुआरे १० तोले, किशमिश २० तोले, मुनक्का १ सेर, खिरैंटी १ सेर, देशी शक्कर १० सेर, शहद १। सेर, और जल ३२ सेर लेकर, कूटने योग्य वस्तुओं को कूट ले, फिर अन्य सब द्रव्यों को भी मिश्रित कर, एक अमृतवान (चीनी के भाण्ड) में भर देवे और मुँह बन्द कर, १५ दिन पर्यंत धूप में रखा रहने देवे। पश्चात् अर्क—यन्त्र से अर्क निकाल लेवे। इस अर्क में केशर ६ माशे तथा कस्तूरी और अम्बर यथाशक्ति मिला कर रख दे।

मात्रा—आधा तोला से १ तोला तक। समभाग जल मिला, भोजनोपरान्त प्रातःसायं तथा सम्भोग से पहिले सेवन करे।

गुण—क्षीणवीर्य तथा निर्बल व्यक्तियों के लिये अद्भुत लाभकारी, पौष्टिक, एवं कामोत्तेजक है। तपेदिक, निर्बलता, नपुंसकता और अन्य कई रोगों में उपकारी तथा वाजीकर है।

(धन्वन्तरि)

---

२१० चन्द्रहासासव नं० ४—उत्तेजक, पाचक।

(पं० बालकृष्ण जी शर्म्मा वैद्यराज, भूपाल द्वारा प्रेषित)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—अजमोद, खुरासानी, भांग, धतूरे के बीज, कपूर, खखसस के डोडे, जायफल, प्रत्येक ४-४तोले लेकर मोटा चूर्ण करके एक शुद्ध मटके में भर, गाय के ५ सेर दूध में रात भर भिगोकर, नलिका यन्त्र द्वारा अर्क खींच लेवे।

मात्रा—१ से २ तोले तक। अनुपान—इसे पीकर ऊपर से पान खावे। समय—रात्रि को या जरूरत के समय।

गुण—उत्तेजक, पाचक, नींद लाने वाला और पीड़ा शामक है। यह श्वास, खांसी, मंदाग्नि, संग्रहणी, मधुमेह और हैजा विनाशक है।

(वैद्यक चिकित्सासार)

---

२११ चन्द्रासव—क्षय नाशक—अपूर्व।

(रसायनाचार्य श्री० आर० के शर्म्मा, जगराओं)

विधि—सोंठ, कायफल, पीपलामूल, इन्द्रजौ, चिरायता, भारंगी, कालीमिरच, पीपल, काकड़ासिंगी, पोहकरमूल, कटेरी की जड़, बालछड़, अजवायन, अजमोद, खुरासानी अजवायन, बच, आक की जड़ की छाल, जवासा, देवदारु, रास्ना; सम्भालू, सेंहजने की छाल, चित्रक; अतीस; भृंगराज; नारंगी के फल; सिरस; गावजवाँ; उन्नाव; मुलेठी; नागकेशर; कुलीजन; कुठ; अगर; तज; तमालपत्र; छरीला; दोनों चन्दन; दोनों इलायची; सालब; तोदरी, जराविन्द, ख़तमी, ख़वाजी; ऊद; सुपारी; गाजर; गंधेरन (नागबला); गोखरू; शतावर; गेंदे के फूल; हटसिट; लौंग; दारचीनी, जायफल; दोनों बहमन, गुल-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुर्ख; गुल गावजबाँ; धनिया, कासनी; (कासनी की जड़), सौंफ की जड़; हंसराज, उसीर; कद्दू; खीरा; खरबूजे और सरवूज इन चारों के बीजों की गिरी; पालक (शाक विशेष); कचूर; पोदीना, पद्माख; तगर; ये प्रत्येक ४-४ तोले लेवे तथा द्राक्षा ८ सेर; अंजीर दो सेर; इरिमेद के पुष्प दो सेर; खांड दो सेर और जल ३२ सेर लेवे। तथा अर्क केवड़ा २ सेर; अर्क गुलाब २ सेर, केशर असली २ तोले; मूँगाभस्म १ तोला; अम्बर ३ माशे और कस्तूरी ३ माशे लेवे।

प्रथम उक्त काष्ठौषधियों का चूर्ण कर ले और मुनक्का आदि मृदु द्रव्यों को वैसे ही ३२ सेर जल में उबाल देकर; उसमें काष्ठौषधियों के चूर्ण को मिला; पात्र का मुख बन्द कर नीद में एक सप्ताह दबाकर रक्खे। फिर निकाल और छानकर; उसमें उक्त अर्क केवड़ा और अर्क गुलाब और मूँगाभस्म मिला दे तथा केसर; अम्बर और कस्तूरी की पोटली बना अन्दर डालकर; वारुणीयंत्र द्वारा इसका आसवार्क खींचकर; बोतलों में भरकर रख ले।

मात्रा—यथोचित रोग-बलानुसार।

गुण—बहुरूप यक्ष्मा, अग्निमांद्य, अरुचि; श्वास को नष्ट करता है। अत्यन्त कामोत्तेजक; वीर्यवर्धक; रसायन; पौष्टिक; वलीपलितनाशक और उत्साहवर्धक है।

---

२१२ चम्पकासव—(स्वकृत)—प्रतिश्याय नाशक।

विधि—चम्पा के फूल छाया में सुखाये हुये २॥ सेर लेकर;

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१३ सेर जल में क्वाथ पकावे। ७ सेर क्वाथ शेष रहने पर; छानकर शुद्ध चिकने घड़े में भरे । ठंडा होजाने पर उसमें शहद ४ सेर, धाय के फूल २० तोला; अतीस, काकड़ासिंगी और पीपल प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिला अच्छी तरह सन्धान कर १५ या २० दिन सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—जुखाम; सर्दी; कोष्ठबद्धता नाशक है। दस्त साफ़ लाता है; और क्षुधावर्धक है।

---

२१३ चविकासव *—गुल्मादि नाशक।

विधि—चव्य २॥ सेर; चित्रकमूल १। सेर; कालाजीरा; पोहकरमूल, वच; हाऊबेर; कचूर; पटलकी जड़; हरड़; बहेड़ा;

---

* चविकायास्तुलार्द्धन्तु तदर्धं चित्रकस्य च। वाप्पिका पुष्करं मूलं षड्ग्रन्था हपुषा शठी ॥ पटोलमूल त्रिफला यवानीकुटजत्वचः। विशाला धान्यकं रास्ना दन्ती दशपलोन्मिता ॥ कृमिघ्नमुस्तमंजिष्ठा देवदारु कटुत्रिकम्। भागान्यंचपलानेतानष्टद्रोणेऽम्भसः पचेत् ॥ द्रोणशेषे रसे पूते देयं गुडशतत्रयम्। धातक्या विंशतिपलं चातुर्जातं पलाष्टकम् ॥ लवङ्गव्योष कङ्कोलं पळिकानि प्रकल्पयेत्। निदध्यान्मासमेकं तु घृतभाण्डे सुसंस्कृते ॥ चतुष्पलां पिबेन्मात्रां प्रातः पीतं नियच्छति। सर्वगुल्मविकारांश्च प्रमेहांश्चैव विंशतिम् ॥ प्रतिश्यायं क्षयं कासमष्ठीलां वातशोणितम्। उदराण्यन्त्रवृद्धिं च चविकाख्यो महासवः ॥

—गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आमला, अजवायन, कुड़ेकी छाल, इन्द्रायन, धनिया, रास्ना, और दन्तीमूल प्रत्येक आध २ सेर, तथा वायविडंग, नागरमोथा, मजीठ, देवदारु, सोंठ, मिरच और पीपल प्रत्येक २०-२० तोले, लेकर कूटकर, २ मन २४ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, घृत से चिकने किये हुये स्वच्छ मिट्टी के पात्र में भर कर, उसमें गुड़ १५ सेर, धायके फूल १ सेर, तेजपात, इलायची, दारचीनी और नागकेशर प्रत्येक ८-८ तोले तथा, लौंग, सोंठ, मिरच, पीपल और कंकोल प्रत्येक ४-४ तोले चूर्ण कर मिला देवे। पात्र के मुख को अच्छी तरह कपड़ मिट्टी से बन्द करके, धान्य राशि में या किसी उष्ण स्थान में सुरक्षित रक्खे। एक मास बाद निकाल कर, छान लेवे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—समस्त प्रकार के गुल्म २० प्रकार के प्रमेह, जुकाम, क्षय, खाँसी, अष्ठीला, वातरक्त, उदरविकार तथा अंत्रवृद्धि नाशक है। यह कामला, यकृतविकार, आध्मान (अफारा) अण्डवृद्धि और अग्निमांद्य को भी नष्ट करता है।

---

२१४ चित्तचन्दिरासव *—कास, श्वास नाशक।

---

* मुस्ता मरिच चव्याग्नि निशाकृष्णा विडङ्गकम्। आमलोद्गीर शैलेय पूगलोध्रं द्विपत्रकम्॥ कट्वी श्रीखण्डतगर मांसी दारु सिता-समम्। गुन्दणी नागपुष्पाणि त्रिपिचूनि पृथक् पृथक्॥ प्रस्थार्धं धातकी पुष्पं द्राक्षा प्रस्थैस्त्रिभिर्मिता। पुराणः पंचदशभिः प्रस्थैः संकलितो गुडः॥ भाण्डे षड्विंशति प्रस्थ शम्बरे घृतचिक्कणे। क्षिप्त्वा सर्वं पिधायाथ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—नागरमोथा, कालीमिरच, चव्य, चीता, हल्दी, पीपल, वायविडंग, आमला, खस, छारछबीला, सुपारी, लोध, चणडालकंद (दो पत्र वाला), कुटकी, सफेद चन्दन, तगर, बालछड़, दारचीनी, गोदन्ती और नागकेशर ये प्रत्येक ३-३ तोले कूटकर; तथा धायके फूल ६॥ छटाँक मुनक्का २ सेर ३२ तोले और गुड़ १२ सेर (गुड़ पुराना होना चाहिये) सब को एक शुद्ध घृत से चिकने लिये हुये घड़े में भर कर उसमें जल २० सेर ६४ तोले मिला अच्छी तरह घोल देवे । फिर यथा-विधि पात्र का मुख सन्धान कर १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक ।

गुण— खाँसी; दमा; क्षय, मन्दाग्नि तथा कोष्ठबद्धता (कब्जी) नाशक है ।

---

२१२ चित्रकासव नं० १—ज्वरनाशक ।

(श्री भागीरथजी स्वामी रसायन शास्त्री)

विधि—चीते की जड़ की छाल का चूर्ण १ भाग और अत्युच्च नम्बर का मद्य १२ भाग एकत्र मिला एक बोतल में भर, मुख अच्छी तरह बंद कर ७ दिन तक सुरक्षित रक्खे। फिर छानकर शीशियों में भर कर रख दे ।

पक्षमात्रं निधापयेत् ॥ प्रमृद्य गलितोऽत्यर्थं फाण्टः स्याच्चित्रचन्दिरः ॥
कासं श्वासं क्षयं मान्द्यं बन्धं हन्ति प्रकाशते ॥

(सिद्धभैषज्यमणिमाला)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—१५ बून्द से ४० बून्द तक। अनुपान १ तोला जल अथवा मधु में मिला कर देवे।

गुण—यह अद्भुत स्वेदजनक है। विषमज्वर में देने से थोड़ी देर में पसीना लाकर ज्वर उतार देता है। यह फिनासेटीन आदि डाक्टरी दवाओं की तरह कोई दुर्गुण नहीं करता। ज्वर उतारने तथा नष्ट करने और क्षुधा बढ़ाने में अद्भुत गुण रखता है।

(धन्वन्तरि—बूटीचित्राङ्क)

---

२१६ चित्रकासव नं० २—अजीर्णादि नाशक।

(श्री कविराज पं० शशिकांतजी मिश्र, भिषगाचार्य)

विधि—चीते के हरे पत्ते ३ भाग कूटकर मद्य या रेक्टिफाइडस्प्रिट ५ भाग में मिलाकर चीनी मिट्टीके पात्र में या मजबूत कांच की शीशी में भर कर रख देवे। ७ दिन बाद छानकर काम में लावे।

मात्रा—१५ या २० बून्द तक।

गुण—अजीर्ण, यकृत विकार, संग्रहणी, शोथ नाशक है। जिस बच्चे को अन्न न पचता हो उसे इस आसव की २ से ५ बून्दें जल मिला कर पिलावे, या माता के दूध में मिला कर पिलावे। भोजन अच्छी तरह पचता है, दस्त साफ़ होजाता है।

नोट—उक्त आसव इसप्रकार भी तैयार किया जाता है। चीते के हरे ताजे पत्तों को कूटकर स्वरस निकाल ले और फिल्टर पेपर में छानकर मृतसंजीवनी सुरा या रेक्टिफाइडस्प्रिट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में डालकर रख देवे । ७ दिन बाद व्यवहार में लावे । मात्रा आधा ड्राम तक ।

(जीवनसुधा)

---

* २१७ चित्रकाद्यासव—अग्निमांद्यादिनाशक ।

विधि—लाल चीते की जड़ ४ तोले, कैलम्बा (?) की जड़ ४ तोले, सन्तरे के छिलके दो तोले और मद्य (४० से ६० प्रतिशत वाली) १०० तोले लेकर, चीनी मिट्टी के पात्र में भर कर कर रख दे । अच्छी तरह सन्धान कर ७ से १५ दिन तक रक्खे । पश्चात् छानकर (अच्छी तरह दबाते हुये छानना चाहिये और खूब निचोड़ना चाहिये) शीशी में भर कर रख दे ।

मात्रा—आधे माशे से ६ माशे तक ।

गुण—अग्निमांद्य, अजीर्ण, अरुचि, अम्लपित्तादि रोगों में बड़ा लाभदायक है । इन रोगों में लाभ करने वाली कटुकासव तथा विषतिन्दुकासवादि अन्य औषधियों के साथ मिलाकर भी इसका प्रयोग किया जाता है ।

(मद्यासव)

---

२१८ चित्रकाद्यारिष्ट—प्लीहा, ग्रहणी आदि नाशक ।

---

* चित्रक त्रिफला पाठा चव्यानां ग्रन्थिकस्य च । विडङ्गदेव काष्ठस्य भागान्कुर्याच्चतुष्पलान् ॥ कुष्ठभल्लातकेल्वालु वचानां मरिचस्य च । पिप्पली कटुकेन्द्राह्वा मुस्तानां स्युस्त्रयस्त्रयः ॥ पक्त्वाऽवशेशिताष्टांशे रसे तस्मिन्हृते पुनः । पूतं दद्यान्मधुप्रस्थं गुडस्यार्धतुलामपि ॥ पंचकोलं सम-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—चीता, हरड़, बहेड़ा, आमला, पाठा (जलजमनी), चव्य, पीपलामूल, वायविडंग और देवदारु १६—१६ तोले, कूठ, भिलावा, एलुवा, वच, कालीमिरच, पीपल, कुटकी, इन्द्रायन और नागरमोथा प्रत्येक १२-१२ तोले, लेकर कूट कर ८ गुने पानी में पकाकर, आठवाँ भाग शेष रहने पर छान लेना चाहिए। तत्पश्चात् उसमें—शहद ६४ तोले, गुड़ २॥ सेर और पीपल, पीपलामूल; चव्य; चीता; सोंठ; मिरच; हरड़; बहेड़ा और आमले का चूर्ण प्रत्येक दो-दो तोले तथा दारचीनी, तेजपात, इलायची और नागकेशर का चूर्ण मिलाकर, घृत से चिकने मटके में भरकर, अच्छी तरह सन्धान कर १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् निकाल कर छान लेवे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—ग्रहणी; पाण्डु, उदररोग, तिल्ली, गुल्म, सूजन और बवासीर नाशक तथा रोचक, अग्निदीपक और स्रोत शोधक है। पुरानी संग्रहणी, आमातिसार और गुल्म पर यह अपना दिव्य प्रभाव करता है।

रिष्टं त्रिफलां च पलाधकम्। संचूर्ण्य दद्यात्पत्रैला त्वङ्नागानां तथा पलम्॥ मासार्धं घृतकुम्भेऽयं जातोऽरिष्टः प्रयोजितः। चित्रकाद्य इति ख्यातो ग्रहणी दोषहा परम्॥ पाण्डुरोगोदर प्लीह गुल्म शोफार्शसां मतः। रोचनो दीपनश्चाग्नेः स्रोतसां च विशोधनः॥

—गदनिग्रह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२१९. चिरतिक्तासव—(स्वकृत)—ज्वरादि नाशक ।

विधि—चिरायते का चूर्ण (मोटा) ७ तोले और रेक्टिफाइड स्प्रिट ५० तोले एकत्र मिला, बोतल में भर, दृढ़ काग लगा, ३ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् मोटे वस्त्र से खूब मसलते हुए छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—३० बून्द से १२० तक।

गुण—ज्वर, मंदाग्नि, अशक्ति, अजीर्ण तथा त्वचा के रोगों को दूर करता है।

---

२२० चिरतिक्तारिष्ट—ज्वर नाशक।

विधि—२० तोले चिरायता लेकर, जवकुट कर, २५ सेर जल में पकावे, ८ सेर शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें—५ सेर गुड़, १॥ सेर शहद, ५० तोले धाय के फूल, १। सेर मुनक्का तथा असली पीले फूल की सहदेई, गिलोय, नीम की छाल, परवल के पत्ते, कटेरी की जड़, प्रत्येक का चूर्ण १०-१० तोले, बासे की जड़ की बकली ६ तोले और मीठा कूठ ५ तोले मिला, पात्र का मुख संधान कर १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—६ माशे से २ तो० तक।

गुण—सर्व ज्वर नाशक है।

(प्राचीन पुस्तक से)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चिरायतासव—देखिये, चिरतिक्तासव।

२२१ चोपचिन्यासव नं० १—रक्तविकारे।

(श्री वैद्यराज पं० टीकादत्तजी त्रिवेदी, मुरादाबाद कृत)

विधि—चोपनीनी २॥ सेर चूर्ण कर, १५ सेर जल में मिला, एक शुद्ध चिकनी मटकी में भर, उसमें गुड़ ७ सेर, द्राक्षा (मुनक्का) १ सेर, तथा उसवा, स्यातरा, मुण्डी, ब्राह्मी, हरड़, बहेड़ा, आमला, जवासा, सरफोंका, धनिया, सौंफ मजीठ, लालचन्दन, पतंग, उन्नाव, दारुहल्दी, नीम के फूल, आबनूस का बुरादा, सीसम का बुरादा, गुलाब के फूल, गुल-बनपसा, गावजबाँ के फूल, ब्रह्मदण्डी प्रत्येक ५—५ तोले चूर्ण कर मिला देवे। और अच्छी तरह सन्धान कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—२ तोले से ४ तोले तक।

गुण—रुधिर को शुद्ध करता है, और सम्पूर्ण रक्त विकारों का नाशक है।

---

२२२ चोपचिन्यासव नं० २—वाजीकरण।

(श्री० पं० महावीरप्रसाद जी माळवीय वैद्य "वीर")

विधि—चोबचीनी आध सेर कूटकर, २४ सेर पानी में पकावे, १४ सेर जल रह जाय तब नीचे उतार, एक शुद्ध मजबूत चिकने घड़े में भर कर उसमें-मुनक्का आध सेर, मिश्री आध सेर, तथा केशर और रूमीमस्तगी ६-६ माशे,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अगर, अजमोद, इन्द्रयव, कचूर, गावजवाँ, गुलाब के फूल, छरीला, जटामांसी, तेजपात, पीपल, बड़े गोखरू, बड़ी इलायची, लताकस्तूरी और श्वेतचन्दन दो-दो तोले। अकरकरा, कुलीजन, नागरमोथा २॥-२॥ तोले, अजवायन, असगन्ध गाजर के बीज, जायफल, जावित्री, तज, लवंग और सौंफ प्रत्येक ४-४ तोले, समस्त औषधियों का अधकुट चूर्ण मिला पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर रक्खे। ७ दिन के बाद भबके के द्वारा आसवार्क खींच लेवे। पश्चात् बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ५ तोले तक। बलाबल के अनुसार दोनों समय सेवन कर, थोड़ी दूर टहल लिया करे।

गुण—इसके ३ मास तक सेवन करने से वाजीकरण होता है, शरीर में बल वीर्य की वृद्धि होती है। मन प्रसन्न रहता है तथा अंतड़ियों में बल बढ़ता है। गठिया, पथरी, मूत्रावरोध, प्रमेह, वातव्याधि, रक्तविकार, सन्धिपीड़ा एवं सुजाक आदि रोग दूर होते हैं।

(धन्वन्तरि)

---

२२३ चोपचिन्यासव नं० ३—उपदंशादि नाशक।

विधि—चोपचीनी आध सेर को कूटकर २० सेर जल में मिलाकर पकावे जब १० सेर जल शेष रहे, तब नीचे उतारकर (यह पकाने की क्रिया उत्तम शुद्ध मटके में करनी चाहिये) उसमें मुंडी आध सेर, आमला, उन्नाव, उसवा, कचनार की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छाल, चिरायता, झाऊकी पत्ती, पित्तपापड़ा, बड़े गोखरू, बनपसे के फूल, बकायन के फल, बहेड़ा, मजीठ, मेंहदी के फल, मेंहदी के फूल, सफेद चन्दन, सरफोंका, सिरस की छाल और पकी हुई हरड़ प्रत्येक ३-३ तोले, अगर, नीम के फूल और बबूल की ताजी छाल प्रत्येक ५-५ तोले तथा गुलाब के फूल १ पाव, उक्त सब औषधियों का अधकुट चूर्ण मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह संधान कर ७ दिन रक्खे। पश्चात् भवके से आसवार्क खींच कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—२ तोले से ८ तोले तक। अनुपान-मधु या मिश्री तोला, डेढ़ तोला मिला कर सेवन करे।

गुण-उपदंश का प्राचीन विकार, प्रमेह, व्रण, मन्दाग्नि, और रक्तदोष दूर होकर शरीर में कान्ति और बल बढ़ता है।

नोट—पथ्य सेवन आवश्यक है। क्रोध, शोक, अचार, खटाई, मादक पदार्थ और सिरके का खाना त्याग दे। आग के सामने वा धूप में रहना, कांजी, कड़वा तेल, शाकभाजी, शीतल जलपान, परिश्रम, दिनका सोना, रात्रि जागरण, लाल मिरच, अधिक स्नान, और स्त्री प्रसंग से बचना चाहिये। लवण और क्षार पदार्थों को सर्वथा त्याग दे। शरीर खुला न रहे और विशेष शीतल वायु न लगने पावे, इत्यादि कुपथ्यों से बचने में सदा सावधान रहना चाहिये। (धन्वन्तरि)

चोपचिन्याद्यासव नं० ४—देखिये, शीतपित्तार्यरिष्ट।

चौलाई आसव—देखिये, तण्डुलियासव।

छ

छोहारासव—देखिये, खर्जूरासव।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ज

जङ्गली प्याज आसव—देखिये, कोलकन्दासव ।

२२४ जटामांस्यासव नं० १—(स्वकृत)–हिस्टीरिया नाशक ।

विधि—जटामांसी (बालछड़) २॥ सेर लेकर, जवकुट कर, ४० सेर जल में पकावे । २० सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकनी मटकी में भरे, ठंडा होजाने पर उसमें ७ सेर शहद, ४ सेर मिश्री, तथा बच और तज का चूर्ण १६-१६ तोले मिलावे । और अच्छी तरह सन्धान कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे । पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तोले से ४ तोले तक ।

गुण—योषापस्मार (हिस्टीरिया) को शीघ्र ही नष्ट करता है । प्रतिश्याय (जुखाम) को भी दूर कर देता है ।

---

* २२५ जटामांस्यासव नं० २—उन्माद, अपस्मार हर ।

विधि—जटामांसी के १ भाग चूर्ण को मद्य (४० से ६० प्रतिशत वाला) ५ भाग में मिला, चीनी मिट्टी के पात्र में, या कांच के पात्र में भर; अच्छी तरह सन्धान कर रक्खे । ७ दिन के बाद खूब निचोड़ते हुये छानकर शीशियों में भर कर रख दे ।

मात्रा—आधा माशे से ६ माशे तक ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—उन्माद; अपस्मार, अपतन्त्रक, क्षीणस्मृति आदि मस्तिष्क रोगों में लाभप्रद है। उक्त रोगों में लाभ करने वाली ब्राह्मी आदि औषधियों के मद्यासवों में मिला कर सेवन करने से इसकी और भी गुण वृद्धि होजाती है।

(मद्यासव)

---

२२६ जपाकुसुमासव नं० १-(स्वकृत)रज, वीर्य दोष नाशक।

विधि—गुड़हल (जासवंद) के ताजे फूल १०० और उसी की जड़ आध सेर, कूटकर १० सेर जल में मिला, शुद्ध मटकी में डाल, उसका मुख बन्द कर आग पर चढ़ावे; लगभग ७ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, दूसरी चिकनी मटकी में भर देवे, और उसमें शहद ४ सेर, धायके फूल आध सेर, नागरमोथा, लौंग, दारुहल्दी, सफेदजीरा और पोस्त के फल प्रत्येक ४-४ तोले कूटकर मिला देवे। तथा पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ३ तोले तक।

गुण—स्त्रियों का बाधक रोग दूर होकर, मासिक धर्म खुल कर नियमित रूप से होने लगता है। पुरुषों का वीर्य दोष दूर होकर, नामर्दी, नपुंसकता नहीं रहने पाती। उन्माद में भी यह लाभदायक है।

---

२२७ जपाकुसुमासव नं०२-(प्रातिकाकुसुद)-रक्तशोधक, पुष्टिकर।

(वैद्यराज उमादत्तजी मिश्र, मिर्जापुर)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

विधि—गुड़हल के फूल १०० और कागज़ी नीबू का रस आध सेर दोनों को शुद्ध चिकने मिट्टी के पात्र में २४ घन्टे रखने के बाद, मलकर साफ कपड़े से छान लेवे, पश्चात् उसे चीनी के पात्र में भर उसमें अर्क गुलाब, अर्क केवड़ा, अर्क वेद-मुश्क प्रत्येक आध-आध सेर, और मिश्री १ सेर चूर्ण कर मिलावे। तथा पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् मल और छानकर, बोतल में भर कार्क लगा ७ दिन तक रक्खा रहने देवे, फिर ऊपर का द्रवरूप आसव (कीट रहित) निकालकर दूसरी शीशियों में भर कर काम में लावे।

मात्रा—३ माशे से २॥ तोले तक। शीतल जल के साथ।

गुण—वायु, पित्त, रक्त शोधक, स्वादिष्ट; तृषा और श्रम निवारक, गर्भाशय वृद्धिकारक एवं पुष्टिकर है। बच्चों को हितकारी, अग्निदीपक, प्रमेह, पूयमेह, हृद्रोग, तथा रक्तज बवासीर में विशेष लाभदायक है।

२२८ जम्बीरासव * नं० १—उदररोग नाशक।

---

* शतं च जम्बीर रसं रामठं च पलद्वयम् । सैन्धवं च विडङ्गश्च पृथक् दत्वा पलं पलम् ॥ त्र्यूषणं पलमेकैकं सौवर्चलं चतुष्टयम् । यवानीका पलं चैकं सर्षपानां चतुष्टयम् ॥ स्निग्धभाण्डे विनिक्षिप्य अश्वशालां निधापयेत् । एकविंशदिनं यावत्ततः सर्वं समुद्धरेत् ॥ सुचन्द्रे सुदिने लोके पूजायत्वाभिषग्गुरून् । यकृत् प्लीहागुल्मं च विद्रध्यर्शोलिकादयः ॥ वातगुल्ममतीसारं शूलं पार्श्व हृदामयम् । नाभिशूलं विबन्धं च आध्मानञ्च गदोदरम् ॥ नश्यन्ति तस्य शीघ्रेण वातश्लेष्मानथाश्च ये । जीर्यन्ते तस्य कोष्ठे तु जम्बीरासव सेवनात् ॥

—योग चिन्तामणि।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—जम्बीरी नीबू का रस ५ सेर; भुनीहुई हींग ८ तो०; सेंधानमक, वायविडंग; सोंठ, मिरच, पीपल प्रत्येक ४-४ तो०, सोंचल (कालानमक) १६ तो०, अजवायन ४ तो० और सरसों १६ तो० लेकर, कूटने योग्य चीजों को कुटवा कर, सबको चिकने मटके में भरकर, (इसमें कोई २ लोंग ४ तोले और नवसादर ४ तोले मिलाते हैं) उसका मुख अच्छी तरह सन्धान कर; घुड़साल में (अथवा घोड़े की लीद में) दबा देवे। २१ दिन के बाद निकाल कर, छानकर, बोतलों में भरकर रख देवे। इसे ही 'जम्बीरद्राव' कहते हैं।

मात्रा—६ माशे से १ तोला तक।

गुण—यकृत (जिगर) के रोग, प्लीहा (तिल्ली), आम-विकार, गुल्म, विद्रधि, अष्ठीला, विशेषतः वातगुल्म, शूल, अतिसार, पसली का दर्द, हृदय की पीड़ा, नाभिशूल, कब्ज, अफारा, अन्यान्य उदर विकार, तथा कोष्ठ सम्बन्धी वात और कफ के द्वारा उत्पन्न हुए रोगों को शीघ्र ही दूर कर देता है। हैजा, अरुचि, वमन तथा मंदाग्नि नाशक है।

---

२२९ जम्बीरासव नं० २—(जम्बीरद्राव)—गुल्मादि नाशक।
(कविराज प्रकाशचंद्र जी उज्जैन द्वारा—किसी पुरातन-हस्तलिखित ग्रन्थ से, प्रेषित)

विधि—काग़ज़ी नीबू ५०० का रस निकाल कर (मटकी में भर) उसमें गुड़ ५ सेर मिला आग पर चढ़ावे, (थोड़ा पक जाने पर) फिर नीचे उतार कर उसमें—जवाखार ८० टंक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सैंधानमक ३५ टंक, नौसादर, सज्जीखार प्रत्येक ३५ टंक, फटकरी, सौंचलनमक (कालानमक), समुद्रखार, रेहमिट्टी प्रत्येक १५ टंक, सब का महीन चूर्ण कर कपड़े में छानकर, मिला देवे। और पुनः आग पर चढ़ाकर उवाले, हिलाता जावे, रस थोड़ा रह जाने पर, उतारकर परीक्षा करले। उसमें कौड़ी यदि गल जाय तो शुद्ध अन्यथा अशुद्ध समझे। अशुद्ध हो तो पुनः नीबू का रस निचोड़े और पकावे। फिर कांच की शीशी में भर कर रख देवे। हमारे ख्याल से इसे आग पर न पकाकर वैसे ही सब द्रव्यों को मिला, मुख सन्धान कर १५ या २० दिन जमीन में गाढ़ कर रख देने से यह उत्तम जम्बीरासव तैयार हो जावेगा। —सम्पादक।

मात्रा—१ टंक (४ माशे)।

गुण—इसके २१ दिन तक सेवन करने से भूख बढ़ती है; शूल; गुल्म; तिल्ली; वातोदर; पित्तोदर; कफोदर; जलोदर; सन्निपातोदर; कष्ठोदर आदि संपूर्ण वातविकार दूर होते हैं।

(अ० योगमाला)

---

२३० जम्बीरासव नं० ३—(जम्बीरीद्राव)—अफारा, अजीर्णादि नाशक।

विधि—जंबीरी (नीबू) का रस २॥ सेर, हींग भुनी हुई २ तो०; अजवायन; सोंठ घारकी, पीपल छोटी; कालीमिरच; प्रत्येक ५-५ तो०; सेंधानमक २५ तो०; वायविडंग; लौंग; सोराकलमी; छोटी हरड़ प्रत्येक ५-५ तो०; राई १० तोले; सब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को दरदरी कूट कर; जंबीरी नीबू के रस में डाल; एक शुद्ध मटके में भर; मुख मुद्राकर; १ महीने तक रक्खा रहने देवे। इसे एक तोले की मात्रा से भोजनोपरांत सेवन करने से दस्त साफ़ होता है; भूँख खुल कर लगती है; पेट का भारीपन; अफारा, अजीर्ण और पेट का दर्द दूर होता है।

(धन्वन्तरि-प्रयोगाङ्क)

---

२३१ जम्बीरासव नं० ४—(स्वकृत)—मन्दाग्नि नाशक।

विधि—अच्छे पके हुए बड़े काग़ज़ी नीबू का रस ४ सेर निकाल; एक शुद्ध चिकने मटके में भरे; और उसमें-सोंठ का चूर्ण; हरड़ का चूर्ण, सेंधानमक और कालानमक प्रत्येक एक-एक पाव और भुना हुआ सफेद जीरा १० तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर रक्खा रहने देवे। या जमीन में गाढ़ कर रक्खे तो बहुत ही उत्तम होगा। १५ दिन के बाद निकाल कर बोतलों में छान कर भर दे।

मात्रा—१ माशा से ६ माशे तक।

गुण—भोजन के बाद इसका सेवन करने से शीघ्र ही हज़म हो जाता है। दस्त साफ़ होता है। कुछ दिन के सेवन से मन्दाग्नि हमेशा के लिये विदा हो जाती है।

---

२३२ जम्बीरासव नं० ५—यकृत, प्लीहादि नाशक।

(श्री० पं० लीलाधर जी शर्म्मा, वैद्यशास्त्री)

विधि—नीबू का रस दो सेर निकाल, शुद्ध चिकने घड़े में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भर, उसमें भुना हुआ चौकिया सुहागा ८ तोले, सेंधानमक ६ तोले; कालानमक ४ तोले, भुना हुआ जीरा २ तोले; सब को पीसकर मिलावे, तथा भुनी हींग ६ माशे (जिन्हें हींग प्रकृति अनुकूल न हो वे न डालें) मिलाकर, अच्छी तरह मुख मुद्रा कर, १५ या २० दिन रक्खे। पश्चात् छानकर काम में लावे। यह वर्षों नहीं बिगड़ता।

मात्रा—६ माशे से १ तोला तक। अनुपान-दुगुना जल मिलाकर सेवन करे।

गुण—यकृत; लीहा (तिल्ली) के विकार, बदहज़मी, शूल; अरुचि और अफ़ारा नाशक है।

जम्बीरासव नं० ६, ७ और ८—देखिये, निम्बुकासव नं० १, २ और ३।

२३३ जम्बीरारिष्ट नं० १—मन्दाग्नि नाशक।

(श्री० पं० लीलाधर जी शर्म्मा वैद्यशास्त्री)

विधि—नीबू का रस और अदरख का रस दोनों १-१ सेर लेकर; कलई के पात्र में, आग पर चढ़ा कर इतना पकावे कि रस १॥ सेर शेष रहे; पश्चात् शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें-कालानमक, सेंधानमक और कालीमिरच का महीन चूर्ण कर प्रत्येक १०-१० तोले, भुना हुआ सफेद जीरा और काला जीरा प्रत्येक २-२ तोले मिला (७ दिन तक मुख मुद्रा कर रक्खे) पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—३ माशे से १ तोला तक।

गुण—जठराग्नि तीव्र होती है, बदहज़मी, वात के विकार, अरुचि आदि शीघ्र नष्ट होते हैं।

नोट—लेखक ने 'निम्बुकद्राव' लिखा था, नाम हमने बदल दिया है। —सम्पादक।

---

२३४ जम्बीरारिष्ट नं० २—जलोदरादि नाशक।

(श्री पं० हरिनारायणजी शर्म्मा, आयुर्वेदाचार्य)

विधि—५०० नीबू (अच्छे बड़े काग़ज़ी नीबू) का रस निकाल कर, ५ सेर पुराना गुड़ मिला, कलईदार कढ़ाई में रख, आग पर पकावे, थोड़ा रस जल जाने पर; उसे शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें जवाखार ८ तो०, सोंठ ३॥ तोले, सुहागा फुलाया हुआ २ तो०, नौसादर २ तो०, पठानीलोध २ तो०, नकछिकनी २ तो०, सिरस के बीजों का चूर्ण १ तोला; और चीये का तेल १ तोला मिला, पात्र का मुख बन्द कर, १५ दिन बाद, छानकर काम में लावे।

मात्रा—६ माशे से १ तो० तक।

गुण—जलोदर रोग २१ दिन के सेवन से दूर होता है। अग्निमांद्य शीघ्र दूर होता है। भगन्दर और अर्श पर भी लाभदायक है।

नोट—लेखक महोदय ने इस योग को (धन्वन्तरि-प्रयोगांक में) अवलेह रूप में बनाने को लिखा है। हमने अरिष्ट रूप में उपरोक्तानुसार बनाकर अनुभव किया पूर्ण लाभदायक है।

—सम्पादक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२३५ जम्बासव नं० १—(स्वकृत)—बहुमूत्र आदि पर ।

विधि—जामुन वृक्ष की छाल ५ सेर, बबूल (कीकड़) वृक्ष की छाल २॥ सेर और खैर की छाल २॥ सेर, सब को जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे । १३ सेर क्वाथ जल शेष रहने पर, उतार कर; एक शुद्ध चिकने घड़े में छानकर भर देवे। ठंडा होजाने पर उसमें शहद १० सेर, धायके फूलों का चूर्ण १३ छटाँक, लोध; सोंठ, मिरच और पीपल प्रत्येक ४-४ तोले; चूर्ण कर मिलावे । पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे । फिर छानकर शीशियों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक ।

गुण—बहुमूत्ररोग, स्त्रियों का सोमरोग, प्रमेह और मधुमेह नाशक है ।

---

२३६ जम्बासव नं० २—मधुमेह पर ।

विधि-जामुन वृक्ष की छाल ५॥ सेर, खैर की छाल आध सेर सोमल की छाल ५ तोले, आम्रवृक्ष की छाल आधसेर; वला छाल आध सेर, बेल की जड़ ५ तोले; त्रिफला १० तोले, आमले की गिरी ५ तोले, अडूसे के पत्ते ५ तोले, मरोड़फली ५ तोले, करंज की जड़ ५ तोले, बबूल की छाल ५ तोले, सब को कूट कर १ मन १६ सेर जल में पकावे । १३ सेर जल शेष रहने पर छानकर, शुद्ध चिकने घड़े में भर, उसमें पठानीलोध १ सेर, धायके फूल २० तोले, बबूल की फली के बीज, वायविडंग,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चिकनी सुपारी, अनार का बक्कल, महुआ प्रत्येक ४-४ तोले, तथा जामुन की गुठली, कालीमुसली, जायफल, लौंग, नागकेशर, और लाहौरी नमक प्रत्येक १-१ तोले, चूर्ण कर मिलावे, और शहद ८ सेर मिला, पात्र का मुख सन्धान कर, २० दिन तक जमीन में गाढ़ रक्खे, पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—६ माशे से २॥ तोले तक।

गुण—मधुमेह को शीघ्र दूर करता है।

(राकेश)

---

२३७ जम्बासव नं० ३—पाण्डु कामलादि रोगों पर।

(वैद्यराज मुन्नालालजी गुप्त, कानपुर)

विधि—जामुन के फलों (अथवा पत्र) का रस १० सेर, किसी शुद्ध अमृतवान या चीनी मिट्टी के पात्र में भर कर, उस में २॥ सेर पुराना गुड़, २० तोले, लोहभस्म अथवा शुद्ध लोह चूर्ण १० तोले, मण्डूरभस्म, तथा सोंठ, मिरच, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला, चित्रक, वायविडंग, पीपलामूल, अजवायन, रुहेड़े (रोहितास) की छाल, नागरमोथा और धायके फूल प्रत्येक का चूर्ण ५-५ तोले, तथा इन्द्रजौ, कुटकी और निसोथ का चूर्ण प्रत्येक २॥-२॥ तोले, मिला देवे। पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, एक माह तक धूप या धान की राशि में दबा कर रक्खे। पश्चात् छानकर उपयोग में लावे।

मात्रा—१ तो० से दो तोले तक। प्रातः सायं भोजनोपरांत समभाग जल मिला कर सेवन करे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—पाण्डु, कामला, कफज व पित्तज ग्रहणी रोग, प्लीहा एवं यकृत की वृद्धि और अरुचि को दूर करता है। रक्त की वृद्धि करता है। बल, वर्ण तथा कान्ति को बढ़ाता है।

नोट—वैद्यराजजी ने इसका नाम 'फलेन्द्रासव' रक्खा है। राकेश (सिद्धयोगांक) में इसे प्रथम छपवाया, तथा फिर धन्वन्तरि में प्रकाशित कर हमें भी पत्र द्वारा सूचित किया है, उसमें हल्दी २॥ तोले तथा तज, पत्रज, छोटी इलायची, नागकेशर प्रत्येक का चूर्ण १॥-१॥ तोला, ये द्रव्य और बढ़ाये हैं। और लिखा है कि जिन्हें आसवारिष्ट पीने से वमन होजाती है, उनके लिये इसका अर्क खींच कर देना चाहिये। यकृत तथा प्लीहा विकार ग्रस्त रोगियों को इसे प्रातःकाल ही (भोजन के पूर्व सेवन कराना हितकर है। रक्ताल्पता और संग्रहणी के रोगियों को कुछ खाना खा चुकने पर पिलाना चाहिये।

---

२३८ जम्बवासव न०४—जलोदरादि पर।

विधि—जामुन के ताजे और पके हुए काले फल चुन कर, निचोड़ कर अर्क छानले पश्चात् मिट्टी के पात्र में भर दे। १५ दिन बाद पुनः छानकर बोतलों में भर लेवे, फिर तिथर जाने पर ऊपर का लाल २ रस छानकर रख लेवे, नीचे की गन्दी गाद को फेंक दे। शुद्ध गंधक १ तोला को खूब महीन पीसकर तथा शोरा १ तोला और नवसादर १ तोला को भी पीसकर एक बोतल में भर देवे, पश्चात् उसमें उक्त जामुन का अर्क (सिरका) ५५ तोले मिलाकर, आध घंटे के बाद बोतल का मुख बन्द करके ४० दिन तक धूप में तपावे। फिर काम में लावे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—१ माशा से ३ माशे तक। प्रातः सायं।

गुण—जलोदर (जालंधर), प्लीहा, और श्वास नाशक है। पथ्य में घी का विशेष सेवन करना चाहिये।

(प्रयोग साहस्री)

नोट—उक्त आसव अतिपाचक, अजीर्ण, शूल, अफारादि उदर रोगों को शीघ्र नष्ट करता है। —सम्पादक।

---

२३६ जम्ब्वासव नं० ६—हिस्टीरिया नाशक।

(कविराज भक्तराम जी वैद्यराज, लाहौर)

विधि—तीन सेर जम्बूफल (जामुन) को एक नवीन घड़े में डाल कर, उसमें एक मुट्ठी भर सेंधानमक डाल, पानी से भर कर (पानी ३ या ४ सेर मिलावे) ७ दिन तक धूप में रक्खे, इसके पश्चात् हिस्टीरिया (योषापस्मार) के रोगी को डेढ़पाव जामुन नित्य प्रातःकाल निहार मुँह खिलाकर, ऊपर से एक प्याली इसी जल की (उक्त आसव की) पिलावे। जिस दिन से इसका सेवन आरम्भ किया जावे, उसी दिन एक अन्य घड़े में उपर्युक्त विधि से जम्बु आदि डाल दे, ताकि पहिला घड़ा समाप्त होने तक दूसरा घड़ा सेवन के लिये तैयार हो जावे। दो सप्ताह के सेवन से एक देवी का १५ साल का हिस्टीरिया दूर हो गया था और उस देवी के स्वस्थ होने पर सन्तान भी हुई थी।

(अ० योगमाला)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२४० जम्बुत्रासव—प्लीहादि नाशक ।

(वैद्यराज पं० शालिग्राम जी भड़ी)

विधि—जामुन के पत्तों का स्वरस १० सेर, घीकुआर का रस १० सेर; त्रिफला १ सेर; मंडूर वारीक पीसा हुआ २ सेर, पुराना गुड़ २ सेर, सोंठ, मिरच, पीपल प्रत्येक एक-एक तोला, कालानमक; सेंधानमक, शोरा, सुहागा, लोटासज्जी, प्रत्येक दो-दो तोले तथा सोंठ अजवायन, वायविडंग, पोदीना, दारचीनी; मकोय और कालाजीरा प्रत्येक ३-३ तोले, लेकर सबको कूटकर; चिकने बर्तन में डाले । (गुड़ की चासनी जामुन के रस में बनाकर डालनी चाहिये) फिर पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, उसे गोबर के ढेर में दबा देवें । शीतकाल में १५ दिन, और गर्मी में १० दिन बाद निकाल कर छान लेवें । और शीशियों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तो० से ४ तो० तक । पथ्य-बेसन की रोटी, घी से खावे और दूध पीवे ।

गुण—प्लीहा के रोग, कब्ज, जिगर की खराबियाँ, मेदे के रोग, बलगमी सोजा, भूख का कम लगना, आदि सब नष्ट होते हैं ।

(राकेश)

---

२४१ जम्बुमज्जासव—मधुमेह पर ।

(कविराज पं० राजाराम जी शर्मा, मंगलौर)

विधि—जामुन की मींगी का चूर्ण १ पौंड (४० तोले)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लेकर, ४ पौंड जल में खूब खरल करे। ४ घंटे बाद उसमें १ पौंड और जल डालकर, कपड़े से छान ले, और एक पात्र में भर कर रख देवे, ४ घण्टे बाद पानी को निथार दे। नीचे जो चूर्ण सा जमेगा उसे खुश्क कर ले। फिर रेक्टिफाइड स्पिरट १ पौंड में, उक्त चूर्ण डालकर, एक बोतल में भर, कार्क लगा दे। २१ दिन बाद इसमें १॥ पौंड स्पिरट और ५ औंस (१२॥तो०) शहद मिला देवे। फिर कार्क लगा कर बन्द कर दे। ३० दिन के बाद छान कर काम में लावे।

मात्रा—१ ड्राम (६० बूँद) पानी के साथ दिन में ४ बार देवे। पथ्य में-जौ के आटे का लेह और हलका भोजन दे।

गुण—मधुमेह को नष्ट करने में बिजली के समान शक्ति रखता है, अनेक रोगियों पर परीक्षित है।

(धन्वन्तरि-मधुमेहाङ्क)

---

२४२ जम्ब्वरिष्ट—प्रमेह, मधुमेहादि नाशक।

(श्रीमान पं० वासुदेव जी शर्मा, वैद्यविशारद, अजितगढ़)

विधि—जामुन की हरी छाल, जामुन की हरी पत्ती, जामुन की गुठली, जामुन के फूल और जामुन के फलों का रस प्रत्येक एक-एक सेर, धाय के फूल ४० तोले, नागकेशर का चूर्ण २० तोले और शहद १० तोले लेकर, उक्त छाल, गुठली, पत्ते, फूलादि को ६४ सेर जल में पकावे। ८ सेर शेष रहने पर, ठंडा कर छान ले, फिर उसमें फलों का रस, धाय के फूल और शहद मिला, पात्र का मुख बन्द कर १ महीने तक सुरक्षित रक्खे। फिर छानकर, निथार कर बोतलों में भरकर रख देवे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह जितना पुराना होगा, उतना ही उत्तम गुणकारी होगा।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक। दूने जल में मिला प्रातः सायं सेवन करावें।

गुण—प्रमेह, मधुमेह, रक्तप्रदर, रक्तार्श, रक्तातिसार, मूत्रदाह, उदररोग, संग्रहणी और पित्तविकार को दूर करता है।

(धन्वन्तरि—सिद्धयोगाङ्क)

जहरबादासव—देखिये, काकमाच्यासव।

ज्वरामृतासव—देखिये, 'शृङ्गिकासव' या वत्सनाभासव।

२४३ जातिफलासव—अतिसारादि नाशक।

विधि—जायफल के १ भाग चूर्ण में ५ गुना मद्यसार (६० प्रतिशत वाला) मिला, बोतल में, अच्छी तरह कार्क लगाकर रक्खे। ७ दिन के बाद, उसे खूब निचोड़ते हुए छान कर, शीशियों में भर कर रख दे।

अथवा—जायफल के शुद्ध तैल १ भाग में १० गुना मद्यसार (६० प्रतिशत वाला) मिला, बोतल में भरकर रख दे। और ७ अथवा १५ दिन बाद काम में लावे।

मात्रा—चूर्णासव की ३० से ६० बूँद तक और जातिफल तैलासव की १० से ३० बूँद तक है।

गुण—स्थानिक तथा सर्वाङ्ग उत्तेजक. आमाशय तथा ग्रहणी-आशय के लिये दीपक तथा कुछ ग्राही है। स्थानिक तथा सर्वाङ्ग वातशूल हर है। अतिसार, वमन, विशूचिका पर लाभप्रद है। ('वैद्य'—मासिकपत्र, मुरादाबाद)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जामुनआसव—देखिये, जम्बासव ।

जालपासव—देखिये, जुलाफासव ।

जासवन्दासव—देखिये, जपाकुसुमासव ।

२४४ जीरकासव नं० १—(स्वकृत)—रक्तपित्त, ज्वरादि पर ।

विधि—काले जीरे के १ भाग चूर्ण में ५ गुना मद्यसार (६० प्रतिशत वाला) मिला, बोतल में भर अच्छी तरह कार्क बन्द कर रक्खे । ७ या १४ दिन बाद मोमियाई मोटे कपड़े से, खूब निचोड़ कर और छानकर शीशियों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१५ से ६० बून्द तक ।

गुण—विषमज्वर, जीर्णज्वर, मन्दाग्नि तथा वातजन्य सम्पूर्ण उपद्रव नष्ट होते हैं । रक्तपित्त पर इसे शक्कर के शर्बत के साथ देने से शीघ्र लाभ होता है ।

---

२४५ जीरकासव नं० २—(स्वकृत) जीर्णज्वरादि नाशक ।

विधि—काले जीरे का मोटा चूर्ण ५ सेर लेकर उसमें १३ सेर औटाया हुआ जल मिला, शुद्ध चिकने घड़े में भर कर, उस में गुड़ ७ सेर, धायके फूल १३ छटाँक, तथा पित्तपापड़ा, गिलोय (गुडूची) श्वेतजीरा और काली मुनक्का (बीज निकाली हुई) प्रत्येक ५-५ तोले कूटकर मिला देवे । पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर रक्खे । २१ दिन बाद छानकर काम में लावे ।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक ।

गुण—उपर्युक्त नं० १ के अनुसार ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२४६ जीरकाद्यासव नं० ३--प्लीहा, यकृतादि विकारे ।

(कविराज शम्भुदत्तशर्मा कौशिक, भिवानि)

विधि—सफेदजीरा, कालाजीरा, सोंठ, कालीमिरच, पीपल और सेंधानमक प्रत्येक ४-४ तोले बारीक कूट पीसकर, ३॥ सेर पानी में मिट्टी के पात्र में भिगो देवे। पश्चात् उसमें १ तोला गन्धक का तेजाब डाल देवे। एक घन्टे के बाद उसमें १० तोले बूरा डालकर छान लेवे, और उसमें नीबू का अर्क (रस) १० तोले मिला देवे। फिर ६ बोतलें (जिनमें ३-३ पाव जल आजावे) लेवे। प्रत्येक बोतल में ६ माशे सोड़ाखार डालकर, तत्काल ही उक्त औषधियों के सिद्ध किये हुये जल को भरकर कार्क लगा कर रख देवे। ७ दिन के पश्चात् इसे काम में लावे

मात्रा—प्रतिदिन २॥ तोले।

गुण—प्लीहा, यकृतादि तथा सब प्रकार के उदरविकार दूर होते हैं। अत्यन्त पाचक है।

('वैद्य'—मुरादाबाद)

---

२४७ जीरकाद्यरिष्ट * नं० १--प्रसूति रोगादि पर।

---

* जीरकस्य तुलाद्वन्द्वं चतुर्दोणे जले पचेत्। द्रोणशेषे क्षिपेत्तत्र तुलात्रयमितं गुडम् ॥ धातकी षोडशपलां शुण्ठीञ्च द्विपलोन्मिताम्। जातीफलं मुस्तकं च चातुर्जातं यथानिकाम् ॥ कंकोलं देवपुष्पं च पलमानेन निक्षिपेत्। मासं संस्थापयेद् भाण्डे मृत्तिकापरिलेपिते ॥ ततः कल्कान् विनिर्हृत्य पाययेत् कर्ष मात्रया। अरिष्टो जीरकाद्योऽयं निहन्यात् सूतिकागदान् ॥ ग्रहणीमतिसारञ्च तथा वन्हेश्च वैकृतम्।

—भैषज्यरत्नावली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—१० सेर जीरे को कूटकर, १ मन १२ सेर जल में पकावे । १३ सेर क्वाथ जल शेष रहने पर, छानकर, मिट्टी के स्वच्छ एवं घृत से चिकने किये हुये पात्र में भर कर, उसमें गुड़ १५ सेर, धाय के फूलों का चूर्ण १३ छटाँक, सोंठ का चूर्ण ८ तोले तथा जायफल, नागरमोथा, दारचीनी, तेजपात, नागकेशर, इलायची, अजवायन, कङ्कोल और लौंग प्रत्येक ४-४ तोले चूर्ण कर मिला देवे । पात्र के मुख को शराव से ढककर उस पर कपड़ मिट्टी करके रख देवे । १ मास बाद छानकर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तोला अथवा १। तोला ।

गुण—सूतिका रोग, संग्रहणी, अतिसार और जठराग्नि के विकारों को नष्ट करता है ।

नोट—उक्त अरिष्ट में यदि लोध ४ तोले प्रक्षेप कर दिया जाय तो प्रसूतरोगों पर विशेष प्रभावशाली होजाता है ।

—सम्पादक ।

---

२४८ जीरकाद्यरिष्ट नं०२—अजीर्ण, अग्निमांद्यादि नाशक ।

(कविराज पं० गौरीशंकरजी आनन्द, हरिपुर)

विधि—कालाजीरा १५ सेर, सौंफ ५ सेर, दोनों को जवकुट कर, १६० सेर जल में मिला क्वाथ करे, चौथाई भाग शेष रहने पर, छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर कर, उसमें गुड़ २४ सेर घोल ले, धायके फूलों का चूर्ण १२८ तोले, सोंठ १६ तोले तथा जायफल, नागरमोथा, दारचीनी, तेजपत्र, छोटी इलायची, नागकेशर, अजवायन, लौंग, शीतलचीनी, प्रत्येक ८-८ तोले,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पिप्पली, कालीमिरच, पीपलामूल, पोदीना, और अकरकरा प्रत्येक ४-४ तोले सब का महीन चूर्ण कर मिलावे । पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १ मास तक रक्खे पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक । अनुपान-अर्क सौंफ मिला कर सेवन करे ।

गुण—अजीर्ण, अग्निमांद्य, प्रसूतज्वर, मक्कलशूल, विशूचिका (हैजा) और उदरशूल में लाभकारी है ।

(अ० चि० संग्रह)

---

२४६ जुलाफासव—(स्वकृत)-उत्तम रेचक ।

विधि—जुलाफा (बड़ी हरड़ जैसा यूनानी द्रव्य) का मोटा चूर्ण ८ तोले और रेक्टिफाइडस्प्रिट ५० तोले एकत्र मिला, बोतल में भर, कार्क से अच्छी तरह मुख बन्द कर, ७ दिन तक रक्खे । पश्चात् फिल्टर से या मोटे गाढ़े कपड़े से छानकर शीशियों में भर कर रख दे ।

मात्रा—३० बून्द से १२० बून्द तक ।

गुण—निर्मल रेचक है, मलावरोध, जलोदर, अजीर्ण, प्लीहोदरादि नाशक है ।

ज्योतिष्मत्यासव—देखिये, मालकांगुन्यासव ।

२५० ज्वरनाशकासव—ज्वर पर उत्तम प्रभावशाली ।

(वैद्यराज मोहनलाल जी आयुर्वेदविशारद, हरसोर)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—चिरायता १ सेर, गिलोय १० तो०, पित्तपापड़ा १० तो० और कुटकी ५ तो० जवकुट कर, १० सेर जल में २४ घंटे भिगो रक्खे। पश्चात् कढ़ाई में डाल आग पर चढ़ावें। आधा जल शेष रहने पर; उसे दूसरे कलईदार पात्र में गाढ़े कपड़े से छान कर रखे, फिर २४ घंटे बाद ऊपर का जल दूसरे पात्र में निथार कर, उसमें २॥ तोले किण्वनाइन मिलाकर और हिलाकर फिर आगपर चढ़ावे। लगभग ३॥ सेर जल शेष रहने पर, उतार कर ठंडा कर लेवे। फिर इस जलमें गुलाबकी कली या पुष्पोंकी पखुरी (सूखी १० तो०, गीली होतो २० तो०) डालकर; भवके के द्वारा अर्क खींच लेवे। बिल्कुल साफ़ बोतलों में इस आसवार्क को भर कर रख दे।

मात्रा—अवस्थानुसार १ से २ तोले तक।

गुण—सब प्रकार के ज्वरों को, विशेषतः मलेरिया को शीघ्र ही भगाता है।

ज्वरवज्रारिष्ट—देखिये, निम्बकारिष्ट नं० २।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इ

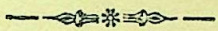

इण्टिकासव—देखिये, कटसारिकासव।

२५१ इन्दुकासव—अर्श, प्रमेहादि नाशक।

विधि—गेंदे के फूलों का रस १ सेर (रस निकालने के लिये 'हजारा गेंदा' लेना चाहिये, छोटा गेंदा नहीं लेवे) और उसी के पत्तों का रस २ सेर लेकर (फूलों को पीसकर, जल मिला कर निचोड़ना चाहिये और छान कर रस निकालना चाहिये); इस प्रकार ३ सेर रस एक बोतल में भर, उसमें शहद ५ सेर, मद्य (४५ प्रतिशत वाला) १० सेर और कालीमिरच का चूर्ण ८ तोले मिला, कार्क अच्छी तरह बन्द कर रक्खे। १५ दिन के बाद मोटे वस्त्र से छानकर शीशियों में भरकर रख दे।

मात्रा—१॥ माशे से १ तोला तक।

गुण—रक्तार्श; स्वप्नदोष, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, धातुरोग, प्रदर नाशक है। स्तम्भन शक्ति को बढ़ाता है।

(एक पुरानी हस्तलिखित पुस्तक से)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ट

२५२ टङ्कणासव—दन्तपीड़ा आदि पर।

विधि—सुहागा २ तोले, जल १२ छटाँक; ग्लीसरीन २ तो०; और संजीवनीसुरा में मिलाई हुई अफीम (अथवा अहिफेनासव) ३० बूँद सब को एकत्र मिला; एक शुद्ध बोतल में भरकर रख दे।

मात्रा—१ बूँद से १५ बूँद तक।

गुण—दाँतों की पीड़ा पर; या मुख के अन्दर दर्द हो तो फुरेरी से लगावे। दर्द शुर्दे पर १ तोला जल में चन्द बूँदे मिला पिलावे तथा ऊपर से लगावे।

('वैद्य'—मासिकपत्र)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२५३ टङ्कणाद्यासव—बालरोग हारी।

(श्री० पं० विश्वनाथ जी द्विवेदी, वैद्यशास्त्री, प्रिंसपिल ललितहरि कालेज, पीलीभीत)

विधि—सुहागा; सौंफ, बड़ी हरड़; सनाय, मुनक्का; हल्दी; पलाश पापड़ा, अमलतास; इन्द्रायन की जड़; सेंधानमक, कालानमक, वायविडंग, कबीला; कुटकी, गुलबनपसा, गुलाब के फूल, सफेदजीरा; अजवायन, सोंठ और देवदारु प्रत्येक का महीन चूर्ण ५-५ तोले और जल ७॥ सेर लेकर सब को शुद्ध धायपुष्प, अगर आदि से लेपित घड़े में भरकर, उसमें-२॥ सेर शहद, २० तोले धाय के फूल और ५ सेर नये गुड़ को मिला, घड़े का मुख सन्धान कर २५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् इसे निकाल कर, हाथ से अच्छी तरह मसल कर फलालेन के दुहरे कपड़े से छान कर, डाटदार बोतलों में भरकर रख दे। इसे भवके के द्वारा खींच कर भी रख सकते हैं।

मात्रा—अवस्थानुकूल चाय के चम्मच के आधे से १॥ चम्मच तक। अर्क खींचे हुए की मात्रा २ बूँद, अधिक से अधिक ३० बूँद तक।

गुण—बालकों के प्रत्येक रोग पर कल्याणप्रद है। ज्वर, कास; अजीर्ण, अग्निमांद्य, विबन्ध तथा उदर के सम्पूर्ण रोगों पर यह रामबाण है। बालशूल, उदराध्मान में यह जादू की तरह कार्य करता है। शारीरिक शक्ति बढ़ाने के लिये नित्य इसका उपयोग बालकों के पक्ष में हितकर है। प्रथम इसका प्रयोग करने पर एक दस्त खुलकर आता है, अधोवायु शुद्ध होते ही उदर के रोग शीघ्र दूर हो जाते हैं, उसके बाद दूसरे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बार के उपयोग से क्षुधा तीव्र होती है। इस आसव का उपयोग नवजात शिशु तक के लिये हितकर होता है। नवजात शिशु को यदि गर्भमल त्याग न हो तो चाय के छोटे चम्मच भर इसे पिलाते ही शीघ्रता के साथ मल त्याग हो जाता है। छोटे बच्चों को इसका खींचा हुआ अर्क विशेष लाभदायक है। दूध फेंकना, अपचन, उदरशूल, नाभिशूल इत्यादि सब रोग दूर हो जाते हैं। लगातार सेवन से शक्तिवर्धक है, कोई रोग नहीं होने देता।

पथ्य में-दूध पीने वाले शिशु को सिर्फ दूध, और बड़े बच्चे को लघु भोजन देवे। यदि शीघ्र लाभ न दीखे तो-बच्चे की माता को १ तोला से ३ तो० तक इसका सेवन करावे; शीघ्र लाभ होगा।

अपथ्य—शहद, कच्चे अनार, केले, घृत-पक्व अन्न, कुनैन, अफीम व कुचले के योग से बने हुये प्रयोग न देवे। अपथ्य सेवन से भ्रम, अतीसार, उदरशूलादि उपद्रव होने लगते हैं। परिहारार्थ-आसव का सेवन बंद कराकर, बीहदाना और सौंफ का अर्क या पोदीने का अर्क, अथवा उक्त आसव का ही खींचा हुआ अर्क देने से उपद्रवों की शान्ति होजाती है।

---

२५४ टुण्टुकासव—(स्वकृत)-रक्तातिसार नाशक।

विधि—टेन्टू (अरलू,-श्योनाक) की जड़ की छाल ताजी ५ सेर लेकर, जवकुट कर, १३ सेर जल में पकावे। ६॥ सेर जल शेष रहने पर छानकर, शुद्ध चिकने घड़े में भर, उसमें मिश्री,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

५ सेर, धाय के फूलों का चूर्ण ६० तोले, शहद ३ सेर और सौंफ का चूर्ण ३० तोले मिला, १ मास तक सन्धान कर रक्खे ।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक ।

गुण—रक्तातिसार, रक्तप्रवाहिका और रक्तप्रदर को नष्ट करता है । गरमी को शीघ्र शांत करता है ।

टेण्टूमूलासव—देखिये, टुण्टुकासव ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

त

२५५ तक्रासव नं० १—(स्वकृत)–पाण्डुरोगनाशक।

विधि—दो सेर तक्र (छाछ) को किसी शुद्ध घृत से चिकने किये हुये मटके में भर, उसमें शुद्ध लोहे का बुरादा १३ तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर ७ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पात्र को रोज एक बार हिलाते रहना चाहिये। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१॥ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—पाण्डुरोग को १५ दिन के अन्दर दूर करता है। रक्त को शुद्ध करता है।

---

२५६ तक्रासव नं० २—आमवातहर।

(स्वर्गीय वैद्यराज रावत उमरावसिंह जी)

विधि—गाय की छाछ ५ सेर, लोहचूर्ण २० तोले दोनों को एकत्र, एक शुद्ध चिकने मटके में भर कर, उसमें लहसुन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४ तोले, तथा हरड़, बहेड़ा, आंवला, कलौंजी और बायबिडंग प्रत्येक का महीन चूर्ण २-२ तोले, तथा सेंधव, सोंचर, सांभर नमक और जवाखार प्रत्येक १-१ तोला कालीमिरच, पीपल और अजवायन प्रत्येक का चूर्ण ३-३ माशे अच्छी तरह मिला, पात्र का मुख बन्द कर कूड़े कचरे के ढेर में गाढ़ कर रक्खे। १० दिन बाद निकाल और छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—२ से ५ तोले तक।

गुण—आमवात को शीघ्र ही भगाता है। पथ्य में गेंहू की रोटी, घी, मूंग की दाल, अदरख, पोदीने की चटनी दे। ७ से १४ दिन में पूर्ण लाभ होता है।

---

२९७ तक्रारिष्ट * नं० १—अग्निदीपक, अर्शादि नाशक।

विधि—हाऊबेर, कालाजीरा, धनिया, सफेदजीरा, कलौंजी, कचूर, पीपल, पीपलामूल, चीते की जड़, गजपीपल, अजवायन और अजमोद प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले लेकर ५ सेर तक (मट्ठा) में मिलाकर, घृत के चिकने बरतन में भरकर; मुख बन्द करके रख देवे। ७ दिन के पश्चात् जब स्वाद में अम्ल और चरपरा होजाय तब जानना चाहिये कि अरिष्ट सिद्ध सेवनीय

---

* हपुषा सुपत्री धान्यसजाजी कारवी शटी। पिप्पली पिप्पलीमूलं चित्रको गजपिप्पली ॥ यवानी चाजमोदा च तच्चूर्णं तक्रसंयुतम्। मन्दाम्लकटुकं विद्यान् स्थापयेद् घृतभाजने ॥ व्यक्ताम्लकटुकं जातं तक्रारिष्टं सुखप्रियम्। पाययेन्मात्रया कालेबलस्य तृप्तिं त्रिषु ॥ दीपनो रोचनो बल्यः कफवातानुलोमनः। गुदश्वयथुकण्ठार्तिनाशनो बलवर्धनः ॥

—गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होगया है। तब उसे छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—३ तोले से ४ तोले तक। दिन में ३ बार तथा भोजन के समय जब २ प्यास लगे तब इसे मात्रानुसार क्रम से भोजन के आदि, मध्य और अन्त में पिलावे।

गुण—अत्यन्त स्वादु, अग्निदीपक, रोचक (रुचि को बढ़ाने वाला), बलकारक, कफनाशक, वात को अनुलोमन करने वाला, बवासीर, सूजन एवं कण्ठ रोगनाशक, तथा गुदा की सूजन, खुजली, कोचन (कतरने जैसी पीड़ा) शामक है। जीभ पीत वर्णयुक्त मैल से भरी हुई, क्षुधामांद्य, पेट में अफारा, मल का रंग सफेद, सड़ी दुर्गन्ध युक्त डकार आती हो, ऐसे रोगी को तक्रारिष्ट अमृततुल्य है। १० से २१ दिन तक इसका सेवन क्रम पूर्वक करावे, जल के स्थान में रोगी को इसे ही पिलाना चाहिये।

नोट—इस अरिष्ट के बनाने में जिस तक्र की योजना की जावे, वह बहुत खट्टा नहीं होना चाहिए। दही में चतुर्थांश भाग जल मिला, बगैर घी निकाले जो घोल तैयार जिया जाता है वही तक्र है।

—सम्पादक।

---

२५८ तक्रारिष्ट * नं० २—गुल्म, शोथादि नाशक।

---

* यमान्यमलकं पथ्या मरिचं त्रिपलांशिकम्। लवणानि पलांशानि पंच चैकत्र चूर्णयेत्॥ तक्रकं संयुतं जातं तक्रारिष्टं पिवेन्नरः। दीपनं शोथ गुल्मार्श कृमिमेहोदरापहम्॥

—चरक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—६॥ सेर तक्र (मट्ठा) में-अजवायन, आमला, हरड़ और कालीमिरच का चूर्ण प्रत्येक १२-१२ तोले, तथा सेंधा-नमक, कालानमक, बिड् (सारी) नमक, सामुद्रनमक और रेहनमक प्रत्येक ४-४ तोले चूर्ण करके, सब को घृत से चिकने किये हुये मटके में मिलाकर, भर देवे और उसका मुख अच्छी तरह बन्दकर रख देवे। ७ दिन के पश्चात् निकालकर छान ले।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—अग्निदीपक है तथा शोथ, गुल्म (गोला), बवासीर, किरम रोग, प्रमेह और उदर के कई रोगों को नष्ट करता है।

---

२५९ तण्डुलियासव—(स्वकृत)—रक्तातिसार नाशक।

विधि—चौलाई की १ सेर जड़ को जवकुट कर, १३ सेर जल में पकावे। ६ सेर शेष रहने पर; छानकर शुद्ध मटकी में भरे, उसमें—१ सेर धाय के फूलों का चूर्ण, ३ सेर शक्कर और २ सेर शहद मिला; पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—अतिसार, विशेषतः रक्तातिसार को शीघ्र ही दूर करता है।

तरबूजआसव—देखिये, कालिन्दासव।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२६० तरुण्यासव—हृद्रोग नाशक।

(श्री० वैद्यराज पं० टीकादत्त जी त्रिवेदी, मुरादाबाद)

विधि—सेवती के फूल १। सेर लेकर, किसी शुद्ध चिकनी मटकी में भर, उसमें १० सेर पानी डाल देवे (पानी को पका कर डालना ठीक होगा), फिर उसमें—मुनक्का १। सेर, मिश्री ३ सेर, शहद १ सेर, सेव १ पाव, किसमिस १ पाव, बादाम आध पाव और कस्तूरी १ माशा तथा गावजवाँ के फूल, सफेदइलायची, जाफ़रान; गिलोय, गोखरू, दारचीनी, बहमन सफेद, बहमन लाल, सफेद चन्दन; धनिया, आमले, कहरवा प्रत्येक ३-३ तोले चूर्ण कर मिलावे। यथाविधि सन्धान कर १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोले से ४ तोले तक।

गुण—हृदय रोग में बहुत लाभ कारक है, दस्त साफ़ आता है, भूँख बढ़ती है, बल वीर्य की वृद्धि होती है। इसे सेवन्त्यासव भी कहते हैं।

---

२६१ ताड़्यासव नं० १—शक्तिवर्धक, संग्रहण्यादि नाशक।

विधि—ताड़ी (जिसे 'सिन्धी' कहते हैं, खजूर के पेड़ जैसे ही इसके पेड़ और पत्ते आदि होते हैं, इसके मद को ही ताड़ी *

* सिन्धी की ताड़ी की अपेक्षा ताड़ वृक्ष की ताड़ी उत्तम होती है। इस आसव कार्य के लिये ताड़ की ही ताड़ी लेनी चाहिये।

—सम्पादक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहते हैं) ५ सेर लेकर; एक शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें-मिश्री ३ सेर और शहद १० सेर तथा धाय के फूल १ सेर मिला, अच्छी तरह सन्धान कर रक्खे ।

मात्रा—१ तोला ।

गुण—शक्तिवर्धक, संग्रहणी एवं संग्रहणीजन्य पाण्डुरोग, आनाह (अफ़ारा) और अग्निमांद्य नाशक है । क्षुधाको बढ़ाता है, शरीर में जोश तथा मन को प्रसन्न करता है ।

(एक प्राचीन पुस्तक से)

---

२६२ ताड़्यासव नं० २—(स्वकृत) विषूचिका नाशक ।

विधि—ताड़ी १ सेर; उत्तम देशी कपूर १ पाव और नागर-मोथे का चूर्ण ४ तोले, एकत्र मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर, दृढ़ता से मुख मुद्रा कर, १ मास तक जमीन में गाड़कर रक्खे । पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१० से १५ बूँद तक, शक्कर या बतासे में टपका कर, प्रति १५-१५ मिनट के बाद सेवन करावे ।

गुण—हैजे पर अपूर्व लाभदायक है । साधारण दस्तों पर और अतिसार पर भी यह गुणदायक है ।

---

२६३ ताम्बूलासव * नं० १—अर्श, कफरोगादि नाशक ।

---

* जतुलिप्तं ननु कृत्वा भाण्डकमर्धं प्रवेशितं भूमौ । तत्तरुणहरित-जम्बूपत्रक्वाथेन संशुद्धम् ॥ शुद्धे च शर्कराभिरगुरुं दद्यात्सुगन्धतरम् । वासार्थं धातक्याः पलानि खलु सप्त देयानि ॥ पूगी फलानि खदिरं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—प्रथम शुद्ध मटके को लेकर, उसे जामुन के नवीन हरे पत्तों के काढ़े से अच्छी तरह धोकर साफ़ करे, फिर उसके भीतर लाख का लेप कर, सूख जाने पर, खांड और अगर की धूनी देकर जमीन में गाढ़ देवे। आधा मटका ज़मीन के भीतर और आधा ऊपर रहना चाहिये। फिर उस मटके में-१५०० पान (ताम्बूल) कूट पीसकर डाले तथा धाय के फूल २८ तोले, सुपारी; खैरसार कूटकर प्रत्येक आध २ सेर, शहद ५ सेर, जल ७॥ सेर, कंकोल और पीपल का चूर्ण ८-८ तोले, एवं हरड़, बहेड़ा, आमला, जायफल, बड़ी इलायची और लौंग के फूलों का चूर्ण प्रत्येक ४—४ तोले मिलाकर, सब को तीन दिन तक; मटके में ही हाथों से विलोडन करता (मलता) रहे। जब सब द्रव्य एक रस हो जाय और उसमें सूँ सूँ शब्द होने लगे, तब १५ सेर गुड़ को, १३ सेर जल में मिला, आग पर

दशपळकानि दापयेत्तत्र। ताम्बूलीपत्रशतैर्दशभिः क्षुण्णैश्च पंचभिश्चान्यैः॥ पलशतमेकं मधुनः शतं च सार्धं तु वारिणो देयम्। कंकोलक कृष्णानां प्रत्येकं द्वे पले च स्युः॥ त्रिफला जातीफलैला लवङ्ग कुसुमानि चैक-पलिकानि। दत्वावलोड्यमेतत्त्रीणि दिनानि पाणिना पात्रे॥ समवेद्यदा सशब्दस्ततो गुडशत पळानि त्रीणि। देयानि प्रविलीनमग्नियोगात्तं तु जलद्रोण संयुक्तम्॥ पक्षद्वयेन पेयो रसनाक्षिमनोहरः सुराभिगन्धः। ताम्बूलासव एष रसायनानां भवेदग्र्यः॥ प्रीणयन्ति हन्ति गुदजान् सर्वांश्च कफोद्भवांस्तथा रोगान्। वलवर्ण शुक्र जननो ह्युपयोगादश्मरीं हन्यात्॥ संवत्सरमुपयुक्तः स्थिरवयसं मानवं कुरुते।

—गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गरम कर, अच्छी तरह घोलकर, उस मटके में डाल देवे और मुख बन्द कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे। इसका रङ्ग, सुगन्ध और स्वाद अत्यन्त उत्तम होगा।

मात्रा—१ तोला।

गुण—बवासीर, सब प्रकार के कफ के रोग और पथरी, नाशक है, बलवर्धक, कान्तिकारक और वीर्योत्पादक है। एक वर्ष पर्यन्त, नियमपूर्वक इसका सेवन करने से आयुष्य की वृद्धि होकर, शरीर सदा स्वस्थ रहता है। यह अत्युत्तम रसायन है।

---

२६४ ताम्बूलासव-नं० २—(स्वकृत) कफ विकारादि नाशक।

विधि—ताम्बूल (नागरवेल पान) का रस १ सेर निकाल कर, कांच की शीशी या चीनी मिट्टी के पात्र में भर, उसमें—शहद २॥ सेर, शुद्ध खांड १ सेर, मद्यार्क (४५ प्रतिशत वाला) आध सेर तथा सोंठ, अतीस, अकरकरा, दारचीनी, नागकेशर और तुलसी की मंजरी प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिलाकर, अच्छी तरह सन्धान कर रक्खे। १५ दिन के बाद छानकर काम में लावे।

मात्रा—१ माशा से १ तोला तक।

गुण—कफ की खाँसी वगैरह कफ के विकारों को शीघ्र दूर करता है। सन्निपात की अन्तिम अवस्था में उत्तम कार्य करता है। अग्निप्रदीपक, कामोद्दीपक, बलकारक तथा ज्वर नाशक भी है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२६५ तिन्तिड़ीकासव—(स्वकृत) दाह, पिपासादि नाशक ।

विधि—पकी हुई इमली के गूदे को जल में भिगो कर रख देवे, ४-५ घंटे के बाद मलकर, मोटे वस्त्र से छानकर लगभग ५ सेर रस निकाले । आग पर जोश देकर शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें-गुड़ २॥ सेर, धाय के फूल १ सेर, लौंग, छोटी इलायची, नागरमोथा और खस ४-४ तोले चूर्ण कर मिलावे । अच्छी तरह सन्धान कर, २१ दिन बाद छानकर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक ।

गुण—दाह, प्यास और कोष्ठबद्धता नाशक है । स्वादिष्ट, रुचिकारक तथा छाती में जमे हुए कफ को निकाल बाहर करता है ।

---

२३६ तुलस्यासव—नं० १—इन्फ्ल्युएन्जा नाशक ।

विधि—तुलसी के पत्ते और बीजों का चूर्ण २॥ औंस (६। तोले), और शुद्ध मद्य १ पाइन्ट (१। पौंड) दोनों को एकत्र मिला, एक सप्ताह तक कांच की बोतल में भर कर रक्खे । फिर मोटे वस्त्र में निचोड़ते हुए छानकर शीशियों में भरकर रख दे ।

मात्रा—१० बूँद से ६० बूँद तक ।

गुण—इन्फ्ल्यूएन्जा के उपद्रवों को शीघ्र नष्ट करता है । अग्निवर्द्धक, वात कफ नाशक है । खाँसी, कृमि विकार, जीर्ण-ज्वर, पार्श्ववेदना, और अपस्मारादि पर लाभदायक है ।

('वैद्य'-मुरादाबाद)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२६७ तुलस्यासव—नं० २—सूतिका शूले ।

विधि—तुलसी के पत्तों का स्वरस २॥ सेर लेकर, शुद्ध चीनी मिट्टी के पात्र में भर, उसमें-पुराना गुड़ १ सेर, मद्य ४० तोले और खांड १ सेर मिला, १५ दिन सन्धान कर रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ माशा से १ तोला तक ।

गुण—प्रसवकाल के समय स्त्री को जो अत्यन्त तीव्र वेदना होती है, वह इसको पिलाने से शीघ्र ही शमन हो जाती है ।

(एक प्राचीन पुस्तक से)

---

२६८ तुलस्यासव—नं० ३—कास नाशक ।

विधि—तुलसी के पत्तोंका स्वरस ४ ड्राम (लगभग १।तो०), उत्तम शहद १ औंस (२॥ तोले), आदी (अद्रक) का रस दो ड्राम (७॥ माशे) और अजवायन का चूर्ण दो ड्राम, सब को एकत्र कर बोतल में अच्छी तरह कार्क लगा १५ दिन तक सुरलित रक्खे । पश्चात् छानकर काम में लावे ।

मात्रा—१० बून्द से ६० बून्द तक ।

गुण—बालकों की खांसी शीघ्र ही दूर होती है ।

(वनौषधि)

---

२६९ तुलस्यासव—नं० ४—जीर्णज्वर एवं कास नाशक ।

विधि—तुलसी के पत्ते १ सेर, सोंठ, कालीमिरच और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छोटी पीपल प्रत्येक १-१ पाव और अजवायन आधपाव लेकर, सब को कूट कर १० सेर जल में भिगो रक्खे। दो दिन बाद भवके के द्वारा अर्क खींच कर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—आधा तोला से १ तोला तक। अनुपान-सैंधव लवणयुक्त उष्णजल। इस जल में थोड़ा सा हरड़ का महीन चूर्ण मिला लेने से शीघ्र लाभ करता है।

गुण—जीर्णज्वर और खाँसी को तत्काल दूर करता है।

(एक प्राचीन पुस्तक से)

---

२७० दूतासव—(स्वकृत)—रक्त विकार नाशक।

विधि—सहतूत का रस ५० तोले, मिश्री १ सेर १० तोले और रेक्टिफाइड स्प्रिट ८ तोले लेकर, प्रथम रस और शक्कर (मिश्री) एकत्र मिला, कांच के पात्र में, मुख बन्द कर रक्खे। इस पात्र को धूप में या किसी उष्ण स्थान में रखना चाहिये। २४ घंटे के बाद उसे खोल कर, उसके ऊपर मलाई जैसा भाग जम आया हो उसे निकाल देवे और दूसरे कांच के पात्र में धीरे से नितार लेवे, जिसमें नीचे की तलछट या मलभाग न आने पावे। पश्चात् उसमें स्प्रिट मिला, पुनः मुख बन्द कर, ३ दिन तक सुरक्षित रक्खे और फिर काम में लावे।

मात्रा—आवश्यकतानुसार १ तोला से ५ तोले तक।

गुण—यह शीत गुण युक्त है, पित्तज्वर में अच्छा काम देता है। रक्त की उष्णता को शमन करता है। किंचित् मल-रोधक है, किंतु वात और पित्त के प्रकोप को शांत करता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२७१ * त्वक्पत्रासव—अतिसारादि नाशक।

विधि—दारचीनी का चूर्ण १ भाग और मद्य (७० से ९० प्रतिशत वाला) ५ भाग, एकत्र मिला, बोतल में भर मज़बूत कार्क लगा कर रख दे। ७ दिन के बाद, अच्छी तरह मसलते हुये छानकर शीशियों में भर ले।

मात्रा—आधा माशा से ४ माशे तक।

गुण—अतिसार, आमातिसार, अग्निमांद्य और अजीर्णादि उदर रोगों पर लाभदायक है। अन्य औषधियों को सुगन्धित तथा सुस्वादु करने के लिये भी इसका व्यवहार होता है।

(मद्यासव)

नोट— दारचीनी का मोटा चूर्ण ७ तोले और रेक्टिफाइड स्पिरट ५० तोले मिला, उक्त विधि से निर्माण करे। यह भी उक्त प्रकार से लाभदायक होता है। मात्रा—३० बून्द से १२० बून्द तक। उत्तेजक, वातहर, पाचक और स्तम्भक है। —सम्पादक।

---

२७२ त्रायमाणासव + —कास श्वासादि नाशक।

+ त्रायन्ती कट्फलं दन्ती पौष्करं कंटकारिका। दुरालभाञ्जनं सिंही पिप्पलीमूलमेव च ॥ धात्री कृमिहरं भार्ङ्गी माचिका चैलवालुकम्। पथ्या शटी विशालाच भागानष्टपलोन्मितान् ॥ चतुर्द्रोणेऽम्भसः पक्त्वा शृतं द्रोणावशेषितम्। शतत्रयं माक्षिकस्य धातक्या पलविंशतिम् ॥ श्यामापलानि चत्वारि त्वगेला पत्र केशरम्। भागान्द्विपलिकानेषां चूर्णं कृत्वा विनिक्षिपेत् ॥ त्रायमाणासवो ह्येष कासश्वासामय प्रणुत्। पाण्डु हृद्रोग गुल्मार्शः सन्निपात ज्वरापहः ॥

—गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—त्रायमाणा (नीचे नोट देखें), कायफल, दन्ती, पोहकरमूल, कटेरी (छोटी भटकटैया), धमासा, रसौत (रसांजन), बड़ी कटेरी, पीपलामूल, आमला, बायबिडंग, भारंगी, मकोय, पलुआ, हरड़, कचूर और इन्द्रायन ये प्रत्येक ३२-३२ तोले लेकर कूटकर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर क्वाथ जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर देवे और ठंडा हो जाने पर उसमें—शहद २५ सेर, धाय के फूल १ सेर, छोटी पीपल १६ तोले तथा बड़ी इलायची, दारचीनी, तेजपात और नागकेशर प्रत्येक ८-८ तोले चूर्णकर मिलावे। पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक। समान भाग जल मिला कर सेवन करे।

गुण—खांसी, दमा, पाण्डुरोग, हृदय के रोग, गुल्म, बवासीर और सन्निपात ज्वर नाशक है।

नोट—त्रायमाण के विषय में अभी ठीक निर्णय नहीं हुआ है। कई विद्वान वैद्यगण बनपसे को ही त्रायमाण मानते हैं और कई गुजरात वाली बूटी (जो पारस की ओर खुरासान के पहाड़ों पर होती है; इसका क्षुप ६-७ अंगुल ऊँचा, छोटे २ पीले पत्ते तथा पीले ही कंटकयुक्त पुष्प होते हैं, इसके फलोंमें मधुर गन्ध होती है, फल को जल में डालने से डूब जाता है और जल को पीले रंग का तथा तिक्त कर देता है) को त्राय-माण कहते हैं। स्वर्गीय डा० वामनगणेश जी देसाई ने लिखा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है कि-यह औषधि ईरानी पहाड़ों पर होती है। नरम कांटेदार फूल वाली क्षुप की जाति है। इसमें दारुहल्दी का सा पीला सत्व निकलता है। इसे यूनानी लोग गुलजलील और अंग्रेज वनस्पति शास्त्री कहते हैं।

श्री सुरेन्द्रमोहन जी० बी० ए० आचार्य डी० ए० वी० कालेज लाहोर से लिखते हैं कि-यह ६-७ अंगुल ऊँचा क्षुप है। इसके पत्र, पुष्प नीले हरे पीले या अनेक वर्ण के होते हैं। रेचन करके ज्वर को नष्ट करता है। जम्मूस्टेट के उद्धमपुर स्थान में मिलता है। पहाड़ी लोग इसे आमान कहते हैं। आयमाण के सभी लक्षण इसमें मिलते हैं, मेरी समझ में यही आयमाणा है।

—सम्पादक।

त्रिकट्वाद्यासव—देखिये, पुनर्नवासव नं० २।

२७३ त्रिफलासव—(स्वकृत)—अफारा, अनिद्रादि नाशक।

विधि—त्रिफला (हरड़, बहेड़ा और आमला प्रत्येक २-२सेर) ६ सेर (गुठली निकाल कर) ले कूटकर, २६ सेर जलमें; १२ घंटे तक भिगो कर, आग पर पकावे। १३ सेर क्वाथ जल शेष रहने पर, छानकर शुद्ध चिकने मटके में भरे, और ठंडा होने पर उसमें शहद १० सेर, मिश्री ५ सेर; धाय के फूल १३ छटांक और गिलोय २० तोले कूटकर मिलावे। यथाविधि सन्धान कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—पेट का अफ़ारा, अनिद्रा, मेदवृद्धि, स्थूलता और जीर्णज्वर को नष्ट करता है।

---

२७४ त्रिफलारिष्ट +—शोथ, हृद्रोगादि नाशक।

विधि—त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आमला), चीता; पीपल, अजवायन, शुद्ध लोह चूर्ण और वायविडंग का चूर्ण प्रत्येक १६-१६ तोले लेकर, १६ सेर जल में पकावे। ८ सेर जल शेष रहने पर घृत से चिकने मिट्टी के घड़े में भर कर उसमें-(ठंडा हो जाने पर)-शहद ३२ तोले और पुराना गुड़ ५ सेर मिला कर, घड़े का मुख अच्छी तरह बन्द करके जौ के ढेर में दबा देवें। १ मास पश्चात् निकाल कर छान लेवे। और बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—हृद्रोग, पांडुरोग, बढ़ी हुई सूजन; तिल्ली का बढ़ना, भ्रम, अरुचि, खाँसी, श्वास तथा कुष्ठादि नाशक है। इसके गुण पुनर्नवारिष्ट के समान हैं।

---

२७५ * त्रिवृत्तासव—नं० १—कोष्ठबद्धता नाशक।

विधि—निशोथ १ भाग, जुलाफ़ा १ भाग दोनों का चूर्णकर;

+ फलत्रयं चित्रक पिप्पली च सदीप्यकं लोहरजो विडङ्गम्। चूर्णीकृतं कौडविकं द्विरंशं क्षौद्रं पुराणस्य तुलां गुडस्य ॥ मासं निदध्याद् घृतभाजनस्थं यवेषु सानेव निहन्ति रोगान् ॥

—गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक बोतल में भर, उसमें १२॥ भाग मद्य (७० से ९० प्रतिशत वाली) मिला, अच्छी तरह हिलाकर, कार्क लगाकर रक्खे। ७ या १५ दिन के पश्चात्; अच्छी तरह निचोड़ और छानकर, पुनः बोतलों में भरकर रख देवे।

मात्रा—१ माशा से ८ माशे तक।

गुण—प्रत्येक प्रकार के विष्टब्ध (कोष्ठबद्धता) के लिये यह औषधि उत्तम विरेचनीय मानी जाती है। जलोदर में भी इसके सेवन से लाभ होता है। इससे पेंठन मरोड़ आदि तकलीफें (जयपाल के सदृश) नहीं होतीं।

(मद्यासव)

---

२७६ त्रिवृत्तासव नं० २—पित्त शामक, विरेचक।

विधि—निशोथ का क्वाथ ठंडा किया हुआ ३ भाग, खांड की राब दो भाग, अग्नि पर गरम करके, पीछे मिट्टी के पात्र में भर कर मुँह बन्द करके, एक महीने तक रख कर आसव बना ले और यथोचित मात्रा से देवे।

(पंचकर्म विवेचन)

---

२७७ त्रिवृत्तारिष्ट—विरेचनार्थ।

(प्रेषक—वैद्यराज पं० बालकृष्ण शर्म्मा, भूपाल)

विधि—निसोथ ६४ तोले लेकर, कूटकर, १५ सेर जल में पकावे। पौने चार सेर (३०० तोले) जल शेष रहने पर, उतार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—पेट का अफ़ारा, अनिद्रा, मेदवृद्धि, स्थूलता और जीर्णज्वर को नष्ट करता है।

---

२७४ त्रिफलारिष्ट +—शोथ, हृद्रोगादि नाशक।

विधि—त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आमला), चीता; पीपल, अजवायन, शुद्ध लोह चूर्ण और वायविडंग का चूर्ण प्रत्येक १६-१६ तोले लेकर, १६ सेर जल में पकावे। ८ सेर जल शेष रहने पर घृत से चिकने मिट्टी के घड़े में भर कर उसमें-(ठंडा हो जाने पर)-शहद ३२ तोले और पुराना गुड़ ५ सेर मिला कर, घड़े का मुख अच्छी तरह बन्द करके जौ के ढेर में दबा देवें। १ मास पश्चात् निकाल कर छान लेवे। और बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—हृद्रोग, पांडुरोग, बढ़ी हुई सूजन; तिल्ली का बढ़ना, भ्रम, अरुचि, खाँसी, श्वास तथा कुष्ठादि नाशक है। इसके गुण पुनर्नवारिष्ट के समान हैं।

---

२७५ * त्रिवृत्तासव—नं० १—कोष्ठबद्धता नाशक।

विधि—निशोथ १ भाग, जुलाफ़ा १ भाग दोनों का चूर्णकर;

+ फलत्रयं चित्रक पिप्पली च सदीप्यकं लोहरजो विडङ्गम्। चूर्णीकृतं कौडविकं द्विरंशं क्षौद्रं पुराणस्य तुलां गुडस्य ॥ मासं निदध्याद् घृतभाजनस्थं यवेषु सानेव निहन्ति रोगान् ॥

—गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक बोतल में भर, उसमें १२॥ भाग मद्य (७० से ९० प्रतिशत वाली) मिला, अच्छी तरह हिलाकर, कार्क लगाकर रक्खे। ७ या १५ दिन के पश्चात्; अच्छी तरह निचोड़ और छानकर, पुनः बोतलों में भरकर रख देवे।

मात्रा—१ माशा से ८ माशे तक।

गुण—प्रत्येक प्रकार के विष्टब्ध (कोष्ठबद्धता) के लिये यह औषधि उत्तम विरेचनीय मानी जाती है। जलोदर में भी इसके सेवन से लाभ होता है। इससे ऐंठन मरोड़ आदि तकलीफें (जयपाल के सदृश) नहीं होतीं।

(मद्यासव)

---

२७६ त्रिवृत्तासव नं० २—पित्त शामक, विरेचक।

विधि—निशोथ का क्वाथ ठंडा किया हुआ ३ भाग, खांड की राब दो भाग, अग्नि पर गरम करके, पीछे मिट्टी के पात्र में भर कर मुँह बन्द करके, एक महीने तक रख कर आसव बना ले और यथोचित मात्रा से देवे।

(पंचकर्म विवेचन)

---

२७७ त्रिवृत्तारिष्ट—विरेचनार्थ।

(प्रेषक—वैद्यराज पं० बालकृष्ण शर्म्मा, भूपाल)

विधि—निसोथ ६४ तोले लेकर, कूटकर, १५ सेर जल में पकावे। पौने चार सेर (३०० तोले) जल शेष रहने पर, उतार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—पेट का अफ़ारा, अनिद्रा, मेदवृद्धि, स्थूलता और जीर्णज्वर को नष्ट करता है।

---

२७४ त्रिफलारिष्ट +—शोथ, हृद्रोगादि नाशक।

विधि—त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आमला), चीता; पीपल, अजवायन, शुद्ध लोह चूर्ण और बायविडंग का चूर्ण प्रत्येक १६-१६ तोले लेकर, १६ सेर जल में पकावे। ८ सेर जल शेष रहने पर घृत से चिकने मिट्टी के घड़े में भर कर उसमें-(ठंडा हो जाने पर)-शहद ३२ तोले और पुराना गुड़ ५ सेर मिला कर, घड़े का मुख अच्छी तरह बन्द करके जौ के ढेर में दबा देवें। १ मास पश्चात् निकाल कर छान लेवे। और बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—हृद्रोग, पांडुरोग, बढ़ी हुई सूजन; तिल्ली का बढ़ना, भ्रम, अरुचि, खाँसी, श्वास तथा कुष्ठादि नाशक है। इसके गुण पुनर्नवारिष्ट के समान हैं।

---

२७५ * त्रिवृत्तासव—नं० १—कोष्ठबद्धता नाशक।

विधि—निशोथ १ भाग, जुलाफ़ा १ भाग दोनों का चूर्णकर;

+ फलत्रयं चित्रक पिप्पली च सदीप्यकं लोहरजो विडङ्गम्। चूर्णीकृतं कौडविकं द्विरंशं क्षौद्रं पुराणस्य तुलां गुडस्य ॥ मासं निदध्याद् घृतभाजनस्थं यवेषु सानेव निहन्ति रोगान् ॥

—गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक बोतल में भर, उसमें १२॥ भाग मद्य (७० से ९० प्रतिशत वाली) मिला, अच्छी तरह हिलाकर, कार्क लगाकर रक्खे। ७ या १५ दिन के पश्चात्; अच्छी तरह निचोड़ और छानकर, पुनः बोतलों में भरकर रख देवे।

मात्रा—१ माशा से ८ माशे तक।

गुण—प्रत्येक प्रकार के विष्टब्ध (कोष्ठबद्धता) के लिये यह औषधि उत्तम विरेचनीय मानी जाती है। जलोदर में भी इसके सेवन से लाभ होता है। इससे पेंठन मरोड़ आदि तकलीफें (जयपाल के सदृश) नहीं होतीं।

(मद्यासव)

---

२७६ त्रिवृत्तासव नं० २—पित्त शामक, विरेचक।

विधि—निशोथ का क्वाथ ठंडा किया हुआ ३ भाग, खांड की राब दो भाग, अग्नि पर गरम करके, पीछे मिट्टी के पात्र में भर कर मुँह बन्द करके, एक महीने तक रख कर आसव बना ले और यथोचित मात्रा से देवे।

(पंचकर्म विवेचन)

---

२७७ त्रिवृत्तारिष्ट—विरेचनार्थ।

(प्रेषक—वैद्यराज पं० बालकृष्ण शर्म्मा, भूपाल)

विधि—निसोथ ६४ तोले लेकर, कूटकर, १५ सेर जल में पकावे। पौने चार सेर (३०० तोले) जल शेष रहने पर, उतार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर छान ले, और एक शुद्ध मटके में भर, उसमें-गुड़ २॥ सेर, और मुलैठी १० तोले चूर्ण कर मिला देवे। यथाविधि सन्धान कर, दो मास तक रक्खा रहने दे। पश्चात् छानकर काम में लावे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक। सवेरे खाली पेट थोड़े जल के साथ लेवे। रोगी की प्रकृति का विचार कर इसका सेवन कराना चाहिये।

गुण—अच्छा जुलाब होता है। उदर रोग, संग्रहणी, गुल्म रोग, शोथ, पांडु आदि दूर होते हैं और कोठा साफ़ हो जाता है।

(वैद्यक-चिकित्सासार)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

द

२७८ * दन्त्यरिष्ट—नं १—अर्श, ग्रहणी आदि नाशक।

विधि—दन्ती (जमालगोटे की जड़), चीते की जड़, दश-मूल (सालिवन, पिठवन, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, गोखरू, बेल की जड़, सोनापाठा, कुंभेर, पाढ़ल और अरनी) और हरड़, बहेड़ा, आमला प्रत्येक ४-४ तोले लेकर, सबको अधकुटा कर,

---

* दन्ती चित्रक मूलानामुभयोः पंचमूलयोः । भागान् पलांशा-नापोथ्य जलद्रोणे विपाचयेत् ॥ त्रिपलं त्रिफलायाश्च दलानां तत्र दाप-येत् । रसे चतुर्थ शेषे तु पूते शीते समावपेत् ॥ तुलां गुडस्य तत्तिष्ठेत् मासार्द्धं घृतभाजने । तन्मात्रया पिबेन्नित्यमर्शोभ्योऽपि प्रमुच्यते ॥ ग्रहणी पाण्डुरोगघ्नं वातवर्चोऽनुलोमनम् । दीपनञ्चारुचिघ्नञ्च दन्त्यारिष्ट-मिदं विदुः ॥

—चरक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१३ सेर जल में पकावे। चौथाई अर्थात् ३। सेर जल शेष रहने पर, छान कर, तथा ठंडा करके, उसमें ५ सेर गुड़ मिला, मिट्टी के चिकने पात्र में भर, अच्छी तरह उसका मुँह बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—बवासीर, ग्रहणी, पाण्डुरोग; कब्जी और अरुचि नाशक है। यह मल और वायु को यथोचित् मार्ग से निकाल कर, जठराग्नि को दीप्त करता है।

नोट—मटकी में पहले धाय के फूल और लोध का पीस कर लेप कर देना चाहिये, और लेप के सूख जाने के पश्चात् उसमें उक्त अरिष्ट का सन्धान करना चाहिए। —सम्पादक।

---

२७९ * दन्त्यरिष्ट—नं० २—अर्श, कृमि आदि नाशक।

विधि—हरड़, बहेड़ा, आमला, दशमूल और दन्ती प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले लेकर, १३ सेर जल में पकावे। (३२ सेर जल में पकाना ठीक होगा), ८ सेर जल शेष रहने पर, उसे छान कर, घृत से चिकने किये हुए मटके में भरकर उसमें—

---

* त्रिफला दशमूलानि निकुम्भानां पलं पलम्।
वारिद्रोणे श्रृतं पादशेषं गुड तुलायुतम् ॥
आज्य भाण्डे स्थितं मासं दन्त्यरिष्टो निषेवितः।
गुदज कृम्युदावर्त्त ग्रहणी पाण्डु रोगनुत् ॥
—वंगसेन।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

५ सेर गुड़ को अच्छी तरह घोलकर, पात्र का मुख यथाविधि सन्धान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। गरमी के दिनों में १५ दिन में ही यह अरिष्ट सिद्ध हो जाता है। इसे कोई २ जमीन में गाढ़कर रखते हैं। पश्चात् निकाल कर छान लेना चाहिए।

मात्रा—शक्तिमानानुसार १ तोला से २ तोले तक।

गुण—बवासीर, कृमि, उदावर्त, ग्रहणी रोग और पांडु नाशक है।

---

२८० दमनक-मरुवकासव—(स्वकृत)—विसूचिका नाशक।

विधि—दौना-मरुआ की पत्तियाँ १ भाग लेकर जवकुट कर, उसमें ५ गुनी मृतसंजीवनी सुरा मिला, बोतल में भर, अच्छी तरह दृढ़ कार्क लगाकर, ७ दिन तक सुरक्षित रक्खे। रोज एक बार हिला दिया करे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—२ से ४ बून्द तक। बताशे के साथ।

गुण—इसे नित्य प्रातःकाल के समय ४ दिन तक; केवल एक बार सेवन करने से, ४। ५ मास तक हैजा होने का भय नहीं रहता। विसूचिका निवारणार्थ आजकल जो इन्जैक्शन लगाया जाता है; उसकी अपेक्षा यह अधिक लाभप्रद है।

---

२८१ * दशमूलासव नं० १—क्षय, उदररोगादि नाशक।

---

* दशमूलं तुलार्द्धं च पौष्करं च तदर्धकम्। हरीतकीनां प्रस्थार्धं धात्री प्रस्थद्वयं तथा॥ चित्रकं पुष्करमितं चित्रकार्धं दुरालभा। गुडूच्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—सरिवन; पिठवन, बड़ी कटेरी; छोटी कटेरी; गोखरू; बेल की जड़, सोनापाठा, कुंभेर; पाढ़ल और अरणी इन १० औषधियों की जड़ प्रत्येक २०-२० तोले; पोहकरमूल १॥ सेर, हरड़ ६॥ छटांक, आमले १ सेर १० छटांक, चीता १॥ सेर; धमासा १२ छटांक, गिलोय ५ सेर, इन्द्रायन एकपाव (२०तो०), खैरसार ३२ तोले, विजयसार १६ तोले तथा मजीठ, मुलैटी; कूठ, कैथ; देवदारु; वायविडंग, चव्य, लोध, भारंगी, मेदा,

---

वै शतपलं विशाला पलपंचकम् ॥ खदिरस्य पलान्यष्टौ तदर्धं बीजकं तथा । मंजिष्ठा मधुकं कुष्ठं कपित्थं देवदारुच ॥ विडंगं चविकं लोध्रं भार्ङ्गी पाष्टवर्गकम् । कृष्णाजाजी पिप्पली च क्रमुकं पञ्चकं सठी ॥ प्रियङ्गु सारिवा मांसी रेणुका नागकेशरम् । त्रिवृता रजनी रास्ना मेषश्रृंगी पुनर्नवा ॥ शतावरीचेन्द्रयवा मुस्ता द्विपलकाञ्चले । चतुर्गुणे पादशेषे द्राक्षा षष्टिपलं क्षिपेत् ॥ त्रिंशत्पलानि धातक्या गुड पल चतुःशतम् । मधु द्वात्रिंशत्पलं चैव सर्वमेकत्र कारयेत् ॥ भाण्डे पुराणे स्निग्धे च मांसीमरिचि धूपिते । पृथक् द्विपलिकानेतान् पिप्पली चन्दनं जलम् ॥ जातीफलं लवङ्गं च त्वगेलापत्रकेशरान् । कर्षमात्रां च कस्तूरीं दत्वा पक्षं निधापयेत् ॥ कनकद्रुपलं चूर्णं क्षिपेन्निर्मलता भवेत् । पक्षादूर्ध्वं पिबेदस्तु मात्रया च यथाबलम् ॥ धातुक्षयं जयत्येव कासं पंचविधं तथा । अर्शांसि षट्प्रकाराणि तथाष्टावुदराणि च ॥ प्रमेहं च महाव्याधिमरुचिं पांडुरुक् तथा । सर्ववातांस्तथा शूलं श्वासं छर्दिमसृग्दरम् ॥ अष्टादशैव कुष्ठानि शोफं शूलं भगन्दरम् । शर्कराश्मं मूत्रकृच्छ्रमश्मरीञ्च विनाशयेत् ॥ कृशस्य पुष्टिं कुरुते पुष्टस्य च महाबलम् । महावेगो महातेजो महावीर्यो विलोक्यते । कामपुष्टिकरो ह्येष वन्ध्यानां पुत्रदो भवेत् ॥

—योगचिन्तामणि ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महामेदा, ऋद्धि, वृद्धि, जीवक, ऋषभक, काकोली, क्षीर-काकोली (इनके अभाव में-असगंध, सारिवा, गिलोय, वंश-लोचन, खिरेंटी, सहदेवी लेवे) कालाजीरा, पीपल, सुपारी, पद्माख, कचूर, फूलप्रियंगु, सारिवा, जटामांसी, रेणुका; नाग-केशर, निसोथ, हल्दी, रास्ना, मेढ़ासिंगी, पुनर्नवा (साठी), शतावर, इन्द्रजौ, और नागरमोथा प्रत्येक ८-८ तोले लेकर, सब को अधकुटा करके चौगुने पानी में पकावे। जब चौथाई पानी शेष रहे, तब उसे छानकर, घृत से चिकने किये हुए पुराने तथा जटामांसी और कालीमिरच से धूपित मटके में भर देवे और उसमें—३ सेर मुनक्का, १॥ सेर ८ तोले शहद, १॥ सेर धाय के फूलों का चूर्ण, २० सेर गुड़, तथा पीपल, सफेदचन्दन, सुगन्धवाला, जायफल, लौंग; दारचीनी, इला-यची, तेजपात और नागकेशर का चूर्ण प्रत्येक ८—८ तोले मिलाकर, मटके का मुख अच्छी तरह बन्द कर देवे। १५ दिन के बाद छानकर, एक बड़ी शीशी में भरकर, उसमें १ तोला कस्तूरी को कपड़े की पोटली में बाँध कर डाले या रेक्टीफाइड स्प्रिट (मद्यसार) में घोटकर मिला देवे, और साथ ही में ५ तोले धतूरे के फलों का चूर्ण मिला दे। जब आसव स्वच्छ हो जाय तब बोतलों में भरकर रख दे। १५ दिन के बाद इस का सेवन प्रारंभ करे।

मात्रा—६ माशे से १ तोला तक।

गुण—धातुक्षय, खाँसी, श्वास, ६ प्रकार की बवासीर, आठ प्रकार के उदररोग, प्रमेह, अरुचि, पाण्डु, सर्व प्रकार के वात विकार, शूल, वमन; रक्तप्रदर, १८ प्रकार के कुष्ट, शोथ,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भगन्दर, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र और अश्मरी को नष्ट करता है। कृश को पुष्ट, पुष्ट को अत्यन्त बलवान, वेगवान, तेजयुक्त और वीर्यवान बनाता है, वन्ध्या स्त्री यदि इसका नियमपूर्वक सेवन करे तो उसके सुन्दर सन्तान उत्पन्न होती है।

---

२८२ * दशमूलासव नं० २—संग्रहणी नाशक।

विधि—दशमूल, हल्दी, जीवक ऋषभक (इन दोनों के अभाव में विदारीकन्द लेवे) और चीते की जड़ ये प्रत्येक १-१ पाव लेकर जवकुट कर, १ मन १२ सेर जलमें पकावे। १३ सेर जल शेष रहनेपर, उसे छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भरे, फिर उसमें-गुड़ १६ तोले, शहद ३२ तोले तथा फूलप्रियंगु, मजीठ, वायविडंग, मुलैठी, पीपल और पठानी लोध का चूर्ण प्रत्येक ४-४ तोले मिला, पात्र का मुख बन्द कर, भूमि में गाढ़ देवे। १५ दिन बाद निकालकर, छानकर, बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तोले से २॥ तोले तक।

गुण—अग्निदीपक, रक्तपित्तनाशक तथा अफारा, कफ, हृद्रोग, पाण्डुरोग और शरीर की ग्लानि तथा अंगफूटन (पीड़ा)

---

* द्विपञ्चमूल रजनी जीवकर्षभक चित्रकान्। पृथक् पञ्चपलैर्भागैश्चतुर्द्रोणेऽम्भसः पचेत्॥ द्रोणशेषे रसे पूते गुडस्य कुडवं क्षिपेत्। चूर्णितान्यपलिकान् सर्वान्दद्याच्चात्र समाक्षिकान्। प्रियंगु पुष्पं मंजिष्ठा विडङ्गं मधुकं कणाम्। लोध्रं सावरकं चैव मासार्द्धं स्थापयेत्क्षितौ॥ दशमूलासवः सिद्धो दीपनो रक्तपित्तनुत्। आनाह कफहृद्रोग पाण्डुरोगाङ्गसादनुत्॥

—वंगसेन।

CC-0. In Public Domain. Funding by JKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को नष्ट कर देता है ।

नोट—देखिये—मूलासव ।

---

२८३ दशमूलासव नं०—३—योषापस्मार नाशक ।

विधि—दशमूल की प्रत्येक औषधि (सरिवन, पिठवन, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, गोखरू, बेल, सोनापाठा, कुंभेर, पाढ़ल और अरनी प्रत्येक की जड़ लेवे) ५-५ तोले, हलदी, धमासा, शतावर और वाराहीकन्द प्रत्येक ५-५ तोले लेकर, सबको कूटकर, १५ सेर पानी में पकावे । जब ६ सेर जल बाकी रह जाय, तब उतार कर, छान लेवे और शुद्ध चिकने मटके में भरकर, उसमें—२॥ सेर गुड़ तथा महुये के फूल, नागरमोथा, फूलप्रियंगु, मजीठ, वायविडंग, सुगन्धवाला (या खस), मुलैठी और लोध प्रत्येक औषधि २-२ तोले कूटकर मिला देवे। बर्तन का मुँह अच्छी तरह बन्द करके २० दिन तक रक्खा रहने देवे । पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे ।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक । प्रातःसायं सेवन करे ।

गुण—दो मास तक बराबर पथ्याचरण पूर्वक सेवन करने से हिस्टीरिया रोग दूर हो जाता है । तथा मंदाग्नि, पेट का अफारा, कफ के रोग, हृदयरोग; वायु के विकार, मस्तिष्क के रोग और मानसिकरोग दूर होते हैं । मूत्र साफ़ उतरता है ।

("वैद्य"-मुरादाबाद)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२८४ दशमूलारिष्ट * नं० १—वाजीकरण, प्रसूति रोगादि नाशक।

विधि—सरिवन, पिठवन, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, गोखरू, बेल की जड़ की छाल, सोनापाठा, कुंभेर, पाढ़ल की छाल और

---

* दशमूलानि कुर्वीत भागैः पंचपलैः पृथक् । पंचविंशत्पलं कुर्याच्चित्रकं पौष्करं तथा ॥ कुर्याद्विंशत्पलं लोध्रं गुडूची तत्समा भवेत्। पलैः षोडशभिर्धात्री रविसंख्यैर्दुराळभा ॥ खदिरो बीजसारश्च पथ्याचेति पृथक् पलैः। अष्टाभिर्गुणितैः कुष्ठं मंजिष्ठा देवदारु च॥ विडंगं मधुकं भार्ङ्गी कपित्थोऽक्षः पुनर्नवा। चव्यं मांसी प्रियंगुश्च सारिवा कृष्णजीरकम् ॥ त्रिवृता रेणुकं रास्ना पिप्पली ऋमुकः शटी। हरिद्रा शतपुष्पा च पद्मकं नागकेशरम् ॥ मुस्तामिन्द्रयवः शृङ्गी जीवकर्षभकौ तथा। मेदा चान्या महामेदा काकोल्यौ ऋद्धिवृद्धिकें ॥ कुर्यात् पृथक् द्विपलिकान् पचेद्दृष्टगुणे जले। चतुर्थांशं श्रुतं नीत्वा मृद्भाण्डे सन्निधापयेत् ॥ ततः षष्टिपलां द्राक्षां पचेन्नीरे चतुर्गुणे त्रिपादशेषं । शीतं च पूर्वक्काथे श्रुतं क्षिपेत् ॥ द्वात्रिंशत्पलिकं क्षौद्रं दद्याद्गुडं चतुःशतम्। त्रिंशत्पलानि धातक्याः कंकोलं जल चन्दने ॥ जातीफलं लवंगं च त्वगेला पत्रकेशरम्। पिप्पली चेति संचूर्ण्य भागैर्द्विपलिकैः पृथक् ॥ क्षाणमात्रां च कस्तूरीं सर्वमेकत्र निक्षिपेत्। भूमौ निखातयेद्भाण्डं ततो जातरसं पिबेत्॥ कनकस्य फलं क्षिप्त्वा रसं निर्मलतां नयेत्। ग्रहणीमरुचिं शूलं श्वास कास भगन्दरान् ॥ वातव्याधिं क्षयं छर्दिं पाण्डुरोगं च कामलाम्। कुष्ठान्यर्शांसि मेहांश्च मन्दाग्नि मुदराणि च शर्करामश्मरीं मूत्रकृच्छ्रं धातुक्षयं जयेत्। कृशानां पुष्टिजननो वन्ध्यानां गर्भदः परः ॥ अरिष्टो दशमूलाख्यः तेजः शुक्रबलप्रदः ॥

—भैषज्यरत्नावली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अरनी की जड़ प्रत्येक २०-२० तोले, चीते की जड़ तथा पोहकरमूल प्रत्येक १।-१। सेर, पठानीलोध और गिलोय १-१ सेर, आमले ६४ तोले, धमासा ४८ तोले, खैरसार, विजयसार और हरड़ ३२-३२ तोले तथा कूठ, मजीठ, देवदारु, वायविडंग, भुलैंठी, भारंगी, कैथ का गूदा, बहेड़ा, पुनर्नवा (बिसखपरा), चव्य, जटामांसी (बालछड़), फूलप्रियंगु, सारिवा, कालाजीरा, निसोथ, रेणुका (संभालू के बीज), रास्ना, पीपल, दक्षिणीसुपारी, कचूर, हल्दी, सौंफ, पद्माख, नागकेशर, नागरमोथा, इन्द्र जौ, काकड़ासिंगी (इसके स्थान में सोंठ डाल सकते हैं), जीवक, ऋषभक (अभाव में विदारीकन्द), मेदा महामेदा (अभाव में शतावरी), काकोली, क्षीरकाकोली (अभाव में असगन्ध) और ऋद्धि वृद्धि (अभाव में वाराही कन्द) प्रत्येक ८-८ तोले लेकर जवकुट कर, २ मन २४ सेर १३ छटांक जल में पकावे । जब २६ सेर १६ तोले जल शेष रहे, तब उतारकर छान लेवे । पश्चात् ३ सेर मुनक्का को १२ सेर जल में पकाकर, ६ सेर जल शेष रहने पर, छान लेवे और इसे तथा उपरोक्त क्वाथ को मिट्टी के अच्छे बड़े तथा घृत से चिकने किये हुए मटके में भर, उसमें-शहद १सेर १०छटांक, गुड़ २०सेर, धाय के फूलों का चूर्ण १॥ सेर तथा कंकोल, सुगन्धवाला, सफेदचन्दन, जायफल, लौंग, दारचीनी, छोटी इलायची, तेजपात, नागकेशर और छोटीपीपल प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले, मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर जमीन में गाड़ देवे । एक मास के पश्चात् निकालकर, दूसरे शुद्ध मटके में छानकर भरे, और उसमें-४ माशे कस्तूरी को कपड़े की पोटली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में बाँधकर डाल देवे अथवा सुरा (रेक्टिफाइड स्पिरट) में घोलकर डाल देवे, तथा थोड़ा सा निर्मली के फलों का चूर्ण भी उसमें मिलाकर रख देवे। ४ या ५ दिन बाद जब अरिष्ट साफ़ हो जाय, तब छानकर, या निथार कर बोतलों में भरकर मजबूत डाट (काग) लगा कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २ तोले तक।

गुण—प्रसूतिरोग; संग्रहणी, अरुचि, शूल, श्वास, खाँसी, भगन्दर, वातव्याधि, क्षय, वमन, पाण्डुरोग, कामला, कुष्ठ, बवासीर, प्रमेह, मन्दाग्नि, उदररोग, शर्करामेह; पथरी, मूत्र-कृच्छ्र तथा धातुक्षय को नष्ट करता है। यह अरिष्ट पौष्टिक, बलकारक, वीर्यवर्धक, वन्ध्यत्वदोषनाशक और तेजवर्धक है। वातप्रधान क्षय तथा नजले (प्रतिश्याय) को शीघ्र दूर करता है, क्षय रोगी के ज्वर को शीघ्र भगाता है। श्वेतप्रदर से पीड़ित स्त्री यदि इसे दिन में ३ बार, प्रत्येक बार दो तोला अरिष्ट में ५ तोला जल मिलाकर सेवन करे तो उसका रोग शीघ्र ही दूर होकर दुग्ध की शुद्धि हो जाती है। यह अरिष्ट सूतिका रोग की महौषधि है। सद्य-प्रसूता स्त्री को; बिना जल मिलाये दो-दो तोले की मात्रा में, पिलाने से जनन-क्रिया की पीड़ा एवं तज्जनित उपद्रव (ज्वर, शूल, गुल्म, प्रलाप, अङ्गमर्द, योनि-शूल, आध्मान, मूत्रसङ्ग, भ्रम, मूर्च्छादि तथा वातजन्य व्याधियाँ) नहीं होने पाते।

प्रसूता स्त्री को रक्तस्राव के कारण जो क्षीणता हो आती है, वह इस अरिष्ट के सेवन से शीघ्र ही दूर हो जाती है और बालक को यथोचित शुद्ध दूध की प्राप्ति होती है। जिस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रसूता स्त्री को दूध कम या बिल्कुल ही न होता हो, उसे शतावरी (गीली मिले तो दो तोले और सूखी मिले तो १ तो०) अधकुटी कर, २० तोले जल में मिलाकर पकावे, ५ तोले शेष रहने पर; छानकर, उसमें यह अरिष्ट १ तोला मिला, प्रातःसायं आधा २ सेवन करावे। २१ या ४२ दिन में पूर्ण लाभ होता है।

वंध्यत्वदोष—किसी २ स्त्री को गर्भाशय के दोष के कारण या शारीरिक कमज़ोरी, संग्रहणी, वातव्याधि, श्वासकासादि विकारों के कारण, गर्भधारण ही नहीं होने पाता, या गर्भपात हो जाता है; यदि कोई संतति हो भी जावे, तो वह अशक्त; कफविकार, अपस्मार, डम्बा आदि रोगों से पीड़ित होकर शीघ्र ही चल बसती है—ये सब विकार इस अरिष्ट के सेवन से दूर हो जाते हैं तथा योग्य प्रकार से गर्भधारण होकर पूर्णायुषी संतति होती है। किंतु ऐसी हालत में इसका सेवन पथ्याचरण एवं ब्रह्मचर्यपूर्वक लगभग १॥ साल तक करना चाहिये।

समुद्र यात्रा के कारण जिस स्त्री का ऋतुस्राव (मासिकधर्म) बन्द हो गया हो, उसे इसका सेवन लाभदायक है। क्षय रोगी को यह अरिष्ट, 'काडलिव्हर आईल' के साथ, समभाग या न्यूनाधिक प्रमाण में मिश्रण कर सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है, ऐसा कई डाक्टरों का तथा हमारा अनुभव है।

इस अरिष्ट में दस्त साफ़ करने का गुण नहीं है, प्रत्युत इसमें अवरोधक गुण होने से ही संग्रहणी के समान विकारों पर यह विशेष उपयोगी है। इसमें वातनाशक, उत्साहजनक एवं पौष्टिक गुणों की विशेषता होने से क्षय के समान विकारों पर तथा प्रसूति रोगों पर यह अपना पूर्ण प्रभाव दिखलाती है,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किंतु मलबद्धता निवारणार्थ कुमारी आसव आदि अन्य सौम्य रेचक औषधि देते रहना आवश्यक है।

नोट—स्वामी हरिशरणानन्द जी इस अरिष्ट की उक्त प्राचीन विधि में परिवर्तन करते हुए, उसे इस प्रकार बनाने की उपादेय सम्मति देते हैं। उसका सारांश यह है—अम्ल होने के कारण आमले और कैथ इसमें नहीं डालने चाहियें। तथा दशमूल से लेकर ऋद्धि वृद्धि तक की सब औषधियाँ जवकुट कर, रात्रि में, १ मन गरम जल में भिगो देवे और सवेरे इसे किसी कलई किये हुए पात्र में या मिट्टी के मटकों में एक मन जल और छोड़कर पकावे, यदि एक बर्तन में न पके तो २। ३ बर्तनों में पकावे, जब आधा जल रह जाय तो उसे ठंडा होने देवे। फिर अरिष्ट बनाने योग्य, गूगल या लोबान की धूनि से धूपित शुद्ध पात्र को किसी निश्चित स्थान पर (यदि ग्रीष्म ऋतु हो तो उसे ऐसे खुले स्थान में रक्खे जहाँ उसके अनुकूल शीतलता बनी रहे, यदि शीतऋतु हो तो अन्नराशि आदि में रक्खे, जिससे पात्र बाहर की वायु के संपर्क से शीतल न होने पावे) उसमें उक्त क्वाथ को, शुद्ध हाथों से खूब मलते हुए छान कर भर देवे। पश्चात् ३ सेर मुनक्का जो खूब साफ़ की हुई हों १२ सेर जल में उबाले, जब मुनक्का गल जायँ, उतारकर सुखोष्ण होजाने पर, खूब शुद्ध हाथों से मल २ कर क्वाथ जैसा बना देवे, जब मुनक्का धुल जायँ, तब शहद दो सेर और खांड (चीनी) ४ सेर मिलावे। फिर दोनों क्वाथों का उत्ताप देखे। यदि शीत ऋतु हो और क्वाथ दोनों ठंडे हो गये हों, तो द्राक्षा-क्वाथ को पुनः खूब गरम करके दशमूलादि क्वाथ में मिला देवे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यदि ग्रीष्मऋतु हो तो दोनों क्वाथ शीतल होनेपर एकत्र करदेवे। शीतऋतु में क्वाथ सुखोष्ण और ग्रीष्म में शीतल होना चाहिए। यह स्मरण रहे कि जिस पात्र में ये एकत्र किये गये हों वह कुछ खाली रहे, मुख तक न भराजाय। पश्चात् उसमें किण्व सूखा हुआ १ सेर, यदि यह न प्राप्त हो तो द्रवरूप किण्व या आसवारिष्ट का जगल भाग २ से ५ सेर तक, छोड़कर घोल को खूब हिला दे, फिर शीतलचीनी, लौंग, चन्दन, दारचीनी, छोटी इलायची, नागकेशर आदि सुगन्धित द्रव्य ४-४ तोले खूब महीन किये हुये, तथा धायके फूल १ सेर मिला, पात्र को किसी जालीदार ढकने से या स्वच्छ कपड़े से ढक देवे। २४ घंटे के बाद इसमें कुछ न कुछ परिवर्तन होने लगता है। उत्ताप को अधिक उष्ण और उष्णकाल हो तो इसके परिवर्तन होने तक, शीतकाल हो तो इसके शीतल बने रहने पर दृष्टि रक्खे। जब परिवर्तन होने लगजाय तो कम से कम दिन में, इसे एक या दो बार अवश्य हिला दे। सप्ताह या डेढ़ सप्ताह के बाद जब परिवर्तन शांत होने लगे, तब उस समय इसमें १० सेर खांड और छोड़कर हिला दे। फिर दूसरे या तीसरे दिन इसे एक बार छानकर, दुबारा फिर और छान इसमें कस्तूरी ४ माशे, केशर १ तोला खूब इसी द्रव में घोटकर मिला देवे, और बोतलों में भर रख ले। कुछ दिन दिन के बाद यह बोतलों में रक्खा २ फट कर जगल भाग नीचे चला जायगा और स्वच्छ अरुण वर्ण का द्रव ऊपर रहेगा, प्रति बोतल में जगलभाग १ छटाँक के लगभग होता है। जिस समय इस द्रव के दोनों भाग भिन्न २ होजाँय, उस समय स्वच्छ द्रव को ऊपर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२ से निचार कर भिन्न बोतलों में भर कर रख देवे। देखने में भी यह स्वच्छ अरुण वर्ण का स्वादिष्ट दशमूलारिष्ट होगा। जो जगल (गाद) भाग बचे उसको संभाल कर रख छोड़े यह फिर किसी नये आसवारिष्ट बनाने के समय किण्व या जाग का काम देगा।

और भी एक नूतन विधि—उपरोक्त योग जितना लिखा है, नूतन विधि से बनाने के समय इतना नहीं बनाना चाहिए चतुर्थांश या अष्टमांश बनावे। दशमूलारिष्ट की प्रत्येक वस्तु को खूब महीनकर, शाम को अष्टगुण जल में भिगो दे, सवेरे इसे पकावे। आधा शेष रहने पर, उतार कर और मलकर छान लेवे। यदि इसको आधुनिक फिल्टर पेपर में छाना जाय या ब्लाटिंग पेपर में छाना जाय तो ठीक होता है। पश्चात् इसमें सुगन्धयुक्त द्रव्यों को पीसकर मिला दे, और साथ ही में हली या हलाहल (?) पाव भर मिलाकर बोतलों में भरकर रख दे। कुछ दिन के बाद सुगन्ध-द्रव्यों का स्थूलभाग नीचे बैठ जायगा, उस समय ऊपर २ का द्रव भाग अलग उतारकर बोतलों में भरकर रख दे और पीते समय इसमें शहद मिला कर सेवन करे। इसकी मात्रा १ तोला से २ तोले तक। जल में मिलाकर देवे। इसी प्रकार सब अरिष्ट बनाए जा सकते हैं।

(आसव—विज्ञान)

---

२८९ दशमूलारिष्ट * नं० २—अर्श, ग्रहणी आदि नाशक।

---

* द्विपञ्चमूली दन्ती चित्रक पथ्यानां तुलामाहृत्य जलचतुर्द्रोणे विपाचयेत्। ततः पादावशिष्टं कषायमादाय सुशीतं गुडतुलया सहो-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—दशमूल, दन्ती, चीते की जड़ और हरड़ प्रत्येक ५-५ सेर कुल मिलाकर ६५ सेर लेकर सब को जवकुट करके ३ मन ८ सेर जल में पकावे, जब १६ सेर जल शेष रहे तब उसे छानकर घृत से चिकने किये हुये मटके में भरदे; ठंडा होजाने पर उसमें ५ सेर गुड़ मिला, कर मुख अच्छी तरह बन्द करके जौ के ढेर में दबा देवे। १ मास पश्चात् निकाल छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २ तोले तक।

गुण—बवासीर, संग्रहणी, पाण्डुरोग, उदावर्त और अरुचि नाशक है। तथा अग्नि को प्रदीप्त करता है।

---

२८६ दाडिमासव—(स्वकृत) नं० १ वहुसूत्रादि पर।

विधि—अनार की जड़ की छाल, पत्र पुष्प और कच्चे फल सब लगभग ५ सेर लेकर, जवकुट कर १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर, ठंडा होजाने पर, उसमें शहद १५ सेर, धायके फूलों का चूर्ण १ सेर, नागरमोथा, हल्दी, दारुहल्दी और वायविडंग प्रत्येक ८-८ तोले चूर्ण कर मिला कर, पात्र का मुख यथाविधि सन्धान कर, १५ दिन तक रक्खा रहने दे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

न्निश्य घृतभाजने निक्षिप्य मासमुपेक्षेत यवपल्ले ॥ ततः प्रातः प्रातर्मात्रां पाययेत, तेनार्शोग्रहणी दोष पाण्डुरोगोदावर्त्तारोचका न भवन्ति दीप्तोऽग्निश्च भवति ॥ —सुश्रुत।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—बहुमूत्र, प्रमेहादि नाशक है, तथा आन्त्र के कृमियों को नष्ट करता है।

---

२८७ दाडिमासव नं० २—रक्तपित्त, क्षय आदि नाशक।

विधि—अनार का रस आधा सेर, अंगूर का रस १ पाव, सेवका रस १ पाव, दशमूल का चूर्ण १ पाव, छोटी कटेरी आधा सेर, पीपल और मुलैठी प्रत्येक १०-१० तोले लेवे। दशमूलादि को कूटकर १६ सेर जल में पकावे, शेष क्वाथ जल ४ सेर रहने पर, छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर, ठंडा हो जाने पर, उसमें उक्त अनार, अंगूर और सेव का रस तथा धायके फूलों का चूर्ण १। पाव और मिश्री २॥ सेर पीसकर मिला देवे। पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १ मास पर्यन्त सुरक्षित स्थान में रखा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१। तो० से २॥ तो० तक।

गुण—रक्तपित्त, क्षय, उरक्षत, फेफड़े की बीमारी, सूखी खांसी और दाहज्वर पर लाभकारी है, हाथ पैर के तलुओं की जलन पर भी लाभप्रद है।

(अ० यो० माला)

नोट—लेखक (अज्ञात) ने इसका नाम 'सुधासव' रक्खा था।

—सम्पादक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२८८ दाडिमाद्यासव नं० ३—अजीर्णादिनाशक ।

(श्री वैद्यभूषण पं० मक्खनलालजी शर्मा खेरली)

विधि—पके और मीठे अनार के दाने ३ सेर, छोटे अंगूर, ३ सेर दोनों का स्वरस खादी के कपड़े में खूब मसल और निचोड़ कर निकाल ले फिर शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें ३ सेर शहद तथा लौंग, जावित्री, जायफल, और तेजपात प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोले डालकर, पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे

मात्रा—१ तो० से २ तोले तक ।

गुण—अजीर्ण, अग्निमांद्य, खून की कमी, घबराहट, जी मिचलाना, सिर का दर्द, आदि शीघ्र ही दूर करता है। पाचन-शक्ति को ठीक करते हुये बल की वृद्धि करता है ।

दारचीन्यासव—देखिये, त्वक्पत्रासव ।

२८९. * दारुहरिद्रासव—ज्वरनाशक ।

विधि—दारुहल्दी के १ भाग चूर्ण में ८ भाग मद्य (४० से ६० प्रतिशत वाली) मिला, एक शुद्ध बड़ी बोतल में या चीनी मिट्टी के पात्र में भरकर, दृढ़ मुख मुद्राकर, ७ या १५ दिन तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् अच्छी तरह मसलते हुये छानकर शीशियों में भरकर रख दे। सन्धानावधि में बोतल को बीच २ में हिलाते रहना चाहिए ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—१ माशा से ८ माशे तक। या ३० बूँद से १२० बूँद तक।

गुण—शीतज्वर को रोकने के लिये, ज्वर वेग के पूर्व ही देवे। यह ग्राही तथा दीपक है, अधिक मात्रा में हल्की दस्तावर है, स्वेद-जनक है। इसका ज्वर नाशक प्रभाव कुनैन से बढ़कर है। एकाहिक, द्व्याहिक आदि ज्वर तथा रोग जन्य निर्बलता में इसके सेवन से लाभ होता है।

(मद्यासव)

नोट—सरदी के ज्वर को रोकने के लिये शीत लगने से पहिले ही इसका सेवन कराना चाहिये। यह आसव पौष्टिक भी है। पौष्टिक गुणों के लिये इसे ३ से ६ ड्राम तक की मात्रा से देना चाहिए। —संपादक।

---

२६० दुरालभासव * —संग्रहणी, पाण्डु आदि नाशक।

विधि—धमासा १ सेर १० छटाँक, आमला १३ छटाँक, चीते की जड़ और दन्ती ८-८ तोले तथा उत्तम वज़नदार १०० हरड़ लेकर, उनको अधकुटा करके, १ मन १२ सेर जलमें

---

* प्रस्थौ दुरालभाया द्वौ, प्रस्थमामलकस्य च। मुष्टी चित्रकदन्त्योर्द्वे प्रत्यग्रं चाभया शतम्॥ चतुर्द्रोणेऽम्भसः पक्त्वा शीतं द्रोणावशेषितम्। गुडस्य द्विशतं पूतं मधुनः कुडवान्वितम्॥ तद्वत्प्रियङ्गोःपिप्ल्या विडङ्गानाञ्च चूर्णितैः। कुडवैर्धृतकुम्भस्थं षक्षाज्जातं ततः पिबेत्॥ ग्रहणी पाण्डु रोगार्शः कुष्ठ वीसर्प मेहनुत्। स्वर वर्णकरश्चैष रक्तपित्त कफापहः॥

—चरक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पकावे । १३ सेर जल शेष रहने पर, उसे छानकर, ठंडा करले, और शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें १० सेर गुड़ तथा शहद, फूलप्रियंगु, पीपल, और वायविडंग का चूर्ण प्रत्येक १६-१६ तोले मिला कर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे । पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक।

गुण—संग्रहणी, पाण्डु, बवासीर, कुष्ठ, विसर्परोग, प्रमेह, रक्तपित्त और कफ नाशक, तथा स्वर और वर्ण (कान्ति) को सुधारने वाला है।

नोट—गदनिग्रह ग्रन्थ में यह 'दुरालभारिष्ट' नाम से दिया गया है।

---

२६१ दुरालभारिष्ट * नं० १—अर्श, ग्रहणी आदि नाशक।

विधि—धमासा १३ छटाँक, चीते की जड़, बासा (अडूसा) मूल, हरड़, आमला, पाठा, सोंठ, और दन्ती ८-८ तोले लेकर

---

* दुरालभायाः प्रस्थः स्याच्चित्रकस्य वृषस्य च । पथ्यामलकयोश्चैव पाठाया नागरस्य च ॥ दन्त्याश्च द्विपलान् भागान् जलद्रोणे विपाचयेत् । पादावशेषे पूते च सुशीते शर्कराशतम् ॥ प्रक्षिप्य स्थापयेत् कुम्भे मासार्द्धं घृतभाजने । प्रलिप्ते पिप्पलीचूर्ण प्रियङ्गु क्षौद्र सर्पिषा ॥ तस्य मात्रां पिबेत्काले शार्करस्य यथाबलम् । अर्शांसि ग्रहणीदोषमुदावर्त्तमरोचकम् ॥ शकृन्मूत्रानिलोद्गार विबन्धानग्निमार्दवम् । हृद्रोगं पाण्डुरोगञ्च सर्वमेतेन साधयेत् ॥

—चरक ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, क्वाथ को छान लेवे, तथा ठन्डा होने पर, एक शुद्ध मटके में (मटके को घी से चिकना कर, उसमें पीपल, चव्य, प्रियंगु के चूर्ण को शहद और घी में मिला कर लेप कर देना चाहिये) भर कर, उसमें खाँड ५ सेर, मिला कर, अच्छी तरह पात्र का मुख बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे, पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक।

गुण—बवासीर, ग्रहणी दोष, उदावर्त, अरुचि, को नष्ट करने वाला है, मलमूत्र, अपानवायु तथा ऊर्ध्व वायु (डकार) को खोलने वाला, मन्दाग्नि, हृद्रोग एवं पाण्डुरोग को नष्ट करता है।

नोट—गदनिग्रह और योगरत्नाकर में इसका नाम 'शर्करासव' रक्खा गया है।

---

२९२ दुरालभारिष्ट * नं० २—अर्श, ग्रहणी आदि नाशक।

---

* पचेद्दुरालभाप्रस्थं द्रोणेऽपां प्रास्तैः सह। दन्ती पाठाग्निविजया वासामलक नागरैः॥ तस्मिन्निस्ता शतं दद्यात्पादस्थेऽन्यच्च पूर्ववत्। लिम्पेत् कुम्भं तु फलिनी कृष्णा चव्याज्यमाक्षिकैः॥ दत्वा प्रस्थं च धातक्या स्थापयेद्घृतभाजने। पक्षात् स शीलितोऽरिष्टः करोत्यग्निं निहन्ति च॥ गुदज ग्रहणी पाण्डु कुष्ठोदर गरज्वरान्। स्वयथु प्लीह हृद्रोग गुल्म यक्ष्म वमी कृमीन्॥

—वाग्भट।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—धमासा १३ छटाँक, दन्ती, पाठा, चीते की जड़, हरड़ (इसके स्थान में भांग ले सकते हैं) बासा, आमला और सोंठ प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले लेकर, १३ सेर जल में पकावे। जब ३। सेर जल शेष रहे, तब छानकर, एक शुद्ध मटके में (मटके के भीतर फूलप्रियंगु, पीपल, तथा चव्य के चूर्ण को घी और शहद में मिला लेप कर देवे) भर, उसमें मिश्री ५ सेर और धायके फूलों का चूर्ण १३ छटाँक मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक।

गुण—यह अग्निवर्धक, बवासीर, पाण्डु, संग्रहणी, कुष्ठ, उदररोग, विषदोष, ज्वर, सूजन, तिल्ली, हृदय के रोग, गुल्म (गोला) यक्ष्मा (क्षय) और वमन नाशक है। इसके सेवन से कृमि विकार भी दूर होजाता है।

---

२६३ देवदार्वासव * नं० १—प्रमेह, मूत्रकृच्छ्रादि नाशक।

---

* देवदारोस्तुलार्धं तु वासायाः पल विंशतिः। दन्ती शक्राह्वमिष्टा तगरं रजनी द्वयम्॥ रास्ना मुस्तं शिरीषं च कृमिघ्नः खदिरार्जुनौ। भागान्दशपलानेषां गुडूच्याश्चित्रकस्य च॥ चन्दनस्य यवान्याश्च रोहिष्या वत्सकस्य च। भागान्पंचपलानेषामष्टद्रोणेऽम्भसः पचेत्॥ द्रोणशेषे कषाये तु पूते शीते प्रदापयेत्। धातक्याः षोडशपलं माक्षिकस्य तुलात्रयम्॥ चतुष्पलं त्रिजाताच्च व्योषस्य च पलद्वयम्। केसरस्य पलद्वन्द्वं प्रियंगोश्च पलद्वयम्॥ घृतभाण्डे निदध्याच्च मासमेकं प्रयत्नतः। प्रमेहान्मूत्रकृच्छ्रौंश्च वातरोगान् सुदारुणान्॥ ग्रहणीं विकारांश्च देवदार्वासवो जयेत्।

—गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—देवदारु २॥ सेर, बासा (अडूसा) की जड़ १ सेर, दन्ती, इन्द्रजौ, मजीठ, तगर, हल्दी, दारुहल्दी, रास्ना, नागरमोथा, सिरस की छाल, वायविडंग, खैरसार और अर्जुन की छाल प्रत्येक आध-आध सेर, तथा गिलोय, चीता, सफेद चन्दन, अजवायन, कुटकी और कुड़े की छाल प्रत्येक एक-एक पाव (२० तोले), लेकर, सब को जबकुट कर, २ मन २४ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर उसे छानकर, किसी शुद्ध चिकने पात्र में भरे, ठंडा होजाने पर उसमें १३ छटाँक धाय के फूलों का चूर्ण, १५ सेर शहद, दारचीनी, तेजपात और इलायची तीनों मिलाकर १६ तोले, तथा सोंठ, मिरच, पीपल तीनों मिलाकर ८ तोले, नागकेशर और फूलप्रियंगु का चूर्ण प्रत्येक ८-८ तोले, मिला कर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र (सोजाक), वातरोग, संग्रहणी, बवासीर, खुजली, दाद, कुष्ठ, आमवात नाशक है। उपदंश तथा प्रमेह-जनित बहुमूत्र या मधुमेह पर इसका उपयोग अच्छा प्रभावशाली होता है। पाचनशक्ति की वृद्धि होकर, कोष्ठशुद्धि एवं रक्तशुद्धि होती है। मूत्राघात, अश्मरी (पथरी), अग्निमांद्य, अम्लपित्त, श्वास, कास, प्रदर एवं गर्भाशय के दोष पर भी यह श्रेष्ठ लाभदायक है।

नोट—शार्ङ्गधर तथा भैषज्यरत्नावली में इसका नाम 'देवदार्व्यारिष्ट' है। और गिलोय से लेकर कुड़े की छाल तक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(६ द्रव्यों) प्रत्येक का प्रमाण ३२-३२ तोले तथा फूलप्रियंगु का प्रमाण १६ तोले लिखा है।

---

२९४ देवदार्वासव नं० २—(स्वकृत)—कास, वातादि नाशक।

विधि—देवदारु का बुरादा ५ सेर लेकर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर क्वाथ जल शेष रहने पर, उसे छानकर, शुद्ध चिकने घड़े में भर देवे। तथा ठंडा हो जाने पर, उसमें-शहद १० सेर, शुद्ध गूगल ८ तोले, धाय के फूलों का चूर्ण १३ छटाँक तथा रास्ना, काकड़ासिंगी, धमासा, हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, मिरच, पीपल और वायविडंग प्रत्येक ४-४ तो० सब का चूर्ण कर मिला देवे। १ मासतक अच्छी तरह सन्धान कर रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ३ तोले तक।

गुण—सब प्रकार की खांसी, श्वास, सन्धिगतवात तथा सततज्वर नाशक है।

---

२९५ देवदाल्यासव—प्रतिश्याय, अर्शादि नाशक।

(पं० शालिग्राम जी शर्मा, वैद्यराज)

विधि—देवदाली (बन्दाल) के फल १ पौंड (४० तो०) लेकर, ४ पौंड जल में खूब खरल करे, ४ प्रहर के बाद, १ सेर (२ पौंड) और जल डालकर कपड़े में छान लेवे और किसी पात्र में रख दे, २ घंटे के बाद जल को निथार ले। नीचे जो भूरे रंग का सफूफ़ (चूर्ण) जमें, उसे खुश्क कर लेवे। फिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रेक्टिफाइड स्प्रिट १ पौंड में उक्त चूर्ण डाल दे और काग लगा कर रख दे २१ दिन के पश्चात्, उसमें १॥ पौंड (६० तो०) अल्कोहल (मद्य) और मिलाले और ६ औंस (१५ तो०) शहद डाल दे। पुनः काग लगाकर रख छोड़े, २१ दिन के बाद छानकर रख ले और काम में लावे।

मात्रा—१ बूँद से २० बून्द तक। अनुपान-गर्म जल।

गुण—प्रतिश्याय, खाँसी, नवज्वर, कामला, गुल्म, सूजन, कृमि, बवासीर, अरुचि, हिक्का, श्वास, आमवात की सूजन और क्षय नाशक है। इसके प्रयोग से वमन विरेचन होकर रोग का विष नष्ट हो जाता है। गीले प्रतिश्याय (जुकाम) में केवल गर्मजल में डालकर पीना चाहिए और कपड़ा ओढ़ कर लेट जाना चाहिए, थोड़े ही समय के सेवन से, प्रतिश्याय नष्ट हो जाता है। (धन्वन्तरि)

दौना-मरुआ आसव-देखिये, दमनक-मरुवकासव।

२९६ द्राक्षासव * -नं० १—अर्श, शोथादि नाशक।

---

* द्राक्षापलशतं दत्वा चतुर्द्रोणेऽम्भसः पचेत्। द्रोणशेषे रसे तस्मिन्पूते शीते प्रदापयेत्॥ शर्करायास्तुलां दत्वा तत्तुल्यं मधुनस्तथा। पलानि सप्तधातक्याः स्थापयेदाज्यभाजने॥ जातीलवंगकंकोललवली-फलचन्दनैः। कृष्णां त्रिगन्ध संयुक्तां भागैरर्धपलांशकैः॥ त्रिसप्ताहाद्भवेत्पेयं तत्र मात्रा यथाबलम्। नाम्ना द्राक्षासवो ह्येष नाशयेद्गुदकीलकान्॥ शोफारोचकहृत्पाण्डुरक्तपित्तभगन्दरान्। गुल्मोदरकृमि ग्रन्थि क्षतशोषज्वरान्तकृत्। वातपित्तप्रशमनः शस्तश्च बलवर्णकृत्॥

—गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—द्राक्ष (मुनक्का) ५ सेर लेकर, अच्छी तरह साफ़ कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहनेपर, उसे छानकर, चिकने मटके (मटका शुद्ध होना चाहिये) में भर, ठंडा हो जानेपर उसमें—५ सेर खाँड, ५ सेर शहद, धाय के फूलों का चूर्ण २८ तोले तथा जावित्री, लवंग, कंकोल, लवलीफल (हरफारेवड़ी), सफेदचन्दन, छोटी पीपल, दारचीनी, बड़ी इलायची और तेजपात का चूर्ण २-२ तो० मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, २१ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—२ तोले से ३ तोले तक।

गुण—बवासीर के मस्से, सूजन, अरुचि, हृदयरोग, पाण्डुरोग, रक्तपित्त, भगन्दर, गुल्म, उदररोग, कृमि (किरम) अन्थिरोग, उरक्षत, क्षय, ज्वर और वातपित्त के रोग नष्ट होकर, बल वर्ण की वृद्धि होती है।

नोट—यह आसव प्रायः शीघ्र ही खट्टा हो जाता है, जिस से खट्टा न होने पावे, इसलिये जिस मिट्टी के पात्र में वह रक्खा जावे, उसे पहिले सोड़ा डालकर खूब साफ़ कर लेना चाहिये, फिर कली-सफेदा से धो, घृत और चन्दन के बुरादे की धूनी देकर, फिर उसमें औषधियाँ एवं क्वाथ जल में डाले। पात्र के मुखपर मुद्रा न चढ़ा कर, केवल वस्त्र से उसका मुँह बाँध देवे, ७ दिन तक रोज एकबार पात्र को हिला दिया करे। एक सप्ताह बाद उसमें से साँय २ शब्द जब सुनाई देने लगे, तब उसे १५ दिन तक न हिलावे पश्चात् छान कर, बोतलों में (३ या ४ अंगुल खाली रख कर) भर लेवे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२६७ नोट २—उक्त द्राक्षासव नं० १ की बनाने की हमारी अनुभूत विधि इस प्रकार है—

उत्तम काली दाख ५ रत्तल (२०० तोले) लेकर, अच्छी तरह धोकर साफ कर लेवे, फिर उसमें २५ रत्तल जल मिला कढ़ाई पर मन्दाग्नि से पकावे, चौथाई जल शेष रहने पर, छानकर चीनी मिट्टी की भरणी में भर, ठंडा होजाने पर, उसमें १ सेर शहद, ५ रत्तल मिश्री की शक्कर तथा धायके फूल, कंकोल, खस, सफेदचन्दन, जायफल, लौंग, दारचीनी, बड़ी इलायची के दाने, तमालपत्र, नागकेशर, और पीपल प्रत्येक का महीन चूर्ण २-२ तोले डालकर, मुख मुद्रा कर, जमीन के अन्दर जरा गहरा गढ़ा खोदकर गाढ़ दिया जाता है। पात्र के ऊपर कम से कम आधफुट मिट्टी रहनी चाहिये। यह गढ़ा ऐसी जगह हो जहाँ अच्छी कड़ी धूप उस पर पड़ती रहे। यदि ऐसा न हो सके तो उस पर रोज ५ या ६ घंटे तक आग जलानी चाहिये। एक माह के बाद पात्र को बाहर निकालकर उसमें २ या ४ तोले तक निर्मली के बीजों का चूर्ण डाल कर, ऊपर का स्वच्छ आसव छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तोला तक, चौगुना जल मिलाकर सेवन करे।

गुण—क्षुधावर्धक, मलबद्धता निवारक तथा संग्रहणी, कास, श्वास, वातरोग, वमन, अर्श, पांडुरोग, कामला, मूत्रकृच्छ्र नाशक है। वीर्य की वृद्धि कर बल को बढ़ाता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२६८ द्राक्षासव * नं० २—वाजीकरण ।

विधि—मुनक्का ६। सेर लेकर (साफ़कर) १२८ सेर पानी में पकावे, जब ३२ जल शेष रहजाय, तब उसे छानकर, उसमें ६। सेर गुड़ और १ सेर धायके फूलों का चूर्ण मिला कर मिट्टी के चिकने मटके में भर दे तथा उसका मुख बन्द कर, जमीन में गाढ़ देवे । १५ या २० दिन बाद जब आसव तैयार होजाय, उसे निकाल कर, भवके से अर्क खींचले, और उस खिंचे हुये अर्क को दुबारा और खींचे, इसीप्रकार १० बार भवके से खींच कर उसमें यथोचित् परिमाण में (दो-दो तोले) दारचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर, जावित्री, लौंग, कपूर, और केशर का चूर्ण मिला कर रक्खे ।

मात्रा—अग्नि बलोचित् १ या २ तोला ।

गुण—क्षय रोग को यह नष्ट करता है, इस पर स्निग्ध भोजन करना चाहिये । इसके सेवन से वृद्ध भी युवा के समान स्त्री समागम कर सकता है ।

---

* द्राक्षा तुलामुपादाय जलद्रोण चतुष्टये । पक्त्वा चतुर्थशेषन्तु तं कषायमुपाहरेत् ॥ दत्त्वा गुडतुलां तत्र धातकी प्रस्थमेव च । निखात्य स्थापयेद्भूमौ यावतासौ वरो भवेत् ॥ ततस्तत्सारमादद्याद्दारुणी यन्त्रतः शनैः । पुनस्तं वारुणीयंत्रे समारोप्य तदा हरेत् ॥ एवं तु दशधा सारं पौनः पुन्येन संहरेत् । ततस्तस्मिन्चतुर्जातं जातिकोशं लवंगकम् ॥ कर्पूरं कुङ्कुमं चापि यथालाभं नियोजयेत् । तं यथाग्निबलं मर्त्यः पिबेत्सर्वक्षयापहम् ॥ स्निग्धेन भोजनेनैव आसवं विधिना पिबेत् । नरो नवतिवर्षोऽप्येनं दशकामिनीः । प्रत्यहं रमयत्येव पौरुषेण न हीयते ॥

—भा० भै० रत्नाकर ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नोट—'बृहद्योगतरंगिणी' कारने इसी योग का नाम 'पञ्चसायकासव' रक्खा है। ध्यान रहे भवके के द्वारा अर्क निकालने से गुण अधिक बढ़ जाते हैं, किन्तु आधुनिक कानून की पाबन्दी अवश्य करनी होगी, कारण इसमें मद्य की विशेषता होजाती है। अतएव जिला मजिस्ट्रेट (कलक्टर साहब) से ॥) के स्टाम्प पर प्रार्थना पत्र भेजकर, स्वीकृति अवश्य ले लेनी चाहिये।

—सम्पादक।

---

२६६ द्राक्षासव * (महा) नं० ३—वाजीकर, क्षयादि नाशक।

विधि—मुनक्का ५ सेर, खांड २० सेर, बेरी की जड़ १० सेर; धायके फूल ५ सेर तथा सुपारी; लौंग, जावित्री, जायफल, इलायची; तेजपात, नागकेशर, सोंठ; मिरच, पीपल,

* द्राक्षायाश्च पलशतं सितायास्तच्चतुर्गुणम्। कर्कन्धुमूलं तस्यार्द्धं मूलार्द्धं पुष्पधातुकी॥ क्रमुकं च लवंगञ्च जातिपुष्पं फलानि च। चातुर्जातं त्रिकटुकं मस्तंकी करहाटकम्॥ आकल्लकरभं कुष्ठं पलानि दशमाहरेत्। एभ्यश्चतुर्गुणं तोयं भाण्डे चैव विनिक्षिपेत्॥ स्थापयेद्भूमिमध्ये तु चतुर्दश दिनानि च। ततो जातरसं शुद्धं क्षिपेत्कच्छपयन्त्रके॥ मुद्रयित्वा च तस्याधो वह्निं प्रज्वालयेत्सुधी। तस्यांह्लावितं सीधुं गृह्णीयात् सर्वमेव तत्॥ पुनरेव च तत्सीधुं क्षिपेत्कच्छपयंत्रके। धाराधो निक्षेपत्तस्य मृगनाभि सकुङ्कुमम्॥ एतत्सिद्धं क्षिपेद्धीमान् काचभाण्डे निधापयेत्। त्रिदिनेषु व्यतीतेषु तत्पेयं पलसंख्यया॥ मध्याह्ने द्विपलं ग्राह्यं सन्ध्याकाले चतुः पलम्। गरिष्ठं स्निग्धमाहारंभक्षयेदस्य सेवकः॥ वर्यामिवृद्धिः प्रभवेन्नराणां रामासुवश्यो भवतीह लोके। त एव धन्या मनुजा नरेन्द्राः द्राक्षासवं ये किल सेवयन्ति॥

—योगचिन्तामणि।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रूमीमस्तगी, पद्मकंद (कवेरू), अकरकरा और मीठा कूठ ये प्रत्येक आध २ सेर लेकर; कूटने योग्य द्रव्यों को कूटकर, मिट्टी के चिकने पात्र में भरकर; उसमें ४ गुना (लगभग ४॥ मन) जल डाल दे; और अच्छी तरह हिलाकर, पात्र का मुख अच्छे प्रकार बन्द कर, जमीन में गाढ़ देवे। १४ दिन के बाद उसमें से आसव को निकाल, कच्छप यन्त्र (मदिरा खींचने के यंत्र) में डालकर; उसका अर्क खींच लेवे, और पुनः उस अर्क को दूसरी बार, उसी प्रकार अर्क खींच लेवे, किन्तु अबकी बार एक पोटली में केसर और करतूरी बांधकर, जहां से अर्क टपकता है उस जगह यंत्र के मुंह पर लगा देवे। फिर इस आसवार्क को बोतलों में भर कर रख देवे, और ३ दिन के पश्चात् सेवन करे।

मात्रा—१ तोला मध्यान्ह में और दो तोला रात्रि के समय में लेवे। (ग्रन्थ की मात्रा आधुनिक काल के लिये बहुत ज्यादह है)

गुण—अत्यन्त वीर्य की वृद्धि करने वाला, अत्यंत वाजीकरण, एवं पाचक और अग्निदीपक है। इसके सेवन से, क्षय (तपेदिक), खांसी, जुकाम, स्मरणशक्ति की न्यूनता, प्रमेह, नपुंसकता एवं निर्बलता शीघ्र ही दूर होजाती है।

---

३०० द्राक्षासव नं० ४—कास, श्वासादि नाशक।

(वैद्यराज श्री पं० गौरीशंकरजी आनन्द)

विधि—दाख ५ सेर लेकर, ६४ सेर जल में क्वाथ करे, चौथाई भाग (१६ सेर) जल शेष रहने पर, छानकर; एक शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें १० सेर गुड़ तथा दारचीनी,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छोटी इलायची, तेजपत्र; तालीसपत्र; नागकेशर; प्रियंगु, कालीमिरच पीपल; वायविडंग, काकड़ासिंगी, भारंगी, बहेड़ा; और आमला प्रत्येक का महीन चूर्ण ८-८ तोले और धायके फूलों का चूर्ण ६० तोले मिला, पात्र का मुख बन्द कर, १५ या २० दिन तक रक्खे । पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक ।

गुण—कास; श्वास, रक्तपित्त, क्षय; अजीर्ण आदि में अत्यंत लाभप्रद है ।

(अ० चि० संग्रह)

---

३०१ द्राक्षासव (महत्) नं० ५—वाजीकरण, क्षयादिनाशक ।

विधि—मुनक्का २॥ सेर, किशमिश ५ सेर, छुआरे १। सेर, बादाम की गिरी १। सेर, नारियल का गोला १० छटाँक, गिलोय, गोखरू; शतावर, कौंच के बीज, सफेदमुसली, कालीमुसली, तालमखाना, बीजबन्द, प्रत्येक १६-१६ तोले, बेरी की जड़ की छाल १३ छटाँक, बबूर की छाल १३ छटाँक, तथा महुए की छाल, आम की छाल, जामुन की छाल, खिरेंटी की जड़, कंघी की जड़ कुश की जड़, दाभ की जड़, कांस की जड़, ईख की जड़, गोंदनी की छाल ये प्रत्येक ३२-३२ तोले तथा खस, बालछड़, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला, तेजपात, छोटी इलायची, तज, बड़ी इलायची, चीते की जड़, धनिया, चोव चीनी, मुलैठी, पाषाणभेद, सफेदचन्दन, लालचन्दन, अगर, तगर, जावित्री, जायफल, लौंग ये प्रत्येक ४-४ तोले धायके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फूल १ सेर ८॥ छटांक; चीनी १० सेर और गुड़ ५ सेर; सबको कूटकर एक चिकने शुद्ध मटके में भर; उसमें २॥ मन जल मिला; पात्रका मुख अच्छी तरह बन्द कर; जमीन में गाढ़ देवे। एक मास बाद निकाल कर भवके से अर्क़ खीच लेवे। अर्क़ खीचते समय; भवके के अन्दर के नाल मुखपर, केशर १। तोला, कस्तूरी ४ माशे; कपूर ८ माशे, धनिया १। तोला; की पोटली बांध रक्खे, फिर अर्क़ खींच कर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—३ माशे से २ तोले तक॥

गुण—यह अत्यन्त वाजीकरण, कामोद्दीपक, स्तंभक; मूत्र-कृच्छ्र; मूत्राघात; प्रमेह; खांसी; दमा, ज्वर; क्षयनाशक, वीर्य तथा क्षुधा वर्धक, पाण्डुरोग; अरुचि, श्लेष्म रोग नाशक तथा उदरविकार नाशक है।

(खूबचन्द चिकित्सा)

---

३०२ द्राक्षासव-(महत्)—नं० ६—बलवर्धक।

(पं० लक्ष्मणदत्त जी वैद्य, चन्दौसी)

विधि—मुनक्का १॥ सेर, अंगूर ऽ॥ = तथा किशमिस, मुण्डी, बादाम गिरी, सेव, अर्क़ केवड़ा, अर्क़ गुलाब और अर्क़ वेद-मुश्क प्रत्येक ५-५ छटांक, धाय के फूल, पिश्ता, चिरौंजी, गोला-नारियल और मखाने प्रत्येक २॥-२॥ छटाँक, गन्ने का रस १० छटांक, खांड ऽ३ = तथा सोंठ, कालीमिरच, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आंवला, सफेदजीरा, कालाजीरा, दोनों-मुसली, सेंमल की मुसली, छोटे गोखरू, बड़े गोखरू, तालमखाना,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शकाकुल-मिश्री, शतावर, उटंगन के बीज, कौंच के बीज, सफेदचन्दन, लालचन्दन, अगर, तगर, नागरमोथा, नेत्रवाला, चीता, आम्बाहल्दी, दारूहल्दी, मुलैठी, तज, दारचीनी, तेजपात, छोटी-इलायची, बड़ी इलायची, नागकेसर, बंसलोचन, लौंग, जायफल, जावित्री, अकरकरा, असगन्ध, बिदारीकन्द, नीलोफर, विधारा तालीसपत्र, कंकोल, शीतलचीनी, चोबचीनी, उसवा, चिकनी सुपारी, कन्था; खस, गुलाब के फूल, कमलगट्टा, पद्माख, पठानीलोध, मजीठ, स्यातरा (पित्तपापड़ा), चिरायता, कुटकी, कचूर, पटोलपत्र, गजपीपल, उन्नाव, कुलिंजन, अक्षीर, छोटी हरड़, अमलतासका गूदा, पीपलामूल, इन्द्रायन की जड़; धनिया; सौंफ, वायविडंग, कचनार की छाल, कुम्भेर की छाल, जामुन की छाल, वकायन की छाल; कुश की जड़, कांस की जड़, बेंगन की जड़, बेल की छाल; संभालू के बीज, भाँगरा, करंज-पंचाङ्ग, ब्राह्मी, शङ्खपुष्पी; रतनजोत, सहदेवी, मोरसिखा, फालसे की छाल; अनार की छाल, वरुण की छाल, शालपर्णी, पृश्निपर्णी, अरलू की छाल, अरनी की जड़; पाढ़ल की छाल, जवासे की जड़, सरफोंका, बहुफली, बड़ के कोंपल, गूलर की छाल, लिसौड़े, कमल के फूल, भंसीडे, नीबू की छाल, चारों प्रकार की बला (खिरेंटी आदि), दोनों पुनर्नवा, बाँसे की जड़, शीशम का बुरादा; नीम की छाल, गोंदनी की छाल, बड़ी सुपारी प्रत्येक एक-एक छटांक और कीकड़ की छाल दो छटांक; छुआरे ½, कस्तूरी ६ रत्ती; दूध २॥ सेर और जल १। मन, कटने योग्य द्रव्यों को अच्छी तरह कूटकर, सबको एकत्र मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर, मुख मुद्रा कर, २० दिन बाद भवके के द्वारा अर्क खींच लेवे और दोतलों में भरकर रख दे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—आधे तोले से २ तोले तक।

गुण—दुर्बलता चाहे स्वाभाविक हो या किसी रोग के दूर होने पर उत्पन्न हुई हो, उसे शीघ्र नष्ट कर, भोजन भली भांति पचाकर रस, रक्तादि समस्त धातुओं की वृद्धि करता है। भूख को बढ़ाता; अरुचि, ज्वर, कास, श्वास, उदररोग, वातरोग तथा रक्तविकार नाशक है।

---

३०३ द्राक्षासव-(बृहत्)-नं० ७—बल, वीर्य वर्धक।

(श्रीमान् स्व० वैद्यराज लाला नारायणदास जी)

विधि—मुनक्का ५ सेर, किशमिस ३ सेर; छुआरे १॥ सेर; पिस्ते १। सेर, चिलगोजे १ सेर, त्रिफला ४० तोले; सेमल की मुसली १० तोले तथा सोंठ, कालीमिरच; पीपल, हल्दी, तज, छोटी इलायची; तेजपात और इमली के चियें ये प्रत्येक ४—४ तोले तथा कायफल, कुलफा, काली निसोथ; माजूफल, कमलगट्टा, सपित्ता; अमलतास का गूदा, अंजीर, चोबचीनी, अंकोल, अकबरी, बनपसा; देवदारु, नेत्रवाला, बालंगा; विधारा; धाय के फूल, बेलगिरी, सालममिश्री, गावजवाँ, वायबिडंग, काङ्कु, लिसोड़े, बावची, शीतलचीनी, हरड़ार, सुपारी सादी, मोचरस और सुपारी चिकनी प्रत्येक २-२ तोले तथा-केशर; अतीस, लोध, सिपारे, कौंच के बीज; धनियाँ, मुलैठी, तालमखाना; कचूर, पोहकरमूल, उटंगन के बीज, असगन्ध; मोथा, शकाकुल मिश्री; भारंगी, सतावर, बालाईकन्द, अगर, चव्य, बालछड़; जायफल, चित्रक; गजपीपल, जावित्री, गोखरू, बीजबन्द, नागकेशर, भांगरा; पीपलामूल, लौंग, पद्माख; अकरकरा, दार-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चीनी; हंसराज, काकड़ासिंगी, खूबकला, बहमन सफेद, बहमन सुर्ख, गुड़हल, खस; ईसबगोल, नीलोफर, कालीमुसली, सफेद मुसली, मजीठ, कासनी; सफेदचन्दन; लालचन्दन और कसेरू ये प्रत्येक एक-एक तोला; कस्तूरी ३ माशे; अंगूर का रस ६० तोले; अनार का रस १ सेर; शहद १। सेर; देशीपान १५०, हरी नारङ्गी का रस ५ सेर और स्वच्छ जल ४० सेर लेकर; काष्ठादिक औषधियां जवकुट कर ले और केशर, कस्तूरी अलग रक्खे, शेष सब द्रव्यों को, एक शुद्ध मटके में भर दे और जल भरकर पात्र का मुख बन्दकर, एक मास तक धान्य राशि में गाढ़ देवे, पश्चात् निकालकर, भवके के द्वारा अर्क खींच लेवे। अर्क खींचते समय भवके की नली में, केशर कस्तूरी की पोटली बाँध कर रख दे।

मात्रा—१ तोला। नित्य भोजनोपरान्त।

गुण—बल, वीर्यवर्धक, यक्ष्मा (क्षय), खांसी, कफ के लिये अति लाभदायक, जीर्णज्वर, प्रमेह, वीर्यक्षयजनित नपुंसकता नाशक, अग्निदीपक और क्षुधावर्धक है। शीघ्र ही अपना चमत्कारी प्रभाव दिखलाता है।

(धन्वन्तरि-प्रयोगाङ्क)

---

३०४ द्राक्षासव-नं० ८—(स्वकृत)—पाचक, अग्निवर्धक।

विधि—दाख (मुनक्का) ५ सेर लेकर, अच्छी तरह साफ़ कर, बीजों सहित कूट कर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें घीकुआर (ऊपर का छिलका निकाल, अन्दर का गूदा) ५ सेर तथा शक्कर (शुद्ध मिश्री की) ५ सेर और धाय के फूलों का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चूर्ण आध सेर मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, रोज धूप में रक्खे। १५ दिन बाद निकाल कर, खूब निचोड़ते हुये मोटे वस्त्र में छान लेवे और बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक।

गुण—शास्त्रोक्त द्राक्षासव के इसमें सब गुण मौजूद हैं। क्षुधावर्धक, दीपक, पाचक और पौष्टिक है।

---

३०५ द्राक्षासव नं० ६—रक्तस्वल्पतानाशक।

(वैद्यभूषण कौशिकजी आयुर्वेदाचार्य)

विधि—द्राक्षारस १॥ सेर, दाड़िमरस आध सेर, मौसम्बी (नारंगीभेद) का रस आध सेर, शहद आध सेर, सब को एक शुद्ध चिकने (घृत से चिकने किये हुए) मिट्टी के पात्र में डाल देवे, ऊपर से आध सेर फौलाद का चूर्ण, १ पाव सोनामक्खी का चूर्ण तथा चित्रक की जड़ की छाल, छोटी पीपल, सोंठ, काली मिरच, जीरा, अजवायन, दारचीनी, नागरमोथा, आमले, छोटी हरड़, सौंफ, पोदीना, धायके फूल और आलूबुखारे प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोले, तथा १॥ सेर जल और आध सेर मिश्री मिलाकर, अच्छी तरह मुख मुद्रा कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् उसे खोलकर और छानकर काम में लावे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—रक्ताल्पता (अनीमिया), मन्दाग्नि, अजीर्ण, शिरशूल आदि नाशक है।

(अ० योगमाला)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

द्राक्षासव नं० १०—देखिये, शिशुसंजीवन्यासव।

३०६ द्राक्षारिष्ट * नं० १—क्षय, कासादिनाशक।

विधि—मुनक्का २॥ सेर (साफ़ कर), २६ सेर जल में पकावे। ६॥ सेर जल शेष रहने पर, उसे छानकर ठंडा करले, और घृत से चिकने किये हुये मटके में भर उसमें १० सेर पुराना गुड़, (या मिश्री डाल सकते हैं) धायके फूलों का चूर्ण ३२ तोले (पाठ में धायके फूल नहीं लिखे हैं, किसी पाठ में धायके फूल मुनक्का से चौथाई भाग अर्थात् ५० तोले लेने को कहा है) वायविडंग, फूलप्रियंगु, पीपल, दारचीनी, बड़ी इलायची तेजपात, नागकेशर और कालीमिरच ये प्रत्येक ४-४ तोले चूर्ण कर मिलावे, और पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे। १५ दिन में यह आसव तैयार होजाता है।

मात्रा—छोटे बच्चों को २० से ४० बून्द तक, बड़ों को १। तो० से २॥ तोले तक।

गुण—उरःक्षत, क्षय, खाँसी, दमा, गलरोग नाशक है। तथा यह कफ को निकालने वाला, फेफड़ों को साफ़ और पुष्ट करने वाला और बलवर्धक है। इसका प्रयोग दिन रात में ३-४

---

* द्राक्षा तुलार्धं द्विद्रोणे जलस्य विपचेत्सुधीः। पादशेषे कषाये च पूते शीते विनिक्षिपेत्॥ गुडस्य द्वितुलां तत्र त्वगेलापत्रकेशरम्। प्रियङ्गु-मरिचं कृष्णा विडङ्गं चेतिचूर्णयेत्॥ पृथक्पलोन्मितैर्भागैस्ततो भाण्डे निधापयेत्। समन्ततो घट्टयित्वा पिबेज्जातरसं ततः॥ उरःक्षतं क्षयं हन्ति कासश्वासगलामयान्। द्राक्षारिष्टद्वयः प्रोक्तो बलकृन्मलशोधनः॥

—शार्ङ्गधर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बार करना चाहिये। क्षय वाले रोगी को कुछ पथ्य ले चुकने के बाद इसे अवश्य पिलाना चाहिये। यह पाचक और रोचक भी है। निमोनिया पर यह उत्तम कार्य करता है। पुरानी खाँसी या कालीखाँसी पर द्राक्षारिष्ट २॥ तोले, शरबत बनपसा १ तो० और अर्कजूफ़ा १ तो० इन तीनों को मिला भोजन के पश्चात् सेवन करावे। जब वातिक कास बहुत ही तीव्र हो, १-१ मिनिट पर खाँसी आती हो, तब-द्राक्षारिष्ट १ तो०, कनकासव १ तो०, वासारिष्ट ६ माशे और शुद्ध अफीम आधी रत्ती, एकत्र मिश्रण कर शक्ति के अनुसार सेवन करावे। आमातिसार में द्राक्षारिष्ट के साथ सौंफ का अर्क मिला उचित मात्रा में, पथ्य के पहिले प्रातःसायं देवे।

नोट-मधुयुक्त द्राक्षारिष्ट नं० २ की अपेक्षा यह द्राक्षारिष्ट नं० १ किंचित् उष्ण गुणधर्मयुक्त है। छोटे बच्चों की कुकुरखाँसी पर यह विशेष, शीघ्र लाभदायक है। चेचक या माता के विकार में उष्णता या विकार के अन्त में जो अत्यधिक उष्णता, अशक्ति, छाती में पीड़ा, बड़े कष्ट से कफ का निकलना, या खांसते समय रक्त निकलना, वमन होना, अन्न का न पचना इत्यादि विकारों पर लाभदायक है, दस्त साफ़ होता है, क्षुधा बढ़ती है, और कृमिविकार भी दूर होजाता है। कास के कफ़ को पतला करने के लिये और फुफ्फुसप्रदाह की शान्ति के लिये यह विशेष उपयोगी है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३०७ द्राक्षारिष्ट * नं० २—अर्श, ग्रहणीविकारादि नाशक ।

विधि—दाख (मुनक्का अच्छी साफ़ की हुई) ५ सेर लेकर १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर क्वाथ जल शेष रहने पर, छानकर, ठंडा होने पर उसे घृत से चिकने किये हुये तथा चन्दन एवं अगर से धूपित मटके में भर, उसमें ५ सेर खांड, ५ सेर शहद, १३ छटाँक धायके फूलों का चूर्ण तथा कंकोल, लौंग, जायफल, कालीमिरच, दारचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर, पीपल, चीते की जड़, चव्य, पीपलामूल और रेणुका (सम्हालू के बीज) प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले, मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर उसमें सुगंध के लिये थोड़ासा कपूर कपड़े की पोटली में बांध कर डाल देवें, तथा ५ दिन के बाद पुनः छान कर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तोला से ३ तोले तक ।

गुण—अग्नि को प्रदीप्त कर ग्रहणी विकार को नष्ट करता

---

* मृद्वीकायास्तुलामेकां चतुर्द्रोणेऽम्भसः पचेत् । द्रोणशेषे सुशीते च पूते तस्मिन्प्रदापयेत् ॥ तुले द्वे क्षौद्रखण्डाभ्यां धातक्याः प्रस्थमेवच । कंकोलकं लवङ्गं च फलं जात्यास्तथैवच ॥ पलांशकं च मरिचत्वगेलापत्रकेसरम् । पिप्पलीचित्रकंचव्यं पिप्पलीमूलरेणुके ॥ घृतभाण्डे विनिक्षिप्य चन्दनागरुधूपिते । कर्पूरवासितो ह्येष ग्रहण्या दीपनः परः ॥ अर्शसां नाशनेश्रेष्ठ उदावर्तस्य गुल्मनुत् । जठरकृमिकुष्ठानि व्रणानि विविधानि च ॥ अक्षिरोगशिरोरोगगलरोगांश्चनाशयेत् । ज्वरं हन्तिमहाव्याधिं पाण्डुरोगं सकामलाम् । मृद्वीकारिष्टाह्वयः प्रोक्तो बृंहणो बलवर्णकृत् ॥

—शार्ङ्गधर ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

है। अर्श (बवासीर), उदावर्त, गुल्म, रक्तपित्त, उदरोग, किरम; कोढ़, अनेक प्रकार के व्रण, नेत्ररोग, गलरोग, ज्वर, पाण्डुरोग और कामला का नाशक है। तथा बल, वर्ण एवं वीर्य की वृद्धि करता है।

ज्वर की हालत में, या अत्यन्त प्यास; कब्ज या दस्त की हालत में, या गर्भावस्था अथवा शिशुओं के कामला विकार में; अथवा मेदे से जो पीड़ा प्रारंभ होकर यकृत और नाभि तक फैल जाती है; उसके निवारणार्थ रोगी का बल देखकर; भोजनोपरान्त, ३ माशे से दो तोले तक की मात्रा से, प्रातः सायं आवश्यकतानुसार सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है।

सगर्भा स्त्री को ६ वें मास में कभी २ योनि मार्ग से रक्तस्राव होने लगता है। प्रसव वेदना नहीं होती, गर्भ का सब रक्त निकल जाने से, उभरा हुआ पेट (गर्भ) पटक जाता है, बच्चा बाहर नहीं निकलता। स्त्री अत्यन्त दुर्बल हो जाती है, अरुचि बढ़ जाती है। फिर धीरे २ स्वयं गर्भाशय में रक्त का संचय होकर, गर्भ पुनः बढ़ता है और फिर रक्तस्राव होकर पूर्ववशा प्राप्त होती है। ऐसी हालत में, जब रक्त का संचय होने लगे, तब उसका स्राव होने के पूर्व ही इस आसव (अरिष्ट) का सेवन कराने से ७। ८ दिन में ही, प्रसववेदना होकर, सुखपूर्वक बच्चा बाहर हो जाता है। ऐसा अपना स्वानुभव श्रीयुत शिवशरण जी वर्मा भिषगाचार्य ने धन्वन्तरि में प्रकाशित कराया है।

नोट—इस योग को मृद्वीकारिष्ट, मृद्वीकासव, द्राक्षासवादि भी कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३०८ द्राक्षारिष्ट नं० ३—बालरोग नाशक।

(श्री० पं० अनन्तदेव जी शर्मा दीक्षित, वैद्यशास्त्री)

विधि—दाख (मुनक्का, अच्छी साफ़ की हुई) आधा सेर तथा आम की छाल; जामुन की छाल और बेलगिरी प्रत्येक एक-एक पाव तथा सेमल की छाल; गिलोय; बबूल की छाल; मीठा चिरायता; पित्तपापड़ा ये प्रत्येक १०-१०तोले; रक्तचन्दन; पद्मकाष्ठ; नीम की छाल और धनिया ये प्रत्येक ५-५ तोले; लेकर जवकुट कर २४ सेर जल में पकावें। ८ सेर शेष रहने पर; मल कर छान लेवे और एक शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें-२॥ सेर मिश्री तथा काकड़ासिंगी, अतीस, मुलैठी, इन्द्रजौ, नागरमोथा, बेलगिरी, छोटी इलायची, जायफल, लौंग, सफेद जीरा, छोटी हरड़, सोंठ, मोचरस, देशी कपूर प्रत्येक २-२ तोले और धाय के फूलों का चूर्ण ३० तोले मिला, पात्र का मुख बन्द कर, १ मास तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् फलालेन के कपड़े में छानकर, काम में लावे।

मात्रा—२ साल के बालक को अवस्थानुकूल १ माशे से ३ माशे तक, माता के दूध या पानी में मिलाकर सेवन करावे।

गुण—सब प्रकार के बालकों के-ज्वर, अतिसार, अजीर्ण, अफारा, मन्दाग्नि, अरुचि, दुर्बलता आदि के लिये यह अत्यन्त उपयोगी और रामबाण है। दांत भी सुगमता से निकल आते हैं। बालशोष रोग में भी आशातीत लाभ होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ध

३०९. धत्तूरबीजासव नं० १—(स्वकृत)—वेदनाशामक आदि गुणयुक्त।

विधि—धतूरे के बीज ८ तोले लेकर मोटा चूर्ण कर, उसमें रेक्टिफाइडस्प्रिट ५० तोले मिला, काँच के पात्र में भर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द करके रख दे। और दिन में एक बार रोज़ हिला दिया करे। ८ दिन बाद फलालैन द्वारा छानकर, सब अर्क निचोड़ लेवे। यदि ५० तोले से कम उतरे तो स्प्रिट और मिलाकर पूरा ५० तोले कर, बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—५ बून्द से १५ बून्द तक।

गुण-दोष—यह शीघ्र वेदना शामक, स्तम्भक, ज्वरघ्न और मादक है। स्नायु को शिथिल करता है तथा श्वासमार्ग के विकारों पर अत्यन्त लाभदायक है। इसकी क्रिया 'बेलेडोना' या अफ़ीम की क्रिया जैसी ही शरीर में होती है। इसकी १० बून्दों का कार्य आधी रत्ती अफीम के कार्य जैसा होता है। इसे अंग्रेजी में 'टिंक्चर स्ट्रामोनियम्' कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३१० * धत्तूरबीजासव-नं० २—कास, शूळादि नाशक।

विधि—धतूरे के बीजों का चूर्ण १ भाग, मद्य (७० से ९० प्रतिशत वाला) ४ भाग में मिला, बोतल में भर अच्छी तरह मुख बन्द कर, ७ या १५ दिन तक रक्खा रहने देवें। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ बूँद से १५ बूँद तक।

गुण—कास; श्वासादि रोगों पर निश्चित प्रभाव रखता है। इसे यदि अहिफेनासव और विजयासव के साथ मिलाकर दिया जाय तो श्वास का दौरा तत्काल कम हो जाता है। अनेक प्रकार के शूल रोग, अनिद्रा, वेदना, ज्वर, ग्रहणी, अतिसार, उन्माद, अपस्मार और नपुंसकत्व आदि रोगों में भी इसका सेवन लाभदायक है। (मद्यासव)

धत्तूरासव एवं अरिष्ट—देखिये, कनकासव एवं अरिष्ट।

धन्याक (धनिया) आसव—देखिये, धान्यकाद्यासव।

३११ धवपुष्पासव—(स्वकृत)—प्रमेह नाशक।

विधि—धाय के फूल १ सेर लेकर, कूटकर, ३२ सेर जल में पकावे। ८ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर, ठंडा होने पर उसमें-३ सेर शहद, दारचीनी, छोटी इलायची और पत्रज प्रत्येक का चूर्ण ५-५ तोले; हल्दी का चूर्ण १२ तोले और शिलाजीत २० तोले मिला; पात्रका मुख अच्छी तरह बन्दकर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भरकर रख दे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—१ से २॥ तोले तक ।

गुण—सब प्रकार के प्रमेह को दूर करता है ।

---

३१२ धवासव—(स्वकृत) प्रदर नाशक ।

विधि—धवई (धाय) की जड़ और फूल एकत्र ६० तोले लेकर, जवकुट कर २० सेर जल में पकावे । अष्टमांश शेष रहने पर, छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर, ठंडा होजाने पर उसमें लोध का चूर्ण ५ तोले और शहद १ सेर मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे । पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक ।

गुण—रक्तप्रदर तथा त्रिदोषज प्रदर को शीघ्र ही नष्ट करता है ।

धात्र्यासव—देखिये, आमलकासव ।

३१३ धात्र्यारिष्ट *—पाण्डु कामलादिनाशक ।

विधि—आमले २००० दो हजार (अच्छे बड़े पके हुये) लेकर; कूटकर उनका रस निकाल ले जितना स्वरस निकले,

---

* धात्रीफल सहस्रे द्वे पीडयित्वा रसं भिषक् । क्षौद्राष्टभागं पिप्पल्याश्चूर्णार्धं कुडवान्वितम् । शर्करार्धतुलोन्मिश्रं पक्वं स्निग्धघटे स्थितम् । प्रपिबेत्पाण्डुरोगार्त्तोजीर्णे हितमिताशन : ॥ कामलापाण्डुहृद्रोग-वातासृग्विषमज्वरान् । कासहिक्कारूचिश्वासानेषोऽरिष्टः प्रणाशयेत् ।

—चक्रदत्त ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसका आठवाँ भाग शहद, १० तोले पीपल का चूर्ण तथा ३ सेर १० तोले खांड मिला, सब को आग पर जोश देकर, ठंडा करके, चिकने मटके में भर देवे और उसका मुख अच्छी तरह बन्दकर १५ दिन तक रक्खा रहने दे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा— २ तो० से ५ तोले तक।

गुण—पाण्डुरोग, कामला, हृदय के रोग, खाँसी, वातरक्त; विषमज्वर, हिचकी, अरुचि तथा श्वास रोग नाशक है।

नोट—औषध पचने के पश्चात् यथोचित् मात्रानुसार पथ्य भोजन करना चाहिये। इस अरिष्ट की विधि में आग पर जोश देने के लिये कहा है किन्तु हमारी राय से इसमें शहद मिलाने के पहले केवल आमले के स्वरस को एक बार जोश देकर, ठंडा होजाने पर उसमें शहद मिलाना अच्छा होता है। चरक संहिता में 'पक्व' के स्थान में 'पक्त्वं' पाठ है।

—सम्पादक।

---

३१४ धान्यकाद्यासव—(स्वकृत) अतिसार नाशक।

विधि—धनिया दो सेर, अलसी, बेलगिरी, और महुये के फूल प्रत्येक १-१ सेर, लेकर; जबकुट कर, १३ सेर जल में भिगोकर, शुद्ध चिकने मटके में भर; उसमें मिश्री ४ सेर, धाय के फूल १३ छटाँक और शहद १० सेर मिला अच्छी तरह मुख मुद्रा कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—बच्चों को २ माशे से १ तोले तक और बड़ों को ४ तोले तक। दिन में ४। ५ बार।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—बच्चों को जो गर्मी के कारण बार २ दस्त आते हैं, उसकी शान्ति होती है। बड़ों की संग्रहणी और अतिसार व्याधि पर भी यह लाभदायक है।

---

३१५ धान्यकाद्यरिष्ट *—ज्वर नाशक।

विधि—धनिया, खस और नागरमोथा प्रत्येक ४-४ तोले, पद्माख और कूठ प्रत्येक ८-८ तोले; नीम की छाल ४ तोले, गिलोय ३२ तोले और त्रिफला (हरड़; बहेड़ा, आमला) ३२ तोले, सब को जवकुट कर, २६ सेर जल में पकावे। १ सेर १० छटाँक जल शेष रहने पर, ठंडा होने पर छान लेवे। पश्चात् उसमें शहद १३ छटाँक, और दारुहल्दी का चूर्ण ४ तोले मिला, अच्छी तरह मन्थन करके, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसका मुख अच्छी तरह बन्द कर एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक।

गुण—सब प्रकार के ज्वरों का नाशक है। पित्त शामक तथा ग्रीष्म ऋतु में जो लू लग जाती है उसे शीघ्र दूर करता है।

धायआसव—देखिये, धवासव।

---

* धान्यकोशीरसुस्तानां पलमेकत्र कारयेत्। द्विपलं पद्मकं कुष्ठं कुर्यान्निम्बं तदर्धकम्॥ सर्वांशेन ततो दद्याच्छिन्नाङ्गाञ्च फलत्रिकम्। जलद्रोणद्वयं दत्वा षोडशांशेन संहरेत्॥ पलं दार्व्यास्ततस्तस्मिन् शीते पूते भिषग्वरः मधुनः षोडशपलं दत्वा सर्वं विमन्थयेत्॥ स्थापयेद् घृतभाण्डे तु मासादूर्ध्वं प्रयोजयेत्। धान्यकादिरिष्टोऽयं सर्वज्वर विनाशनः॥ —गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

न

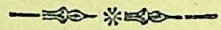

३१६ नपुंसकसंजीवन्यासव—स्तंभक, कामोद्दीपक।

(पं० कुन्दनलालजी वैद्य, पैंजनिया, बिजनौर)

विधि–मुनक्का, मुंडी, आंवला प्रत्येक १०–१० तोले पोस्त के डोडे, छरीला; जायफल, अजवायन, खस, तज; तेजपात, नागरमोथा, कचूर, सफेदचन्दन, लालचन्दन, तुख्मबालिंगा, कालीमिरच, सफेदमिरच, सफेदमूसली, स्याहमूसली, सेंमल की मुसली, बहमन सुर्ख, तोदरी सफेद, इलायची छोटी, इलायची बड़ी, इन्द्रजौ, सौंफ, पिस्ते, चिलगोजे, उन्नाब, गुलाबके फूल; केवड़े की जड़, छतरावल, भांग, जावित्री, शीशम, काबुरादा देवदारु, ईसबगोल, गिलोय, धनिया, नीमके फूल, गोखरू बड़े; बीजबन्द, उटंगन के बीज, पठानीलोध, सुपारी रूमीमस्तगी; कसेरू, सिमलौटे, सुरंजानशीरी; तलर; और आबरेशम ये प्रत्येक ५–५तोले। अफीम ४तोले तथा दालचीनी, सालबमिश्री, सालब पंजेकी, और सालब चचूंदर प्रत्येक ३–३ तोले; छुहारा, बादाम, किशमिश, तालमखाना प्रत्येक १० तोले, ईसबगोल की भूसी १५ तोले, गूलर का दूध १० तोले, चीनिया गोंद ५ छटाँक, मिश्री ८ सेर और शहद ४ सेर लेकर कूटने योग्य द्रव्यों को जव कुटकर, सब को एकत्र मिला, ३० सेर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जल डालकर, एक शुद्ध मटके में भर रक्खे, मुख मुद्राकर १५ दिन रक्खा रहने देवे। पश्चात् जालीदार कपड़े में छानकर चौड़े मुख वाली शीशियों में भरकर रख दे। संपादक।

मात्रा—१से २ तोले तक। अनुपान-दूध। संपादक।

गुण—अत्यन्त कामोद्दीपक, स्तम्भक, नपुंसकता नाशक, वाजीकरण; मदकारक, वात कफ के विकार और अतिसार का नाशक है।

(आ० संग्रह)

नागफनी आसव—देखिये, कन्थार्यासव।

३१७ * नारंग्यासव—अजार्णादि नाशक।

विधि—नारङ्गी (संतरे) के छिलके जवकुट कर, उसमें चौगुनी मद्य (७० से ९० प्रतिशत वाली) मिला, कांच के या चीनी मिट्टी के पात्र में भर, मज़बूती से मुख मुद्राकर, ७ दिन रक्खा रहने देवे। बीच २ में हिलाते रहना चाहिए। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—आधा माशा से ८ माशे तक।

गुण—अग्निमांद्य, अजीर्ण, अरुचि और अम्लपित्तादि उदर रोगों पर लाभदायक है। इसे कटुकासवादि अग्निवर्धक औषधियों के साथ मिलाकर सेवन कराना चाहिये।

(मद्यासव)

नोट—इसे अंग्रेजी में टिंक्च्यूरा आरेनशिया कहते हैं। संतरों के सूखे छिलकों का चूर्ण ५ तोले में रेक्टिफाइडस्पिरट ५० तोले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिला, उक्त विधि से बनावे। मात्रा-६० बूँद से १२० बूँद तक। गुण-उपर्युक्तानुसार।

—सम्पादक।

---

३१८ नारिकेलासव + —वाजीकरण, क्षयादि नाशक।

विधि—नारियल का जल १३ सेर, ईख का रस ६॥ सेर, सेंमल का रस १३ छटाँक, दशमूल (सरिवन, पिठवन, दोनों कटेरी, गोखरू, बेल की जड़, सोनापाठा, कुंभेर, पाढल और अरणी की जड़) का क्वाथ (स्वरस के अभाव में) १३ छटाँक, तथा—दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर; इन चारों का समभाग मिश्रित चूर्ण १३ छटाँक और धाय के फूलों का चूर्ण १३ छटाँक, कस्तूरी ४ माशे; नागकेशर, तगर, सफेदचन्दन, लौंग प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले लेकर, सब को एकत्र मिला, घृत से चिकने किये हुए मटके में भरकर, मुख मुद्राकर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रखदे।

+ नारिकेलोदकं चैव द्रोणमात्रं प्रदापयेत्। द्रोणार्धं रसमिक्षोश्च रस-प्रस्थं तु शाल्मलेः। दशमूलरसस्यापि प्रस्थमात्रं तथैव च॥ घृतभाण्डे विनिक्षिप्य मध्ये चूर्णं निवेशयेत्॥ चातुर्जातकधातक्योः पलानि खलु षोडश। शाणमात्रां च कस्तूरी केशरं तगरं तथा॥ चन्दनं देवपुष्पं च पलमात्रं पृथक् पृथक्। मासादूर्ध्वंपिबेच्चामुंरूपेकामसमो भवेत्॥ वृद्धोऽपि तरुणीं गच्छेत्पण्डोपि पुरुषायते। बलीपलितसंत्यक्तः शतायुश्च भवेन्नरः॥ नारिकेलासवः प्रोक्तः शम्भुना परमेष्ठिना।

—गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नोट—उक्त विधि में, कस्तूरी को आसव तैयार हो जाने के बाद मद्य या रेक्टिफाइड स्प्रिट में घोल कर मिलाना चाहिए ।

मात्रा—१ तो० से २ तोले तक । अनुपान-दूध और शक्कर अथवा शहद मिलाकर सेवन करे ।

गुण—अत्यन्त वाजीकरण, कामोद्दीपक, नपुंसकता नाशक है । इसके सेवन से शरीर की शिथिलता, झुर्रियाँ, बालों का सफेद होना आदि रोग दूर होकर कामदेव-सदृश रूप होजाता है, वृद्ध पुरुष भी युवा के समान युवती समागम कर सकता है । इससे निश्चय ही आयुष्य की वृद्धि होती है ।

---

३१९ * निम्बकासव नं० १—रक्तविकार नाशक ।

विधि—नीमके वृक्ष का घनसत्व १ भाग, मद्य (४० से ६० प्रतिशत वाली) ५ भाग मिला, बोतल में भर, मज़बूत काग लगाकर, ७ या १५ दिन तक रक्खा रहने देवे । पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख लें ।

मात्रा—१ माशा से ४ माशे तक ।

गुण—अनेक प्रकार के कुष्ठ, रक्तविकार, चर्मरोग और फिरंग, उपदंश में, इसके सेवन से बड़ा लाभ होता है । उपरोक्त रोगों में लाभ करने वाली अन्य औषधियों के साथ मिलाकर इसका प्रयोग करना चाहिये ।

(मद्यासव)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३२० निम्बकासव नं० २—ज्वरनाशक।

विधि—नीम के पत्ते २० तो० गिलोय के पत्ते (अभाव में हरी गिलोय) १० तो०, करंज की मींग ३ तो०, चिरायता ५ तो०, अदरख २ तो०, कालीमिरच १ तो० सबका चूर्णकर मद्य (रेक्टिफाइडस्पिरट) ४० तोले में मिला, बोतल में भर देवे और मजबूत डाट (काग) लगाकर, ७ दिन तक धूप में रक्खे प्रतिदिन बोतल को अच्छी तरह हिला दिया करे। पश्चात् नितरा हुआ अर्क छानकर शीशियों में भरकर रख दे।

मात्रा—५ बूँद से ६० बूँद तक। अवस्थानुसार तथा बालकों को अपनी बुद्धि के अनुसार, जल में मिलाकर सेवन करावे।

गुण—समस्त प्रकार के ज्वरों पर उत्तम लाभदायक है।

(सिद्धप्रयोग)

---

३२१ निम्बकासव नं० ३—अर्श आदि नाशक।

(वैद्यराज पं० शालिग्राम जी शर्मा)

विधि—नीम की अन्तर्छाल और हल्दी प्रत्येक १-१ सेर लेकर तथा कूट पीसकर, शुद्ध चिकने घड़े में भर, उसमें—१६ सेर जल, १ सेर शहद और १ सेर घीकुआर का रस मिलावे। पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १ मास तक अनाज के ढ़ेर में दबाकर रक्खे। फिर निकाल और छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ५ तोले तक। प्रातः सायं।

गुण—बवासीर, रक्तविकार तथा कमजोरी नाशक है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निम्बकासव नं० ४—देखिये, पारिभद्रासव ।

३२२ निम्बकारिष्ट नं० १—श्वास नाशक ।

(श्री वैद्य त्रिलोकीनाथजी शास्त्री)

विधि—जितना होसके उतने ही पुराने नीम की जड़ की छाल ५ सेर लेकर, जबकुट कर, २० सेर जल में पकावे । ५ सेर क्वाथ-जल शेष रहने पर, छानकर, काली बोतलों में एक २ पॉड (४० तो०) भर कर, २१ दिन के लिये धूप में रक्खे । पश्चात् छानकर, बोतलों में भर कर रख दे । बस अरिष्ट तैयार होजाता है ।

मात्रा—१ तोला, समभाग शहद मिलाकर सेवन करना चाहिए ।

गुण—श्वास रोगी पर इसका बहुत ही अच्छा असर होता है । पथ्य में सिर्फ मूंग की दाल और गेंहू की बिना चुपड़ी रोटी देनी चाहिये । और संयम से रहना चाहिए ।

(धन्वन्तरि)

---

३२३ निम्बकारिष्ट नं० २—ज्वर नाशक ।

(कविराज श्री जगन्नाथप्रसादजी गुप्त, वैद्यशास्त्री)

विधि—५० वर्ष से अधिक के पुराने नीमवृक्ष की छाल १२॥ तो०, चिरायता २॥ तो०, लालचन्दन १ तो०, अतीस ६ माशे, परवललता ६ माशे, जीठ ६ माशे, कुटकी १। तो०, इन्द्रजौ ६ माशे, खस की जड़ ६ माशे, मोथा (नागरमोथा) ३ माशे, कल्पनाथ २॥ तो०, सनाय के पत्ते ४ तो०, गिलोय १। तो०, सोंठ १ तो०, पीपल १ तो०, कंटकारी (कटेरी) १ तो०,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पित्तपापड़ा १ तो०, हर्रे २ तो० और अनन्तमूल २ तो०, लेकर सब को जबकुट कर ८ सेर जल में क्वाथ पकावे। १ सेर जल शेष रहने पर, ठंडा होने पर कपड़े से छान, शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें पुराना गुड़ १० छटाँक तथा काकड़ासिंगी १ तो०, चीते की जड़, कालीमिरच, नागरमोथा, अजवायन प्रत्येक ६-६ माशे और छोटी इलायची ३ माशे सब का चूर्ण कर मिलावे। पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे। (इसका नाम 'ज्वरवज्रारिष्ट' है। —सम्पादक।

मात्रा—२ तो० दूने जल में मिला; प्रातः सायं पीवे।

गुण—सब प्रकार के ज्वरों को शीघ्र नष्ट करता है।

(अ० योगमाला-सिद्धप्रयोगांक)

---

३२४ निम्बुकासव—(निम्बुकद्राव)—अजीर्णादि नाशक।

(वैद्यराज गौरीशंकरजी आनन्द)

विधि—कागजी नीबू का रस १ सेर; कुमारी (घीगुआर) का रस १ सेर और लहसुन का रस १ पाव; तीनों रसों को मिलाकर; शुद्ध मिट्टी के पात्र में भर; उसमें सुहागे की भस्म ८ तो० कौड़ी की भस्म ८ तो० नवसादर; जवाखार; शंखभस्म, सैंधानमक और कलमीसोरा प्रत्येक का महीन चूर्ण ४-४ तोले; अच्छी तरह मिलाकर, पात्र का मुख यथायोग्य रीति से सन्धान कर; १६ दिन तक भूसे में दबा कर रक्खे। पश्चात् निकाल कर, बोतलों में, छानकर भर देवे।

मात्रा—३ माशे से २ तो० तक। जल मिलाकर, भोजन के बाद सेवन करावे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—अजीर्ण, अग्निमांद्य, यकृतविकार, प्लीहा-वृद्धि, उदरशूल आदि में लाभप्रद है।

(अ० चि० संग्रह)

---

३२५ निम्बुकासव नं० २—प्लीहा विकारनाशक।

(वैद्यवर अचलानन्दजी द्वारा प्रेषित)

विधि—३०० कागजी नीबुओं का रस शुद्ध कोरी मटकी में डाल, उसमें कालानमक ६ छटाँक और पीली कौड़ियाँ लगभग ५० पीसकर मिला देवे। फिर उस मटकी का मुख अच्छी तरह बन्द कर, ऊंचे स्थान में या सींके पर लटका देवे। १४ दिन के बाद छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—अग्निबलानुसार-१ तोला से २॥ तोले तक। प्रातः सायं सेवन करावे।

गुण—बढ़ीहुई प्लीहा (तिल्ली) १४ दिन के सेवन से अवश्य अच्छी होजाती है।

---

३२६ निम्बुकासव नं० ३—क्षुधावर्धक, उदरवातहर।

विधि—कागज़ी नीबू का रस १ सेर निकाल, शुद्ध चिकनी मटकी में भर, उसमें अमलतास का गूदा आध सेर, सैंधा नमक १ पाव, शुनकका (दाख) और कालानमक ५-५ तोले, तथा छोटी पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीते की जड़, सोंठ, कालीमिरच, सुहागे का फूल, और निशोथ प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोले, सफेदजीरा ३ तो० कालाजीरा ३ तो०, जबाखार १ तोला और भुनी हुई हींग ३ माशे मिलाकर, पात्र का मुख बन्द

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर १५ दिन के बाद छानकर, बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—६ माशे से २ तोले तक।

गुण—इससे भूँख खूब लगती है, दस्त साफ़ आता है। पाचक एवं स्वादिष्ट है।

(एक प्राचीन पुस्तक से)

---

३२७ निम्बुकासव नं० ४—हैजानाशक।

(श्री राजवैद्य रामगोपालजी मिश्र, वैद्यशास्त्री)

विधि—कागजी नीबू का रस १ सेर, अदरख का रस १ सेर, दोनों को छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें हींग भुनी हुई २ तोले, सोंचर नमक ५ तोले तथा-सेंधानमक; बायविडंग; सोंठ; कालीमिरच, और छोटीपीपल प्रत्येक का चूर्ण १-१ तोला, मिला, मुख बन्द करके रख दे। ७ दिन के बाद छानकर काम में लावे।

मात्रा—२ माशे से १ तोला तक। रोग के बलानुसार बार २ देवे।

गुण—दस्त, कै को रोककर मूत्र को खोल देता है, अग्नि को प्रदीप्त करता है, तथा नानाप्रकार की उदर व्याधियों का नाशक है।

निम्बुकासव नं० ५—देखिये, जम्बीरासव।

३२८ निम्बुकत्वचासव—(स्वकृत)—पाचक।

विधि-नीबू के छिलके ८ तोले, जवकुट कर, उसमें ५० तोले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रेक्टिफाइडस्पिरट मिला, बोतल में भर मुखमुद्रा कर ३ दिन तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर काम में लावे।

मात्रा—३० बूँद से १२० बूँद तक।

गुण—पाचक तथा रक्तपित्त, अतिसार, वमन और पित्त-ज्वर नाशक है।

---

३२९ निर्गुण्ड्यासव—(स्वकृत) अशक्ति नाशक।

विधि—निर्गुण्डी (संभालू) की जड़ की छाल १ सेर लेकर, जवकुट कर, ८ सेर जल में पकावे, २ सेर जल शेष रहने पर, ठंडा होने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें ४ सेर शहद और २० तोले धाय के फूलों का चूर्ण मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक धानों के ढेर में दबा रहने दे। पश्चात् उसे निकाल और छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ से २ तोले तक। अनुपान-तक्र (मठा) या गोमूत्र अथवा शुद्ध जल के साथ।

गुण—शरीर में बल, वीर्य, आयु, मेधा और दृष्टिशक्ति की वृद्धि होती है तथा शरीर की झुर्रियाँ, बालों का सफेद होना आदि वृद्धावस्था की शिकायतें दूर हो जाती हैं। यह एक उत्तम रसायन है। इसे हमने 'वैद्य' के एक लेख के आधार पर बनाया था, पूर्ण लाभदायक सिद्ध हुआ। —सम्पादक।

निशोथासव—देखिये, त्रिवृत्तासव।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३३० नीलोत्पलासव—(स्वकृत)—पीड़ा निवारक।

विधि—नीलकमल (नीलोफर) के फूल २ सेर, ८ सेर आकाश जल में २४ घण्टे तक भिगो रक्खे। पश्चात् अच्छी तरह मसलते हुए, मोटे स्वच्छ वस्त्र से छानकर, चीनी मिट्टी के पात्र में भर, उसमें-४ सेर मिश्री, ५ सेर शहद और १ सेर धाय के फूलों का चूर्ण मिला, अच्छी तरह मुख मुद्रा कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—पित्त प्रकोप को शान्त करता है तथा स्त्री की गर्भ-पात पीड़ा को दूर कर बल उत्पन्न करता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प

३३१ पञ्चतृणासव—(स्वकृत) मूत्र विकार नाशक।

विधि—पंच तृणों (कुश, कांस, दर्भ, शर, और गन्ना) की जड़ कुल २॥ सेर (प्रत्येक की जड़ आध २ सेर), हल्दी, दारु-हल्दी, आँवला, पाषाणभेद, बांसे की जड़ की छाल और अगर प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले, धाय के फूलों का चूर्ण १३ छटाँक, मुनक्का १ सेर, शहद २॥ सेर और मिश्री ५ सेर, एक शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें २६ सेर जल मिला, अच्छी तरह हिला देवे, मुख मुद्राकर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। ५ या ६ दिन में इसे हिलाते रहना चाहिए। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक।

गुण—मूत्रदोष (मूत्रकृच्छ्र, बहुमूत्र, प्रमेहादि) तथा रक्त-पित्त के विकार नष्ट होते हैं। उत्तम पित्तनाशक है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३३२ पञ्चमूत्रासव *—वातव्याधि नाशक ।

विधि—बकरी, गाय, सुरागाय (अभाव में भैंस का मूत्र लेवे, 'सैरभीणां' ऐसा भी पाठ है), गधी तथा ऊँटनी प्रत्येक का मूत्र ४-४ तोले लेकर, एक शुद्ध चिकने घड़े में भरकर, उसमें बच, पपीता (अरण्डखरबूजा), बड़ी इलायची, लहसुन और लोंग का चूर्ण प्रत्येक २-२ तोले तथा बायविडंग, सोंठ, कालीमिरच और पीपल प्रत्येक का चूर्ण ६-६ तोले और हरड़ का चूर्ण ४ तोले, मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्दकर, चूल्हे के सामने, जमीन में दबा देवे। ७ दिन के पश्चात् निकाल कर काम में लावे। यह आसव गाढ़ा होता है।

मात्रा—२ से ६ माशे तक। २ तोले पानी में मिलाकर सेवन करावे।

गुण—तिल्ली, विकृतवायु, कफरोग तथा ८० प्रकार के वात रोगों का नाशक है।

---

* अजागोसुरभीणां च चतुःकर्षं खरोष्ट्र्योः ।
मूत्रं संग्राह्य कुम्भेच स्थाप्य चूर्णं प्रदापयेत् ॥
वचाया वातकुम्भस्य लशुनस्यैलया सह ।
लवङ्गस्यापि प्रत्येकं पलार्द्धं कृमिनाशनः ॥
व्योषस्यापि पलंसार्द्धमभयैकपला मता ।
चुल्यग्रे वासरान् सप्त निक्षिप्याशु समुद्धरेत् ॥
प्लीहोदरहरं दिव्यं मूढवात कफापहम् ।
अशीतिवातशमनं पञ्चमूत्रासवं विदुः ॥

—गदनिग्रह ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पञ्चसायकासव—देखिये, द्राक्षासव नं० २ ।

३३३ पत्रांगासव *—प्रदरादि नाशक ।

विधि—पतंग, खैरसार, बांसा, सेमल के फूल, खरैंटी, शुद्ध मिलावे, दोनों प्रकार की सारिवा (अनंतमूल), गुडहल की कलियाँ, आम की गुठली, दारुहल्दी, चिरायता, पोस्त के डोडे, जीरा, अगर, रसौत, बेलगिरी, भांगरा, दारचीनी, केशर और लौंग का चूर्ण प्रत्येक ४-४ तोले और जल २६ सेर, एकत्र कर एक शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें—१। सवा सेर मुनक्का, १३ छटाँक धाय के फूलों का चूर्ण, ५ सेर चीनी और २॥ सेर शहद मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१। तोला से २॥ तोले तक।

गुण—वेदनायुक्त अत्यन्त बढ़ा हुआ रक्तप्रदर तथा श्वेत-प्रदर, ज्वर, पाण्डु, सूजन, मन्दाग्नि और अरुचि को नष्ट करता है।

---

* पत्राङ्गं खदिरं वासा शाल्मली कुसुमं बला। भल्लातकं सारिवे द्वे जपाकुसुममस्फुटम्॥ आम्रास्थि दार्वी भूनिम्ब आफेनफलजीरकम्। लोध्रं रसाञ्जनं बिल्वं केशराजं त्वचं तथा॥ कुंकुमं देवकुसुमं प्रत्येकं पलसम्मितम्। सर्वं सुचूर्णितं कृत्वा द्राक्षायाः पलविंशतिम्॥ धातकीं षोडशपलां जलद्रोणद्वये क्षिपेत्। शर्करायास्तुलां दत्वा क्षौद्रस्यार्धतुलां तथा॥ एकीकृत्य क्षिपेद् भाण्डे निदिध्यान्मासमात्रकम्। हन्त्युग्रं प्रदरंश्वेतमरुणञ्च सवेदनम्। ज्वरं पाण्डु तथा शोफं मन्दाग्नित्वमरोचकम्॥

—भैषज्यरत्नावळी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३३४ पनसासव—(स्वकृत)—रक्तस्राव हारक।

विधि—कटहल की जड़ ५ सेर लेकर, जवकुट कर १३ सेर जल में पकावे। ६ सेर जल शेष रहने पर और छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर दे। ठंडा होने पर उसमें—शहद २॥ सेर, धाय के फूलों का चूर्ण १३ छटांक और मिश्री २ सेर मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, २० दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक। कांजी या मांड के साथ सेवन करावे।

गुण—अत्यन्त पीड़ायुक्त रक्तप्रदर को शीघ्र दूर करता है।

परूषकासव—देखिये, फालसासव।

३३५ पर्णबीजारिष्ट—(अजूवारिष्ट)—प्लीहा, यकृत विकारादिनाशक।

(श्री पं० अनन्तदेव जी शर्मा, वैद्यशास्त्री)

विधि—अजूवा पत्र *१ सेर को कुचल कर, ५ सेर जल में पकावे। २॥ सेर शेष रहने पर, मलकर छान लेवें, और शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें ३ पाव (६० तो०) शहद, धाय के

---

* इस पौधे के पत्र ही उसके बीज होते हैं। पत्ता सुंदर, दलदार, कंगूरेदार होता है, इसे इधर आम्बटा, धन्वन्तरि पत्र कहते हैं। पत्र को सरदीली भूमि में, जरा तिरछाकर गाढ़ देने से, इसके कंगूरों से शाखायें अंकुरित होकर बढ़ने लगती हैं। इसे अजूवा भी कहते हैं। यह सदैव हरा भरा रहता है। बाग बगीचों में अकसर लगाया जाता है।

—सम्पादक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फूल १० तोले तथा लौंग, जायफल, जावित्री, इलायची सोंठ, कालीमिरच और छोटी पीपल प्रत्येक का चूर्ण १-१ तोला मिला, पात्र का मुख बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ से २ तोले तक। प्रातः सायं।

गुण—प्लीहा, यकृत, गुल्म, वायुगोला, अफ़ारा, अजीर्ण, मन्दाग्नि, अरुचि, शूल आदि पर रामबाण है।

(धन्वन्तरि-बूटीचित्राङ्क)

---

३३६ पर्पटाद्यारिष्ट *—पांडु, उदर रोगादिनाशक।

विधि—पित्तपापड़ा (स्यातरा) ५ सेर लेकर, कूटकर, १-मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, ठंडा करके, शुद्ध चिकने मटके में भर कर, उसमें १० सेर गुड़, १३ छटाँक धायके फूलों का चूर्ण तथा गिलोय, नागरमोथा, दारु-हल्दी, देवदारु, कटेरी, धमासा, चव्य, चीते की जड़, सोंठ, मिरच, पीपल; और वायविडंग का चूर्ण प्रत्येक ४-४ तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, एक मास तक सुर-

---

* पर्पटं तुलामेकां चतुर्द्रोणे जले पचेत्। क्वाथे पादावशेषे च शीते पल-शतद्वयम् ॥ दद्याद्गुडस्य धातक्याः पलषोडशिकामता। गुडूची मुस्तकं दार्वी दारुव्याघ्री दुरालभा ॥ चव्यं चित्रकमूलं च त्रिकटु क्रिमिनाशनः। सर्वाण्येतानि संचूर्ण्य पलांशेन विनिक्षिपेत् ॥ स्थापयेत्स्वाततोभाण्डे मासादूर्ध्वं पिबेदसुम्। पाण्डुगुल्मोदरष्ठीला कामलाञ्च हलीमकम् ॥ प्लीहानं यकृतं शोथं सर्वञ्च विषमज्वरम्। एषोऽरिष्टो निहन्त्याशु वृक्ष-मिन्द्राशनिर्यथा ॥

—भैषज्यरत्नावली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक।

गुण—पाण्डुरोग, गुल्म (पेटका गोला), उदररोग, अष्ठीला; कामला, हलीमक, तिल्ली, यकृत (जिगर की व्याधि); सूजन तथा सब प्रकार के विषमज्वरों का नाशक है।

---

३३७ पलाण्ड्वासव—नं० १—(स्वकृत)—बालरोग नाशक।

विधि—प्याज का रस १ सेर निकाल, अच्छी तरह छानकर, चीनी मिट्टी के पात्र में भर उसमें १ पाव (२० तोले) ब्रान्डी (शुद्ध मद्य) मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर; ७ या १५ दिन तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१० से ३० बूंद या ६० बूंद तक। अवस्थानुसार बालक को, माता के या गाय के अथवा बकरी के दूध में मिलाकर पिलावे।

गुण——बालकों का पसली या डब्बे का रोग शीघ्र ही दूर होजाता है। बालशोष (सूखा) रोग पर भी लाभदायक सिद्ध हुआ है। यह बड़ों को ६० बूंद की मात्रा में जल या दूध में मिला कर देने से कामशक्ति को जागृत करता है। हैजे—पर भी यह लाभदायक है।

---

३३८ पलाण्ड्वासव—नं० २—(स्वकृत)—विशूचिकाहर।

विधि—प्याज का रस, अपामार्ग (ओंगा, या चिरचिटा) का रस और शहद तीनों समभाग लेकर, चीनी मिट्टी के पात्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में भर, अच्छी तरह मुख मुद्रा कर, एक मास तक जमीन में गाढ़कर रक्खे। पश्चात् निकाल कर, छान लेवे और शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ से २ तोले तक । समभाग शीतल जल मिला कर सेवन करे।

गुण—हैजे की प्रथम और द्वितीयावस्था में पूर्ण लाभकारी है।

नोट—'धन्वन्तरि' में प्रकाशित वैद्यभूषण कविराज रामप्रसाद जी के एक प्रयोग के आधार पर हमने इस आसव को बनाकर, बहुत कुछ सफलता प्राप्त की है। इसे 'विषूचिकान्तकासव' भी कह सकते हैं।

---

३३९ पलाशमूलासव—प्रमेह, मधुमेहादि नाशक।

विधि—पलाश की जड़ की छाल के १ भाग स्वरस में चतुर्थ भाग मद्य (रेक्टिफाइडस्प्रिट २० तोले के साथ स्वरस १ सेर) मिला बोतल में भर कर रख दे। २ या ३ दिन के बाद छानकर शीशियों में भर कर रखले।

मात्रा—१ से ५ बूंद तक। दुगने जल में मिला कर देवे। दिन में ३ वार।

गुण—प्रमेह और मधुमेह का नाशक है।

(अ० यो० माला)

---

३४० पलाशासव—मधुमेह नाशक ।

विधि—पलाश की कोपलें, जो खिली न हों; पलाश पुष्प,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और पलाश की जड़ की छाल को कूटकर फिर पलाश की छाल से संपुटित करे, और इसको एरण्ड व जामुन के पत्तों से लपेट मट्टी लगाकर भूभल में ४ घंटे पकाकर, पीछे दबाकर ४० तो० अर्क निकाल शीशियों में भरे, इसमें मुलैठी का महीन चूर्ण ४ तोले, शिलाजीत ४ तोले और मधु २० तोले मिला; मुख मुद्रा कर १५ दिन तक रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख ले।

मात्रा—३ बूंद से १० बूंद तक मक्खन या मलाई के साथ।

गुण—मधुमेह को शीघ्र नष्ट करता है।

(अ० यो० माला)

नोट—उक्त आसव बहुमूत्र, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, पथरी मूत्रविकारों पर तथा कोष्ठबद्धता और उपदंश पर भी विशेष प्रभावशाली है।

—सम्पादक।

पाकडासव—देखिये, प्लक्षासव।

३४१ पारसिकयवान्यासव—बेदला नाशक, प्रदाह आदि शामक।

विधि—नं० १—खुरासानी अजवान के ताजे पत्तों, शाखों और फूलों को पीस कर, स्वरस निकाले, ३ भाग स्वरस में एक भाग मद्य (६० प्रतिशत शक्ति वाली) मिला, बोतलों में भर, मजबूती से कार्क बन्द कर, ७ दिन रक्खा रहने देवें, पश्चात् फिल्टर कर (अच्छी तरह फलालेन के वस्त्र से छानकर) शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—३० बूँद से ६० बूँद तक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३४२ विधि-नं० २—खुरासानी अजवायन का चूर्ण (बीजों का चूर्ण) १ भाग में ८ भाग मद्य (६० प्रतिशत वाली) मिला बोतल में, अच्छी तरह, कार्क लगाकर रक्खे। ७ दिन पश्चात् उक्त विधि से छान कर रख ले।

मात्रा—उपर्युक्तानुसार।

३४३ विधि-नं० ३—खुरासानी अजवायन के पत्ते १ भाग का चूर्ण कर, मद्य (७० से ६० प्रतिशत वाली) १० भाग मिला, बोतल में, मज़बूती से काग लगाकर ७ या १५ दिनतक रक्खा रहने देवे। पश्चात् उक्त विधि से छानकर काम में लावे।

मात्रा—४ रत्ती से ४ माशे तक।

गुण—यह मादक गुण प्रधान होने से वेदनानाशक, प्रदाह शामक, निद्राजनक, स्तंभक, वाजीकरण एवं उत्तेजक है। दुर्बल एवं वृद्ध व्यक्ति के उन्माद (पागलपन) पर यह अच्छा लाभदायक है। शुष्क तथा आक्षेपयुक्त खाँसी पर भी यह गुणकारी है। इसमें कृमिनाशक गुण की भी विशेषता है, यदि कृमि के कारण बालक के पेट में ऐंठन हो तो इसके प्रयोग से लाभ होता है। प्रसव के समय की अथवा प्रसव के बाद की ऐंठन में भी इससे शीघ्र लाभ होता है। अतिसार में जब कि मल हल्दी के रंग जैसा, पानी की तरह पतला और बेखबरी से निकल जाता है, तब इसके व्यवहार से तत्काल लाभ होता है।

३४४ विधि नं० ४—खुरासानी अजवायन के पत्ते छाया में सुखाये हुए ८ तोले लेकर मोटा चूर्ण करे और रेक्टिफाइडस्पिरिट ५० तोले, दोनों को एकत्र, कांच के पात्र में भर, मुख बन्दकर,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३ दिन तक सुरक्षित रक्खे। रोज एक बार हिला दिया करे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—३० बून्द से ६० बून्द तक।

गुण—श्वास, कास, हृदयरोग, उन्माद और मूत्रपिंड के विकारों पर भी इसकी योजना की जाती है। यह वेदनाशामक है। इसकी क्रिया शरीर में बेलाडोना या धत्तूरासव जैसी होती है, किंतु उनकी अपेक्षा बहुत सौम्य प्रकार से होती है।

—सम्पादक।

---

३४५ पारिभद्रासव—रक्तविकार नाशक।

(श्री० पं० तिलकराम जी शर्मा, वैद्यराज)

विधि—नीम की छाल ५ सेर चूर्ण कर, शुद्ध चिकनी मटकी में भर, उसमें-जल १६ सेर, पुराना गुड़ ३॥ सेर, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला और कालीमिरच प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर ७ से १४ दिन तक सुरक्षित रखे। फिर निकाल कर, ऊपर का नितरा हुआ आसव छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—आधा तोला से दो तोले तक। प्रातःसायं।

गुण—१८ प्रकार के कुष्ठ; खाज, दाद, अपरस; विसर्प, फोड़ा, फुंसी इत्यादि सब रक्तविकार शीघ्र ही दूर होते हैं। अर्श, कृमि, प्रमेह और ज्वर में भी लाभदायक है।

(अ० यो० माला)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३४६ पार्थाद्यरिष्ट + —हृदयरोगादि नाशक ।

विधि—अर्जुन वृक्ष की छाल ५ सेर, मुनक्का २॥ सेर तथा महुये के फूल १ सेर लेकर, सब को जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावें। क्वाथ जल १३ सेर शेष रहने पर, छानकर, उस में-धाय के फूलों का चूर्ण १ सेर और गुड़ ५ सेर अच्छी तरह घोलकर, शुद्ध चिकने मटके में भरकर, मुख मुद्राकर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१। तोले से २॥ तोले तक।

गुण—हृदय और फेफड़े के समस्त रोगों को नष्ट कर; बल, वीर्य को बढ़ाता है। चिंता एवं शोक से उत्पन्न हुए क्षय में यह उत्तम लाभकारी है।

---

३४७ पिण्डासव * —ग्रहणी आदि विकार नाशक ।

+ पार्थत्वक्चस्तुलामेकां मृद्वीकार्धतुलां तथा । भागं मधूकपुष्पस्य पळविंशतिसम्मितम् ॥ चतुर्द्रोणेऽम्भसः पक्त्वा द्रोणमेवावशेषयेत् । धातक्या विंशतिपलं गुडस्य च तुलां क्षिपेत् ॥ मासमात्रं स्थितो भाण्डे भवेत् पार्थाद्यरिष्टकः । हृत्फुस्फुसगदान् सर्वान् हन्त्ययं बलवीर्य कृत् ॥

—भैषज्यरत्नावली ।

* प्रास्थिकी पिप्पली प्रस्थं गुडं प्रस्थं विभीतकम् । उदकप्रस्थसंयुक्तं यत्रपक्वे निधापयेत् ॥ तस्मात्सुजातांत्तु पलं सलिलाञ्जलि संयुतम् । पिबेत्पिण्डासवोह्येष रोगानीकविनाशनः ॥ स्वस्थोऽपि यः पिबेन्मासं नरः । स्निग्धरसाशनः । तस्याग्निं दीपयत्येष आरोग्याय प्रकीर्तितः ॥

—चरक ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—पीपल का चूर्ण, गुड़ और बहेड़े का चूर्ण प्रत्येक १३-१३ छटांक लेकर सब को एक सेर जल में मिला, मिट्टी के चिकने पात्र में भर, उसका मुख अच्छे प्रकार बन्दकर, उसे जौ के ढेर में दबा देवे। एक मास पश्चात् यह पिण्डाकार अर्थात् बहुत गाढ़ा हो जावेगा। इसे काम में लावे।

मात्रा—आधा तोला से १ तोला तक। अनुपान—चौगुना जल मिलाकर सेवन करे। (ग्रन्थोक्त मात्रा आजकल के लिये बहुत अधिक है।)।

गुण—यह सब रोगों को नष्ट करता है। यदि स्वस्थ मनुष्य इसे १ मास तक सेवन करे और स्निग्ध आहार करता रहे तो उसकी जठराग्नि दीप्त होती है और स्वास्थ्य स्थिर रहता है।

३४८ पिप्पल्याद्यासव * नं० १—क्षय ग्रहण्यादिनाशक।

विधि—पीपल, कालीमिरच, चव्य, हल्दी, चीता, नागरमोथा, वायविडंग, सुपारी, लोध, पाठा, आंवला, एलवालुक

---

* पिप्पली मरिचं चव्यं हरिद्रा चित्रको घनः। विडङ्गं क्रमुको लोध्रः पाठा धात्र्येलवालुकम्॥ उशीरं चन्दनं कुष्ठं लवंगं तगरं तथा। मांसी त्वगेलापत्रञ्च प्रियंगुर्नागकेशरम्॥ एषामर्धपलान् भागान्सूक्ष्मचूर्णीकृतान्शुभान्। जलद्रोणद्वये क्षिप्त्वा दद्याद् गुडतुलात्रयम्॥ पलानि दश धातक्या द्राक्षा षष्टिपला भवेत्। एतान्येकत्र संयोज्य मृद्भाण्डे च विनिक्षिपेत्॥ ज्ञात्वा गतरसं सर्वं पाययेदग्न्यपेक्षया। क्षयं गुल्मोदरं कार्श्यं ग्रहणीं पाण्डुतां तथा॥ अर्शांसि नाशयेच्छीघ्रं पिप्पल्याद्यासवस्त्वयम्।

—शार्ङ्गधर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(शीतलचीनी) खस, सफेद चन्दन; कूठ, लौंग, तगर, बालछड़ (जटामांसी), दारचीनी, बड़ी इलायची, तेजपात, फूल-प्रियंगु और नागकेशर प्रत्येक का चूर्ण दो-दो तोले, मुनक्का ३ सेर, धाय के फूल आध सेर और गुड़ १५ सेर लेकर, कूटने योग्य द्रव्यों को कूटकर, सबको २६ सेर जल में मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर, अच्छी तरह सन्धान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। इसे जमीन में गढ़ा खोदकर, १ मास तक गाढ़ कर रखने से ही उत्तम आसव तैयार होता है। पश्चात् छान कर बोतलों में भरकर रख दे।

नोट—योगरत्नाकर, गदनिग्रह और योगतरंगिणी ग्रन्थ में इसे 'पिप्पल्याद्यरिष्ट' कहा है और उक्त लौंग, बालछड़ और बड़ी इलायची के स्थान में-लवलीफल (हरफ़ारेवड़ी), सौंफ और केवटीमोथा का चूर्ण प्रत्येक दो-दो तोले लेने को कहा गया है। शेष दोनों में बिल्कुल समानता है।

मात्रा—३ माशे से ६ माशे या १ तोला तक।

गुण—क्षय, गुल्म, उदररोग, कृशता, संग्रहणी, पाण्डु और ववासीर नाशक है। मंदाग्नि, शोथ, यकृत, प्लीहा-वृद्धि, खांसी, ज्वर एवं अरुचि को नष्ट करता है। अतिसार में जब पतले दस्त अत्यधिक होते हों, साथ ही में रक्त भी जाता हो, ऐसी दशा में इसका सेवन शीघ्र ही लाभकारक है।

"क्षय की उस अवस्था में इसका उपयोग विशेष लाभदायक है, जब कि कफ़ अधिकता से निकल रहा हो, कफ़ निकलने से रोगी दुर्बल होगया हो। यदि साधारण कफ निकलने में एक बार इसका सेवन कराने से कोई हानि न दीखे तो प्रयोग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करना योग्य है। इसको परीक्षा कर देख लें, यह अग्नि की शक्ति को बहुत शीघ्र तीव्र करता है। यदि यह सात्म्य (प्रकृति के अनुकूल) होजाय तो रोगी को अन्न पर शीघ्र रुचि आती है"।

—क्षयादर्श।

पिप्पल्याद्यासव नं० २—देखिये, कणासव।

पिप्पल्याद्यरिष्ट * प्लीहादिनाशक।

विधि—पीपल, कालीमिरच, वायविडंग, एलवालुक (शीतलचीनी) और लोध प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले, इन्द्रायन एक पाव (२० तो०), कैथ की अन्तर छाल आध सेर, हरड़ की छाल ३२ तोले, और आंवले १३ छटाँक, लेकर सब को जवकुट कर १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, ठंडा करले, फिर उसमें गुड़ १० सेर अच्छी तरह घोलकर, घृत से चिकने किये हुये मटके में भर, मुख मुद्रा कर, १५ दिन तक सुरक्षित रूप से जौ के ढेर में दबा दे। पश्चात् निकाल कर, छानकर, बोतलों में भर कर रख दे।

---

* पिप्पली मरिच विडंगैलवालुक लोध्राणां द्वे द्वे पले इन्द्रवारुण्याः पंचपलानि कपित्थमध्यस्य दश पथ्याफलानामर्द्धप्रस्थः प्रस्थो धात्रीफलानामेतदैकध्यं जलचतुर्द्रोणे विपाच्य पादावशेषं परिस्राव्य सुशीतं गुडतुलाद्वयेनाग्निसंयुक्ते घृतभाजने निक्षिप्य पक्षेमुपेक्षेत यवपल्ले। ततः प्रातः प्रातर्यथाबलमुपयुंजीत। एष खल्वरिष्टः प्लीहाग्निसङ्गार्शो ग्रहणी हृत्पांडुरोग शोफ कुष्ठगुल्मोदरकृमिहरो बलवर्णकरश्चेति॥

—सुश्रुत।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—शक्ति के अनुसार १ तोला से २॥ तोले तक। प्रातःकाल के समय सेवन करे।

गुण—तिल्ली, मंदाग्नि, बवासीर; संग्रहणी, हृद्रोग, पांडु-रोग, सूजन, कोढ़, गोला रोग; उदर रोग और कृमिरोग को नष्ट करता है। बल और उत्तम कांति की वृद्धि करता है।

नोट—यह योग 'अभयारिष्ट' नं० २ से बहुत कुछ मिलता जुलता सा है।

---

३९० पिप्पलीमूलाद्यारिष्ट *—क्षय, कासादिनाशक।

---

* समूला पिप्पली शृङ्गी वृहती ह्यश्मभेदकः। पाटळा देवकाष्ठञ्च श्वदंष्ट्राह्यभया तथा॥ एकैकात्पोडशपलं कोलानामादकं तथा। दन्ती चित्रक मूलानां पंचाविंशपलं पृथक्॥ चतुर्गुणे जलद्रोणे पचेदर्धावशेषितम्। शीतं समावपेद्भाण्डे प्रलिप्ते मधुसर्पिषा॥ खण्डस्य द्वे शते शुद्धे तद्वल्लोहं समावपेत्। पत्रीकृतं तिलोत्सेधंसूक्ष्मचूर्णान्यमूनिच॥ प्रियङ्गुं पिप्पलीं रोध्रं मृद्वीकां सैळुवालुकम्। क्रमुकं शतपुष्पां च निम्बं तेजोवतीमपि॥ पालिकान्देवदारुं च खदिरस्य चतुःपलम्। क्षौद्रप्रस्थद्वयं चापि समासिच्य घटे शुभे॥ सौम्ये पुष्ये तथा हस्ते रोहिण्यामुत्तरासुच। दशरात्रस्थितः पेयोऽरिष्ट आत्रेयपूजितः॥ आश्विभ्यां कथितं पूर्वं रसायनमिदं शुभम्। यथाग्नि वलमात्रां तु पिवेदस्य हिताशनः॥ धन्यं पुष्टिकरं मेध्यं बली पालित नाशनम्। क्षयकासज्वर प्लीह कुष्ठ गुल्माग्निमार्दवे॥ श्वित्रेऽश्मर्यां तयोर्दर्द विद्रध्यामन्त्र वृद्धिषु। पांडुरोगोदरस्तन्य रेतोदोषे च शस्यते॥ नाडीपिडिकयोर्दोषे भूतापस्मारशङ्करे॥

—गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—पीपलामूल, काकड़ासिंगी, बड़ी कटेरी, पाखानभेद, पाढल, देवदारु, गोखरू और हरड़ प्रत्येक ६४ तोले, बेर ३। सेर तथा दन्ती और चीते की जड़ प्रत्येक १। सवासेर, लेकर जबकुट कर सबको, १ मन १२ सेर जल में पकावे। (जल का प्रमाण कम है, इससे दुगुना जल लेना चाहिये) आधा जल शेष रहने पर, छानकर, एक शुद्ध मटके के भीतर घी और शहद का लेप कर, उसमें भर देवे, फिर उसमें १० सेर शुद्ध खांड, १० सेर लोहे का बुरादा, ४ सेर शहद तथा फूलप्रियंगु, पीपल, लोध; मुनक्का, शीतलचीनी, सुपारी, सोया, नीम की छाल, गजपीपल, और देवदारु प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले तथा खैरसार का चूर्ण १६ तोले, मिला, मटके का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १० दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् निकाल कर छान ले।

नोट—इस आसव को पुष्य, रोहिणी, हस्त या उत्तरा नक्षत्र में बनाना अच्छा होता है।

मात्रा—१ तो० से ३ तोले तक।

गुण—क्षय, खाँसी, ज्वर, तिल्ली, कोढ़, गुल्म; अग्निमांद्य, श्वित्रकुष्ठ; पथरी, उदर्द, विद्रधि, अन्त्रवृद्धि; पाण्डु, उदररोग, स्तन्यविकार, वीर्यविकार, नासूर, पिडिका और भूतापस्मार नाशक है। यह आसव रसायन, पौष्टिक, मेधावर्धक और वली-पलित नाशक है।

पियावांसासव—देखिये, कटसारिकासव।

पीलूल्यासव—देखिये, खेटचीन्यासव।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३९१ पीलवासव– + नं० १—अर्श, गुल्मादिनाशक ।

विधि—पीलु का रस अच्छी तरह वस्त्र से छना हुआ १३ सेर लेकर, शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें ५ सेर गुड़ तथा धाय के फूल, मुनक्का, खजूर; आंवला; पाठा; अतीस धमासा; अमलबेंत, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, दारचीनी, बड़ी इलायची, कंकोल या शीतलचीनी, लाजवती की जड़, बेर, लौंग, वायविडंग, पीपलामूल और चीता प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—बवासीर, गोला (गुल्म) तथा अग्निमांद्य नाशक है।

---

३९२ पीलवासव * नं० २—अर्श, प्लीहादि नाशक।

+ द्रोणं पीलु रसस्य वस्त्रगलितं न्यस्तंहविर्भाजने । युंजीत द्विपलैर्कदाम्बुफलाखर्जूरधात्रीफलैः । पाठामाद्विदुरालभाम्लविदुल व्योषत्वगेलोल्लकैः स्फूर्जकाकोललवङ्गवेल्लवपलामूलाग्निकैः पालिकैः ॥

गुडशत विनियोजितं निवाते,
निहितमिदं प्रपिबेच्चपक्षमात्रात् ।
निशमयति गुदाङ्कुरान्सगुल्मा—
ननलबलं प्रबलं संविधत्ते ॥

—गदनिग्रह ।

* मूर्वा खर्जूर पाठानिलरिपु मधुकं कच्छुराहारहूरा । कोलत्वग्श्वेतसाम्लं दहनमिशिकणाकृष्णाविश्वालवंगम् । स्वर्गलोध्राद्दाडिमाच्च पलमेत-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—पीलु का स्वरस (पचाङ्ग का स्वरस निकाले) १३ सेर निकाल कर शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें-५ सेर गुड़ तथा मूर्वा, खजूर, पाठा, एरण्ड की जड़, मुलैठी, कौंच, मुनक्का, बेर की छाल, अमलबेंत, चीता, सौंफ़, पीपल, काली-मिरच, सोंठ, लौंग, दारचीनी, लोध, अनारदाना और दन्ती-प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिलाकर, पात्र का मुख बन्द कर, अनाज के ढ़ेर में दबा देवे. ३० दिन पश्चात् निकालकर, छानकर बोतलों में भरकर रख ले।

मात्रा—१ तो० से २॥ तोले तक।

गुण—ववासीर, तिल्ली, गुल्म, उदररोग और मन्दाग्नि को नष्ट करता है। तथा जठराग्नि और बल की वृद्धि करता है।

---

३५३ पुनर्नवासव * नं० १—हृद्रोग, शोथादिनाशक।

मपि पृथक् दन्तिमूलेन युक्तं। पीलुद्रोणे द्विपक्षं गुडपल शतयुक्तधान्य राशौ निदध्यात्॥ अर्शः प्लीहं च गुल्मं जठरगदमथोनाशयेच्चाग्निमान्द्यम्। कुर्याच्चाग्निं प्रदीप्तं प्रबलबलयुतं पीलुसंज्ञासवोऽयम्॥ —गदनिग्रह।

* पुनर्नवे द्वे च पले सपाठे दन्तीं गुडूचीं सह चित्रकेण। निदिग्धिकांच त्रिपलां विपाच्य द्रोणावशेषे सलिले ततस्तु॥ पूत्वा रसं द्वे च तुले पुराणाद् गुडान्मधुप्रस्थयुतं सुशीते। मासं निदध्यात् घृतभाजनस्थं पल्लेयवानां परतश्च मासात्॥ चूर्णीकृतैरर्धपलांशकैस्तं हेमत्वगेलाभरिचाम्बुपत्रैः गन्धान्वितं क्षौद्रघृतप्रदिग्धं जीर्णे पिबेद् व्याधिबलं समीक्ष्य॥ हृत्पांडुरोगं श्वयथुं प्रवृद्धं प्लीहं श्रमारोचकमेहगुल्मान् भगन्दरार्शोजठराग्निकास श्वास ग्रहण्यामयकुष्ठ कण्डूः॥ शाखानिलं वद्धपुरीषतां च हिक्कां किलासं च हलीमकं च। क्षिप्रं जयेद् वर्ण बलायुरोजस्तेजोन्वितो मांस रसान्नभोजी॥ —योगरत्नाकर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—सफेद और लाल पुनर्नवा (बिसखपरा), दोनों पाठा, दन्ती, गिलोय, और चीते की जड़ ये प्रत्येक ८-८ तोले, तथा कटेरी १२ तोले, लेकर सबको जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे । १३ सेर जल शेष रहने पर, छान लेवे । ठंडा होजाने पर, शुद्ध मटके में शहद और घी का लेप कर, उसमें भर देवे तथा १० सेर पुराना गुड़, १३ छटाँक शहद (शहद दो सेर तक डालना चाहिये) उसमें मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, जौ के ढेर में दबा देवे । १ मास पश्चात् निकाल कर और छानकर पुनः दूसरे मटके में भर, उसमें नागकेशर, दारचीनी, बड़ी इलायची; कालीमिरच, सुगन्धवाला (नेत्रवाला) और तेजपात प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोले मिला, मुख बन्द कर रख देवे । लगभग १ मास के बाद पुनः छानकर बोतलों में भर कर (कोई २ नागकेशरादि का चूर्ण न डालते हुये, उनकी केवल धूनी उक्त घृत शहद से प्रलिप्त मटके में देकर आसव सन्धान करते हैं) रख दे ।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक ।

गुण—हृदय के रोग; पाण्डुरोग, खूब बढ़ी हुई सूजन, तिल्ली, भ्रम, अरुचि, प्रमेह, गुल्म, भगन्दर, बवासीर, उदररोग, खाँसी, दमा, संग्रहणी, कोढ़, खुजली; शाखागत (हाथ पैर आदि को जकड़ने वाली) वायु, कब्ज, हिचकी, किलास-नामका कोढ़ और हलीमक रोग का नाशक है । वर्ण; बल; आयुष्य, ओज एवं तेज की वृद्धि करता है । इस पर मांस रस या अन्य पुष्टिकारक शीघ्रपाची आहार करना चाहिये ।

नोट—चरक में इसका नाम 'अरिष्ट' है, जो कि योग्य है, और 'द्वे च पले' के स्थान में 'द्वे च बले' (अर्थात् बला और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अतिबला) ऐसा पाठ है, तथा 'द्रोणावशेषे' के स्थान में 'द्रोणार्धशेषे' ऐसा पाठ है। किसी २ ग्रन्थ में 'त्रिपलां' के स्थान में 'त्रिफलां' ऐसा पाठ है।

---

३९४ पुनर्नवासव * नं० २—शोथादि नाशक।

विधि—सोंठ, मिरच; पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला; दारुहल्दी, गोखरू, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, बाँसा (अड़ूसे की जड़), एरण्ड की जड़, कुटकी; गजपीपल, पुनर्नवा (बिसखपरा), नीम की छाल, गिलोय, सूखी मूली, धमासा और पटोलपत्र ये प्रत्येक ४-४ तोले तथा धायके फूल १३ छटाँक लेकर, सब को कूट कर; २६ सेर जल के साथ एक चिकने मटके में भरे और उसमें-१ सेर मुनक्का, ५ सेर खाँड, और २॥ सेर शहद मिला पात्र का मुख बन्द कर एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक।

गुण—सब प्रकार की सूजन, उदररोग, तिल्ली, अम्लपित्त,

---

* त्रिकटु त्रिफला दार्वी स्वदंष्ट्रा बृहतद्वियम्। वासामैरंडमूलं च कटुकीं गजपिप्पलीम्॥ शोथघ्नी पिचुमर्दञ्च गुडूचीं शुष्कमूलकम्। दुरालभां पटोलं च पलांशेन विचूर्णयेत्॥ धातकी षोडशपलां द्राक्षायाः पलविंशतिम्। तुलामानां सितां दत्त्वा माक्षिकार्धतुलां तथा॥ जल द्रोणद्वये क्षिप्त्वा मासं भाण्डे निधापयेत्। पुनर्नवासवो ह्येष शोथोदरविनाशनः॥ प्लीहामम्लपित्तञ्च यकृद्गुल्मज्वरादिकान्। कृच्छ्रसाध्यामयान सर्वान् नाशयेन्नात्र संशयः॥

—भैषज्यरत्नावली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यकृत (जिगर के विकार), गुल्म और ज्वर आदि कष्टसाध्य रोगों को नष्ट करता है।

नोट—इस आसव का नाम वास्तव में 'त्रिकट्वाद्यासव' होना चाहिये।

पुनर्नवासव नं० ३—शोथ पर अपूर्व प्रभावशाली।

(चि० चू० पं० विश्वेश्वरदयालुजी वैद्यराज, संपादक अ० यो० माला)

विधि—पुनर्नवे की जड़ (श्वेत मिले तो उत्तम है अन्यथा रक्त पुनर्नवा से भी काम होसकता है) ५ सेर, जबकुट कर, ३२ सेर जल में पकावे। ८ सेर शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध मटकी में भर, ठंडा होजाने पर उसमें ५ सेर मधु, धायके फूल १ सेर, द्राक्षा १ सेर ६ छटाँक; तथा पुनर्नवा, नीम, पटोल-पात, सोंठ, कुटकी, गुडूची, दारुहल्दी, हरड़ काबुली प्रत्येक का चूर्ण १०-१० तोले डालकर, मुख बन्द कर रख दे। १ मास बाद छानकर बोतलों में भर कर रख ले।

मात्रा-गुणादि उक्त पुनर्नवासव नं० १ और २ के अनुसार।

नोट—शास्त्रीय पुनर्नवासव को (अर्थात् नं० १ और २ को) शोथ पर देने पर भी अपूर्व लाभ न होते देखकर हमने सोचा कि पुनर्नवेका नाम जब शोथघ्नी है तो पुनर्नवासव में उसकी इतनी न्यून मात्रा से गुण आना असंभव है। शास्त्रों में आसवादिक प्रधान वस्तुओं से ही बनाये गये हैं और उनमें उस प्रधान वस्तु की मात्रा अधिक रहती है, तभी गुणकारी होते हैं। अतः अनुभवार्थ हमने उक्त विधि के अनुसार पुनर्नवासव को तैयार कर, उचित मात्रानुसार शोथ रोग पीड़ित रोगियों को सेवन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कराया। इसके सेवन कराने पर १ या २ घंटे बाद रोगी को १ या २ दस्त आते हैं, और दूसरे ही दिन से शोथ में परिवर्तन होने लगता है, कुल १५ दिन में ही सर्वाङ्गशोथाक्रान्त रोगी संपूर्णतया आरोग्यलाभ करता है।

पुनर्नवाद्यासव--नं० ४--देखिये, बृश्चीवाद्यारिष्ट।

पुनर्नवाद्यरिष्ट—देखिये, अभयारिष्ट नं० ३।

३५६ पुष्करमूलासव *—क्षय अपस्मारादि नाशक।

विधि—पोहकरमूल ५ सेर, धमासा २॥ सेर, धनिया १। सेर, सोंठ, मिरच, पीपल ये तीनों एकत्र १ सेर तथा मजीठ, कूठ, कालीमिरच, कैथ, देवदारु, बायविडंग, चव्य, लोध, पीपलामूल, खस, खम्भारी के फल, रास्ना, भारंगी और सोंठ ये प्रत्येक ८-८ तोले लेकर, सब को कूटकर; १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर ठंडा होने

---

* तुलां पुष्करमूलस्य तदर्धं तु दुरालभा। तदर्धेन तु धान्याकं व्योषाच्च पलविंशतिः॥ मंजिष्ठा कुष्ठमरिचं कपित्थं देवदारु च। विडंगं चविका लोध्रं पिप्पलीमूलमेव च। काश्मर्यं च तथोशीरंरास्ना भार्ङ्गी च नागरम्॥ एषां द्विपलिकान् भागाँश्चतुर्द्रोणेऽम्भसः पचेत्। द्रोणशेषे कषाये तु पूते शीते प्रदापयेत्। गुडस्य त्रिशतं तत्र धातक्याः पलविंशतिम्॥ मरिचं केसरं श्यामा एलात्वक्पत्रकं पलम्। कुडवं पिप्पलीनां तु चूर्णीकृत्य प्रदापयेत्॥ घृतभाण्डे स्थितं मासं पिबेन्मात्रां यथाबलम्। क्षयापस्मारकासासृक्शोफ गुल्मभगन्दरान्। पुष्करासव इत्येष प्रयोगादेव नाशयेत्।

—गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर, शुद्ध चिकने मटके में भर देवे और उसमें-१५ सेर गुड़, १ सेर धाय के फूलों का चूर्ण तथा कालीमिरच, नागकेशर, निसोथ, इलायची, दारचीनी और तेजपात प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले, तथा पीपल का चूर्ण १६ तोले; मिलाकर पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—क्षय, अपस्मार, खांसी, रक्तदोष, सूजन, गुल्म और भगन्दर नाशक है।

पुष्पासव—देखिये, शतपुष्पासव।

३५७ पूतीकाद्यरिष्ट +—कुष्ठ, प्रमेहादि नाशक।

विधि—पूतिकरंज (कोई २ बावची लेते हैं), चव्य, चित्रक, देवदारू, सारिवा (अनन्तमूल), दन्तीमूल, सोंठ, मिरच, पीपल प्रत्येक २४-२४ तोले, बेर की जड़ की छाल, हरड़, बहेड़ा, आमला प्रत्येक १६-१६ तोले लेकर सब का महीन चूर्ण कर, घृत से चिकने किये हुए घड़े के भीतर पीपल, शहद और घृत

+ पूतीक चव्य चित्रक सुरदारु सारिवा दन्तीत्रिकटूनां प्रत्येकं षट्पलिकां भागा बदरकुडवसिफला कुडव इत्येतेषां चूर्णानि ततः पिप्पली मधुघृतैरंतः प्रलिप्ते घृतभाजने प्राकृत संस्कारे ससोदक कुडवान्योरजोऽर्द्ध कुडवमर्द्धतुलां च गुडस्याभिहितानि चूर्णान्यावाप्य स्वनुगुप्तं कृत्वा यवपल्ले सप्तरात्रं वासयेत्ततो यथाबलमुपयुंजीतैषोऽरिष्टः कुष्ठ मेह मेदः पांडुरोगश्वयथूनपहन्ति।

—सुश्रुत।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का लेपकर, उसमें जल १ सेर ३२ तोले (जल का परिमाण बहुत कम है; कम से कम १० सेर तक जल डालना ठीक होगा), शुद्ध लोहचूर्ण ८ तोले और गुड़ २॥ सेर (गुड़ भी कम है, कम से कम ५ सेर होना चाहिये) मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, ७ दिन तक जौ के ढेर में दबा कर रख देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २॥ तोले तक, यथाबल उचित मात्रा में सेवन करे।

गुण—कोढ़, प्रमेह, स्थूलता (मेदोरोग); पांडुरोग तथा सूजन को नष्ट करता है।

---

३५८ पौष्टिकासव—नं० १—पुष्टिकारक।

(वैद्यराज—विष्णुकान्त जी जैन, सम्पादक "वैद्य" मुरादाबाद)

विधि—मुनक्का १ सेर, छुहारे १ सेर, बादामगिरी आध सेर तथा महुये के फूल, धाय के फूल, शतावरी और असगंध प्रत्येक २०-२० तोले एवं दारचीनी, जायफल, तेजपात; इलायची, लौंग, धनिया, बालछड़ (जटामांसी) और नागरमोथा प्रत्येक २-२ तोले, केशर १ तो०, खस १ तोला, खैरसार ३ तोले, पीपल १ तो० सब का चूर्ण कर शुद्ध चिकने मटके में डालकर, उसमें जल १५ सेर, शक्कर ५ सेर और शहद १। सेर मिलावे, अच्छी तरह मुख का सन्धानकर, ४० दिन तक, सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर, अथवा भवके के द्वारा अर्क खींच कर, बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—आसवार्क की १ से २ तोले तक।

गुण—इसका नियमित रूप से कुछ दिन तक सेवन करने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से बल की वृद्धि होती है, भूँख खूब लगती है, मन में मोद, उत्पन्न होता है। शरीर में स्फूर्त्ति होती है। रक्त का संचार सुचारू रूप से होने लगता है। पीते ही तत्काल बल मालूम होता है, चेहरा कान्तियुक्त और तेज सम्पन्न हो जाता है।

---

३५९ पौष्टिकासव—नं० २—निर्बलतानाशक, वाजीकरण।

(पं० बालकृष्णजी शर्मा वैद्यराज)

विधि—मुनक्का २॥ सेर, बबूल की छाल आध सेर; आँवले १० तोले, मुण्डी १०तोले, शतावरी १० तोले, कपिकच्छु ५ तोले, गोखरू ५ तोले, छरीला, जटामांसी, खस, तज, तेजपात; नागरमोथा, नरकचूर, सफेदचन्दन, और अजवायन प्रत्येक ३-३ तोले, बहिमन सफेद, बहिमन सुर्ख, छोटी इलायची, इन्द्रजौ, सौंफ, तोदरीसफेद, तोदरीसुर्ख, प्रत्येक २॥-२॥ तोले, बादाम, किसमिस और छुहारा प्रत्येक आध-आध सेर लेकर सबको अधकचरा कर, ४० सेर जल में डाल देवे, उसी में १० सेर मिश्री भी घोल देवे, फिर ऊपर से ढककर, कपड़े से पात्र का मुख बाँध देवे, तीसरे दिन उसे लकड़ी से चलाता रहे। तब तक सड़ावे, जब तक शराब की भाँति ख़मीर न उठे। पश्चात् उसमें ५ सेर गाय का दूध और २॥ सेर शन्तरों का रस डाल कर, भवके के द्वारा अर्क निकाल लेवे। ध्यान रहे यह आसवार्क ६ बोतल से अधिक न निकाला जाय, अन्यथा गुणहीन हो जावेगा।

मात्रा—१ से २ तोला तक।

गुण—पौष्टिक है, सब प्रकार की निर्बलता नाशक, स्तम्भक,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वाजीकरण, ज्वर, सिरदर्द, प्रमेह, सुजाक, तिमिर (नेत्रों के सन्मुख धुंधला सा दीखना) एवं अजीर्ण नाशक है। स्फूर्ति-दायक अर्थात् शरीर में नये जोश को पैदा करता है, और रक्त-शोधक है। अनुपान भेद से सैंकड़ों रोगों पर अनुभूत है।

---

३६० प्रमेहखंडनासव—प्रमेहादि नाशक।

विधि—घृतकुमारी (ग्वारपाठा) का रस २॥ सेर, सावर-कन्द, शतावर, गोखरू और कांस की जड़ प्रत्येक ५-५ तोले, कबाबचीनी २ तोले, हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, मिरच, पीपल प्रत्येक २॥-२॥ तोले, वंगभस्म १ तोला, धाय के फूल २० तोले, गुड़ १। सेर, शहद १॥ सेर लेकर, कूटने योग्य चीजों को जव-कुटकर, सब को एकत्र कर, घी के चिकने पात्र में भर, जमीन में गाढ़ दे। १ मास के बाद, निकाल, छान निचारकर शीशियों में भरकर रख ले।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक। दिन में ३ बार।

गुण—प्रमेह, धातु की निर्बलता, पतलापन, इन्द्रिय की व शारीरिक कमजोरी, स्वप्नदोष, पेशाब में तार जाना, मूत्र-कृच्छ्र, उदरशूल आदि के लिये रामबाण है।

(धन्वन्तरि)

---

३६० प्रसारण्यासव *—नं० १—आमवात नाशक।

---

* प्रसारण्यादकक्वाथे प्रस्थौ गुडरसोनयोः।
पक्वः पंचोषणरजः पादः स्यादामवातहा॥

—चक्रदत्त।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—प्रसारणी ८ सेर लेकर जवकुट कर ६४ सेर जल में पकावे । १६ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें गुड़ १ सेर, और लहसुन का कल्क १ सेर मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, ७ दिन तक पड़ा रहने देवे । पश्चात् छानकर उसमें पंचकोल (पिप्पली, पीपलामूल; चव्य, चीते की जड़ तथा सोंठ) का महीन चूर्ण १६ तोले मिलाकर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तो० से २॥ तोले तक ।

गुण—आमवात शीघ्र नष्ट होता है ।

---

३६१ प्रसारणयासव—नं० २—प्लीहा, यकृतादि नाशक ।

विधि—गंधप्रसारणी (पसरन) २॥ सेर, गोरखमुण्डी १। सेर, सोंफ १। सेर तथा मकोय, अनन्तमूल, नीमके फूल, गिलोय (नीम के ऊपर की), कंजा की गिरी, मेंहदी के पत्ते सेमल की मुसली, कंटकारी की जड़, गूमाकी जड़, चीते की जड़, और नीम की छाल प्रत्येक १०-१० छटाँक तथा चिरायता ६ छटाँक, छोटी हरें, बड़ी हरें, लालचन्दन, सफेदचन्दन, वायविडंग, चोपचीनी प्रत्येक ५-५ छटाँक, सनाय के पत्ते २॥ छटाँक, मुलैठी १। छटाँक, सबको जवकुट कर, छः गुने जल में मिलाकर, शुद्ध मिट्टी के बर्तन में रख मुँह बन्द कर रख देना चाहिये । ७ दिन के बाद बारुणी यंत्र से अर्क खींच लेवे ।

मात्रा—१ तोला । समभाग जल में मिला, प्रातः सायं सेवन करावे ।

गुण—प्लीहा, यकृत, जीर्णज्वर, वातव्याधि, कास; श्वास,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कफ, दुर्बलता, सुस्ती, हाथ पांव की जलन, दूषित रक्त, कुष्ठ, प्रमेह, धातुदौर्बल्य इत्यादि रोगों का नाशक है। पाचनशक्ति बढ़ाता है; पाखाना साफ लाता है। और शरीर में शुद्ध रक्त को पैदा करता है।

(अ० योगमाला)

---

३६२ प्रसूताऽमृत (अरिष्ट)—प्रसूता स्त्री के लिये हितकर।

(राजवैद्य डा० इन्द्रदत्तजी शर्मा, जलालाबाद)

विधि—पीपल, अजवायन, पीपलामूल, पीलीसरसों, काली मिरच, भारंगी, गजपीपल, पाढ़, सोंठ, मीठे इन्द्रजौ, चीता, सफेदजीरा, बड़ी इलायची के बीज, चव्य, बकायन की छाल, अतीस, कुटकी और बायविडंग प्रत्येक ५-५ तोले, सबको जव-कुट कर २० सेर जल के साथ पकावे, (१० सेर जल शेष रहने पर) फिर छानकर एक शुद्ध चिकने मटके में भर, (ठंडा होजाने पर) उसमें मुनक्का (बीजरहित) साफ की हुई १। सेर, गुड़ देशी १। सेर और शहद १ सेर मिला, पात्र का मुख बंद कर, ४० दिन तक जमीन में गाढ़ कर रक्खे। पश्चात् निकाल, छान-कर बोतलों में भर, (बोतलों में कडी डाट लगा) १० दिन कड़ी धूप में रक्खे। फिर छानकर काम में लावे।

मात्रा—२ तोले। अर्क दशमूल अथवा उष्णोदक के साथ मिलाकर सेवन करे।

गुण—प्रसूता को इसके सेवन से शीघ्र बल आता है, तथा प्रसूति-सम्बन्धी कोई उपद्रव नहीं होने पाता।

(धन्वन्तरि-सिद्धयोगांक)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३६३ प्रसूतिकाज्वरघ्नासव—प्रसूता विकार नाशक।

(श्री स्वामी चैनदासजी वैद्य, लाडनू, मारवाड़)

विधि—चिरायता, सोंफ, सरफोका, नीम का पंचाङ्ग, सहचर, देवदारु, पुष्करमूल; पीपल, कालीमिरच और सोंठ प्रत्येक १-१ तोला तथा प्रसारिणी, गिलोय, बबूल की जड़ की छाल, हरड़ की छाल, कुशा की जड़ और फालसा प्रत्येक २॥-२॥ तोले, तथा श्वेत पुनर्नवे की जड़ की छाल, इन्द्रायन की जड़ की छाल, हिरणखुरी, सिरस की छाल, रोहेडे (रोहितक) की छाल; नागरमोथा और कंटकारी (कटेरी) प्रत्येक ५-५ तोले, लेकर सबको जवकुट कर, ३० सेर जल में पकावे। १५ सेर जल शेष रहने पर छानकर ठंडा कर लेवे। पश्चात् उसमें १। सेर असली शहद मिला कर; एक छोटे मुख के मिट्टी के पात्र में भर, उसका मुख अच्छी तरह बन्द कर, जमीन में गाढ़ देवे। गरमी के दिनों में लगभग २० दिन तक, और सरदी के दिनों में करीब ३० दिन तक उस पात्र को गढ़ा रहने देवे। पश्चात् उसे बाहर निकाल, आसव को एक गाढ़े वस्त्र से छानले और निथार कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—२ तोले से २॥ तोले तक। मध्यान्ह (दोपहर) के समय और रात्रिको १० बजे सेवन करावे।

गुण—कब्ज, अफारा; दर्द, श्वास, कास, शोथादि शिकायतों सहित प्रसूतिका ज्वर दूर करने में यह अत्युत्तम है।

(धन्वन्तरि)

---

३६४ प्राणाप्तारिष्ट—उत्तम रक्त शोधक।

(पं० कालीचरणजी दुबे वैद्यशास्त्री, नागपूर)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—नीम के ऊपर की गिलोय २ सेर, करंजमज्जा आध सेर, चिरायता और मिलावे प्रत्येक १०-१० तोले तथा—दारु-हल्दी, इन्द्रजौ, मजीठ, शाल्मी, देवदारु, भूमिआंवला, पित्त-पापड़ा, निशोथ, तगर; गजपीपल, नीम की छाल, कटेरी, नागरमोथा, अमलतास, सोंठ, पाढ़ल, कुटकी, छोटी पीपल, कुश की जड़, धनिया, जावित्री, जायफल, लौंग, विष्णुकांता; अज-वायन, पीपलामूल; अजमोद, कालीमिरच, चित्रक, सफेदजीरा, स्याहजीरा, सौंफ, वच, बायविडंग, रास्ना, चोक, भारंगी; काकड़ासिंगी, हरिद्रा, रसौत, बाबची; पंवार के बीज, लोध, दारचीनी, तेजपात, नागकेशर, जटामाँसी, कचूर, मुस्तवर, अडूसा, बकायन की छाल, गूमा, हरड़, बहेड़ा, आमला और दशमूल के दश द्रव्य, प्रत्येक ४-४ तोले लेकर, सबको जवकुट कर, १॥ मन जल में पकावे, २० सेर शेष रहने पर, छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर, ठंडा होने पर, उसमें २ सेर शहद, १ सेर धायके फूल और २॥ सेर गुड़ मिला कर, मुख मुद्रा कर सुरक्षित रखे। १ माह के बाद छानकर, बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—बड़ों को १ तोला तक। बालकों को ३ माशे तक। गुण—उत्तम रक्तशोधक, बच्चों के फोड़े, फुन्सी आदि रक्त विकारों को तथा खाँसी, श्वास आदि कफ के रोगों को शीघ्र दूर करता है। उपदंश पर श्रेष्ठ लाभदायक है। इसे ही कोई २ सुरवल्लीकषाय या अमृतवल्लीकषाय भी कहते हैं।

प्रातिकाकुसुमासव—देखिये, जपाकुसुमासव।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३६५ प्लक्षासव—(स्वकृत)—उदावर्त्तादि नाशक।

विधि—पाकड़ वृक्ष की जड़ की छाल २॥ सेर और पाकड़ के ही फल २॥ सेर लेकर, जवकुट कर, १३ सेर जल में पकावे। ६ सेर जल शेष रहने पर छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भरे। और ठंडा होने पर, उसमें-शहद ३ सेर; धाय के फूलों का चूर्ण आध सेर और गुड़ ५ सेर मिला, अच्छी तरह मुखमुद्रा कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—उदावर्त और वातगुल्म पर लाभदायक है। रक्त-दोष नाशक और अतिसार पर भी गुणदायक है।

---

३६६ छीहादिहरासव—नं० १—छीहादि रोग नाशक।

(श्री० वैद्यराज पं० शालिग्राम जी भड़ी)

विधि—घृतकुमारी (घीकुआर) का रस १० सेर; हरड़, बहेड़ा, आमला तीनों का चूर्ण १ सेर; मंडूर शुद्ध वारीक २ सेर, पुराना गुड़ २ सेर, सोंठ, मिरच, पीपल, तीनों का चूर्ण ५ तोले, पोदीना, दालचीनी और बबूल की जड़ प्रत्येक का चूर्ण ५-५ तोले तथा वायविडंग, अजवायन की जड़, मकोय डोडी और कालाजीरा प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले तथा कालानमक, देशी नमक, शोरा और सुहागा प्रत्येक ३—३ तोले चूर्ण कर, सबको एकत्र, एक बड़े चिकने मटके में भरे। (इसमें गुड़ की चाशनी करके मिलाना चाहिये) मटके का मुख अच्छी तरह बन्दकर रेह या भूसे में दबा देवे। शीतकाल में २० दिन तक और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उष्णकाल में १० दिन तक रक्खे। पश्चात् निकालकर; छान लेवे और बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—यथाबल देखकर १ से ४ तोले तक।

गुण—प्लीहा, यकृत, मेदे के रोग, कफ़ज-शोथ (सूजन), कब्ज़ी, गुल्म और उदर विकारों पर कभी निष्फल नहीं जाता।

(धन्वन्तरि)

नोट—लेखक ने इसका नाम केवल 'प्लीहाप्रहार' रक्खा है।

—सं०।

---

३६७ प्लीहादिहरासव—नं० २—

(प्रो० डाक्टर० के० डी० तलनिया जी वैद्यशास्त्री)

विधि—प्रथम ३ सेर ग्वारपाठे के गूदे को निकाल, एनामल्ड (कलईदार) बर्तन में १०५ फा० हीट तक अग्नितप की उष्णता देकर; स्वच्छ वस्त्र से छानकर अर्क को अलग निकाल रक्खे। फिर इस अर्क में उत्तम नवीन त्रिफले (हरड़, बहेड़ा, आमला) का महीन चूर्ण २ सेर तक मिला, २४ घंटे धूप में रक्खे पश्चात् छानकर, उसमें उत्तम मन्डूर भस्म ५ तोले मिला, रोजाना ७ दिन तक धूप में रक्खे। धूप में सूखने के बाद जब रस १ सेर शेष रहे (यदि धूप से सब अर्क सूख जाय तो १० तोले त्रिफले को २ सेर पानी में डाल, चतुर्थांश क्वाथ सिद्ध कर, उसमें डाल देना चाहिए।) तब तक इस अर्क में पुनः उक्त विधि से निकाला हुआ घृतकुतारी (ग्वारपाठे) का अर्क ३॥ सेर मिला तथा उसे शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें-कौड़ी की भस्म और अमृतसत्व (नौसादर का जौहर) प्रत्येक १५-१५ तोले, चीते की जड़ की छाल का चूर्ण १० तोले तथा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सज्जीखार, कालानमक, खाने का सोड़ा (सोड़ावाईकार्ब) और जवाखार प्रत्येक ५-५ तोले, चूर्ण कर मिलावे और धाय के फूलों का चूर्ण १ सेर मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, (मुख पर ७ कपड़ मिट्टी कर देवे) १ मास तक खाद की राशि में दबाकर रक्खे। पश्चात् नवीन मलमल के वस्त्र में छान, स्वच्छ बोतलों में भर; दृढ़ कार्क लगा कर रख देवे।

मात्रा-१ तोला से २॥ तोले तक। खालीपेट, आवश्यकतानुसार, सेवन करे।

गुण—बढ़ी हुई प्लीहा तथा गुल्म पर अव्यर्थ है। वातजनित खांसी (सूखी खांसी) पर भी यह तत्काल गुणप्रद है।

('वैद्य'-मुरादाबाद)

---

३६८ प्लीहादिहरासव—नं० ३—

(प्रो० डाक्टर के० डी० तलानेया जी वैद्यशास्त्री)

विधि—घृतकुमारी (ग्वारपाठा) का लुआब ४ सेर, अमृतसत्व (नौसादर जौहर) १० तोले तथा मंडूरभस्म; कौड़ी की भस्म, सज्जीखार, कालानमक; खाने का सोड़ा; जवाखार और चीते की जड़ की छाल का महीन चूर्ण प्रत्येक ५-५ तोले तथा हीरा हींग घी में भुनी हुई १ तोला लेकर सबको एक बड़े चीनी मिट्टी के पात्र में भर तथा अच्छी तरह मज़बूती से मुख मुद्राकर; खाद की राशि में १५ दिन तक दबाकर रक्खे। पश्चात् छान कर, उसमें टिंचरजिंजर (देखिये शुण्ठ्यासव) ५ तोले मिला, स्वच्छ बोतलों में भर दृढ़ कार्क लगाकर रखदे।

मात्रा—६० बून्द से १। तोला तक। प्रातः सायं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—बढ़ी हुई प्लीहा (तिल्ली) और गुल्म पर अक्सीर है। १५ दिन से १ माह के अन्दर पूर्ण लाभ नज़र आता है। हर किस्म के पेट के दर्दों पर तत्कालिक गुणप्रद है। वातज-कास (सूखी खांसी) पर अनुभव सिद्ध है; फेफड़ों में चिपटे हुए कफ़ को तोड़ तुरन्त बाहर धकेलता और स्वरनलिका को दुरुस्त कर देता है। रक्तशोधक तथा अग्निप्रदीपक है। कोष्ठा-श्रित बढ़े हुए दोषों का भेदक है, किंतु किंचित् पित्तकारक है, वात और कफ़ का नाशक है।

---

३६९ प्लीहादिहरासव—नं० ४—

(प्रेषक० श्री० बालकृष्ण जी शर्मा वैद्यराज)

विधि—घृतकुमारी का रस ५ सेर, कालीमुनक्का ५ सेर; शहद २॥ सेर, धाय के फूलों का चर्ण आध सेर और हीरा-कसीस ५ तोले, लेकर सबको एक चीनी मिट्टी के पात्र में भर कर अच्छी तरह मुख बन्दकर, धूप में १ मास तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—६ माशे से १ तोला तक। समय-प्रातः सायं। अनुपान-प्रत्येक मात्रा में पानी दो तोला और नौसादर १ माशा (यथोचित मात्रानुसार) मिलाकर सेवन करे।

गुण—प्लीहा और यकृत के विकारों को शीघ्र ही दूर करता है, पेट साफ़ करता है, भूँख को बढ़ाता है।

(वैद्यक चिकित्सासार)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३७० प्लीहादिहरासव नं० ५—

(श्री० शालिग्रामजी देव शुक्ल वैद्यराज)

विधि—घृतकुमारी का गूदा, नौसादर, शहद, चित्रक, प्रत्येक एक-एक सेर; एकत्र कर, कांच के पात्र में भर मुख बन्द कर रख दे। २१ दिन के बाद छानकर पुनः बोतलों में भर ले।

मात्रा—६ माशे।

गुण—२१ दिन तक बराबर सेवन करने से तिल्ली नष्ट होजाती है।

(अ० योगमाला)

नोट—इसमें नौसादर और चित्रक का प्रमाण चिंतनीय है।

—संपादक।

३७१ प्लीहादिहरासव—नं० ६

(कविराज गौरीशंकरजी आनन्द)

विधि—कुमारी (ग्वारपाठा) का रस ५ सेर, एक शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें गुड़ १ सेर, मण्डूरभस्म आध सेर, पांचों नमक मिलित १० तोले तथा अजवायन, हरड़, सौंफ, कुटकी, सोंठ, पीपल; कालीमिरच, नवसादर, जवाखार, सज्जी-खार, सुहागा और बायबिडंग प्रत्येक का चूर्ण ५-५ तोले, चीते की जड़ का चूर्ण ५ तो० और हींग भुनी हुई १ तोला, सबका चूर्ण कर मिला देवे। पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। इसे रोज धूप में रखना चाहिये। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख ले।

मात्रा—६ माशे से १ तोला तक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—प्लीहा (तिल्ली) और यकृत के विकार, उदररोग, कास, श्वास, तथा स्त्रियों के रजस्राव (मासिकधर्म) बन्द हो जाने पर भी लाभदायक है। अत्यन्त पाचक और गुणकारी है।

प्लीहादिहरासव—नं० ७—देखिये, यकृतान्तकासव।

प्लीहान्तकासव—देखिये, कुमार्यासव नं० १२।

प्लीहा—प्रहारासव—देखिये, प्लीहादिहरासव नं० १।

प्लेगहरासव—देखिये, कट्फलाद्यासवार्क।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३७२ फलारिष्ट *--संग्रहण्यादि नाशक।

विधि—हरड़ और आमले प्रत्येक १३-१३ छटाँक, इन्द्रायन की जड़, कैथ का गूदा, पाठा और चीते की जड़ ये प्रत्येक ८-८ तोले लेकर, सबको कूटकर, २६ सेर जल में पकावे। ६। सेर जल शेष रहने पर, छानकर उसमें ५ सेर गुड़ घोलकर, शुद्ध चिकने मटके में भर, अच्छी तरह मुख मुद्रा कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे, या जमीन में गाढ़ कर रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर देवे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक।

गुण—संग्रहणी, बवासीर, हृदय के रोग, पाण्डुरोग, तिल्ली, कामला और विषमज्वर नाशक है। वायु तथा मलमूत्र

---

* हरीतकी फलप्रस्थं प्रस्थमामलकस्य च। विशालाया दधित्थस्य पाठाचित्रकमूलयोः॥ द्वे द्वे पले समाक्षिप्य द्विद्रोणे साधयेदपाम्। पादावशेषे पूते च रसे तस्मिन्प्रदापयेत्॥ गुडस्यैकां तुलां वैद्यः संस्थाप्यो घृतभाजने। पक्षस्थितं पिबेदेनं ग्रहण्यर्शो विकारवान्॥ हृत्पांडुरोगं प्लीहानं कामलां विषमज्वरम्। वर्चोसूत्रानिलकृतान्विबन्धानग्नि मार्दवम्॥ कासं गुल्ममुदावर्तं फलारिष्टो व्यपोहति। अग्निसन्दीपनो ह्येष कृष्णात्रेयेण भाषितः॥

—चरक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का अवरोध, अग्निमांद्य, खाँसी, गुल्म और उदावर्त को नष्ट, कर, अग्नि को प्रदीप्त करता है।

फलेन्द्रासव--देखिये, जम्ब्वासव नं० ३।

३७३ फालसासव--(स्वकृत)--रक्तप्रदर नाशक।

विधि—फालसे के वृक्ष की छाल ५ सेर, जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे, १३ सेर जल शेष रहने पर, ठंडा होजाने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें मुण्डी के फूल १ सेर, धायके फूल १३ छटाँक, मिश्री ५ सेर और शहद ३॥ सेर (फूलों का और मिश्री का चूर्ण कर) मिला देवें। पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खा रहने देवें। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक।

गुण—रक्तप्रदर को शीघ्र ही नष्ट करता है। मूत्रकृच्छ्र, और मूत्रमार्ग-निरोध को भी दूर कर देता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ब

बनप्लासव—देखिये, वनप्लासव।

३७४ बब्बुल्यासव * नं० १—क्षयादि नाशक।

विधि—बबूल (कीकर) की छाल १० सेर लेकर, जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहनेपर, छानकर, ठंडा होने पर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें-गुड़ १५ सेर, धाय के फूलों का चूर्ण १३ छटांक, पीपल ८ तोले, जायफल (अथवा जावित्री), लौंग, कंकोल, बड़ी इलायची, दारचीनी, तेजपात, नागकेशर, और कालीमिरच का चूर्ण प्रत्येक ४-४ तोले, मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भरकर रख दे।

---

* तुलाद्वयं तु बब्बुल्याश्चतुर्द्रोणेऽम्भसः पचेत्। द्रोणशेषे रसे शीते गुडस्य त्रिशतं क्षिपेत्॥ धातक्याः षोडशपलं पिप्पलीनां पलद्वयम्। जातीलवङ्गकङ्कोलमेलात्वक्पत्र केसरम्॥ मरिचेन समायुक्तं पलिकांस्तत्र कल्पयेत्। मासमात्रं स्थितो ह्येष बब्बुल्यासव संज्ञितः। क्षयं कुष्ठं प्रमेहांश्च कासश्वासांश्च नाशयेत्॥

—गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक, आवश्यकतानुसार।

गुण—क्षय, कोढ़, प्रमेह, खांसी और दमा का नाशक है। यह आसव अतिसार, क्षय के दस्त, मूत्रातिसार (बहुमूत्र), शुक्रमेह, त्वचा के रोग, प्रदर, उरःक्षत, रक्तपित्त और रक्त के विकारों को नष्ट करता है। इसके सेवन से दस्त बँधा हुआ साफ होता है, खांसी में कफ़ के साथ रक्त निकलता हो, छाती में दर्द हो तो शीघ्र ही लाभ पहुंचाता है। भूँख को बढ़ाकर, शक्ति को बढ़ाता है। लिंग फूलना, पेशाब में जलन, मूत्रनली में सुरसुराहट, स्त्री-संग की अत्यन्त कामना होना, पेशाब में पीलापन या सब्जीपन होने और बाधी होने पर यह शीघ्र ही लाभदायक है। यह क्षय की सूखी खाँसी को गीली करता है, फुप्फुसादि में चिपटे हुए कफ़ को बाहर निकालता है। धातु-क्षय में पूर्ण लाभकारी है। पुरानी खाँसी या काली खाँसी पर इस आसव की मात्रा २॥ तोले, गुलाबजल, चन्दन का शर्बत यथावश्यक मात्रा में मिला, भोजन के बाद सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है। श्वासयुक्त क्षय में यह उत्तम है।

नोट—भैषज्यरत्नावली, शार्ङ्गधरादि ग्रन्थों में इसे 'बब्बूल्यारिष्ट" कहा गया है।

---

३७९ बब्बुलासव—नं० २—श्वासकास नाशक।

(रसायनाचार्य—आर० के० शर्मा, जगराओं)

विधि—बबूल (कीकर) की छाल दो सेर तथा इन्द्रायनकी जड़, कचनार की छाल, कटेरी (व्याघ्री) के फल, बाबूना, मुलैठी, जूफा, अंजबार, बच, कीकड़ का गोंद, कतीरा गोंद,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अकरकरा ये प्रत्येक १०-१० तोले लेकर, सब का चूर्ण कर, शुद्ध चिकने छड़े में भर, उसमें-६ सेर गुड़ और २६ सेर जल मिला, सबको अच्छी तरह घोलकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १० दिन तक लीद में गाढ़कर रक्खे। पश्चात् छानकर उसी मटके में पुनः ६ सेर गुड़ मिला और १० दिन तक लीद में दबाकर रक्खे, फिर छानकर काम में लावे।

मात्रा—२॥ तोले तक।

गुण—पुराना श्वास (दमा), कास, निर्बलता तथा सब प्रकार के कफ रोगों में अत्यन्त लाभप्रद है। वीर्यवर्धक एवं कामोत्तेजक भी है।

बब्बूल्याद्यरिष्ट—देखिये, श्वासान्तकारिष्ट।

३७६ बलारिष्ट *—वातव्याधि नाशक।

विधि—खरैंटी की जड़ और असगन्ध प्रत्येक ५-५ सेर लेकर, जवकुटकर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, चिकने मटके में भर देवे और उसमें—१५ सेर गुड़, १३ छटांक धाय के फूलों का चूर्ण तथा शतावर और एरण्ड की छाल; प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले,

---

* बलाश्वगन्धयोर्ग्राह्यं पृथक् पलशतं शुभम्। चतुर्द्रोणे जलेपक्त्वा द्रोणमेवावशेषयेत् ॥ शीते तस्मिन् रसे पूते क्षिपेद् गुड तुलात्रयम्। धातकीं षोडशपलां पयस्यां द्विपलांशिकाम् ॥ पंचाङ्गुलपल द्वन्द रास्नामेलांप्रसारिणीम्। देवपुष्पमुशीरं च श्वदंष्ट्रां च पलांशिकाम् ॥ मासं-भाण्डेस्थितस्त्वेष बलारिष्टो महाफलः। हन्त्युग्रान् वातजान् रोगान् बलपु-ष्ट्यग्निवर्धनः ॥ —भैषज्यरत्नावली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रास्ना, इलायची, प्रसारणी, लौंग, खस और गोखरू प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिला, १ मास तक, अच्छी तरह मुखमुद्रा कर रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तोले से ४ तोले तक।

गुण—प्रबल से प्रबल वातव्याधि को नष्ट करता है और बल, पुष्टि तथा अग्नि की वृद्धि करता है।

---

३७७ बलभारिष्ट—नं० १—कुष्ठादे नाशक।

विधि—उसवा ४० तोले, अनन्तमूल १ सेर, कटेरी की जड़ २० तो०, कचनार की छाल ४० तो० तथा सिरस की छाल, मजीठ, चिरायता, स्यातरा (पित्तपापड़ा), गिलोय, देवदारु, मुंडी, सरफोंका, बबूर (कीकर) की छाल, जवासे की जड़, देवदारु, बकायन की छाल ये प्रत्येक २०-२० तोले और इन्द्रायन की जड़ ४० तोले, सब को जवकुट कर, १ मन १० सेर जल में पकावे। १२ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें—कत्था २० तोले, त्रिफला ६ तोले, कुटकी, उन्नाब, मुनक्का, नीम के फूल और मेंहदी ये प्रत्येक २-२ तोले, चन्दन दोनों २० तो०, गुलबनपशा २ तो०, शतावर २ तो०, धाय के फूल २ तो०, इन्द्रायन की जड़ ५ तो०, बच २ तो०, बावची २ तो०, शहद २ सेर और गुड़ ५ सेर, मिला पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ५ तो० तक। अनुपान—२॥ तो० जल तथा १ तो० शर्बत उन्नाव या शहद।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—कुष्ठ, उपदंश तथा अन्य किसी भी प्रकार से उत्पन्न रक्तविकार, वातरक्त तथा व्रण नाशक है। रक्तविकार की यह अनुपम अव्यर्थ औषधि है।

(धन्वन्तरि-प्रयोगांक)

---

३७८ बलभारिष्ट-नं० २—रक्तविकार नाशक।

(वैद्यराज गौरीशंकर जी आनन्द)

विधि—उसवा, कचनार की छाल, चोबचीनी और इन्द्रायन की जड़ प्रत्येक ४०-४० तोले, अनन्तमूल १ सेर तथा शीशम की छाल, कटेरी की जड़, सिरस की छाल, मजीठ, चिरायता, पित्तपापड़ा, गिलोय, मुण्डी, सरफोंका, हरड़; बहेड़ा, आमला, कोकड़ की छाल; देवदारु, बकायन की छाल, जवासे की जड़ प्रत्येक २०-२० तोले। सबको जवकुट कर ५० सेर जल में २४ घंटे भिगो, क्वाथ करे। चौथाई भाग शेष रहने पर, छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें कत्था २० तोले, जंगी हरड़ ६ तो० तथा कुटकी, उन्नाव, मुनक्का, नीम के फूल, मेंहदी के पत्ते, रसौत, धाय के फूल, वच, गुलाब के फूल प्रत्येक २-२तोले, इन्द्रायन की जड़, धमासा, गोखरू, दारुहल्दी, चित्रक, वायविडंग और कचूर प्रत्येक ५-५ तोले, दोनों चन्दन २० तो०, शहद २ सेर गुड़ २ सेर मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ३ तो० तक। अनुपान-जल, या शर्बत उन्नाव अथवा अर्क उन्नाव में मिला कर दे।

गुण-रक्तदुष्टि, व्रण, खाज और उपदंश में अत्यंत उपकारी है।

(अ० चि० संग्रह)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नोट—यह नं० १ की ही नकल मालूम होती है, द्रव्यों में किंचित् परिवर्तन होने से हमने इसे भी लिख दिया है।

—संपादक।

---

३७९ बाकुच्यासव—श्वेतकुष्ठ पर।

(वैद्यराज पं० टीकादत्तजी त्रिवेदी, मुरादाबाद)

विधि—बावची १। सेर, खैरसार की लकड़ी का बुरादा १। सेर, आमले, १। सेर; सबको जवकुट कर, १० सेर जल मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर देवे और उसमें पुराना गुड़ ४ सेर, शहद २॥ सेर मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर, बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक।

गुण—श्वेतकुष्ठ, पामा, खुजली आदि रोगों में अत्यन्त हितकर है।

बालछड़ासव—देखिये, जटामास्यासव।

३८० बाळजीदन सिन्धु (आसव)—बाल-विकारनाशक।

(श्री डा० के० डी० तलनियाजी—अल्मोड़ा)

विधि—चूना (कलई का बिना बुझा हुआ) २॥ सेर लेकर, साफ़ औटते १॥) मन पानी में बुझा कर १-१ घंटे बाद, एक बड़ी कलईदार करछी से हिलावे, ऐसा १७ बार करके, ३ घंटे बाद, चूने के ऊपर जमी हुई मलाई फेंक देवे, और पानी को धीरे २ कलईदार एक बड़े डेग या मिट्टी के मटके में डाल कर,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसमें अमलतास का गूदा २० तोले, काबुली हरड़ और सुहागे का फूल १५-१५ तोले, तथा गुलबनफसा, सौंफ, सफेदजीरा; गुलाब के फूल; उन्नाव, बायविडंग, मुनक्का और सोंठ का चूर्ण १०-१० तोले, मुलैठी, पीपल और काकड़ासिंगी का चूर्ण प्रत्येक ५-५ तोले, और अतीस का चूर्ण २॥ तोले, सबको मिला कर, आग पर हल्की आंच से पकावे। औषधियों के तोल का चौगुना (अष्टमांश) क्वाथ शेष रहने पर, साफ़ कपड़े से ३ बार छान; उसमें २॥ सेर चीनी (दानेदार बूरा) (अथवा २॥ सेर शहद मिला), पुनः आँच देवे। एक तार की चाशनी जैसा होजाने पर, उतारले; और शीतल होजाने पर, पुनः छानकर, उसमें नीबू का सत २॥ तो० और नौसादर का महीन चूर्ण १ तोला मिलाकर पात्र का मुख बन्द कर रख देवे। दो रोज तक घन्टे २ बाद हिलाते रहना चाहिये। फिर बाद में ७ दिन तक दवा के पात्र को न हिलावे। पश्चात् ९ वें दिन ऊपर का अर्क (आसव) या तो पिचकारी से खींच लेवे, या धीरे से निथार लेवे। नीचे का जमा हुआ फोक उसमें न मिलने पावे। पश्चात् इस आसव में देशी कपूर ६ माशे, पीपरमेंट (सत पोदीना) ६ माशे और अजवायन का सत ३ माशे एकत्र मिला (इन तीनों का पिघला हुआ अर्क) मिला दे, और गुलाब का इत्र, चन्दन का तैल (असली), और दारचीनी का असली तैल प्रत्येक १-१ तोला, मिला कागदार शीशियों में भर ले।

मात्रा—१ से ६ माह के बालक को १० बूंद, ६ माह से १ साल तक १५ बूंद, १ से ५ साल तक २५ बूंद, दूध या पानी के साथ देवे।

गुण—बच्चों के सब रोग, खाँसी, अजीर्ण, कै, दस्त, कृमि-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रोग, सूखारोग, चर्मरोग, खुजली आदि तथा दूध फेंकना, संग्रहणी, अतिसार आदि विकार दूर होते हैं। बालकों को मोटा; ताजा बनाता है।

(धन्वन्तरि-सिद्धयोगांक)

---

३८१ बालरक्षकासव—बालरोग हारक।

(श्रीयुत वैद्यराज बालकृष्णजी शर्म्मा)

विधि—मुलैठी का सत, अतीस, नागरमोथा, काकड़ासिंगी; पीपल; मीठी बच, वायविडंग, जायफल, जावित्री, और केशर प्रत्येक १-१ तोला, कस्तूरी ३ माशे और रेक्टीफाइडस्पिरट ४० तोले, लेकर, सबको जवकुट कर, स्पिरट में मिला; बोतल में भर देवे, अच्छी तरह मुख मुद्रा कर, ७ दिन तक धूप में रक्खे। पश्चात् फलालेन में छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ से १५ बून्द तक, आयु के अनुसार। अनुपान दूध या पानी में मिला कर सेवन करावे।

गुण—बालकों की सरदी, ज्वर, कफ, खाँसी, न्युमोनिया, तिल्ली; कमजोरी, आक्षेपक (आकड़ी) आदि नाशक है। यदि बालक को कब्जी हो तो इसमें एलुआ या रेवन्दचीनी मिला कर देने से दस्त साफ होजाता है। यदि उसे दस्त अधिक होते हों तो इसमें यथोचित परिमाण से अफीम मिला कर देवे; तत्काल दस्त बन्द होजाते हैं।

---

३८२ बालसुधासव नं० १—बालरोग हर।

(श्री० स्वामी चैनदास जी वैद्यराज लाडनूं)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—थूहर के पकके फल १ तो०, सफेद अतीस, बेलगिरी, काकड़ासिंगी, पीपल, कपूर और मोचरस प्रत्येक का चूर्ण ६-६ माशे तथा गुडूची, सोंफ़ और इलायची के दाने प्रत्येक का चूर्ण १॥-१॥ तोले, नागरमोथे का चूर्ण २॥ तोले, बड़ी हरड़ें (करीब २-२॥ तोले वजन वाली) का चूर्ण ५ तोले, शहद १ सेर और चूना बुझाया हुआ जल ५ सेर लेकर, प्रथम थूहर के फल को काँटों से रहित कर, टुकड़े २ कर लेवे। फिर सब द्रव्यों को एक शुद्ध चिकने मटके में भर, अच्छी तरह कपड़ मिट्टी से पात्र का मुख बन्द कर, जमीन में गाढ़ देवे। १ मास के बाद निकाल, मजबूत वस्त्र से छान लेवे, कुछ देर नितर जाने पर शीशियों में भरकर रख ले।

मात्रा—४ माशे से ६ माशे तक तथा १ तोला से १। तोला तक अवस्थानुसार, दिन में ३ या ४ वार जल के साथ सेवन करावे।

गुण—ज्वर, अतिसार, हैजा, कफ़, खांसी, सूखारोग आदि बालकों की बीमारियों को दूर करने में अद्वितीय है।

(अ० यो० माला० सिद्धयोगांक)

---

३८३ बालसुधासव नं० २—बालरोग हर।

(वैद्यराज गुरुदयाल जी उपमन्यु, वाह, आगरा)

विधि—बड़ी हरड़ का छिलका, अनार का बक्कल बहेड़े की मींगी और छिलका, प्रत्येक ५-५ तोले, बबूल की अन्तर छाल १० तोले, जावित्री दो तोले, जायफल १० नग, कूठ दो तोले और पीपल ५ तोले. इन सबको कूटकर, २॥ सेर जल में मिला,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें-गुड़ १ सेर और शहद २० तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, जमीन में गाढ़ देवे। २० दिन के बाद निकालकर, छान लेवे।

मात्रा—१ माशा से १ तो० तक।

गुण—बालकों के ज्वर, कास, पाचनशक्ति की कमजोरी तथा अन्यान्य रोगों पर रामबाण है।

---

३८४ बालसुधासव-नं० ३—बालरोग हर।

(वैद्यराज श्री बालकृष्ण जी शर्म्मा,-भूपाल)

विधि—सोये के बीज, जीरा और सौंफ प्रत्येक १०-१०तोले, पोदीना ५ तोले इन चारों को जवकुट कर ६०० तोले (७॥ सेर) जल में १२ घंटे तक भिगोने के बाद, नलिका यन्त्र द्वारा अर्क खींच लेवे। जब ४०० तोले अर्क खिंच जावे तब उसमें-सोडा बाईकार्ब (खाने का सोड़ा) ४ तोले और सादा शर्बत ६० तो० मिला, मुख बन्दकर ७ दिन तक रक्खा रहने देवें। पश्चात् फलालेन से छानकर बोतलों में भरकर रख ले।

मात्रा—३० बून्द से ६० बून्द तक।

गुण—बालकों को प्रतिदिन सेवन करना चाहिये। इससे वायुरोग, बेहोशी, दस्त, वमन, खांसी दूर हो जाती है, दूध पचता है। बालक नीरोग होकर आनन्द में रहता है।

---

३८५ बालसुधासव-नं० ४—बालरोग हर।

(श्री० पं० अनन्तदेव जी दीक्षित, वैद्यशास्त्री)

विधि—अर्क सौंफ १ सेर, शतावरी का स्वरस १ सेर, चूने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का पानी ५ तोले और बढ़िया मिश्री ५१॥ सेर इनको एकत्र मिला चासनी करे, शर्बत के समान चाशनी आने पर शुद्ध अफ़ीम १॥ तोले गरम जल में घोलकर अच्छी तरह चाशनी में मिला देवे और शुद्ध चिकने चीनी मिट्टी के पात्र में भरकर, उसमें-अतीस असली, इन्द्रजौ, नागरमोथा, सफेदमिरच, अजवायन का सत्त, पीपरमेंट प्रत्येक का चूर्ण ६॥-६॥ माशे और सत्व गिलोय १। तोले अच्छी तरह मिलाकर, कागजी नीबू का स्वरस ३ छटांक बाद में मिला; पात्र का मुख बन्द करके रख दे। तीसरे या चौथे दिन से ही इसे कार्य में ला सकते हैं।

मात्रा—१ मास के बालक को दो बून्द, दो मास के बालक को ३ बून्द, इसी प्रकार ८ मास तक १-१ बून्द बढ़ाकर देवे। १ वर्ष तक १० बून्दे दे। २ वर्ष से ४ वर्ष तक १५ बून्दे, ५ वर्ष से ८ वर्ष तक २० बून्दे, ८ वर्ष से अधिक आयु के बालक को २५ बून्द से ३० बून्द तक देवे। अनुपान-माता का दूध, गाय का दूध या जल।

गुण—अतिसार, संग्रहणी, शूल, दर्द, सिर दर्द, कास, श्वास, वमन, मन्दाग्नि, अम्लपित्त, हरे, पीले दस्त, अजीर्ण, अफ़ारा, आदि पर उत्तम लाभदायक है।

---

३८६ बालामृतारिष्ट—बालरोग नाशक।

(श्री पं० देवदत्तजी शर्मा वैद्यशास्त्री, शंकरगढ़)

विधि—सनाय की पत्ती (लकड़ी रहित), अमलतास का गूदा, मुनक्का बीजरहित प्रत्येक १-तोला, निसोथ की छाल और कचूर प्रत्येक ५-५ माशे, बड़ी हरड़, मरोड़फली, गुलबन-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रुश, सौंफ ६-६ माशे गुलाब के फूल, इन्द्रायन का गूदा, छोटी हरड़, पलाश पापड़ा, इन्द्रजौ मीठे, सफेदजीरा, स्याहजीरा, अजवायन, अजमोद, सुहागा-भुना हुआ, मुलैठी का चूर्ण प्रत्येक ३-३ माशे, एलुवा, रेवन्दचीनी, कालानमक और हल्दी की गांठ भुनी हुई प्रत्येक १॥-१॥ माशे, कालीमिरच और छोटी इलायची के दाने एक एक माशा, हींग भुनी हुई १ रत्ती और बहुत बढ़िया शीरेखिश्त २ तोले। इन सब द्रव्यों का चूर्णकर ४ सेर जल में पकावे, १ सेर शेष रहने पर, छानकर-शुद्ध चिकने पात्र में भर, उसमें आधसेर गुड़ और ५ तोले देशीसुरा मिला, पात्र का मुख बन्दकर, सुरक्षित पड़े रहने देवे, १५ दिन बाद छानकर, उसमें १ पाव बढ़िया शहद मिला बोतल में भर कर रख दे।

मात्रा—अवस्थानुसार १० बून्द से १ तोला तक। माता के दूध अथवा जल में मिलाकर देवे।

गुण—बालकों के समस्त रोगों पर यह प्रभावशाली है।

वासारिष्ट—देखिये, वासकारिष्ट।

३८७ बिल्वपत्रासव—(स्वकृत)—मधुमेहादि नाशक।

विधि—बेल के पत्रों का स्वरस (जल मिलाकर पीसकर, वस्त्र में छानकर निकाले) १ सेर, कालीमिरच का चूर्ण ५ तो० और रेक्टिफाइडस्प्रिट १० तोले मिलाकर बोतलों में भर मजबूत कार्क लगाकर रख दे। ७ दिन पश्चात् काम में लावे।

मात्रा—३ माशे से १ तोला तक। जल के साथ सेवन करावे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—मधुमेह को शीघ्र नष्ट करता है, त्रिदोषजन्य शोथ, मलरोध, बवासीर और कामलारोग को भी दूर करता है।

---

३८८ बिल्वफलासव—(स्वकृत) नं० १—अतिसार नाशक।

विधि—बेल के कच्चे कोमल फलों को कूटकर धूप में सुखा डाले। फिर महीन चूर्णकर, आध सेर चूर्ण में २० सेर जल मिला कर पकावे, १० सेर शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर कर उसमें ३ सेर मिश्री, १ सेर धायके फूलों का चूर्ण और २ सेर शहद तथा सोंठ का चूर्ण ५ तोले और अफीम १ तोला मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१तोला से २॥ तोले तक। यथाशक्ति सेवन करावे। जल के साथ।

गुण—हर प्रकार के अतिसार (पेचिश) के लिये राम बाण है।

---

३८९ बिल्वफलासव—(स्वकृत) नं० २—वमन दाहादिनाशक।

विधि—बेल के पके फलों का गूदा निकाल कर, आध सेर गूदे में ३ सेर शीतल जल मिला, घोलकर वस्त्र में छान लेवे। इस छने हुये जल को शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें २ सेर मिश्री, आध सेर धायके फूलों का चूर्ण, तथा इलायची, काली मिरच, लौंग, नागकेशर प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले, और कपूर १ तोला, मिला, पात्र का मुख बन्द कर, ७ दिन तक रक्खे। पश्चात् छानकर काम में लावे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—तृषा, वमन, दाह, थकावट और आमदोष को नष्ट करता है। अग्निदीपक, रुचिवर्धक है।

---

३९० बीजकारिष्ट *—संग्रहणी आदि नाशक।

विधि—विजयसार की छाल १३ छटाँक, हरड़, बहेड़ा, आमला तीनों १ सेर, मुनक्का २० तोले और पीपल की लाख २८ तोले लेकर, सबको जवकुट कर १३ सेर जल में पकावें। ३। सेर जल शेष रहने पर छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर, ठंडा होने पर उसमें ५ सेर खांड, १३ छटाँक शहद, तथा सोंठ, मिरच, पीपल, नख (सुगंधित द्रव्य), खस, सुपारी, शीतल-चीनी, मुलैठी और कूठ प्रत्येक का चूर्ण १-१ तोला मिला कर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, जौ के ढेर में दबा कर रक्खे। ग्रीष्मऋतु में १० दिन पश्चात् तथा शीतकाल में २० दिन पश्चात् निकाल कर छान लेवे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

---

* बीजकात्षोडशपलं त्रिफलायाश्च विंशतिः। द्राक्षायाः पंच लाक्षायाः सप्तद्रोणे जलस्यतत्॥ साध्यं पादावशेषेतुपूते शीते समावपेत्। शर्करायास्तुलां प्रस्थं माक्षिकस्य च कार्षिकम्॥ व्येांष व्योघ्रनखोशीरं कसुकं सैळवालुकम्। मधूकं कुष्ठमित्येतच्चूर्णितं घृतभाजने॥ यवेषु दशरात्रं तंदू ग्रीष्मे द्विः शिशिरे स्थितम्। पिबेत्तद् ग्रहणीपांडुरोगार्श शोथगुल्मनुत्॥ मूत्रकृच्छ्राश्मरीमेहकामलासन्निपातनुत्। बीजकारिष्टएवैष आत्रेयेण प्रकीर्तितः॥ —चरक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—संग्रहणी, पाण्डुरोग, बवासीर, सूजन, गोला, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, कुष्ट, कामला, प्रमेह और सन्निपात का नाशक है।

बुद्धिवर्धकासव—देखिये, ब्राह्मयासव नं० १।

३९१ बृहन्मूलासव *—क्षयादिनाशक।

विधि—सेहुण्ड, बड़ और आक (मदार) प्रत्येक के (पत्ते, छाल, फल और फूल) मूल रहित पंचाङ्ग ५-५ सेर, और दशमूल (सरिवन, पिठवन, दोनों कटेरी, गोखरू, बेल, स्योनापाठा कुम्भेर, पाढल और अरणी इन सब की जड़ लेवे) १५ सेर, सबको जबकुट कर, ६ मन ३२॥ सेर जल में पकावे। जब १ मन ६॥ सेर जल शेष रहे तब छानकर, उसमें २॥ मन गुड़ मिला कर, ३ दिन तक धूप में रक्खे। पश्चात् शुद्ध चिकने मजबूत

---

* महावृक्षवटार्काणां विनामूलैः परैः शुभैः। अष्टोत्तर शतैरम्भस्त्रिंशद्घटामितं पचेत्॥ तुलात्रयप्रमाणंच दशमूल्यास्तथैव च। अष्टावशेषमुत्तार्य गुडस्यानुदिनद्वयम्॥ पलानां विंशतिशतं क्षिपेत्तच्च दृढे घटे। आतपे तं विनिक्षिप्य धारयेत्त्रिदिनं ततः॥ उद्धृत्य धूपिते पात्रे वस्त्रपूतं क्षिपेद्भिषक्। पलाष्टकं हरीतक्या धातक्या पल विंशतिम्॥ पृगानां विंशतिपलं पिप्पल्याः पलपंचकम्। एलालवंगकंकोळजातीत्वक्पत्रकेशरम्॥ पलं पलं समरिचं चूर्णीकृत्य भिषग्वरः। आसवे निक्षिपेत्तत्र मधुनः कुडवद्वयम्॥ संजातेऽष्टदिने तस्मादुद्धृत्यान्यत्र तं न्यसेत्। आसवे सकषाये तु गुडमन्यं प्रदापयेत्॥ निष्कास्य पूर्वचूर्णंतु नवंतत्र नियोजयेत्। नाम्ना बृहन्मूलासवो ह्येष रोगराज निकृन्तनः॥ श्वासामवात विध्वंसी पाण्डुप्लीहोदरापहः। कृमिगुल्मप्रमेहाणां नाशनो वन्हिदीपनः॥

—गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मटके में भर कर उसमें हरड़ ३२ तोले, धायके फूलों का चूर्ण १ सेर, सुपारी का चूर्ण १ सेर, पीपल २० तोले इलायची, लौंग, कंकोल, जावित्री, तेजपात, नागकेशर, और कालीमिरच ४-४ तोले प्रत्येक का चूर्ण कर मिलावे, तथा मधु (शहद) ३२ तोले मिला कर; पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर ८ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् आसव तैयार होजाने पर, छानकर दूसरे चीनी मिट्टी के पात्र में भर देवे। यदि स्वाद में कसैला हो तो आवश्यकतानुसार उसमें गुड़ एवं अन्य उक्त हरड़ आदि प्रक्षेप द्रव्यों का चूर्ण मिला, मुख मुद्राकर पुनः १० या १५ दिन तक रखा रहने देवे। पश्चात् फिर से छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—क्षय, दमा (श्वास), आमवात, पाण्डु, तिल्ली, उदररोग, कृमि, गोला, प्रमेहादि नाशक है। तथा अग्निदीपक है।

---

३९२ बेलाडोनासव—(स्वकृत)—वेदना शामक।

विधि—बेलाडोना (सूचि) के पत्तों का जवकुट चूर्ण २॥ तो० में मद्य (रेक्टिफाइडस्प्रिट) २॥ रत्तल (पौंड) मिला, कांच के पात्र में दृढ़ काग लगा कर रख दे, ७ दिन के बाद छान लेवे।

मात्रा—५ बूंद से १५ बूंद तक। अनुपान जल।

गुण—श्वास विकार को, तथा अन्य वातकफ की वेदना को शमन करता है। कंप, अपस्मार, हिस्टेरिया, कुकुरखाँसी आदि विकारों को भी दूर करता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३९३ बोलासव—अग्निदीपक।

विधि--बोल (बीजाबोल या सुरमकी भी कहते हैं) के १ भाग चूर्ण में १० गुना मद्य ((६० प्रतिशतवाला) मिला, बोतल में भर दृढ़ काग लगा कर रक्खे। ७ दिन बाद मोटे फलालेन के वस्त्र से छान शीशियों में भर कर रखले।

मात्रा—१० बून्द से ६० बून्द तक। जल के साथ।

गुण— आमाशय के लिये दीपक, श्वासमार्ग के लिये कफ स्रंसक, गर्भाशय के लिये आर्तव प्रवर्त्तक तथा शोधक है। दन्त-मांस-शोथ तथा दन्तपूय रोग में-बोलासव, वत्सनाभासव, आयोडीनासव और ग्लीसरीन समान २ भाग मिला कर लगावें।

(अ० योगमाला)

---

३९४ ब्रह्मदण्डयासव--(स्वकृत)—रक्तदोष हारक।

विधि--ब्रह्मदण्डी (ऊंटकटीरा) की जड़ जो कन्द के समान होती है, उसे ४ सेर और गोरखमुण्डी का पंचाङ्ग १ सेर लेकर दोनों को जवकुट कर, १३ सेर जल में पकावे। ५ या ६ सेर तक जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भरे, और ठंडा होजाने पर उसमें शहद ३ सेर, मिश्री २॥ सेर, धाय के फूलों का चूर्ण १ सेर और कालीमिरच का चूर्ण ५ तोले मिला, अच्छी तरह मुखमुद्रा कर, २१ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—रक्तदोष, उपदंशजनित व्रण, कुष्ठ आदि नाशक है। रक्त को शुद्ध करता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३९५ ब्राम्ह्यासव–नं० १–बुद्धि वर्धकासव ।

विधि–ब्राह्मी का स्वरस ३ सेर ४ छटाँक, कूष्माण्डस्वरस १३ छटाँक तथा शंखपुष्पी, कूठ, मालकांगनी, सफेद बच, नागौरी असगंध, सतावर, मुलैठी और पाठा प्रत्येक ४–४ तोले सबको जबकुट कर १ मन १२ सेर जल में पकावे। ६॥ सेर जल शेष रहने पर, उसमें १३ सेर गाय का दूध मिला सबको एक मिट्टी के चिकने मज़बूत बर्तन में, जिसमें कि लाख आदि का अन्दर प्रलेप हो, डालकर निम्नलिखित औषधियों का प्रक्षेप करे। खिरेंटी, भोंफली (बड़ुफली), ब्राह्मी, सेमल की मुसली, हरड़, बहेड़ा, आमला, कूठ, हल्दी और असगंध प्रत्येक का चूर्ण २–२ तोले, सोंठ, मिरच, पीपल ये तीनों मिला कर दो तोले चूर्ण करके मिलावे, तथा केसर १ तोला और स्वर्णभस्म ३ माशे मिला, मुखमुद्रा कर रक्खे । ७ दिन के बाद (जब उसमें उफान सा आने लगे) भबके के द्वारा अर्क खींच लेवे।

मात्रा—१ से २॥ तोले तक। अनुपान–दूध। प्रातः सायं।

गुण—बुद्धि, धृति और स्मृति की वृद्धि होती है।

(अ० योगमाळा)

---

३९६ * ब्राम्ह्यासव नं०–२–क्षीणस्मृति, अपस्मारादिनाशक ।

विधि–ब्राह्मी का चूर्ण १ भाग और मद्य (४० से ६० प्रतिशतवाला) ५ भाग एकत्र कर, कांच या चीनी मिट्टी के पात्र में भर, दृढ़ मुख मुद्रा कर ७ वा १५ दिन तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् फलानेल से या मलमल से अच्छी तरह निचोड़ते हुये छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—आधा मासा से ४ माशे तक ।

गुण—क्षीणस्मृति, स्वरकार्कश्य, उन्माद, अपस्मार, अपतंत्रक तथा अनेक प्रकार के रक्तविकार और चर्म रोगों के लिये लाभप्रद है । उक्त रोगों में लाभ करने वाली अन्य औषधियों के साथ मिला कर इसका व्यवहार करना चाहिये ।

(मद्यासव)

ब्राह्मचाद्यासव--देखिये, रक्तापित्तहरासव ।

ब्राह्म्यरिष्ट--देखिये, सारस्वतारिष्ट ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भ

३२७ भल्लातकासव * —अर्श आदि नाशक।

विधि—शुद्ध किये हुए भिलावे ३ सेर १६ तो०, दूध ८ सेर और जल ३२ सेर, एकत्र कर पकावे। जब द्रव भाग लगभग १२ सेर तक शेष रहे (यह हमारा स्वयं प्रमाण है), तब उसे छानकर, उसमें ८ सेर घी और १ सेर मिश्री मिला, पुनः पकावे, जब वह किंचित् गाढ़ा सा हो जाय तब उसको एक शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें-१ सेर शहद, १ सेर आमले का चूर्ण, ४० तोले हरड़ का चूर्ण, २० तो० लोहभस्म और २० तोले गिलोय का सत मिला, मटके का मुख अच्छी तरह बन्द कर, अनाज के ढेर में दबा देवे। ७ दिन पश्चात् (हम १५ दिन तक रखते हैं) निकालकर काम में लावे।

---

* भल्लातकचतुःषष्टिपलं दुग्धं च तत्सममं। दुग्धाच्चतुर्गुणं वारि याच्यं दुग्धावशेषकम्॥ दुग्धतुल्यं घृतं योज्यं घृतपादं सितां क्षिपेत्। मधुधात्रिसितातुल्यं सितार्धमभयारजः॥ मृत्तलोहं गुडूची च प्रत्येकमभयार्धकम्। क्षिपेत्-स्निग्धघटे सर्वं धान्यराशौ निवेशयेत्॥ सप्ताहादुद्धृतं तत्तु खादेद्विष्कत्रयं त्रयम्। भल्लातकामृतं नाम हन्ति रक्तार्शसां किल॥ क्षारं तीक्ष्णं न भोक्तव्यं तैलाभ्यङ्गं च वर्जयेत्॥

—वृ० नि० रत्नाकर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—१॥ माशा से १ तोला तक। अनुपान-दूध या जल।

गुण—रक्तार्श को शीघ्र ही दूर करता है। ग्रहणी विकार में भी लाभदायक है। रक्तविकार नाशक, अग्निप्रदीपक, बल, वीर्य, पुष्टिदायक है। शास्त्र में इसका नाम-"भल्लातकामृत्" रक्खा गया है।

नोट—इसके सेवन काल में क्षार और तीक्ष्ण पदार्थों से परहेज करना चाहिये, तथा शरीर पर तैल मर्दन न करे, तैल भी नहीं खाना चाहिए।

---

३९८ भल्लातकारिष्ट—बल-बुद्धि वर्धक।

(वैद्यराज कन्हैयालाल जी स्वर्णकार)

विधि—वे भिलावे जो कि पेड़ पर ही फूल गये हों और पक कर अपने आप गिर पड़े हों उनको एक आढ़क (३। सेर) लेकर, ईंट के चूर्ण के साथ घिसकर; जल से धोकर, हवा में सुखावे, फिर इन भिलावों को पीसकर एक घड़े में पकावे। चौथाई शेष रहने पर, उतार ले, ठंडा होने पर छान ले। इस काढ़े को एक घड़ा दूध के साथ पकावे, चौथाई शेष रहने पर, उतार कर छान ले। फिर इसके साथ समान जल डालकर पकावे। पश्चात् इसमें उचित प्रमाण में घी, शक्कर मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर, मुख मुद्रा कर, अनाज के ढेर में गाढ़ देवे। एक मास बाद निकाल छानकर साफ़ बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—बलाबल देखकर १ माशा से २ तोले तक।

गुण—इसे नित्य प्रातःकाल के समय सेवन करने से स्मृति मेधा, बल, बुद्धि बढ़कर, शरीर दीर्घायु होता है, स्वर्ण जैसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कान्ति उत्पन्न होती है। सफेद बाल काले हो जाते हैं। इसपर यथेष्ट दुग्ध, घी आदि शक्तिवर्धक चीजें खानी चाहिये।

(अ० योगमाला)

---

३९९. * भूनिम्बासव—ज्वरादि नाशक।

विधि—चिरायते का चूर्ण १ भाग और मद्य (४० से ६० प्रतिशत वाली) १० भाग, एकत्र मिला, कांच या चीनी मिट्टी के पात्र में भर, दृढ़ मुख मुद्रा कर, ७ या १५ दिन तक रक्खा रहने देवें। पश्चात् शुद्ध बन्नात या फलालेन की चलनी में छान कर बोतलों में भरकर रख दे। (यदि इसमें यथोक्त मात्रा से मद्य कुछ कम हो जाय तो ऊपर से और मिलाकर मात्रा पूरी कर देनी चाहिये)।

मात्रा—आधा माशा से ४ माशे तक।

गुण—अग्निमांद्य, अजीर्ण, ज्वर, अरुचि और रक्तविकार के लिये लाभप्रद है।

(मद्यासव)

---

४०० शृङ्गराजासव *—क्षय, कासादिनाशक।

---

* शृङ्गराजरसद्रोणं गुडस्य द्वितुलां तथा। प्रस्थार्धं तु हरीतक्याः स्निग्धे भाण्डे निवेशयेत्॥ पक्षादूर्ध्वं पिबेदेनं मात्रया च यथाबलम्। जाते ह्यस्मिन्पुनर्दत्वा पिप्पल्याश्च पलद्वयम्॥ जातीफलं लवंगानि त्वगेला पत्रकेशरम्। धातुक्षयं जयेत्पीतः कासं पंचाविधं तथा। कृपानां च महापुष्टिं कुरुते च महाबलम्। कामवृद्धिं करोत्येष वन्ध्यानां पुत्रदो भवेत्॥

—गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—भांगरे का स्वरस १३ सेर लेकर, उसमें १० सेर गुड़ और ६॥ छटाँक हरड़ का चूर्ण मिलाकर, चिकने मटके में भर, उसका मुख अच्छी तरह बन्द कर रख दे। १५ दिन पश्चात् छानकर, उसमें पीपल, जायफल, लौंग; दारचीनी, इलायची, तेजपात और नागकेशर का चूर्ण प्रत्येक ८-८ तोले मिला कर, पुनः मटके में भर, मुख अच्छी तरह बन्द कर दे, और १५ दिन बाद निकाल कर, छानकर बोतलों में भर कर रख ले।

मात्रा—१ से २॥ तोले तक। भोजनोपरान्त।

गुण—धातुक्षय, हर प्रकार की खाँसी और कृशता नाशक है। अत्यन्त बलकारक और कामोद्दीपक है। इसके सेवन से वन्ध्या स्त्री को सन्तान होती है। क्षयके रोगी को इसका सेवन कराने से, उसके पेशाब में बहकर जानेवाली धातुओं को यह शीघ्र ही रोकता है। यह आसव सुस्ती, निर्बलता, २० प्रकार के प्रमेह, स्मरणशक्ति की कमी, नेत्ररोग, श्वास और नजले के कारण होने वाला नेत्र विकार, बालों का सफेद होना, इत्यादि रोगों को दूर करता है, तथा बिगड़े हुये खून को साफ करता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

म

मकोयासव—देखिये, माचिकासव।

४०१ मञ्जिष्ठाद्यासव नं० १—(स्वकृत)—रक्तविकार नाशक।

विधि—मजीठ १ सेर, सौंफ ३२ तोले, सनाय के पत्ते २४ तोले, हरड़, बहेड़ा, आमला प्रत्येक ८-८ तोले, गुलबनफसा ३२ तोले, सबको जवकुटकर, रात्रि के समय २४ सेर जल में भिगो देवे (कलई किये हुए पात्र में भिगोना चाहिये), सबेरे उसे चूल्हे पर चढ़ा मन्दाग्नि से पकावे। ६ सेर जल शेष रहने पर, उसे छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर देवे और उसमें-मिश्री दो सेर, शहद ३ सेर, असली गुलाब जल १ सेर और धाय के फूल आध सेर चूर्ण कर मिलावे। पात्र का मुख बन्द कर १५ दिन रक्खा रहने देवे, पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ से ४ तोले तक। प्रातः सायं सेवन करे।

गुण—रक्त दूषित हो जाने के कारण शरीर पर जो लाल २ चट्टे हो जाते हैं उन्हें एवं श्वित्रकुष्ठादि विकारों को यह नष्ट करता है। पथ्य में-चने के पदार्थ, घृत, दूध, ताजा दही, चौलाईकी भाजी लेवें, नमक तैल और अम्लपदार्थ आदि अपथ्य हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४०२ मञ्जिष्ठाद्यासव (महा) नं० २—कुष्ठनाशक।

विधि—शास्त्रोक्त महामंजिष्ठादि क्वाथ के कुल द्रव्यों को महीन कूटकर, उसमें १० गुनी रेक्टिफाइडस्पिरट (मद्य) मिला कांच के पात्र में या चीनी मिट्टी के पात्र में भर, मज़बूती से मुखमुद्रा कर, ७ या १५ दिन तक रखा रहने देवे। बीच २ में पात्र को हिलाते रहना आवश्यक है। पश्चात् फलालेन या ऊनी चिकने वस्त्र से छान शीशियों में भर कर रख ले।

मात्रा—१ से ३ माशे तक। आठभाग जल मिला प्रातः सायं सेवन करावे।

गुण—कोढ़, सफेद कोढ़ आदि रक्त के विकार से उत्पन्न होने वाले रोगों को दूर करता है। रोगी को नमक, तैल, लाल-मिरच, गुड़, खटाई आदि से परहेज करना आवश्यक है।

मञ्जिष्ठाद्यरिष्ट—देखिये, सारिवाद्यरिष्ट नं० १।

४०३ मण्डूरारिष्ट *—पाण्डु, कामलादिनाशक।

विधि—शुद्ध मंडूर २॥ सेर, शुद्ध लोहचूर्ण (लोहे का बुरादा)

---

* मण्डूरस्य तु शुद्धस्य तुलार्धं परिकल्पितम्। तद्वल्लोहस्य पत्राणि तिलोत्सेधप्रमाणतः॥ गुडाज्जीर्णात्तु पंचाशत्कोलप्रस्थत्रयं तथा। निकुम्भचित्रकाभ्यांच पले द्वे द्वे सुचूर्णिते॥ पिप्पलीनां विडङ्गानां कुडवं कुडवं पृथक्। त्रींश्चापि त्रिफलाप्रस्थान् जलद्रोणे समावपेत्॥ अर्धमासस्थितोधान्ये पेयोऽरिष्टः प्रमाणतः। ऊर्ध्वाधोदोषनिर्हन्ता पांडुरोगं नियच्छति॥ कृमीन-र्शांसिकुष्ठंच कासश्वासकफामयान्। एषोऽरिष्टस्तुमाण्डूरः शोफपाण्डूवा-मयापहः॥ —योगरत्नाकर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२॥ सेर, पुराना गुड़ २॥ सेर और बेर की जड़ २ सेर ७ छटाँक तथा दन्ती और चीते की जड़ प्रत्येक ८-८ तोले, छोटी पीपल और बायबिडंग प्रत्येक १६-१६ तोले तथा हरड़, बहेड़ा और आमला प्रत्येक १३-१३ छटाँक सबका महीन चूर्ण कर, १३ सेर जल मिलाकर, शुद्ध चिकने मटके में भर, अच्छी तरह मुख बन्द कर, अनाज के ढेर में दबा कर रक्खे । १५ दिन बाद निकाल कर, छानकर, बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक ।

गुण—पाण्डु, कामला, किरम, बवासीर, कोढ़, खाँसी, श्वास (दमा), कफ़ के रोग तथा शोथ (सूजन) को नष्ट करता है । रोगी को वमन और विरेचन कराने के बाद इसका सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है । यह ऊर्ध्व तथा निम्न दोषों को नष्ट करता है ।

---

४०४ मदनफलाद्यासव—वमनार्थ ।

(स्वर्गीय ला० राधाबल्लभजी वैद्यराज)

विधि—कचनार की छाल आधपाव, लिसोड़े आधपाव, दन्ती आधपाव, बायबिडंग आधपाव, नीम के पत्ते दो पाव, इन्द्रायन आधपाव, सबको जबकुट कर, १० सेर जल में भिगोकर भबके से अर्क खींच लेवे । पश्चात् इस अर्क को शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें मैनफल आधपाव, कड़वी तोरई २॥ तोले, बन्दाल के फल २०, तुम्बी का गूदा ५ तोले, गुड़ पुराना १ सेर अच्छी तरह घोलकर, पात्र का मुख बन्द कर धान्य की राशि में दबा देवे । २१ दिन बाद निकाल और छानकर बोतलों में भर कर कर रख दे ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—३ या ४ तोले। अनुपान-नमक और शहद मिला हुआ जल।

गुण—कफ़ की अधिकता में वमन कराने के लिये इसका अच्छा प्रभाव होता है।

(पंचकर्म विवेचन)

---

४०८. मधुमेहासव—प्रमेह, मधुमेह हारक।

विधि—गूलर के बीज, सोंठ, जामुन की गुठली, काली-मुसली, जायफल, जावित्री, लौंग, नागकेशर, सुपारी के फूल, पीपल की लाख, धायके फूल, धनिया, और नागरमोथा प्रत्येक का चूर्ण १०-१० तोले, जामुन की छाल, गूलर की छाल और बरिया (शायद खिरैंटी) की छाल प्रत्येक जबकुट कर २॥-२॥ सेर, जवकुट की हुई आमकी छाल १। सेर, अर्जुन की छाल १ सेर, खैर की छाल, सेमल की छाल, महुये की छाल, आंवले की गिरी और त्रिफला प्रत्येक २०-२० तोले, कुड़े की छाल, बेल की जड़, बांसे के पत्ते, मरोड़फली, करंज के फूल, पठानी लोध, वायविडंग, सुपारी, नागरमोथा, जाठौन (शायद यह शमी वृक्ष की गांठ है) और अनार के बक्कल प्रत्येक १०-१० तोले और बबूर की फली २० तोले, लेकर सबको जवकुट कर, २ मन ३६ सेर जल में पकावे। २८ सेर जल शेष रहने पर, ठंडा होने पर छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर देवे और उस में १४ सेर शहद मिला, मुखमुद्रा कर, २५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर काम में लावे।

मात्रा—२ तोले प्रातः तथा २ तोले सायं, जल मिला कर सेवन करे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—प्रमेह विशेषतः मधुमेह को यह शीघ्र दूर करता है इस आसव के उक्त कल्क में यदि २० तोले गुड़मारबूटी और मिला दीजावे तो मधुमेह के नाशार्थ अव्यर्थ रामबाण योग होजाता है। किन्तु। इसका सेवन लगातार करते ही रहना चाहिये। तीन मास में पूर्ण लाभ होता है। साधारण मधुमेह २१ दिन में ही दूर होजाता है।

(धन्वन्तरि-प्रयोगाङ्क)

---

४०६ मधुमेहारिष्ट—मधुमेह नाशक।

(श्री पं० अनन्तदेवजी शर्मा, वैद्यशास्त्री)

विधि—महुये की जड़ की छाल, पीपल वृक्ष की जड़ की छाल, स्योनाक की जड़ की छाल, वट वृक्ष की जड़ की छाल और आमले की जड़ की छाल, तथा काला (?) वृक्ष के मध्य की नरम डाण्डी प्रत्येक एक-एक पाव और जामुन की छाल आध सेर, सबको जबकुट कर, १६ सेर जल में डाल मन्दाग्नि से क्वाथ करे। ८ सेर शेष रहने पर छानकर एक चिकने मटके में डालकर उसमें जामुन की गुठली, कसेरू, कमल की जड़, और मुनक्का प्रत्येक २०-२० तोले, असली चन्दन का बुरादा, धाय के फूल; प्रत्येक १०-१० तोले, नागकेशर, छोटी इलायची, पलाश का गोंद और शिलाजीत प्रत्येक ५-५ तोले, तज, पत्रज, सोंठ प्रत्येक दो-दो तोले, मुलैठी ३ तोले, मिश्री ४० तोले, शहद दो सेर और आमले का स्वरस १ सेर लेकर, कूटने योग्य चीजों को कूट पीसकर मिलावे और पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, जमीन में गाढ़ देवे या धान्य की राशि में दबा देवे। १ मास पश्चात् निकाल कर अरिष्ट को मलकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(फलालैन से कई बार छान) बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २ तोले तक। दोनों शाम, भोजन के बाद सेवन करे। अनुपान-जल।

गुण—तीनों प्रकार के मधुमेह के लिये रामबाण है, चाहे वह साध्य हो या कष्टसाध्य।

(धन्वन्तरि-मधुमेहाङ्क)

मधुयष्ट्यासव—देखिये, यष्टिमध्वासव।

४०७ मधुशुक्तयोग *—(आसव)-कर्ण रोगे।

विधि—जम्बीरी नीबू का रस १३ छटाँक, शहद १६ तोले और पीपल का चूर्ण ४ तोले सबको एकत्र मिला, घृतके मटके में भर, उसका मुख बन्दकर, अनाज के ढेर में दबा देवे। १ मास पश्चात् निकालकर छान लेवे।

नोट-शार्ङ्गधरजी इसमें बच, नागरमोथा, सोंठ और गुड़ भी डालने को कहते हैं, और कहते हैं केवल ३ दिन में ही यह मधुशुक्त तैयार होजाता है, अर्थात् १ मास तक रखने की कोई आवश्यकता नहीं है।

गुण—इसे क्षारतैल में चौगुना मिला, पकाकर, कान में डालने से कान से पीब का बहना, गुन २ आवाज होना, शूल होना, कान के अन्दर कीड़े होजाना इत्यादि कान के कई रोगों को दूर करता है। मुख रोग में इसके कुल्ले कराने से लाभ होता है।

---

* जम्बीराणां फलरसः प्रस्थैकः कुडवोन्मितम्। माक्षिकं तत्रदातव्यं पिप्पली च पलोन्मिता॥ घृतभाण्डे विनिःक्षिप्य धान्यराशौ निधापयेत्। मासेत तज्जातरसं मधुशुक्तमुदाहृतम्॥

—योगरत्नाकर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४०८ मधूकपुष्पासव नं० १ *—संग्रहणी आदि नाशक।

विधि—महुये के फूल १३ सेर, वायविडंग ६॥ सेर, चीते की जड़ ३। सेर, मिलावे ३। सेर और मजीठ १२ तोले, सबको जबकुट कर, ३६ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भरे (इस मटके के अन्दर इलायची, खस, अगर तथा लालचन्दन का लेप करके दवा भर देवे), फिर उसमें शहद १ सेर १० छटाँक (शहद ३। सेर मिलाना ठीक होगा) मिला, अच्छी तरह मुखमुद्रा कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे।

मात्रा—२ माशे से १॥ तोला तक।

गुण—संग्रहणी, कफ, पित्तरोग, रक्तपित्त, कुष्ठ, किलास कुष्ठ और प्रमेह नाशक है। पुष्टिकारक भी है।

नोट—देखिये—मधुकारिष्ट।

---

४०९ मधूकपुष्पासव नं० २ *—संग्रहणी नाशक।

* द्रोणं मधूकपुष्पाणां विडंगानां ततोऽर्धतः। चित्रकस्य ततोऽर्धं स्यात् तथा भल्लातकाढकम्॥ मंजिष्ठात्रिपलं चैव त्रिद्रोणेऽपां विपाचयेत्। द्रोणशेषे तु तच्छीतमध्वर्धाढकसंयुतम्॥ एलागृणालागुरुभिश्चन्दनेन च रूषिते। कुंभेमासस्थितंजातमासवं तं प्रयोजयेत्॥ ग्रहणीं दीपयत्येषबृंहणः कफपित्तजित्। शोथं कुष्ठं किलासं च प्रमेहाँश्च प्रणाशयेत्॥ —चरक।

नोट—* वाग्भटे मंजिष्ठाष्टपलमिति पाठभेदः।

मधूकपुष्प स्वरसं श्रृतमर्धक्षयीकृतम्।
क्षौद्रं पादयुतं शीतं पूर्ववत्सन्निधापयेत्॥
तं पिबन् ग्रहणीदोषान् जयेत्सर्वान्हिताशनः। —चरक।

नोट—वाग्भटे 'मधूकपुष्पकुडवमिति पाठभेदः'।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—महुये के फूलों का स्वरस लगभग १० सेर तक निकाल कर पकावे (अथवा ५ सेर महुये के फूलों को कुचल कर २० सेर जल मिला पकावे, ५ सेर जल शेष रहने पर छान कर) आधा शेष रहने पर छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर देवे (मटके में इलायची, खस, अगर तथा चन्दन का लेप पहले ही कर देना चाहिये), फिर उसमें १। सेर शहद मिला, मटके का मुख अच्छी तरह बन्द कर १ मास तक सुरक्षित रक्खा रहने देवे, पश्चात् छानकर बोतलों में भर देवे।

मात्रा—१ मासा से २ तोले तक।

गुण—यह सब प्रकार की संग्रहणी और अतिसार को नष्ट करता है।

---

४१० मधूकपुष्पासव—नं० ३—श्वास, कासादिनाशक।

(वैद्यराज गुरुदयाळजी उपमन्यु, बाह, आगरा)

विधि—महुये के फूल २॥ सेर तथा छुआरे २॥ सेर, दोनों को कूटकर, ६४ सेर जल में पकावे, १६ सेर शेष रहने पर, शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें सुपारी १ सेर, इलायची, दारचीनी, पत्रज, और नागकेशर सम्मिलित १० तोले, गुड़ ५ सेर, शहद ५ सेर, मिलाकर (सुपारी आदि का महीन चूर्ण कर मिलावे), पात्र का मुख बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर, काम में लावे। मात्रा—२ तोले तक।

गुण—श्वासरोग के वेग को रोकता है। कास, अरुचि, अजीर्ण का नाशक है। वात की पीड़ा को एक ही मात्रा में दूर करता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४११ मध्वासव--नं० १ *प्रमेह नाशक।

विधि—इन्द्रायण की जड़, अतीस, भारंगी की जड़, कूठ, नागरमोथा, फूलप्रियंगु, वायविडंग, हरड़, बहेड़ा, आमला, पीपल, चव्य, पीपलामूल और अजबायन प्रत्येक एक-एक तोला लेकर, सबको जवकुट कर १३ सेर जल में पकावे। ३। सेर जल शेष रहने पर छान कर, शुद्ध चिकने मटके में भर, ठंडा होजाने पर उसमें शहद १ सेर १० छटाँक मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ से ४ तोले तक।

गुण—प्रमेह को नष्ट करता है।

---

४१२ मध्वासव-- + नं० २—कुष्ठ नाशक।

---

* विशालाति विषाभार्गी कुष्ठमुस्ता प्रियंगवः।
विडंगत्रिफलाकृष्णचव्यग्रन्थिक दीप्यकाः॥
अक्षाँशान् सलिलद्रोणे पक्त्वा पादावशेषिते।
दत्वा क्षौद्रं तदर्धेहि स्निग्धे भाण्डे निधापयेत्॥
एष मध्वासवो हन्ति मेहद्विपलयोगतः।
—गदनिग्रह।

+ खदिर सुरदारुसारं श्रपयित्वा तदूरसेन तोयार्थम्।
क्षौद्रप्रस्थे कार्यः कार्ये ते चाष्टपालिके च॥
ततश्चायश्चूर्णानामष्टपलं प्रक्षिपेत्तथाऽमूनि।
त्रिफलैलेत्वग्मरिचं पत्रं कनकं च कर्षांशम्॥
मस्त्यण्डिका, मधुसमातन्मासमात्रसे भाण्डे।
मध्वासवमाचरतः कुष्ठक्लिासे शमं यातः॥ —चरक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—खैरसार और देवदारुसार प्रत्येक ३२-३२ तोले लेकर, १३ सेर जल में पकावे। शेष जल ४ सेर रहने पर, छान कर, शुद्ध लोहपात्र में भर देवे और ठंडा हो जाने पर, उसमें-१३-१३ छटांक शहद और चीनी, ३२ तोले शुद्ध लोहचूर्ण तथा हरड़, बहेड़ा, आमला, इलायची, दारचीनी, कालीमिरच, तेजपात और नागकेशर प्रत्येक का चूर्ण १-१ तोला, मिलाकर पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर रक्खे। १ मास पश्चात् छान कर काम में लावे।

मात्रा—१ तोला से ४ तो० तक।

गुण—कुष्ठ और किलासकुष्ठ का नाशक है।

---

४१३ मध्वासव—नं० ३—श्वास, कासादि नाशक।

(रसायनाचार्य आर० के० शर्मा, जगराओं—पंजाब)

विधि—मधु (शहद उत्तम) १ सेर, सुरा (ब्रान्डी नं० १) १ सेर, मृगमद (कस्तूरी) ६ माशे, इन तीनों को एकत्र शुद्ध कलई किये हुए पात्र में भर कर, कचरे के ढेर में ४० दिन तक दबा कर रखना चाहिये। पश्चात् निकाल और छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—२ माशे तक। प्रयोग-प्रेषक इसकी मात्रा २॥ तो० बतलाते हैं। भोजनोपरान्त, एक समय।

गुण—दुस्साध्य श्वास, पांचों प्रकार की कास, क्षय, स्वर-भेद, पीनस, क्षीणता, जीर्णज्वर, उरःक्षत आदि रोगों को शीघ्र नष्ट करता है। निर्बलता एवं वातरोगों पर उत्तम लाभप्रद है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मध्वासव-नं० ४-(प्रमेहादि नाशक)—देखिये, लोध्रासव नं० १।

४१४ मध्वरिष्ट + —मन्दाग्नि संग्रहणी आदि नाशक।

विधि—एक नवीन मटका लेकर, उसके भीतर पीपल और शहद का लेप करके, अगर की धूनी देवे। पश्चात् उस मटके में शहद ३। सेर, जल ३। सेर, बायविडंग ८ तोले, पीपल १६ तो०, बंसलोचन ४ तोले तथा नागकेशर, कालीमिरच, दारचीनी, बड़ीइलायची, तेजपात, कचूर, सुपारी, अतीस, नागरमोथा, चित्तपापड़ा (रयातरा), शीतलचीनी, चव्य, पीपलामूल प्रत्येक का चूर्ण १-१ तोला मिलाकर, घड़े को विधिवत् बन्द कर, एक मास तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—मन्दाग्नि को चैतन्य करता है, विषमाग्नि को समाग्नि बनाता है तथा हृदय के रोग, पाण्डु रोग, संग्रहणी, कोढ़, बवासीर, सूजन, ज्वर, वात और कफ के रोगों को नष्ट करता है। इसीप्रकार के अन्य रोगों को भी यह दूर कर देता है।

+ नवे पिप्पलीमध्वाक्ते कलसेऽगुरु धूपिते। मध्वाढकं जलसमं चूर्णानीमानि दापयेत्॥ कुडवार्धं विडंगानां पिप्पल्याः कुडवं तथा। चतुर्थकांशान् त्वक्क्षीर्याः केशरं मरिचानि च॥ त्वगेलापत्रकशटीं क्रमुकातिविषाघनम्। हरेण्वेलुकतेजोह्वा पिप्पलीमूलचित्रकान्॥ कार्षिकाँस्तान् क्षिपेत् मासमतऊर्ध्वं प्रयोजयेत्। मन्दं सन्दीपयत्यग्निं करोति विषमं समम्॥ हृत्पाण्डु ग्रहणीरोग कुष्ठार्शः क्षयधुज्वरान्। वातश्लेष्मामयाश्चान्यान्मध्वरिष्टो व्यपोहति॥ —चरक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४१५ मधुकारिष्ट—

मधूकपुष्पासव नं० १ को ही मधुकारिष्ट कहते हैं। यह रक्त की ऊष्मा को शांत करता है। रक्त को शुद्ध करता है। फुफ्फुस तथा हृदय के विकार के कारण जो कष्टदायक खांसी एवं कफ की विकृति होती है उसको यह शीघ्र ही दूर करता है, अतएव क्षय की दशा में यह विशेष गुणदायक सिद्ध हुआ है। इसमें मादकपना नहीं है। यह तीव्र गुणदायक-अरिष्ट अग्निमांद्य; कामला, यकृत के विकार, बवासीर, सब प्रकार के कोढ़ (विशेषतः रक्त और श्वेतकुष्ट), रक्तपित्त-(उष्णता के कारण मुख नासिकादि किसी भी मार्ग से बहने वाले रक्त विकार) को अपने प्रभाव से शीघ्र ही दूर कर देता है। रक्त-शुद्धि का गुण इसमें होने से पामा, खुजली आदि रोगों पर शीघ्र लाभप्रद है। पेट तथा रक्त के कृमि को यह शीघ्र नष्ट करता है। यह पौष्टिक भी है। रोग एवं रोगी के बलाबल के अनुसार, यथोचित मात्रा में, इसका सेवन १ मास से ३ मास तक कराना चाहिये।

---

४१६ मन्दाग्निहरासवार्क—उदर रोग नाशक।

(वैद्यराज श्री० पं० शिवचन्द्र जी आयुर्वेदमार्तण्ड)

विधि—घीकुआर का छिला कुचला हुआ अर्क ३ सेर, गीले पोदीने का अर्क १ सेर, कागजी नीबू का रस १ सेर, गंगाजल ३ सेर तथा दारचीनी, बड़ी इलायची, पत्रज, सफेदजीरा, चौकिया सुहागे की खील और चीते की छाल प्रत्येक का चूर्ण ३-३ तोले और देशी पान ५० नग कुचल कर, सबको एकत्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर, दो दिन तक, पात्र का मुख बन्द कर रख छोड़े। फिर भबके के द्वारा अर्क खींच लेवे। अर्क खींचते समय श्वेत चन्दन का बुरादा नाल के मुख में डाल दे या पोटली बना रख देवे। कुल ५ बोतल अर्क खींचना चाहिये।

मात्रा—१ से २ तोले तक। प्रातःसायं भोजन के बाद।

गुण—पेट के रोग नष्ट होकर, मंदाग्नि नष्ट होती है और शनैः शनैः भोजन में रुचि बढ़ती है। २१ दिन में पूर्ण लाभ होता है।

(धन्वन्तरि)

---

४१७ मयूरकाद्यरिष्ट—कास, श्वासादि नाशक।

(रसायनाचार्य श्रीयुत आर० के० शर्म्मा, जगराओं)

विधि—अपामार्ग, बासा (अडूसा), कदलीगोभ (केले के वृक्ष के बीच का गाभा) और जंगली बेरी की छाल प्रत्येक ४-४ सेर लेकर, जवकुट कर, क्वाथ विधि से २६ सेर जल में पकावे। चौथाई भाग शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने अगर से धूपित मटके में भर, ठंडा होने पर, उसमें ८ सेर गुड़, लोटा सज्जी १० तोले, जवाखार ५ तोले और नवसादर २॥ तोले मिला, २० दिन तक सन्धान कर रक्खे। पश्चात् छानकर काम में लावे।

मात्रा—२॥ तोले तक।

गुण—सब प्रकार की असाध्य पुरानी खाँसी, श्वास हिक्का, पाण्डु, कामला आदि रोग शीघ्र ही नष्ट होते हैं। रोगी को खटाई, मिठाई, तैल; लालमिरच आदि से परहेज़ करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४१८ मस्त्वासव *—पाण्डु, उदररोगादिनाशक ।

विधि—एक शुद्ध मटके के अन्दर बच तथा कूठ का अच्छी तरह लेप कर उसमें १३ सेर दही का निथरा हुआ जल (४ सेर दही में १० सेर या ८ सेर जल मिला कर मथले १३ सेर शुद्ध निर्मल मस्तु की प्राप्ति होगी) अथवा मस्तु, ५ सेर गुड़, १३ छटाँक पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला प्रत्येक १३-१३ छटाँक तथा वायविडंग, कालीमिरच, गंभारी के फल, मुनक्का, फालसा, इन्द्रजौ प्रत्येक १६-१६ तोले, लघुपंचमूल (सरिवन, पिठवन, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, गोखरू) पीपलामूल, दन्ती, चीते की जड़ और शुद्ध भिलावे ये प्रत्येक ८-८ तोले सबका महीन चूर्ण कर मिला देवे। और पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, लगभग १५ दिन तक, जौ के ढेर में दबा कर रक्खे । पश्चात् निकाल और छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तो० तक ।

गुण—पाण्डु, उदररोग, संग्रहणी, बवासीर, भगन्दर,

---

* वंशपत्री प्रतीकाश मस्तुद्रोणे सुनिर्मले । क्षिपेद्गुडतुलां भाण्डे वचाकुष्ठविलेपिते ॥ तस्मिन् दद्यात्तु कृष्णायाः प्रस्थं प्रस्थत्रयं तथा । त्रिफलाया विडंगानां कुडवं मरिचस्यच ॥ काश्मरीफलमृद्वीकापरूषकफलानि च । वत्सकस्य च बीजादि समानि मरिचेन तु ॥ पंचमूलं च षड्ग्रन्थां दन्तीं चित्रकमेवच । द्वे द्वे पले च भल्लाताद्विपक् समुपकल्येत् ॥ यवपले स्थितः पेयोऽरिष्टो मात्रा बलं प्रति । पाण्डुरोगोदरेहन्ति ग्रहण्यर्शो विकारनुत् ॥ परं भगन्दरग्रीहशोषकासामयापहः । अग्निसदीपनः पथ्यो वातघ्नः स्थौल्यनाशनः । मस्त्वासव इति ख्यातो लेखनो मेदुरोहितः ॥

—गदनिग्रह ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तिल्ली, क्षय, खाँसी, मन्दाग्नि, बवासीर और स्थूलता (मेद) नाशक है ।

महाद्राक्षासव–देखिये, द्राक्षासव नं० ३ ।

महारसोनासव–देखिये, रसोनासव नं० १ ।

महासरस्वत्यासव—देखिये, सारस्वतासव ।

महासुदर्शनारिष्ट–देखिये, सुदर्शनारिष्ट ।

११९ माचिकासव *–कास, श्वासनाशक ।

विधि—मकोय २॥ सेर लेकर, जबकुट कर, १३ सेर जल में पकावे, ३। सेर जल शेष रहने पर छानकर ठंडा होजाने पर, घृत से चिकने किये हुये घड़े में भर, उसमें १० सेर गुड़ तथा पीपल ८ तोले, वायविडंग, दारचीनी, तेजपात, नागकेशर, इलायची और कालीमिरच प्रत्येक ४–४ तोले सबका चूर्ण कर मिला देवे । पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे । पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तो० से २॥ तोले तक ।

गुण–खाँसी, दमा, गलरोग, क्षय और उरःक्षतः नाशक है ।

---

* माचिकायाः शतार्धं तु द्रोणेऽपां च विपाचयेत् । तस्मिंश्चतुर्थशेषे तु पूते शीते प्रदापयेत् ॥ गुडस्य द्विशतं दत्वा तत्सर्वं घृतभाजने । विडंगं पिप्पलीकृष्णा त्वगेलापत्रकेसरैः ॥ मरीचैश्च तथा चूर्णं सम्यक्कृत्वा विचक्षणः । क्षिपेच्च पालिकैर्भागैर्घटनीयं समन्ततः ॥ ततो यथावलं पीत्वा कासश्वासगलामयान् । हन्ति यक्ष्माणमप्युग्रमुरःसन्धानकारकः ॥ माचिकासव इत्येष ब्रह्मणा निर्मितः पुरा ॥ —गदनिग्रह ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माजूफलासव—देखिये, मायाफलासव।

४२० मायाफलासव—(स्वकृत)–अतिसार, प्रदरादिनाशक।

विधि—माजूफल का मोटा चूर्ण ७ तोले और रेक्टिफाइड-स्पिरिट ५० तोले, एकत्र मिला कांच की बोतल में भर, दृढ़ काग बन्द कर, ३ दिन तक सुरक्षित रक्खे, पश्चात् फलालेन से खूब निचोड़ते हुये छानकर, शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—३० बून्द से १२० बून्द तक।

गुण–अतिसार, प्रदर और शिथिलतानाशक, वातनाशक, रक्तावरोधक है। प्रदर पर इसे आमले के हिमके साथ (५ तो० आमले के चूर्ण को १ पाव जल में रात्रि के समय भिगोकर, प्रातःकाल छानकर थोड़ा शहद मिला) पिलाने से ७ दिन में दोनों प्रकार के प्रदर दूर होते हैं। रक्तातिसार पर इसे गाय के दूध में मिला कर पिलाना चाहिये।

---

४२१ मालकांगन्यासव—शक्तिवर्धक।

विधि—मालकांगनी का शुद्ध तैल १। सवा सेर, शहद १। सवा सेर, गायका दूध १॥ सेर और धायके फूलों का चूर्ण १ पाव सबको एकत्र कर; शुद्ध चिकने घड़े में भर, मुखमुद्रा कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। (गाय का दूध खूब गरम करके डालना चाहिये) पश्चात् छानकर काम में लावे। इसे धान की राशि में दबा कर रखना चाहिये।

मात्रा—१ से ४ माशे तक।

गुण—यह अपूर्व वीर्यवर्धक और मेधाशक्तिवर्द्धक है।

(एक प्राचीन पुस्तक के आधार पर)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुक्तवर्च्चासव—देखिये, अरितमंजर्यासव ।

४२२ मुण्डयासव नं० १—रक्तदोष हारक।

विधि—गोरखमुण्डी का पञ्चाङ्ग ४ सेर और उसवा आध सेर लेकर जबकुट कर १५ सेर जल में पकावे। ६ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भरे, और ठंडा होजाने पर, उसमें शहद ५ सेर, धायके फूलों का चूर्ण १ सेर, मिश्री २॥ सेर, सोंफ और कालीमिरच प्रत्येक का चूर्ण ५-५ तोले मिला, अच्छी तरह मुखमुद्रा कर, २१ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर दे। प्रत्येक बोतल में ५-५ तोले रेक्टिफाइडस्प्रिट मिला कर दृढ़ काग लगाकर रक्खे। ४ दिन के बाद काम में लावे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—उपदंश, फिरंग एवं पारदजनित विकारों को नष्ट कर, रक्त को शुद्ध करता है।

---

४२३ मुण्ड्यासव नं० २—शक्ति वर्धक।

(श्री० पं० शालिग्राम जी वैद्यराज)

विधि—गोरखमुण्डी का पञ्चांङ्ग कूटकर और कपड़े में छान कर, उसमें दुगुना शहद मिला, चीनी के अमृतवान में भर, मुखमुद्रा कर, ४० दिन गेहूँ के ढेर में दबा कर रक्खे, फिर निकाल कर काम में लावे।

मात्रा—६ माशे से १ तो० तक। अनुपान-गर्म दूध से प्रातःसायं सेवन करे।

गुण—शारीरिक शक्ति बढ़ाने में अद्भुत है। (धन्वन्तरि)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४२४ मुस्तकारिष्ट + —अजीर्णादि नाशक ।

विधि—नागरमोथा १० सेर लेकर, जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे । १३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें-गुड़ १५ सेर, धाय के फूल १३ छटांक तथा अजवायन, सोंठ, कालीमिरच, लौंग, मेथी, चीते की जड़ और कालाजीरा प्रत्येक ८-८ तोले, सबका चूर्ण कर, मिला देवे । पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे । पश्चात् छानकर शीशियों में भरकर रखदे ।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक ।

गुण—अजीर्ण, मन्दाग्नि, हैजा और भयंकर संग्रहणी रोग को नष्ट करता है ।

---

४२५ मूलासव * —अग्निमांद्यादि नाशक ।

+ मुस्तकस्य तुलाद्वन्द्वं चतुर्द्रोणेऽम्भसः पचेत् । पादशेषे रसे तस्मिन् क्षिपेद्वै गुडतुलात्रयम् ॥ धातकीं षोडशपलां यमानीं विश्वभेषजम् । मरिचं देवपुष्पं च मेथीं वह्निं च जीरकम् ॥ पळयुग्ममितं क्षिप्त्वारुद्धभाण्डे निधापयेत् । संस्थाप्य मासमात्रन्तु ततः संस्रावयेद्भिषक् ॥ अजीर्णमग्निमान्द्यञ्च विसूचीमपि दारुणाम् । ग्रहणीं विविधां हन्ति नात्रकार्या विचारणा ॥

—भैषज्य रत्नावली ।

* द्विपञ्चमूलरजनी जीवकर्षभजीरकम् । पृथक् पंचपलैर्भागैश्चतुर्द्रोणेऽम्भसः पचेत् ॥ द्रोणशेषे रसे पूते गुडस्य द्विशतं तथा । चूर्णितान्कुडवार्धी शान्दत्वाचात्र समाक्षिकान् ॥ प्रियंगुमुस्तमंजिष्ठा विडंगमधुकप्लवान् । रौध्रं सावरकं चैव मासार्धं स्थापयेद्वृशम् ॥ एष मूळासवः सिद्धो दीपनोरक्तपित्तहा । आमहृत्कफहृद्रोगपाण्डुरोगाङ्गसादनुत् ॥ —गदनिग्रह ।

नोट—चरके-'वीरकर्षभजीवकामिति पाठभेदः' ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—दशमूल (सरिवन, पिठवन, दोनों कटेरी, गोखरू, बेल, स्योनापाठा, कुंभेर, पाढ़ल, अरनी प्रत्येक की जड़) हल्दी, जीवक (अभावे गुड़ूची), ऋषभक (अभावे विदारीकंद) और जीरा (काला) प्रत्येक २०-२० तोले, जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने घड़े में भर, उसमें १० सेर गुड़, १६ तोले शहद, (८ तो० शहद बहुत कम होता है) तथा प्रियंगु, नागरमोथा, मजीठ, वायविडंग, मुलैठी, केवटीमोथा; पठानीलोध प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले मिला देवें। फिर पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खा रहने देवें। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—यह परमसिद्ध योग-दीपन, पाचन तथा रक्तपित्त, आमरोग, अफ़ारा, कफ़रोग, हृदय के रोग, पाण्डुरोग और शरीर की शिथिलता को दूर करता है।

नोट—यह मूलासव, दशमूलासव नं० २ का किंचित् रूपान्तर मात्र है। किंतु है, उससे उत्कृष्ट।

---

४२६ मृगमदासव * नं० १—विशूचिकादि नाशक।

---

* मृतसंजीवनी ग्राह्या पंचाशत्पलसंमिता। तदर्धं मधु संग्राह्यं तोयं मधुसमं तथा॥ कस्तूरी कुडवं तत्र मरिचं देवपुष्पकम्। जातीफलं पिप्पलीत्वग्भागान् द्विपलिकान् क्षिपेत्॥ भाण्डे संस्थाप्य रुद्ध्वा च निदध्यान्मासमात्रकम्। विषूचिकायां हिक्कायां त्रिदोषप्रभवेज्वरे॥ वीक्ष्य कोष्ठं बलंचैव भिषङ् मात्रां प्रयोजयेत्। —भैषज्यरत्नावली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—मृतसंजीवनी सुरा (इसकी कृति आगे देखें, अथवा इसके स्थान में रेक्टीफाइडस्पिरिट ले सकते हैं) २॥ सेर लेकर, कांच या चीनी मिट्टी के पात्र में भर, उसमें-शहद १। सेर, कस्तूरी १६ तोले तथा कालीमिरच, लौंग, जायफल, छोटी पीपल, दारचीनी प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले मिला (कस्तूरी को प्रथम सुरा में घोलले) पात्र का मुख अच्छी तरह बन्दकर, एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् फलालेन या ऊनी वस्त्र से छानकर शीशियों में भर कर रख ले।

मात्रा—५ बून्द से ३० बून्द तक। रोगी के बलाबल का विचार कर मात्रा की योजना करनी चाहिये।

गुण—हैजा, हिचकी तथा सन्निपात ज्वर में शीघ्र लाभदायक है। हैजे की अन्तिम दशा में, जब कि शरीरस्थ उष्णता शांत होकर सर्वांग बर्फ जैसा शीतल होगया हो, धमनियों की गति बिल्कुल गिर गई हो, श्वास एकदम बन्द सा हो गया हो, किंतु छाती में कुछ धड़कन और गर्मी हो, नाखूनों में रक्तता हो, रोगी मूर्छित दशा में हो, ऐसी हालत में इसकी दूनी मात्रा लेकर, उसमें अदरक का स्वरस और थोड़ा शहद मिला कर पिला देना चाहिए। यदि इसकी एक भी मात्रा रोगी के हलक़ के नीचे उतर जाय तो आध घंटे के अन्दर ही सर्वाङ्ग में गरमी आकर, नाड़ी रास्ते पर आ जाती है। श्वासोच्छ्वास भी ठीक चलने लगता है। दो घंटे बाद फिर इसकी दूसरी मात्रा देनेसे रोगी आँखें खोल देता है, -अर्थात् पूर्ण होश में आजाता है। पश्चात् चन्द्रोदय या मकरध्वज की मात्रा देकर पथ्य देना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४२७ मृगमदासव—नं० २—विशूचिकादि नाशक।

विधि—उक्त विधि नं० १ में शहद और जल न मिलाकर, कस्तूरी आदि शेष सब द्रव्यों का चूर्ण, मद्य (७० से ९० प्रति-शत वाली अथवा मृतसंजीवनी सुरा) में मिलाकर, आसव उक्त विधि से ही तैयार कर लेवे।

मात्रा—आधा माशा से २ माशे तक।

गुण—हैजा, अग्निमांद्य, सन्निपातज्वर, पार्श्वशूल, निमो-निया और हृदय के रोगों पर उत्तम लाभप्रद है।

मृगमदासव—नं० ३—देखिये, स्तंभनासव।

४२८ मृतसंजीविन्यासव * (सुरा)—नं० १—शक्तिवर्धक, वाजीकरण।

---

* नवं गुडं च संगृह्य शतमेकं पलं तथा। वावरीत्वचमादाय बदरी-त्वचमेव च॥ प्रस्थं प्रस्थं प्रदातव्यं पूगं देयं यथोदितम्। लोध्रं च कुडवं दत्वा चार्द्रकस्य पलद्वयम्॥ तोयमष्टगुणं दत्वा गुडं संगोलयेत्सुधीः। प्रथमेचार्द्रकं दद्यात् द्वितीये वावरीत्वचम्॥ तृतीये बदरीं दत्वा गोलयित्वा भिषग्वरः। मुखेशरावकं दत्वा यत्नात् कृत्वा च बन्धनम्॥ मुख-संबन्धनं कृत्वास्थापयेद्दिनविंशतिम्। मृण्मये मोचिकायंत्रे मयूराख्येऽपि-यंत्रके॥ यथाविधिप्रकारेण मन्दमन्देन वह्निना। चुल्लीमध्ये विधातव्यं मृत्तिकादृढभाजने॥ तदौषधं च तन्मध्ये समुद्धृत्य विनिक्षिपेत्। नलस्य युगळं दत्वा कुम्भौ च गजकुम्भवत्॥ कुंभमध्ये विधातव्यं पूगंच सैलवालु-कम्। देवदारुलवंगं च पद्मकोशीरचन्दनम्॥ शतपुष्पायमानीच मरिचं-जीरकद्वयम्। शठी मांसी त्वगेला च जातीफलमुत्तकम्॥ ग्रन्थिपर्णी तथा शुंठी मेथीमेषी च चन्दनम्। एषां चार्धपलान् भागान् कुट्टयित्वा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—नवीन गुड़ ५ सेर, कीकड़ (बबूल) की छाल, बेरी की छाल और सुपारी प्रत्येक १३-१३ छटाँक, पठानीलोध १६ तोले और अदरक ८ तोले, सबको अलग २ जबकुट कर रक्खे। पश्चात् एक शुद्ध चिकने मटके में जल १ मन १६ सेर डालकर, प्रथम दिन उस जल में गुड़ को घोलकर अदरक पीसकर मिला, देवे। दूसरे दिन बबूल की छाल, तीसरे दिन बेर की छाल, सुपारी और लोध पीसकर मिला देवे। पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर सुरक्षित रक्खे। २० दिन के बाद पात्र का मुख खोलकर सुपारी, एलुये के बीज, देवदारु, लौंग, पद्माख, खस, सफेदचन्दन, सौंफ, अजवायन, कालीमिरच, सफेदजीरा, स्याहजीरा, कचूर, जटामांसी (बालछड़), दारचीनी, इलायची, जायफल, नागरमोथा, गठिवन (इसे गन्दरायण भी कहते हैं, यह काले रंगवाली लेनी चाहिये), सोंठ, मेथी, मेढ़ासिंगी और लालचन्दन, प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोला, एकत्र कर, युक्तिपूर्वक कपड़े की ढीली पोटली में बांध कर, उक्त पात्र के गले में लटका देवे, और भवके के द्वारा अर्क खींच लेवे।

मात्रा—१ तोला से ३ तोले तक। बलाबल देखकर यथोचित मात्रा में देवे।

गुण—आरोग्यवर्धक, बलवर्धक, देहदृढ़कारक, स्मरणशक्ति अग्नि तथा वीर्यवर्धक, वातनाशक, कामोद्दीपक, अत्यन्तस्तम्भक

निनिक्षिपेत् ॥ यथाविधि प्रकारेण चालनं दापयेत्सुधीः । बुद्धिमान सौजनं कृत्वाऽद्धरेद् विधिवद् सुराम् ॥ एतन्नत्यं पिबेन्नित्यं यथाधातुबयः क्रमम् । आरोग्यजननं देह दार्ढ्यकृद् बलवर्धनम् ॥ इत्यादि ।

—भैषज्यरत्नावली ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एवं आनन्ददायक है। यह ब्रान्डी से कई गुनी लाभदायक है, तथा सस्ती भी पड़ती है। क्षय रोगी के लिये विशेष हितकारी है।

नोट—मद्य विभाग की आज्ञा लेकर बनाना चाहिये। हैजे पर मृतसंजीवनी सुरा ६ माशे, नीम का स्वरस १ तोला, नीबूका रस १ तो०, सैंधानमक ६ माशे, शक्कर ६ माशे मिश्रण कर दो मात्रायें बनावे, इस तरह ४ मात्रायें १-१ घंटे के अन्तर से देकर ऊपर से १॥ माशे सोंठ का चूर्ण मिला छाछ के साथ पीने को देवे।

(रामगोपालजी मिश्र)

---

*४२९. मृत संजीवन्यासव (सुरा) नं० २ बलवर्धक, ज्वरनाशक।

* गुडं द्रोणमितं ग्राह्यं वर्षादूर्ध्वं पुरातनम्। वावरीत्वचमादाय दापयेत्पलविंशतिम् ॥ दाडिमीवृषभांचैव वराक्रान्तारुणा तथा। अश्वगंधा देवदारु बिल्वश्योनाकपाटलाः। शालिपर्णी प्रश्निपर्णी बृहतीद्वयगोक्षुरम्। बदरीन्द्र वारुणीचित्रं स्वयंगुप्ता पुनर्नवा ॥ एषां दशपलान् भागान् कुट्टयित्वा उदूखले। सुगम्भीरे च मृद्भांडे तोयमष्टगुणं क्षिपेत् ॥ गुडसंगोलनं कृत्वा एतैः संपूरयेद् बुधः। मुखे शरावकं दत्वा रक्षयेद्दिनाविंशतिम् ॥ षोडशादिवसादूर्ध्वं द्रव्याणीमानि दापयेत्। पूगप्रस्थद्वयं चात्र कुट्टयित्वा विनिक्षिपेत् ॥ धत्तूरं देवपुष्पं च पद्मकोशीरचन्दनम्। शतपुष्पा यमानी च मारिचं जीरकद्वयम् ॥ शठीमांसीत्वगेला च सजातीफलमुस्तकम्। ग्रन्थिपर्णी तथा शुंठी मेथी मेषी च चन्दनम् ॥ एषां द्विपालिकान् भागान् कुट्टयित्वा विनिक्षिपेत्। मृण्मये मोचिकायन्त्रे मयूराख्येऽपि यन्त्रके ॥ यथाविधिप्रकारेण चालनं दापयेद् बुधः बुद्धिमानसौ जलंकृत्वा उद्धरेत्विधिवत्सुराम् ॥ एतन्मद्यं पिबेन्नित्यं यथाधातुवयः क्रमम्। देहदार्ढ्यकरं पुष्टिबलवर्णाग्निवर्धनम् ॥ सन्निपातज्वरे घोरे विषूच्याञ्च मुहुर्मुहुः। शीते देहे प्रयोक्तव्यं मृतसंजीवनी सुरा ॥ —भैषज्यरत्नावली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—एक साल से अधिक पुराना गुड़ १३ सेर, कीकड़ की छाल १ सेर, अनार की बकली या छाल, बांसे की छाल, मोचरस, पाठा, हरड़, बहेड़ा, आमला, अतीस, असगन्ध, देवदारु, बेलकी छाल, अरलू की छाल, पाढल, सरिवन, पिठवन, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, गोखरु, बेर की जड़, इन्द्रायन की जड़, चीता, कोंच के बीज और पुनर्नवा (बिसखपरा) ये प्रत्येक आध-२ सेर लेकर जवकुट कर, २ मन २४ सेर जल में मिला, शुद्ध चिकने घड़े में भर, अच्छी तरह मुख बन्द कर, १६ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् पात्र का मुख खोल कर सुपारी १ सेर १० छटाँक, शुद्ध धतूरे के बीज (अथवा धतूरे की जड़) लौंग, पद्माख, खस, सफेदचन्दन, सौंफ, अजवायन, कालीमिरच, सफेदजीरा, स्याहजीरा, कचूर, जटामांसी (बालछड़), दारचीनी, बड़ी इलायची, जायफल, नागरमोथा, गंठिवन, सोंठ, मेथी, मेढ़ासिंगी, लालचन्दन प्रत्येक ८-८ तोले महीन चूर्ण कर मिलावें। और खूब हिला दे। पुनः उसका मुख बन्द कर, १४ दिन के बाद जब खूब फेन उठ आवें, तब भवके के द्वारा अर्क खींच लेवे।

मात्रा—१ तो० से २॥ तोले तक।

गुण—शरीर की शिथिलतानाशक, धातु तथा आयुवर्धक, बलवर्धक, कान्तिकारक, अग्निवर्धक, भयंकर सन्निपात तथा विशूचिका आदि में शरीर के शीतल होजाने पर, थोड़ी २ देर बाद सेवन करावें।

नोट—इसे मद्य विभाग की आज्ञा लेकर बनाना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नोट—उक्त विधि में-पुराना गुड़ १६ सेर, बबूलकी छाल ६। सेर, अनार की छाल ३=सेर डालकर तथा दोनों कटेरी, त्रिफला और पाढ़ल को निकाल कर, शेष द्रव्यों के साथ में बिष्णुकान्ता की जड़ लेवे, तथा प्रत्येक क्वाथ्य-द्रव्यको २॥-२॥ सेर लेवे, और उन्हें कूटकर १४ मन जल में भिगोदे, फिर गुड़ को घोलकर, मुख बन्द कर १६ दिन तक रक्खे, पश्चात् खोलकर उसमें सुपारी २ सेर, तथा शेष द्रव्य, धतूरे के बीज इत्यादि उपर्युक्तानुसार ही लेवे। गठिवन के स्थान में पीपलामूल लेवे। शेष सम्पूर्ण विधि उपर्युक्तानुसार करे। इस विधि से बहुत ही श्रेष्ठ संजीवनीसुरा तैयार होती है।

* सान्निपात की अंतिमावस्था में जब शरीर शीतल और आंखें सफेद हों तो इसका प्रयोग उत्तम लाभदायक है। यदि नेत्र लाल हों और श्वास एकदम कमजोर होगया हो तो, ऐसी हालत में यह विशेष लाभदायक नहीं है।

* हृदय की गति मंद हो, नाड़ी अधिक क्षीण हो, मंद २ स्वेद आता हो, रोगी अचेत हो तो १ तो० सुरा में १ रत्ती कस्तूरी मिला १-१ घंटे के बाद देवे जबतक गर्मी न आवे। कस्तूरी के अभाव में रुद्राक्ष घिस कर दिया जासकता है।

---

४३० मृतसंजीवन्यासव—नं० ३—संग्रहणी, अतिसारादिनाशक।

(श्रीयुत पं० अनन्तदेवजी शर्मा, वैद्यशास्त्री)

विधि—जायफल, लौंग, जावित्री, पीपल, नागरमोथा, सुगंधबाला, धायके फूल और मोचरस प्रत्येक १।-१। तो०, केशर असली ६ माशे, कपूर देशी ५ तोले, मिश्री १५ तोले, मुनक्का ३० तोले, पीपरमेंट (पोदीने का सत) ४ माशे और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अजवायन का सत २ माशे लेकर, काष्ठादि औषधों को पीसकर और मुनक्का के बीज निकालकर, समस्त औषधों में-१॥ सेर उत्तम सुरा (मद्य या रेक्टिफाइडस्प्रिट) मिला, बड़ी २ बोतलों में डालकर दृढ़ काग लगाकर, ११ दिन तक धूप में रक्खे। पश्चात् मोटे फलालैन के वस्त्र में कई बार छानकर, साफ़ बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—२ माशे से ४ माशे तक। तीनों समय, समान भाग पानी मिलाकर सेवन करावें।

गुण—हर प्रकार के अतिसार, संग्रहणी (पेचिश), अफ़ारा, शूल, अग्निमांद्य आदि रोगों के लिये अमृत के समान है।

(धन्वन्तरि)

मृद्वीकासव
मृद्वीकारिष्ट } देखिये द्राक्षारिष्ट नं० २।

४३१ मेथिकासव—(स्वकृत)—संग्रहणी नाशक।

विधि—मेथी के पत्तों का चूर्ण १ भाग और रेक्टीफाइड स्प्रिट ५ भाग एकत्र मिला कांच के पात्र में रख, दृढ़ मुख मुद्रा कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। बीच २ में हिलाते जाना चाहिये। पश्चात् छानकर शीशियों में भरकर रख दे।

मात्रा—१० बून्द से ६० बून्द तक।

गुण—सब प्रकार की संग्रहणी को दूर करता है तथा अग्निदीपक और रक्तपित्त नाशक है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

य

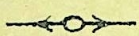

४३२ यकृतान्तकासव—यकृत विकारहारी।

(वैद्यराज शान्तिदेव जी त्रिपाठी, वैद्यशास्त्री)

विधि—घृतकुमारी का स्वरस, नीबू का स्वरस, सिरका अंगूरी और अदरक का स्वरस प्रत्येक आध-आध सेर लेकर, चीनी मिट्टी के पात्र में भरकर, उसमें-रोहितक का क्वाथ १ पाव, लौंग, बायविडंग, पीपलामूल, सोंठ, मिरच, पीपल प्रत्येक का चूर्ण १-१ तो०, सफेदजीरा, कालाजीरा प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोले तथा चीता, नौसादर और सुहागा प्रत्येक ५—५ तोले, पपीते का क्षार ८ तोले और सल्फ्यूरिक एसिड(ड्रिल (गंधक का तेजाब) ५ तो० सबको मिलाकर, पात्रका मुख अच्छी तरह बन्द कर रक्खे। १२ दिन तक धूप में रखना चाहिये। फिर छानकर शीशियों में भर कर रख ले।

मात्रा—४ माशे से १ तो० तक।

गुण—यकृत तथा प्लीहा के रोगों को नष्ट करता है। गुल्म शूल शामक है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४३३ यवतिक्तासव—ज्वर पर अपूर्व प्रभावशाली ।

(श्री० पं० गयादत्त जी शर्मा वैद्य, भिषग्रत्न)

विधि—यवतिक्ता (कल्पनाथ-कालमेघ) के पञ्चाङ्ग को सुखाकर कूट लेवे, एक पाव चूर्ण को ४ सेर जल में, सायंकाल के समय कढ़ाई में भिगो देवे। सवेरे मन्दाग्नि से पकावे, जब आध सेर क्वाथ शेष रहे, तब उतार कर ठंडा कर ले तथा साफ़ वस्त्र से छान, शुद्ध चिकनी मटकी में भर, उसमें ३ पाव असली शहद मिला, बन्दकर रक्खे। १५ दिन बाद छानकर काममें लावे।

मात्रा—१० से ३० बून्द तक, जल ६ तोले में मिला प्रातः सायं सेवन करावे।

गुण—इकतरा, तिजारी, चौथिया आदि किसी भी प्रकार के शीतज्वर पर यह शीघ्र लाभदायक है। जठराग्नि को दीपन करने वाला, बलवर्धक, ज्वरातिसारनाशक एवं बालकों के लिये सदैव कल्याणकारी है। यह अपना कुनैन से बढ़कर प्रभाव दिखलाता है। यकृतप्लीहा विकारयुक्त कामला, पाण्डुरोग एवं विशेषकर बालकों के कामला रोग पर आश्चर्यजनक लाभ पहुंचाता है।

---

४३४ यवासाद्यासव—आतपमूर्च्छा निवारक ।

विधि—अर्क जवासा आध सेर, अर्क वेदमुश्क १ पाव, पिसी हुई मिश्री १ पाव, नीबू का स्वरस १० तोले और गंधक का तेजाब २० बून्दे सबको एकत्र कर बोतलों में भर, दृढ़ कार्क लगाकर रक्खे। ७ दिन के बाद छानकर काम में लावे।

मात्रा—१ से ५ तोले तक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—खू से पीड़ित रोगी को पूर्ण शांतिदायक है और नाना प्रकार के पित्तजन्य विकारों को शमन करता है।

(राकेश)

---

४३५ यष्टिमध्वासव—नं० १—खांसी नाशक।

(रसचिकित्सक ठा० चूल्हनसिंह जी वर्मा, वैद्यराज, गया)

विधि—मुलहठी १ सेर, खूब बारीक कूट, चलनी में छान कर, ४ सेर जल और ४ सेर तालमिश्री मिला, एक शुद्ध चिकने घड़े में भर, उसका मुख सिमेंट से अच्छी तरह बन्दकर रखदे। १ मास के बाद, खोलकर छान ले और बोतलों में भरकर रखदे।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक। प्रातः सायं किंचित् भोजन के बाद सेवन करे।

गुण—कालीखांसी, कुकुर खांसी और दुष्टखांसी को शीघ्र नष्ट करता है। (अ० योगमाला (फुफ्फुसाङ्ग)

---

४३६ यष्टिमध्वासव—नं० २—(स्वकृत)—कास, बद्धकोष्ठादि नाशक।

विधि—मुलैठी का घनकाथ ४ तोले और मुसब्बर (एलुआ) का चूर्ण १॥ तोला दोनों को कांच के पात्र में भरकर, उसमें लगभग ६२ तोले रेक्टिफाइडस्पिरिट मिला, पात्रका मुख अच्छी तरह बन्द कर ७ दिन तक सुरक्षित रक्खे। बीच २ में हिला दिया करे। पश्चात् फलालैन से छानकर बोतलों में भरकर रख दे। कुल आसव ५० तोले तक होना चाहिये। कम हो तो ऊपर से उसमें स्पिरिट और मिला देनी चाहिये।

मात्रा—६० बून्द से १२० बून्द तक।

गुण—कास (खांसी) नाशक, रेचक तथा यकृत और प्लीहा के विकारों को नष्ट करता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४३७ योगराजआसव *—रक्तविकार नाशक ।

विधि—सुनक्का, चीनी और गुड़ प्रत्येक आध-आध सेर, हरड़, १६ तोले, मजीठ ८ तोले, तथा लौंग, बेर की छाल, चीड़ की छाल, अर्जुन की छाल, देवदारु, चीते की जड़ लोध, पीपलामूल, धायके फूल और सुपारी ये प्रत्येक ४-४ तोले, लेकर सबको अधकुटा कर, २६ सेर जल में पकावे, १३ सेर जल शेष रहे तब छानकर एक स्वच्छ मटके में भर उसमें लौंग, जावित्री तेजपात, बड़ी इलायची, नागकेशर, कालीमिरच, पीपल, सोंठ, दारचीनी, जटामांसी (बालछड़), चव्य, नागरमोथा, कूठ, जायफल, गठिवन, थूहरका डंडा और कुटकी प्रत्येक का चूर्ण

---

* द्राक्षायाः शर्करायाश्च गुडस्य च पृथक् पृथक् । पलानि दशकार्याणि पथ्यापलचतुष्टयम् ॥ लवंगवदरीसर्जार्जुनानां तु त्वचस्तथा । पलं पलं पृथग्ग्राह्यं देवदारु पलं तथा ॥ चित्रकस्य च लोध्रस्य पिप्पलीमूलकस्य च । धातकीकुसुमानां तु तद्वदेयं पलं पलम् ॥ तथा पूगफलानांतु कषायाणां पलं मतम् । मंजिष्ठायाः पले द्वे तु क्वाथ्यसंज्ञानि तानिच ॥ लवङ्गकालिकाजातिपत्रैलानागकेसरम् । मरिचं पिप्पली शुंठी त्वङ्नांसीचव्य मुस्तकम् ॥ कुष्ठं जातिफलं ग्रन्थिपर्णं स्नुक् कटुरोहिणी । एषां पलं पलं ग्राह्यं तज्ज्ञेयं चूर्ण संज्ञितम् ॥ क्वाथ्यद्रव्यात्ततः सम्यग्जलषड्गुणं क्षिपेत क्वाथं तदुदकेकुर्यादर्धभागावशेषितम् ॥ तत्क्वाथ वस्त्रपूतं तु भाण्डेऽन्यस्मिन्मनोहरे । कृत्वात्रप्रक्षिपेच्चूर्णं तद्भाण्डं धान्यराशिशम् कृत्वासप्तादेशति काले चोष्णमये तथा । यावद्दिनानि त्रीणि स्युः पश्चाद् भाण्डे समुद्धरेत् ॥ पुनस्तद्वस्त्रपूतं तु भाण्डे कर्पूरवासिते । निक्षिप्यसेवयेत्प्रातः पलमात्रोपळक्षितम् ॥ स दत्तोवातपित्तघ्नो दीपनो रक्तरोगजुत् । योगराज इति ख्यात आसवोऽयंगुणोत्तरः ॥ —गदनिग्रह ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४-४ तोले मिलाकर पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर देवे, और उसे अनाज के ढेर में दबा देवे। शीतकाल में ७ दिन के पश्चात् और ग्रीष्मकाल में ३ दिन के बाद निकाल कर, छान-कर, कर्पूरवासित पात्र में भर कर सुरक्षित रक्खे।

मात्रा—१ से २ तोले तक। समय प्रातःकाल।

गुण—वात तथा पित्तजन्य रोगों को और रक्त विकारों को नष्ट करता है। यह उत्तम अग्निदीपक है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

र

४३८ रक्तबोलासव—(स्वकृत)—नष्टार्त्तवनाशक।

विधि—रक्तबोल (हीराबोल) का चूर्ण ७ तोले और रेक्टिफाइडस्पिरट ५० तोले एकत्र मिला, शुद्ध बोतल में भर, दृढ कार्क बन्द कर रक्खे, ३ दिन के बाद फलालैन से छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—३० बूंद से ६० बूंद तक।

गुण—उष्ण, कफघ्न और वातहर है। जिस स्त्री को मासिक धर्म न होता हो या साफ स्रावन होता हो उसको इसे लोहासव या बोलासव के साथ मिला कर देवे। श्वासमार्ग के रोग एवं कफक्षय पर भी इसका उत्तम गुण प्रकट होता है। मुख रोग पर ऊपर से इसका लेप करे अथवा कुल्ले करे।

नोट—अंग्रेजी में इसे 'टिंक्चर ऑफ मन्ह कहते हैं।

---

४३९ रक्तमरिचासव—(स्वकृत)—अजीर्ण, अतिसार नाशक।

विधि—लालमिरचें जवकुट की हुई दो तोला लेकर, उसमें रेक्टिफाइडस्पिरट ५० तोले मिला कांच की बोतल में भर, अच्छी तरह मुख बन्द कर, ३ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् फलालैन से निचोड़ते हुये छानकर, बोतल में भर कर रख दे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—१० बून्द से ६० बून्द तक।

गुण—अजीर्ण तथा अतिसार के उपद्रवों को शीघ्र नष्ट करता है। इसे अंग्रेजी में-'टिंकच्यूराक्यापसिसाय' कहते हैं।

---

४४० रक्तशोधकासव—नं० १—उत्तम रक्तशोधक।

(श्रीकृष्णचन्द्रजी शर्मा, वैद्यराज, गुरदासपुर, पंजाब)

विधि—शीशम का बुरादा, आबनूस का बुरादा, दारचीनी, और जायफल प्रत्येक १-१ तोला, लौहचूर्ण, बुरादा बबूल (कीकड़), बुरादा बकायन, खुरासानी अजवायन, देशी अजवायन और केशर बढ़िया प्रत्येक २-२ तोले, तालमखाना और कपूर डेलीदार ३-३ तोले, उसवा, रक्त चंदन, श्वेतचन्दन, छोटी इलायची, कबाबचीनी, बनपसा, तुरंजबीन, मोथा और जटामांसी प्रत्येक ५-५ तोले, कचनार की छाल, चिरायता, स्यातरा (पित्तपापड़ा), जलनीम, उन्नाव, गुलाब के फूल, सत्यानाशीका पंचाङ्ग, नीमकी छाल; खस, बुरादा-तूणी (तुन) और पत्रवांस हरे प्रत्येक १०-१० तोले, गोरखमुण्डी बूटी १५ तोले; चोबचीनी २० तोले, नीमके पत्ते २० तोले, गिलोय (गुडूची) हरी २० तोले, हंसराज १५ तोले, कद्दू आधसेर, पेठा आधसेर, कस्तूरी बहुत बढ़िया ६ माशे, और अम्बर १ माशा। काष्ठौषधियों को कूट कर; १ मन पानी में भिगो देवे, दो दिन भीगने के बाद, तीसरे दिन प्रातःकाल केशर, कस्तूरी, अम्बर, और कपूर की पोटली भवके के मुँह में जमाकर अर्क खींच लेवे।

मात्रा—१० तोले, दिन में २ या ३ बार। बहुत बढ़िया शहद दो दो तोले मिलाकर सेवन करावे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—यह आसकवार्क रक्तशोधक, हृदय को बलदायक और शक्तिवर्धक है। प्रमेह, शुक्रमेह और मूत्रोष्णवात (सोजाक) आदि रोगों पर इसका विशेष प्रभाव देखा गया है।

(अ० योगमाला)

---

४४१ रक्तशोधकासव नं० २—रक्तविकार नाशक।

(आयुर्वेदमार्तण्ड श्री पं० रामवरदयालजी भट्ट, वैद्यशास्त्री)

विधि—चिरायता, नीमका पंचाङ्ग, सफेदचन्दन का बुरादा, सरफोंका, बावची, मुनक्का, त्रिफला, कासनी, बकायन की छाल, मुलैठी, अगर, तगर, चोबचीनी, भटकटैया, उन्नाब, मजीठ, शीसम का बुरादा, सूखी मकोय, नीलकंठी, मेंहदी, छोटी हरड़, ब्रह्मदंडी, सौंफ, रूसा (बांसा), धनिया, गिलोय, कपूरकचरी, नागकेशर ये प्रत्येक ४-४ तोले, रेवन्दचीनी १६ तोले, स्यातरा ३२ तो०, उशवा ३२ तो०, मुरडी १६ तोला बिस्फैज ४ तो० और केशर १ तो०, सब द्रव्यों को कूटकर चौगुने जल में ३ दिन तक शुद्ध मटके में भर, मुखमुद्रा कर रक्खे। पश्चात् भवके के द्वारा अर्क खींच ले।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक।

गुण—खुजली, रक्तविकार और उपदंश आदि के विकारों को शीघ्र नष्ट करता है।

---

४४२ रक्तशोधकारिष्ट नं० १—उपदंश विकार नाशक।

(वैद्यराज श्री पं० जगन्नाथप्रसादजी, आगरा)

विधि—कचनार की छाल, मुरडी, सिरसकी छाल, अनन्त-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मूल, कुटकी, कटेरी, की जड़, इन्द्रायन की जड़, गिलोय, सरफोंका, बबूल की छाल और उसवा प्रत्येक १-१ सेर लेकर जवकुट कर, १ मन २० सेर जल में २४ घंटे भिगोकर, पकावे, १५ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर ठंडा होने पर उसमें ४ सेर शहद, २ सेर गुड़, सत्यानाशी का पवस्त ५ सेर तथा धायके फूल, नीमके फूल, भांगरा, बावची, बनपसे के फूल; देवदारु और चोबचीनी प्रत्येक का चूर्ण ५-५ तोले; मिलाकर, पात्रका मुख अच्छी तरह संधान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। फिर छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ से २॥ तोले तक।

गुण—उपदंश विकारनाशक, रक्तशोधक है।

---

४४३ रक्तशोधकारिष्ट नं० २—रक्तविकार नाशक।

(श्री पं० बालकृष्णजी शर्मा, वैद्यराज)

विधि—चिरायता, गिलोय, जवासे की जड़, मजीठ, चोपचीनी हरड़, पित्तपापड़ा, नीमकी छाल, सरफोंका, लालचन्दन, खस, गुलाब के फूल; अनंतमूल, हरड़, बहेड़ा और आमला, प्रत्येक ५-५ तोले लेकर सबको जवकुट कर, ६ सेर जल में भिगोकर दिन भर रक्खा रहने देवे। पश्चात् नलिकायंत्र (भवका) द्वारा ४ सेर अर्क खींच कर बोतलों भर कर रख दे।

मात्रा—१। तो० से २॥ तो० तक, दिन में दो बार सेवन करावे।

गुण—रक्तविकार, रक्त बिगड़कर शरीर में फोड़े, फुन्सी आदि होना इत्यादि कई व्याधियों को यह नष्ट करता है। दाद,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खुजली, उपदंश और संधिवात मिटाकर रक्त को शुद्ध करता है।

(वैद्यक चिकित्सासार)

रक्तशोधकारिष्ट नं० ३—देखिये, इन्द्रवारुण्याद्यरिष्ट नं० २।

४४४ रक्तालपताहरासव—रक्तस्वल्पतानिवारक।

(वैद्यभूषण कौशिकजी आयुर्वेदाचार्य)

विधि—ब्राह्मी स्वरस २॥ सेर, अंगूर का रस, संतरे का रस और अनार का रस प्रत्येक एक-एक सेर तथा अर्क-पोदीना, अर्क सौंफ और अर्क गुलाब प्रत्येक आध-आध सेर तथा बादाम के बीज, कद्दू के बीज, खर्बूजे के बीज, ईसबगोल और श्वेत चन्दन का कल्क प्रत्येक २०-२० तोले तथा शतावरी, असगंध, ऊंटकटेरे की जड़, तुलसी के बीज; तोदरी सुर्ख, बहमन सफेद, सालम मिश्री, शक्काकुल मिश्री, रूमीमस्तगी, कौंच के बीज, बोजबन्द, छोटी पीपल, और मुलैठी का चूर्ण प्रत्येक दो २ तोले एवं लोहचूर्ण और स्वर्णमाक्षिक चूर्ण प्रत्येक एक-एक सेर लेकर, सबको एकत्र कर, एक मिट्टी के पात्र में, जो घी से चिकना किया हुआ हो तथा उसमें चन्दन और अगर चूर्ण का लेप किया हुआ हो, उसमें सब पदार्थों को डाल, मुखमुद्रा कर दो मास तक ऐसी भूमि में गाढ़ देवे, जिसके ऊपर पशु बँधते हों, उनका गोबर गिरता हो। दो महीने के बाद, उसको साफ करके छानके चुवालेवे, फिर उसमें ४ तोले स्वर्णपत्र चूर्ण, ८ तोले रौप्यपत्र चूर्ण, दो तोले मुक्ता, और सब के बराबर शुद्ध शंखनाभि चूर्ण डालकर, मुखमुद्रा कर १ वर्ष तक धानके ढेर में गाढ़ देवे, पश्चात् खोलकर, छानकर देख लेवे। यदि कुछ छूंछ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बचे तो फिर कुछ दिनों के लिये गाढ़ देवे । पश्चात् तैयार होने पर, उसे भोजनोपरान्त शक्ति अनुसार १ माशे की मात्रा से पिलाना चाहिये । क्रमशः बढ़ाया भी जासकता है ।

मात्रा—आधा तोला से १ तोला तक ।

गुण—सब प्रकार की रक्तस्वल्पता के लिये चमत्कारिक गुणकारी है ।

(अ० योगमाला)

---

४४९ रमणीसुधासव—प्रदरादि स्त्री रोग नाशक ।

(वैद्यराज श्री पं० रामगोपालजी मिश्र)

विधि—अशोक की छाल २० तोले, लोध, रसौत, मुलैठी और धायके फूल प्रत्येक ५-५ तोले लेकर जवकुट कर, ४ सेर जल में पकावे । आध सेर शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भरे, और उसमें शहद २० तोले तथा देशी मदिरा १० तोले मिला, पात्र का मुख बन्द कर गर्म स्थान में रक्खे । ३ या ७ दिन बाद छानकर काम में लावे ।

मात्रा—आधा तोला, दो तोला जल के साथ दिन में ३ बार देवे ।

गुण—प्रदर, सोमरोग, आर्तव विकार आदि स्त्री रोगों पर अचूक गुणकारी है । इसका सेवन २१ या ४१ दिन तक करावे ।

(धन्वन्तरि)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४४६ रसायनारिष्ट * नं० १—पुष्टिकारक।

विधि—पीपलामूल, काकड़ासिंगी, बड़ी कटेरी, पाषाणभेद, पाढलकी छाल, देवदारु, गोखरू और हरड़ प्रत्येक १३-१३ छटाँक तथा बेर की जड़ ३। सेर एवं दन्तीमूल (जमालगोटे की जड़) और चीते की जड़ १।-१। सेर लेकर सब को अधकुटा कर, १ मन ६ सेर जल में पकावे। जब २४॥ सेर जल शेष रहे, तब छानकर, एक शुद्ध मटके में घी और शहद का लेप करके, ठंडा होजाने पर भर देवे। और उसमें चीनी १० सेर, शुद्ध लोहचूर्ण १० सेर तथा फूलप्रियंगु, पीपल, लोध, मुनक्का, शीतलचीनी, सुपारी, सौंफ, नीम की छाल (अथवा नीम के फूल), मूर्वा और देवदारु प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले, एवं खैरसार १६ तोले और शहद १ सेर १० छटाँक, मिला कर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १० दिन तक सुरक्षित

* समूलां पिप्पलीं शृङ्गीं बृहतीमश्मभेदकम्। पाटलां देवकाष्ठञ्च श्वदँष्ट्रामभयां तथा ॥ शोडषपलमेकैकं कोलानामाढकं पृथक्। दन्तीचित्रकमूलानां पलानि पंचविंशतिम्॥ चतुर्गुणे जले पक्त्वाग्राह्यमर्धावशेषितम्। शीते समावपेद्भाण्डे प्रालेप्ते मधुसर्पिषा ॥ खण्डस्य द्विशतं शुद्धं तद्वल्लोहस्य दापयेत्। पत्रीकृतं तिलोत्सेधं सूक्ष्मचूर्णान्यमूनिच ॥ प्रियंगु पिप्पलीं लोध्रं मृद्वीकां चैलवालुकम्। क्रमुकं शतपुष्पां च निम्बं तेजस्वनीमपि ॥ पलिकं देवदारोश्च खदिराच्च चतुष्पलम्। क्षौद्रप्रस्थद्वयं चापि समावाप्य घटे शुभे ॥ सौम्ये पुष्ये तथा हस्ते रोहिण्यामुत्तरासु च। दशरात्रस्थितः पेयोऽरिष्टश्चात्रेयपूजितः ॥ आश्विभ्यां कथितः पूर्वं रसायनवरोह्ययम्। मात्रामग्निबलापेक्षीपिबेदस्य हिताशनः ॥ धन्यः पुष्टिकरो वल्यो बलीपलितनाशनः। —गदानिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ से २॥ तोले तक।

गुण—बलवर्धक, पौष्टिक, झुर्रियाँ तथा बालों की सफेदी नाशक है। वृद्धावस्था को दूर करता है।

---

४४७ रसायनारिष्ट नं० २—बलवर्धक।

(श्री कविराज गौरीशंकरजी आनन्द)

विधि—शतावर, असगन्ध, मूलसी, मुनक्का प्रत्येक १॥-१॥ सेर, विदारीकन्द आध सेर लेकर सब को जवकुट कर, २ मन जल में २४ घंटे तक भिगोकर क्वाथ करे। १० सेर शेष रहने पर, छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें प्रथम शिलाजीत ४ तोला अच्छी तरह डाल देवे, (शिलाजीत शुद्ध होनी चाहिये) पश्चात् केशर दो तोला पीस कर घोलें, फिर कुचला (शुद्ध) २ तोला महीन पीस कर घोलें, तदनन्तर लोंग, जायफल, जावित्री, नागकेशर, अकरकरा, सोंठ, कालीमिरच; दारचीनी, उटंगन के बीज, तेजपत्र, बालछड़, बहमन सफेद, बहमन सुर्ख तोदरीसफेद, तोदरी ज़र्द, अगर, छोटी इलायची, गिलोय, चिरायता, कौंच के बीज, नकछिकनी, विधारे के बीज, हरड़, बहेड़ा, आमला, कालीमुसली, पान की जड़, वाराहीकन्द, पोहकरमूल, बहुफली, सहुद्रशोष, गोखरू, सुपारी, सालबमिश्री तालमखाना, कूठ, बीजबन्द, शकाकुल मिश्री, और आमला प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले तथा मिश्री ४ सेर, शहद २ सेर, धाय के फूल आध सेर चूर्ण कर, सब को मिला देवे। फिर पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १५ दिन तक सुरक्षित

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रक्खे । पश्चात् छानकर, उसमें कस्तूरी ६ माशे घोलकर, बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—६ माशे से १ तोला तक ।

गुण—रसायन, बाजीकरण, बल वीर्य वर्धक, प्रमेह नाशक, अत्यन्त गुणवान और लाभप्रद वस्तु है ।

---

४४८ रसोनासव (महा) नं० १—वातव्याधि आदि नाशक ।

विधि—छिला हुआ लहसुन ५ सेर, छिलके रहित तिल २॥ सेर तथा सोंठ, कालीमिरच, पीपल, धनिया, चव्य, चीते की जड़, गजपीपल, अजमोद, दारचीनी, बड़ी इलायची और पीपलामूल ४-४ तोले, चीनी ३२ तोले, जीरा २० तोले, काला

---

* तुला क्षुण्ण रसोनस्य तदर्धं लुञ्चितास्तिलाः । पात्रे तु गव्यतक्रस्य पिष्टद्रव्यैः समं क्षिपेत्॥ऽजूषणं धान्यकं चव्यं चित्रकं गजपिप्पली। अजमोदा त्वगेलाच ग्रन्थिकं च पलांशकम् ॥ शर्करायाः पलान्यष्टौ पंचाजाज्याः पलानि च । कृष्णाजाज्याश्च चत्वारि राजिकायास्तथैवच ॥ पळप्रमाणं दातव्यं हिङ्गोर्लवणपंचकम् । आर्द्रकस्य च चत्वारि सर्पिषोऽष्टौ पलानिच ॥ तिलतैलस्य तावन्ति शुक्तस्यापि च विंशतिः । सिद्धार्थकस्य चत्वारि द्विगुणं मधुनस्तथा ॥ एकीकृत्य दृढे भाण्डे धान्यराशौ निधापयेत् । द्वादशाहात्समुद्धृत्य प्रातः खादेद्यथाबलम् ॥ सुरां सौवीरकं चाथ मधुवाऽपि पिबेन्नरः । जीर्णे यथेप्सितं भोज्यं दधिपिष्टकवर्जितम् ॥ एकमासोपयोगेन सर्वव्याधिहरो भवेत् । अशीतिर्वातजारोगा चत्वारिंशच्च पित्तजाः ॥ विंशतिः श्लेष्मजास्तद्वन्नश्यन्ते तस्य सेवनात् । योनिशूलं प्रमेहांश्च कुष्ठोदरभगन्दरान् ॥ अर्शोगुल्मक्षयांश्चापि जयेद्वाचबलप्रदः ॥

—योगरत्नाकर ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जीरा १६ तोले, राई १६ तोले एवं हींग ५ तोले, और पांचों नमक (सेंधा, काला, खारी, कचलोना और सामुद्रलवण) प्रत्येक २०-२० तोले, अदरक १६ तोले, घी, तिल का तैल और शहद ३२-३२ तोले, सिरका एक सेर, लेकर, पीसने योग्य चीजों को पत्थर पर पीसले, और कूटने योग्य चीजों को कूट छान महीन चूर्ण बनालें फिर सब द्रव्यों को शुद्ध चिकने मद्के में भर, उसमें लगभग ३ सेर तक गाय का मठा (तक्र) मिला पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, अनाज के ढेर में दबा देवे। १२ दिन के बाद निकाल कर काम में लावे।

नोट—शास्त्र में इसे 'महारसोन पिण्ड' कहा जाता है। इसमें शहद, घृत, तक्रादि द्रव पदार्थों का जो परिमाण ऊपर लिखा है, उसे दुगना कर लेने से उत्तम आसव तैयार होता है। समस्त पदार्थों को पात्र में भर कर धूप में रख देना चाहिये, जलांश के सूख जाने पर पात्र का मुख बन्द कर, अनाज के ढेर में दबाना चाहिये। तब यह कीच जैसा पिण्डाकार आसव तयार होता है।

भैषज्यरत्नावली में कुछ पाठ भेद है—सफेदजीरा १६ तोले, कालेजीरे के स्थान में कूठ तथा ४ तोले कालीमिरच अधिक लिखी है एवं हींग और पांचों नमक का परिमाण १-१ तोला लिखा है।

मात्रा—३ माशे से १ तोला तक। प्रातःकाल यथोचित् मात्रानुसार सुरा, सौवीरक कांजी या शहद के साथ सेवन करे तथा औषध पचने पर यथेच्छ भोजन करे, किन्तु दही और पिट्ठी के बने पदार्थों को कदापि सेवन न करें।

गुण—इसका १ मासतक नियमित सेवन करने से ८० प्रकार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के वातज रोग, ४० प्रकार के पित्तज रोग, २० प्रकार के कफ रोग, शानिशूल, प्रमेह, कुष्ठ, उदर रोग, भगन्दर, अर्श, गुल्म एवं क्षयादि रोग नष्ट होकर, रुचि और बल की वृद्धि होती है।

---

४४९ रसोनासव*—नं० २—आमवातादि नाशक।

विधि—एक शुद्ध घड़े में बल्कलसुरा (कीकड़ की छाल आदि के द्वारा निर्मित) ५ सेर, और छिलके रहित पीसा हुआ लहसुन २॥ सेर, एवं पीपल, पीपलामूल, जीरा, कूठ, चीतेकी जड़, सोंठ, कालीमिरच और चव्य प्रत्येक का महीन चूर्ण १-१ तोला, डाल कर, सबको अच्छी तरह मिला कर, घड़ेका मुख बन्द कर रख देवे। ७ दिन पश्चात् छान कर, बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—३ माशे से २॥ तोला तक।

गुण—आमवात, कृमिरोग, कुष्ठ, क्षय, अफारा (आनाह) गुल्म, बवासीर, तिल्ली, प्रमेह, तथा पांडुरोग नाशक है, अत्यंत जठराग्नि दीपक है। इसे 'रसोनसुरा' कहते हैं।

---

४५० रसोनासव * नं० ३—आमवातादि नाशक।

---

* बल्कलायाः सुरायास्तु सुपक्वायाः शतं घटे । ततोऽर्धेनरसोनन्तु संसृद्धं कुट्टितं क्षिपेत् ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलमजाजीकुष्ठचित्रकम् । नागरं मरिचं चव्यं चूर्णितञ्चाक्षसम्मितम्॥सप्ताहात्परतःपेया वातरोगामनाशिनी। कृमि कुष्ठ क्षयानाह गुल्मार्शः प्लीहमेहनुत् ॥ अग्निसन्दीपनीचैव पाण्डु-रोगविनाशनी ॥ चक्रदत्त ।

* रसोनस्य पलशतं तिलस्य कुडवं तथा । हिंगुत्रिकटुकं क्षारौ द्वौ पंचलवणानि च ॥ शतपुष्पा तथा कुष्ठं पिप्पलीमूलचित्रकौ । अजमोदा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—छिलके रहित लहसुन का कल्क ५ सेर, कूटे हुये तिल १ सेर तथा हींग, सोंठ, कालीमिरच, पिप्पली, जवाखार, सज्जी खार, पांचों नमक (सेंधा, काला, बिड़ या कांचनमक, सांभर और सामुद्रनमक), सोये के बीज, कूठ, पीपलामूल, चीतेकी-जड़, अजमोद, अजवायन, और धनिया, प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले लेकर, लहसुन और तिलों को एकत्र कूट कर, उसमें अन्य औषधियों का चूर्ण मिला, अच्छी तरह कूटे, और फिर सबको घृत से चिकने किये हुए पात्र में भरकर, उसमें १ सेर तिलका तैल तथा दो सेर कांजी मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, धान्यराशि में १६ दिन तक पड़ा रहने देवे। पश्चात् निकाल कर काम में लावे।

मात्रा—१ माशे से ६ माशे तक। अनुपान जल या मद्य के साथ।

गुण—आमवात, सर्वाङ्गवात, एकाङ्गवात, अपस्मार, अग्निमांद्य, कास, श्वास, विषदोष, उन्माद, वातभग्न, शूल तथा कृमि आदि रोगों का नाशक है।

यमानी च धन्याकं चापि बुद्धिमान् ॥ प्रत्येकन्तु पलंचैषां श्लक्ष्णचूर्णानि कारयेत्। घृतभाण्डे दृढे चैतत्स्थापयेद् दिनषोडशम् ॥ प्राक्षिप्य तैलभागीं च प्रस्थार्द्धं कांजिकस्य च। खादेत कर्षप्रमाणन्तु तोयं मद्यं पिबेदनु ॥ आमवाते तथा वाते सार्वाङ्गैकाङ्गसंश्रिते। अपस्मारेऽनले मन्दे कासे श्वासे गरेषु च ॥ सोन्मादवातभग्ने च शूले जन्तुषु शस्यते।

—चक्रदत्त।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

४५१ * रसोनासव—वातव्याधि नाशक ।

विधि—लहसुन का कल्क १ भाग और मद्य (४० से ६० प्रतिशतवाली) ४ भाग, एकत्र मिला, कांच की बोतल में भर, दृढ़ काग लगा कर रक्खे । ७ दिनके बाद फलालैन से छान, शीशियों में भर कर रखदे ।

मात्रा—१ माशा से ४ माशे तक ।

गुण—वातव्याधि, अग्निमांद्य, अजीर्णादि रोग नाशक है ।

(मद्यासव)

रास्नाद्यासव—देखिये श्वासहरासव नं० १—

४५२ रेवटचीन्यासव—(स्वकृत)— पाचक और रेचक ।

विधि—रेवन्दचीनी का मोटा चूर्ण ५ तोले, बड़ी इलायची का चूर्ण १। तोला, धनिये का चूर्ण १। तोला और रेक्टिफाइडस्प्रिट ५० तोले, इनको एक कांच के पात्र में एकत्रित कर, अच्छी तरह मुख बन्दकर, ३ दिनतक सुरक्षित रक्खे। रोज एक बार हिलाते रहना चाहिये । पश्चात् फलालेन से छान कर शीशियों में भर कर रखदे ।

मात्रा—पाचनार्थ ६० बून्द से १२० बून्दतक, और रेचनार्थ इसकी चौगुनी मात्रा देवे । बालकों के डब्बा रोग पर इसका उत्तम उपयोग होता है । अजीर्ण विकार से जब मलावरोध होता है तब इसका उपयोग अत्यन्त श्रेष्ठ लाभदायक होता है ।

रोध्रासव—देखिये, लोध्रासव ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४५३ रोहितकासव * नं०—१ प्लीहादि नाशक ।

विधि--रुहेड़े की छाल ५ सेर लेकर जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे । १३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, ठंडा होजाने पर, मिट्टी के स्वच्छ एवं घृत से चिकने पात्र में भर, उसमें-धाय के फूलों का चूर्ण १३ छटाँक, गुड़ १० सेर, तथा दारचीनी, तेजपात, बड़ी इलायची, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीते की जड़ और सोंठ प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले, मिला पात्र का मुख अच्छी तरह बन्दकर, १५ दिनतक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रखदे ।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक ।

गुण—प्लीहा, प्लीहोदर, प्लीहाशूल, हृदय का शूल, पार्श्व शूल, हर प्रकार की अरुचि, कब्जी, उदरशूल, पांडु, कामला, कय, दस्त, तथा जीर्णज्वर नाशक है । प्लीहा (तिल्ली) के नाशार्थ तो यह रामबाण ही है ।

नोट—रोहितासव और रोहितकारिष्ट में विशेष भेद नहीं है ।

---

* रोहितकतुलामेकां चतुर्द्रोणेऽम्भसः पचेत् । द्रोणशेषे रसे तस्मिन् पूते शीते प्रदापयेत् ॥ पलानि खलु धातक्या षोडशद्विशतं गुडात् । पलं पृथक् त्रिजातस्य पंचकोलपलं तथा ॥ चूर्णीकृतं क्षिपेत्सर्वं घृतलिप्ते तु भाजने । पक्षादूर्ध्वं पिबेच्चापि ततो मात्रां यथाबलम् ॥ प्लीहं प्लीहोदरं चैव प्लीहशूलं तथैव च । हृच्छूलं पार्श्वशूलञ्च तथा सर्वमरोचकम् ॥ हन्ति विबन्धशूलञ्च पाण्डुरोगं सकामलाम् । नाशयेच्छर्द्यतीसारं ज्वरं जीर्णं तथैव च ॥ रोहीतकासवो ह्येष प्लीहं च शमयेद्ध्रुवम् ।

—गदनिग्रह ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४५४ रोहीतकासव * नं० २--गुल्मज्वरादि नाशक ।

विधि--रुहेड़े की जड़ की छाल १० सेर लेकर, जवकुट कर, २६ सर जल में (१२ घंटे भिगोने के बाद) पकावे । ६॥ सेर जल शेष रहने पर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें १० सेर गुड़, तथा हरड़, बहेड़ा, आमला, लौंग, जायफल, धायके फूल और शुद्ध लोहका चूर्ण प्रत्येक २४-२४ तोले तथा दालचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेशर, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता और सोंठ प्रत्येक का चूर्ण २०-२० तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर रखे। १५ दिन के बाद छानकर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ से २॥ तोला तक।

गुण—गुल्म (गोला), ज्वर, अरुचि, हृदय के रोग, भगन्दर, तिल्ली, रक्तविकार, और श्वास रोग नाशक है।

---

४५५ * रोहीतकासव नं० ३--ज्वर गुल्मादि नाशक ।

---

* तुलाद्वयं रोहितमूलकानां, द्विद्रोण मात्रेण जलेन पक्त्वा । क्षेप्यं गुडस्य द्विशतं पलानामष्टादश स्युस्त्रिफळा पलानि ॥ लवंग जातीफलधातकीनां पळानि लोहस्य पडेव दद्यात् । देयं चतुर्जातकपंचकोलं पृथक् पृथक् पंचपलं तथैव ॥ गुल्मज्वरारोचकहृद्विकार भगन्दरं प्लीह निपीडितानाम् । रक्तामयश्वास निपीडितानां सदासवोऽयं विधिनां प्रयोज्यः ॥ —गदनिग्रह ।

* रोहीतकशतमेकं क्वाथितं द्रोणे चतुर्थशेषेतु । तस्मिन्गुडशतमेकं योज्य शेषैः सुचूर्णितैरेभिः ॥ पलमेकं त्रिफलायाः देयं त्रिपलं च धातकी पुष्पात् । पालिकं च पंचकोलाद् घृतभाण्डे स्थापयेत्पक्षम् ॥ ज्वरगुल्मार्शः प्लीहरुगस्थिग्रह पाण्डुरोगघ्नः ॥ —गदनिग्रह ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—रुहेड़े की छाल ५ सेर, जवकुट कर, १३ सेर जल में (१२ घंटे भिगोकर) पकावे । ३। सेर जल शेष रहने पर, (जल का परिमाण कम है, २६ सेर जल में पकाकर ६॥ सेर क्वाथ जल शेष रखना ठीक होता है) छानकर, शुद्ध चिकने घड़े में भर कर, उसमें ५ सेर गुड़, तथा हरड़ बहेड़ा, आमला, प्रत्येक का चूर्ण ४-४तोले, धायके फूलों का चूर्ण १२ तोले, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीते की जड़ और सोंठ प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्दकर रक्खे । १५ दिन के बाद छानकर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तो० से २॥ तोले तक ।

गुण—ज्वर, गोला, बवासीर, तिल्ली, हड्डियों का जकड़जाना, तथा पाण्डुरोग नाशक है ।

---

४५६ रोहितकारिष्ट *—अर्श, ग्रहण्यादि नाशक ।

विधि—रुहेड़े की जड़ की छाल ५ सेर, जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में (१२ घंटे भिगोकर) पकावे । १३ सेर जल शेष रहने पर, ठंडा होने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें १० सेर गुड़, धायके फूलों का चूर्ण १३ छटाँक, पीपल, पीप-

---

* रोहीतकतुलामेकां चतुर्द्रोणे जले पचेत् । पादशेषे रसे शीते पूते पलशतद्वयम् ॥ दद्याद्गुडस्य धातक्याः पलषोडशिकं मतम् । पंचकोलं त्रिजातं च त्रिफलां च विनिक्षियेत् ॥ चूर्णयित्वा पलैश्चैव ततो भाण्डे निधापयेत् । मासादूर्ध्वं च पिबतां गुदजाः यान्ति संक्षयम् ॥ ग्रहणी पाण्डु हृद्रोग प्लीह गुल्मोदराणि च । कुष्ठशोफारुचिहरो रोहितारिष्ट संज्ञकः ॥

—शार्ङ्गधर ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लामज्जक, चव्य, चीते की जड़, सोंठ, दारचीनी, इलायची, तेजपात, हरड़, बहेड़ा और आमला प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले, मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर रक्खे । १ मास पश्चात् छानकर, बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २॥ तो० तक।

गुण—बवासीर, ग्रहणी; पाण्डु, हृदय के रोग, तिल्ली, गुल्म, अष्ठीला, कामला, और सब प्रकार के उदररोग, कोढ़ सूजन, तथा अरुचि, नाशक है।

नोट-लोहा (तिल्ली) के बढ़जाने से या असक्त होजाने से पचन-क्रिया तथा रक्त शुद्धि ठीक २ नहीं होने पाती, ऐसी अवस्था में रोहित-कारिष्ट अच्छा कार्य करता है। यकृत विकार, वायगोला तथा स्वरभंग पर भी इसका लाभदायक उपयोग होता देखा गया है।

---

४२७ रोहितकारिष्ट--नं० २-

विधि—उक्त रोहितकारिष्ट नं० १ में लोहभस्म ४ तोला और मिला, यथोक्त सन्धान कर रक्खे। १ मास बाद छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा-१ वा २ तोले। प्रातःसायं भोजन के बाद। ५ तोला ताज़ा जल मिलाकर कांच या मिट्टी के पात्र में पीना चाहिये।

गुण-यकृतविकार, पाचन की कमी, बदन का पीला होना, हलकी इरारत, मन्दाग्नि, कफ और पित्त की विकृति नाशक है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४५८ लवङ्गासव * नं० १—प्रमेहादि नाशक।

विधि—लोंग, दारचीनी, नागकेशर, कालाजीरा, कलौंजी, कौंचके बीज, सफेद मुसली, कालीमुसली, गोखरू, खिरेंटी के बीज (बीजबन्द), पोस्त का छिलका, पोस्तके दाने और अकरकरा प्रत्येक २०-२० तोले लेकर, सब को अधकुटा कर, १ मन १२ सेर जल में (१२ घन्टे भिगोने के बाद) क्वाथ करे। १३ सेर शेष रहने पर, छानकर, ठंडा होने पर, शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें कचूर, पीपलामूल, कालीमिरच, असगंध, सोंठ, जायफल, केसर, जावित्री, अकरकरा, कबाबचीनी, बड़ी इलायची; कालाअगर, तालीसपत्र, सफेद चन्दन, भांग, क्षीरविदारी; विधारे के बीज सुपारी, बंसलोचन और

---

* देवपुष्पं वरांगं च केशरं पृथुकां तथा। कलौंजी मर्कटीबीजं मूसळीद्वयगोक्षुरम्॥ बळाबीजानि पोस्तत्वग्बीजं च करहाटकम्। पृथक् पृथक् प्रकुर्वीत पळानां पंचकं तथा॥ चतुर्द्रोणेऽम्भसः पक्त्वा कुर्यात्पादावशेषितम्। शटीचपिप्पलीमूलमरिचैलाश्वगन्धकम्॥ शुण्ठी जातिफळंचापि कुंकुमं जातिपात्रिका। आकल्लकं कबाबं च ह्येला कृष्णागुरुस्तथा॥ तालीसं चन्दनं चैव विजया क्षीरकन्दका। वृद्धदारुभवं बीजं क्रमुकं वंशरोचना॥ धत्तूरस्य च बीजानि पलमात्राणि कारयेत्। सर्वमेकत्र संचूर्ण्य पूते शीते निनिक्षिपेत्॥ द्वात्रिंशत्पळिकं क्षौद्रं धातक्याश्च पलाष्टकम्। तुळार्धं तु गुडाज्जीर्णाद् घृतभाण्डे विनिक्षिपेत्॥ मासाद्ध्वं पिबेदेनं हन्ति प्रमेहं दुर्जयम्। धातुक्षयं जयेच्छीघ्रं लवंगाद्यासवस्त्वयम्॥ —गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धतूरे के बीज प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले तथा शहद १ सेर ४८ तोले (शहद का परिमाण कम है, लगभग ३ सेर तक डालना चाहिये) धाय के फूलों का चूर्ण ३२ तोले और पुराना गुड़ २॥ सेर मिला कर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर रक्खे। १ मास पश्चात् छानकर, बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ तो० से २॥ तो० तक।

गुण—दुर्जय प्रमेह एवं धातुक्षीणता को शीघ्र ही नष्ट करता है।

---

४८९ लवङ्गासव * नं० २—अर्शादिनाशक।

विधि—लौंग, पीपल, शुद्ध लोह चूर्ण, कालीमिरच और एलवालुक (शीतलचीनी) प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले लेकर, १ मन १२ सेर जल में (१२ घंटे भिगोकर) पकावें, १३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, ठंठा हाजाने पर शुद्ध चिकने मटके में भर, उस में १० सेर गुड़ घोल कर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

---

* लवंग पिप्पली लोह मरिचं सैलवालुकम्। द्विपलांशं जलस्यैतच्चतुर्द्रोणे विपाचयेत् ॥ द्रोणशेषे रसे तस्मिन्पूते शीते प्रदापयेत्। गुडस्य द्विशतं तिष्ठेत्तत्सर्वं घृतभाजने ॥ पक्षादूर्ध्वं जातरसे दद्यान्मात्रां यथाबलम्। अस्याभ्यासादरिष्टस्य गुदजा यान्तिसंक्षयम् ॥ ग्रहणी पाण्डु हृद्रोग प्लीह गुल्मोदरापहः। कुष्ठशोफारुचिहरो बलवर्णाग्निवर्धनः। सद्यः क्षयहरोऽरिष्टः कामलाश्वित्रनाशनः। कृमिग्रन्थ्यर्बुदव्यङ्ग राजयक्ष्मज्वरान्तकृत् ॥

—गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४५८ लवङ्गासव * नं० १--प्रमेहादि नाशक।

विधि—लौंग, दारचीनी, नागकेशर, कालाजीरा, कलौंजी, कौंचके बीज, सफेद मुसली, कालीमुसली, गोखरू, खिरेंटी के बीज (बीजबन्द), पोस्त का छिलका, पोस्तके दाने और अकरकरा प्रत्येक २०-२० तोले लेकर, सब को अधकुटा कर, १ मन १२ सेर जल में (१२ घन्टे भिगोने के बाद) क्वाथ करे। १३ सेर शेष रहने पर, छानकर, ठंडा होने पर, शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें कचूर, पीपलामूल, कालीमिरच, असगंध, सोंठ, जायफल, केसर, जावित्री, अकरकरा, कबाबचीनी, बड़ी इलायची; कालाअगर, तालीसपत्र, सफेद चन्दन, भांग, क्षीरविदारी; विधारे के बीज सुपारी, बंसलोचन और

---

* देवपुष्पं वरांगं च केशरं पृथुकां तथा। कल्लौंजी मर्कटीबीजं मूसळीद्वयगोक्षुरम् ॥ बळाबीजानि पोस्तत्वग्बीजं च करहाटकम्। पृथक् पृथक प्रकुर्वीत पळानां पंचकं तथा ॥ चतुर्द्रोणेऽम्भसः पक्त्वा कुर्यात्पादावशेषितम्। शटीचपिप्पलीमूलंमारिचंसाइवगन्धकंच् ॥ शुण्ठी जातिफळंचापि कुंकुमं जातिपात्रिका। आकल्लकं कबाबं च ह्येला कृष्णागुरुस्तथा ॥ तालीसं चन्दनं चैव विजया क्षीरकन्दका। वृद्धदारुभवं बीजं क्रमुकं वंशरोचना ॥ धत्तूरस्य च बीजानि पलमात्राणि कारयेत्। सर्वमेकत्र संचूर्ण्य पूते शीते निनिक्षिपेत् ॥ द्वात्रिंशत्पळिकं क्षौद्रं धातक्याश्च पलाष्टकम्। तुलार्धं तु गुडाज्जीर्णाद् घृतभाण्डे विनिक्षिपेत् ॥ मासादूर्ध्वं पिबेदेनं हन्ति प्रमेहं दुर्जयम्। धातुक्षयं जयेच्छीघ्रं लवंगाद्यासवस्त्वयम् ॥ —गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धतूरे के बीज प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले तथा शहद १ सेर ४८ तोले (शहद का परिमाण कम है, लगभग ३ सेर तक डालना चाहिये) धाय के फूलों का चूर्ण ३२ तोले और पुराना गुड़ २॥ सेर मिला कर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर रक्खे। १ मास पश्चात् छानकर, बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ तो० से २॥ तो० तक।

गुण—दुर्जय प्रमेह एवं धातुक्षीणता को शीघ्र ही नष्ट करता है।

---

४९९ लवङ्गासव * नं० २—अर्शादिनाशक।

विधि—लौंग, पीपल, शुद्ध लोह चूर्ण, कालीमिरच और एलवालुक (शीतलचीनी) प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले लेकर, १ मन १२ सेर जल में (१२ घंटे भिगोकर) पकावें, १३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, ठंठा हाजाने पर शुद्ध चिकने मटके में भर, उस में १० सेर गुड़ घोल कर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

---

* लवंग पिप्पली लोह मरिचं सैलवालुकम्। द्विपलांशं जलस्यैतच्चतुर्द्रोणे विपाचयेत् ॥ द्रोणशेषे रसे तस्मिन्पूते शीते प्रदापयेत्। गुडस्य द्विशतं तिष्ठेत्तत्सर्वं घृतभाजने ॥ पक्षादूर्ध्वं जातरसे दद्यान्मात्रां यथाबलम्। अस्याभ्यासादरिष्टस्य गुदजा यान्तिसंक्षयम् ॥ ग्रहणी पाण्डु हृद्रोग प्लीह गुल्मोदरापहः। कुष्ठशोफारुचिहरो बलवर्णाग्निवर्धनः। सद्यः क्षयहरोऽरिष्टः कामलाश्वित्रनाशनः। कृमिग्रन्थ्यर्बुदव्यङ्ग राजयक्ष्मज्वरान्तकृत् ॥

—गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक।

गुण—बवासीर, संग्रहणी, पाण्डु, हृदय के रोग, तिल्ली, गोला, उदर रोग, अरुचि, कोढ़, सूजन, क्षय, कामला, श्वित्र, कृमि, ग्रन्थि, अर्बुद, व्यङ्ग और ज्वर नाशक है। बल, वर्ण एवं अग्नि की वृद्धि करता है।

लशुनासव—देखिये, रसोनासव।

४६० लक्ष्मणारिष्ट * स्त्रीरोगनाशक।

विधि—लक्ष्मणा (इसकी जड़ सफेद मूसली जैसी चिकनी और लुआवदार होती है, पत्तों पर रक्त वर्ण की बूंदें होती हैं, यह बिहार प्रान्त में, तिरहुत में, विशेष रूपसे पाई जाती है। इसके अभाव में श्वेतपुष्पकी अथवा नीले पुष्पकी कटेरी अर्थात् भटकटैया की जड़ या मयूरशिखा लेसकते हैं) की जड़ अथवा पंचाङ्ग ५ सेर लेकर, जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहे, तब छानकर, शुद्ध मजबूत एवं घृतसे चिकने हुये मटके में भर, उसमें १० सेर गुड़ घोल देवे। धाय के फूल १३ छटाँक, नागरमोथा, मुलैठी, खिरैंटी, हरड़, बहेड़ा, आमला, हल्दी, दारुहल्दी, जीरा, सफेद चन्दन, लाल-चन्दन, अजमोद, अजवायन और बेलगिरी प्रत्येक का चूर्ण

---

* लक्ष्मणायाः पलशतं चतुर्द्रोणे जले पचेत्। पादशेषे कषायेऽस्मिन् क्षिपेद् गुडतुलांद्वयम्॥ धातकी षोडशपलां मुस्तकं मधुकं बलाम्। फलत्रयं निशाद्वन्द्वं जीरकं चंदनद्वयम्॥ अजमोदां यवानीञ्च विल्वञ्च पलमानतः। मासादूर्ध्वन्तु सिद्धोऽयमरिष्टः स्त्रीगदान्तकृत्।

—भैषज्यरत्नावली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४-४ तोले मिलाकर, पात्र का मुख बन्द कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे । पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रखदे ।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक ।

गुण—सब प्रकार के स्त्री रोगों को नष्ट करता है । गर्भप्रद है ।

---

४६१ लक्ष्मीअरिष्ट—स्त्रीरोगहारक ।

[कविराज गौरीशङ्करजी आनन्द, रसवैद्य]

विधि-घृत कुमारी (घीगुवार) का रस १॥ सेर, कपासकी जड़ की छाल १॥ सेर, वरुण (वरना) की जड़ की छाल १ सेर, सहँजने की छाल आध सेर, लाल चीते की जड़ आध सेर, तथा दशमूल, सौंफ और अमलतास का छिलका प्रत्येक आध २ सेर लेकर, जवकुट कर, ६४ सेर जल में पकावे । शेष जल ८॥ सेर रहने पर छान कर, ठण्डा होजाने पर शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें मेथी के बीज, ख्यारैन के बीज (खीरे और ककड़ी के मिले हुए बीज),अजवायन, अनीसून; सोया, मजीठ, करफसबीज (अजमोद), गाजर के बीज,कासनी के बीज, गुग्गुलु, पुननेवा, जटामांसी, मरमकी (बीजाबोल), सुहागा और भांग प्रत्येक ५-५ तोले चूर्ण कर मिलावे और बाबूना पुष्प (इसे अंग्रेजी में 'कैमोमाइल' और लेटिन में 'एन्थीमिस नोबिलव' कहते हैं ।) आध सेर, दाख आध सेर, शहद १। सेर, पुराना गुड़ ५ सेर, अच्छी तरह मिलाकर, १ मास तक बन्दकर रक्खे । गुड़ जितना पुराना हो उतना ही लाभदायक होता है ।

मात्रा—१ से २ तोला तक ।

गुण—रजका बन्द होना, कष्ट से रजका आना और गर्भा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शय शोथ-नाशक है। प्रसव के समय यदि बालक शीघ्र पैदा न होता हो और बहुत कष्ट हो तो दो तोला अरिष्ट में १ रत्ती केशर मिलाकर पिलाने से शीघ्र ही बालक पैदा होजाता है।

---

४६२ लोध्रासव * नं० १—प्रमेहादि नाशक।

विधि—लोध, कचूर, पोहकरमूल, बड़ी इलायची, मूर्वा, बायविडंग, हरड़, बहेड़ा, आमला, अजवायन, चव्य, फूलप्रियंगु, सुपारी, इन्द्रायन की जड़, चिरायता, कुटकी, भारंगी की जड़ तगर, चीते की जड़, पीपलामूल, कूठ, अतीस, पाठा, इन्द्रजौ, नागकेसर, कुड़ेकी छाल, नखी, तेजपात, कालीमिरच, और नागरमोथा प्रत्येक १-१ तोला लेकर, अधकुटा कर, १३ सेर जल में पकावे। ३। सेर जल शेष रहने (जल का परिमाण कम है लगभग ३२ सेर जल में पका कर ८ सेर अवशिष्ट क्वाथ जल लेना ठीक होता है) छानकर, ठंडा होने पर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें शहद १ सेर १० छटाँक (८ सेर अवशिष्ट क्वाथ में ४ सेर शहद मिलावे) मिलाकर पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। या जमीन में

---

* लोध्रं शठीं पुष्करमूलमेलां मूर्वाविडङ्गं त्रिफलां यवानीम्। चव्यं प्रियङ्गुं क्रमुकं विशालां किराततिक्तं कटुरोहिणीं च ॥ भार्गीनतं चित्रकपिप्पलीनां मूलं सकुष्ठातिविषां च पाठाम्। कलिङ्गकानूकेसरमिन्द्रसाह्यं नखं सपत्रं मरिचं प्लवं च ॥ द्रोणेऽम्भसः कर्षसमानि पक्त्वा पूते चतुर्भागजलावशेषे। रसेऽधभागे मधुनः प्रदाय पक्षं निधेयो घृतभाजनस्थः ॥ लोध्रासवोऽयं कफपित्तमेहान्क्षिप्रं निहन्याद् द्विपलप्रयोगात्। पाण्डूदरामयार्शस्यरुचिं ग्रहण्या दोषं किलासं विविधं च कुष्ठम् ॥ —गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गाढ़ कर रक्खे। पश्चात् छानकर, बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—६ माशे से २ तोले तक।

गुण—कफ तथा पित्त के प्रमेहों को शीघ्र नष्ट करता है। इसके सिवा यह पाण्डु, बवासीर, अरुचि, संग्रहणी या ग्रहणी दोष, किलास तथा अनेक प्रकार के कुष्ठों को भी नष्ट करता है। मूत्राशय के विकार जैसे मूत्र में जलन होना, मूत्र बार २ बहुत प्रमाण में या बून्द २ होना, मूत्रमार्ग में सूजन होना, वीर्यस्राव, या स्वप्नधातु होना इत्यादि विकारों पर भी यह उत्तम लाभ दायक है। कफ के विकार, खाँसी, भ्रम (या चक्कर आना) को भी यह दूर करता है। इससे भूंख अच्छी लगती है। यह गर्भाशय की शुद्धि कर, प्रदरादि स्त्रियों की अनेक व्याधियों पर रामबाण जैसा काम करता है। यदि प्रमेह रोगी को इसके सेवन से दस्त अधिक आने लगें तो इसमें से 'इन्द्रायन की जड़ निकाल देनी चाहिये।

नोट—चरकादि ग्रन्थों में इसे 'मध्वासव' नाम दिया गया है। वाग्भट में कालीमिरच के स्थान में दारचीनी लिखा है। यह रोध्रासव वातरक्त (निकरस) रक्तपित्त, रक्तप्रदर आमवात पक्षाघात, अर्दित, शीतला, मसूरिकादि अनेक वातश्लेष्म व्याधियों के लिये अनेक बार अनुभव किया है। यह इन रोगों के लिये एकमात्र अचूक महोषधि है। मात्रा-बड़ों के लिये २॥ तो० प्रातः सायं दोनों समय देवे, छोटों के लिये अवस्थानुसार आधी मात्रा देनी चाहिये। वातरोगियों को जब आसव सेवन करावे तब उनके शरीर पर विषगर्भ तैल या नारायण तैल की मालिश कराना हितकर है। विस्फोटक, मसूरिकादि में बालकों के शरीर पर, आसव सेवन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काल में महा मरिच्यादि तैल का मर्दन प्रातःसायं करावे। पथ्य में रक्तपित्त और प्रदर में दही चावल देवे। वातरक्त और आमवात में गेहूं की रोटी, मूंग की दाल, चनों का यूष, मेथी का शाक, कोला आदि देवे। पक्षाघात और अर्दित में तैल मिश्रित पदार्थों को छोड़ सब कुछ खा सकता है। आमवात और वातरक्त के रोगियों को हर चौथी रात्रि को मधुर विरेचन चूर्ण या कोई भी सौम्य विरेचन देते रहना चाहिये, जिस से मलावरोध न रहे। (वैद्यशास्त्रों प० देवदत्तजी शर्मा)

---

४६३ लोध्रासव—नं० २—प्रमेह प्रदरादिनाशक।

(वैद्यक चिकित्सासार से, पं० बालकृष्ण शर्मा वैद्यराज द्वारा प्रेषित)

विधि—पठानी लोध २० तोले लेकर, शेष द्रव्य उक्त लोध्रासव नं० १ के अनुसार एक-एक तोला लेवे, किन्तु इन्द्रायण की जड़ के स्थान में कलिहारी १ तो० और कुड़े की छाल के स्थान में मोंफ १ तोला तथा सफेदचन्दन १ तोला लेवे। सबका महीन चूर्ण कर, ६ सेर १ पाव जल में मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर देवे, उसमें २॥ सेर शहद मिला, (धायके फूलों का चूर्ण भी १३ छटाँक मिलाना चाहिये) पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, २ मास तक (सन्धानावधि बहुत होगई, आसव बिगड़ने का डर है, अतः १ मास तक ही रखना ठीक होगा) सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर काम में लावे।

मात्रा—१। तोला से २॥ तोले तक। प्रातःसायं।

गुण—पाण्डु, अरुचि, बवासीर, संग्रहणी, कफ और पित्त के प्रमेह, कुष्ठ आदि में अत्यन्त लाभदायक है। प्रदर तथा स्त्रियों के अनेक गर्भाशय सम्बन्धी विकारों को नष्ट करता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४६४ लोध्रासव नं० ३—स्त्री रोगनाशक ।

विधि—पठानीलोध का महीन चूर्ण १० तोले लेकर, रेक्टीफाइडस्प्रिट २० तोले और १० तोले जल एकत्र मिला कर, कांच के पात्र में, खूब मजबूत डाट लगाकर बन्द कर देवे । २ हफ्ते तक रोजाना बोतल को धूप में रख दिया करे । बाद को छानकर, दूसरी शीशी में भर लेवे ।

मात्रा—६० बून्द से १२० बून्दें तक, ठंडे जल के साथ रोज तीन बार सेवन करावे ।

गुण—इसके सेवन से कष्ट से स्राव होना और अधिक मात्रा में रक्त का गिरना, पेट की पीड़ा, कमजोरी, सिर का घूमना, इत्यादि सब प्रकार के स्त्री रोग शान्त होजाते हैं । शरीर स्वस्थ और सबल होता है । पुष्टता और लावण्यता बढ़ती है ।

(वैद्य—मुरादाबाद)

---

४६५ लोबानासव—(स्वकृत) श्वास कासादि नाशक ।

विधि—लोबान का मोटा चूर्ण ५ तोले, शुद्ध शिलारस ४ तोले, एलुए का मोटा चूर्ण १० माशे और बालसम आफ़टोलू (बालसम नामक वृक्ष अमेरिका कार्थजीना तथा टोलू के पहाड़ों पर होता है । इसके गोंद को 'बालसम आफटोलू' कहते हैं) का चूर्ण १ तोला, सबको एकत्र कर, ४५ तोले रेक्टिफाइडस्प्रिट में मिला, शुद्ध बोतल में भर, दृढ़ काग बन्द कर, ७ दिन तक सुरक्षित रक्खे । पश्चात् मोटे वस्त्र से खूब निचोड़ते हुये छान कर, शीशियों में भर कर रख ले ।

मात्रा—३० बून्द से ६० बून्दें तक ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—उत्तेजक और कफघ्न है। वमन, कास एवं मूत्रदाह पर गुणकारी है। यह श्वासमार्ग के विकारों पर प्रशस्त है। मूत्र में रस जाता हो (खलजाती हो), तो इसके सेवन से शीघ्र लाभ होता है।

---

४६६ लोहासव * नं० १—पाण्डु शोथादिनाशक।

विधि—शुद्ध लोह चूर्ण (नीचे नोट १ देखिये) सोंठ, काली-मिरच, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला, अजवायन, बायविडङ्ग, नागरमोथा और चीते की जड़ प्रत्येक १६-१६ तोले; धायके फूल १ सेर, पुराना शहद ३। सेर, गुड़ ५ सेर और शुद्ध जल २६ सेर लेकर, कूटने योग्य चीजों को कूटकर, सबको शुद्ध चिकने मटके में भर, उसका मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। अथवा जमीन में गाड़कर रखदे। पश्चात् निकाल कर, छान लेवे।

मात्रा—आधा तोला से १॥ तोला तक।

गुण—अत्यंत अग्निवर्धक है, पाण्डु, सूजन, हलीमक, कामला, यकृत विकार, गोला और समस्त उदर रोग, बवासीर, कोढ़,

---

* लोहचूर्णं त्रिकटुकं त्रिफलां च यवानिकाम्। विडंगं मुस्तकं चित्रं चतुः सेख्यापलं पृथक्॥ धातकीकुसुमानां तु प्रक्षिपेत्पलविंशतिः। चूर्णीकृत्य ततः क्षौद्रं चतुः षष्टिपलं क्षिपेत्॥ दद्याद्गुडतुलां तत्र जलद्रोणद्वयं तथा। घृतभाण्डे विनिक्षिप्य निदध्यान्मासमात्रकम्॥ लोहासवमिमं मर्त्यः पिबेदग्निकरं परम्। पाण्डुश्वयथुगुल्मानि जठराण्यर्शसां रुजम्॥ कुष्ठं प्लीहामयं कण्डूं कासं श्वासं भगन्दरम्। अरोचकं च ग्रहणीं हृद्रोगं च विनाशयेत्॥

—शार्ङ्गधर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खुजली, पुराना बुखार, खांसी, दमा, भगन्दर, अरुचि, संग्रहणी तथा हृदय रोग नाशक है । जिस रोगी को लोहभस्म प्रकृति के अनुकूल न आती हो उसे यह आसव उत्तम लाभदायक है । क्षयकी पूर्वस्थिति में तथा प्लीहायुक्त ज्वर पर और पाण्डु पर यह विशेष गुणदायक है । अत्यंत बढ़े हुये पाण्डुरोगी को इसके साथ 'नवायसलोह' की मात्रा सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है । ज्वररोगी को लोहासव १ तो०, कलमीशोरा १ मासा, नौसादर १ मा०, पानी २॥ तोले सबको एकत्र मिला पिलावे । यह बड़े आदमी की खुराक हुई, बालकों को १-१ चायका छोटा चम्मच हर ३-३ घंटे के बाद पिलावे । इससे पसीना आकर ज्वर १ या १॥ घंटे में ही उतर जाता है और प्लीहा विकार दूर होता ।

नोट (१) लोह चूर्ण की विधि— लोहेको तपाकर, उसपर गंधक डाल पानी में बुझाले, इस बुझे हुये लोह को हस्तिशुंडी के रस में डाल दे, १५ दिन के बाद निकाल कर कूट डाले, महीन चूर्ण होजाता है । लोह चूर्ण के स्थान में लोहभस्म डालना और भी अधिक अच्छा है, इस विषय में देखें, नोट लोहारिष्ट के अन्त में ।

नोट २-यह लोहासव परिणामशूल परभी हितकारी है। यदि इसके सेवन से हृदय में जलन की प्रतीति हो तो मात्रा कम कर देनी चाहिए ।

---

४६७ लोहासव नं० २-(स्वकृत)—पाण्डुरोगनाशक ।

विधि—पुरानी तलवारों का लोह चूर्ण १३ छटाँक, तथा त्रिकुटा, त्रिफला आदि उक्त लोहासव नं० १ के ही अनुसार प्रत्येक १६-१६ तोले तथा शहद, गुड़, और जल भी उसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परिमाणानुसार लेकर, उसी विधि से सन्धान कर १ मास तक जमीन में गाढ़ देवे, अथवा दो मास तक अन्धेरे में रख छोड़े, फिर निकाल और छान कर, बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ से १॥ तोला तक, समभाग जल मिला, प्रातः सायं सेवन करावे।

गुण—पाण्डु और कामला को शीघ्र नष्ट करता है।

---

४६८ लोहासव नं० ३—[वैद्यराज गौरीशङ्करजी आनन्द]

विधि—लोहभस्म १६ तो०, शेष द्रव्य सोंठ, कालीमिरच आदि उक्त आसव नं० १ के अनुसार १६-१६ तो० तथा कुटकी, चिरायता, मजीठ और नवसादर प्रत्येक १६-१६ तो० तथा धाय के फूल, शहद, गुड़ और जल उक्त परिमाणानुसार ही लेकर, उक्त विधि से आसव तैयार कर लेवे।

मात्रा—उपर्युक्तानुसार।

गुण—पाण्डु, रक्तहीनता, अजीर्ण, प्लीहा और यकृतविकार में लाभप्रद है।

---

४६९ लोहासव * नं०४—पाण्डुरोगादि नाशक।

---

* फलत्रिकं निम्बपटोलमुस्ता पाठामृताचन्दन चित्रकं च। वेल्लं समङ्गाच मधूकसार कर्चूर वासा त्रिवृता हरिद्राः॥ दुरालभा-पर्पट कण्टकारी शक्रासनं यासकचमरङ्गे। शशाङ्कलेखाकपिकच्छुमूलं मेथी च बिल्वं कुटजश्च तिक्ता॥ त्रायन्तिका पुष्करकस्य मूलं पलैकमानानि महौषधानि। षष्टिः पलानां खदिरस्य सारोह्ययोरजः स्यात् पलयुग्ममानम्॥ स्याल्लोहकीटं च तुलाप्रमाणं तत्पञ्चकं केवुकजविनीयम्। प्रक्षिप्य भाण्डे शोशियुग्मधस्तान् सूर्यातपे स्थाप्य ततस्तु योज्यः। लोहासवोऽयं भिषजोपदिष्टः सर्वोत्तमोरोगविनाश हेतुः॥ —गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि–लोह किट्ट (मण्डूर) ५ सेर, शुद्ध लोह चूर्ण ८ तोले तथा हरड़, बहेड़ा, आमला, नीमकी छाल, पटोलपत्र, नागरमोथा, पाठा, गिलोय, सफेद चन्दन, चीते की जड़, बायबिडंग, मजीठ, महुये का गोंद, कचूर, बासा; निसोथ, हल्दी, धमासा, पित्तपापड़ा, (स्यातरा) कटेरी, इन्द्रजौ, जवासा, सनाय, बाबची, कौंचकी जड, मेथी, बेलकी छाल, कुड़ेकी छाल, कुटकी, त्रायमाना और पोहकरमूल प्रत्येक ४-४ तोले तथा खैरसार ३। सेर, केउँआ (शलगम काली), जीवन्ती (अभावे गिलोय), काकोली, क्षीरकाकोली (अभावे असगंध), मेदा, महामेदा (अभाव में शतावर), जीवक, ऋषभक (अभावे बिदारीकन्द), मुद्गपर्णी, (मुगवन-बनमूंग), माषपर्णी (बनउड़द) और मुलैठी प्रत्येक २०-२० तोले लेकर, सबका चूर्ण कर, २ मन २४ सेर जल में मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर, लगभग २५ सेर तक गुड़ उसमें घोलकर, यथाविधि सन्धान कर, २१ दिन तक धूपमें रक्खें । पश्चात् छानकर, बोतलों में भरकर रखदे ।

मात्रा—१ से २॥ तोले तक ।

गुण—पांडुरोग को शीघ्र नष्ट करता है । शरीर में रक्त की शुद्धि करके बल को बढ़ाता है । प्लीहा, यकृत विकार, जीर्णज्वर, कास, श्वास आदि नाशक है । अग्निदीपक होने से कई रोगों को दूर करता है ।

---

४७० लोहासव नं० ९–वृद्धवर्धक (रसायन)

विधि–लोहपत्रों को अग्नि में खूब लाल तपा २ कर, त्रिफले के स्वरस (या क्वाथ में) में, गोमूत्र में, यवक्षार के पानी में,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लवण जल में, इंगुदीक्षार और पलाशक्षार के जल में २१-२१ बार बुझावे। फिर महीन चूर्ण कर, उसे मधु और आमले के रस में डाल, अवलेह के समान बना घृतभावित घृतपात्र में भर मुखबुद्धा कर, पात्र को जौ के ढेर में दबा देवे । बीच २ में हर महीने; लोहे के या लकड़ी के डंडे से अच्छी तरह चलाता रहे। १२ मास के पश्चात् निकाल कर सेवन करे।

मात्रा—अवस्थानुसार यथोचित्। अनुपान शहद और घी नित्य प्रातःकाल सेवन करे। जब औषध पचजाय तब सात्म्य-आहार करे।

गुण—रोग, जरा, मृत्यु के हमले से सुरक्षित रखता है, समस्त इन्द्रियाँ बलवान होकर धीमान, यशस्वी, भाग्यी बनाता है, एवं दीर्घायु की प्राप्ति होती है।

(चरकसंहिता)

---

४७१ लोहारिष्ट *—प्रमेहादि नाशक।

---

* शालसारादिनिर्धूते चतुर्थांशावशेषिते । परिस्रुते ततः शीते मधु-माक्षिकमावपेत् ॥ फाणितीभावमापन्नं गुडं शोधितमेवच । श्लक्ष्णपिष्टानि चूर्णानि पिप्पल्यादि गणस्य च ॥ ऐकध्यमावपेत्कुम्भे संस्कृते घृतभाविते । पिप्पलीचूर्णमधुभिः प्रलिप्तेऽन्तःशुचौ दृढे ॥ श्लक्ष्णानि तीक्ष्णलोहस्य तत्र पत्राणि बुद्धिमान् । खदिराङ्गारतप्तानि बहुशः सन्निपातयेत् । सुपिधानं तु तं कृत्वा यवपल्ले निधापयेत् ॥ मासाँस्त्रींश्चतुरोवापियावदालोहसंक्षयात् । ततोजातरसं तंतु प्रातः प्रातर्यथाबलम् ॥ निषेवेत यथायोगमाहारं चास्य कल्पयेत् । कार्श्यकृद्वलिनामेष सन्नस्याग्नेः प्रसाधकः ॥ शोफनुद् गुल्महृत् कुष्ठ मेहपाण्ड्वामयापहः । प्लीहोदरहरः शीघ्रं विषमज्वर नाशनः ॥ अभि-ष्यन्दापहरणो लोहारिष्टो महागुणः ॥ —सुश्रुत।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—शालसारादिगण (शाल, चिरौंजी, खैर, तिन्दुक, सुपारी, भोजवृक्ष की छाल, मेढ़ासिंगी, तिरिच्छ की छाल, दोनों चन्दन, सीसम की छाल, सिरस की छाल, विजयसाल की छाल, धावड़ा की छाल, अर्जुन की छाल, तालमूल, करंज की छाल, बावची, सर्जसाल की छाल, अगरु, पीलाचन्दन) की औषधियाँ समानभाग कुल मिलाकर ५ सेर लेवे। और जव-कुटकर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, छान लेवे। ठंडा होजाने पर, शुद्ध घृत भावित (घी से चिकने किये हुये) मटके में भर, उसमें शहद इतना मिलावे कि वह मीठा होजाय (अथवा मध्वासव नं० १ या मधूकपुष्पा-सव नं० १ वाला २॥ सेर मिलावे), शुद्ध राब २॥ सेर, तथा पिप्पल्यादिगण (पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीतामूल, सोंठ, कालीमिरच, गजपीपल, संभालू के बीज, बड़ी इलायची, अज-मोद, इन्द्रजौ, पाठामूल, सफेदजीरा, सरसों, बकायन के फल, घृतमें भुनी हुई हींग, भारंगी, मूर्वा इसके अभाव में जिंगनी की छाल, अतिविष, बच, बायबिडंग, और कुटकी) की सब औष-धियों का समानभाग कुल चूर्ण १। सेर और खैर के अंगारों में अनेक बार तपाया गया शुद्ध लोह का चूर्ण १। सेर तक मिला कर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, (ध्यान रहे इस मटके में औषध भरने से पहले, शहद मिले हुये पीपल के चूर्ण का लेप कर देना चाहिये) जौ के ढेर में दबा देवे। २ मास या ३ अथवा ४ मास अर्थात् जब तक लोह गल न जावे तब तक मटके को अनाज के ढेर में ही रहने देना चाहिये। पश्चात् निकाल और छानकर बोतलों में भर लेवे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा–६ माशे से २॥ तोले तक। प्रातःकाल, उचित पथ्यापथ्य–पालन करते हुये सेवन करे।

गुण—स्थूलता (मेदवृद्धि) दूर होकर, जठराग्नि दीप्त होती है अर्थात् मन्दाग्नि दूर होती है, तथा सूजन, हृदय के रोग, गुल्म, कोढ़, प्रमेह, पाण्डुरोग, तिल्ली (प्लीहा), अभिष्यन्द, विषमज्वर और मूत्रकृच्छ्र को यह नष्ट करता है।

नोट—उपर्युक्त लोहासवों में और लोहारिष्ट में लौहचूर्ण के स्थान में लोहभस्म डालीजाय तो उत्तम है। लौहभस्म को प्रथम, जल मिश्रित हरड़ के चूर्ण में भिगो देवे, और तीन दिन पश्चात् उसमें आमले और बहेड़े का चूर्ण मिला दे। इसके ४ दिन बाद इस सिश्रण को आसव या अरिष्ट के मटके में डालना चाहिये। इस क्रिया से लोह अच्छी तरह चिलीन होजाता है।

(भा० भैषज्यरत्नाकर)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

व

४७२ वटजटासव--(स्वकृत)--प्रमेहादि नाशक।

विधि—बरगद की कोमल जटायें दो सेर लेकर जबकुट कर १२ सेर जल में पकावे। ४ सेर जल शेष रहने पर, छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर देवे। ठंडा होजाने पर उसमें शहद ३ सेर, मिश्री २॥ सेर, धायके फूलों का चूर्ण २० तोले, नागकेशर, कालीमिरच और प्रियंगु प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—प्रमेह; मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, रक्तार्श नाशक है। जिन स्त्रियों को मासिकधर्म में खून बहुत जाता हो, तथा कई दिनों तक खून का जाना ज़ारी रहता हो, उन्हें इसके सेवन से आशातीत लाभ होता है।

---

४७३ वटटुंबासव—प्रमेहादि नाशक।

(श्री पं० बाबूलालजी जैन वैद्यराज)

विधि--बरगद का दूध ५० तोले और मृतसंजीवनी सुरा (आसव) नं० १ की दोनों को, कांच की बोतलों में एकत्र मिलाकर भर देवे तथा अच्छी तरह मुखमुद्रा कर, ७ दिन तक रखा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—१० से २० बून्द तक।

गुण—इसे धारोष्ण दुग्ध के साथ सेवन करने से, प्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, सोमरोग, बहुमूत्र और रक्तार्श नष्ट होता है। शोथ व्रण पर इसे शतधौत घृत में मिलाकर लगाने से चमत्कारिक प्रभाव होता है। भगंदर, नासूर पर इसे मनुष्य के नाखून की भस्म में मिलाकर लगावे। तथा कंठमाला, कुष्ठ, दाद, पर बावची के चूर्ण में इसे मिलाकर प्रलेप करे। पूर्ण सिद्ध प्रयोग है।

---

४७४ * वत्सनाभासव—ज्वर, शोथादि पर।

विधि—मीठातेलिया (वच्छनाग) का चूर्ण एक भाग और मद्य (७० से ९० प्रतिशत वाली) १० भाग एकत्र मिला, बोतल में भर, दृढ़ काग लगा, ३ या ७ दिन तक, रक्खा रहने देवे। बीच २ में हिलाते जाना चाहिये। पश्चात् बन्नात या फलालेन से छानकर रखदे।

मात्रा—आधी बून्द से ८ बून्द तक।

गुण—ज्वर नष्ट करने में श्रेष्ठ है। इसके सेवन से हृदय की गति मन्द होजाती है, तथा रक्तप्रवाह भी कुछ कम होजाता है, अतएव प्रत्येक स्थान के शूल तथा वेदना में इससे बड़ा लाभ होता है, शिरःशूल में इसका प्रभाव तत्काल होता है। तीव्रज्वर में इसके सेवन से स्वेद (पसीना) आकर ज्वर तत्काल कम हो जाता है। शोथ रोगों में भी इसके सेवन से लाभ होता है। मूत्राशय और गर्भाशय पर भी इसका उत्तम प्रभाव होता है। मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, प्रमेह, स्त्रियों के रजोरोध और कुक्षिशूल आदि रोगों में इसका सेवन लाभप्रद होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किन्तु हृदय के रोगों में इसका व्यवहार कभी नहीं करना चाहिये । (मद्यासव)

---

४७९ वनपलाण्डवासव--हृदय रोगहारी ।

विधि--जंगली प्याज का चूर्ण १ भाग और मद्यरस (६० प्रतिशत वाला) अथवा रेक्टिफाइडस्प्रिट ५ भाग, दोनों को एकत्र मिला, बोतल में भर, दृढ़ काग लगा कर रक्खे । ७ या १५ दिन के बाद फलालेन या मोटे वस्त्र से छान कर फिर बोतलों में भर कर रखदे ।

मात्रा—५ से १५ बून्द तक ।

गुण—हृदय पर इसका प्रभाव-'डिजिटेलिस' के समान होता है । यह श्वासनलियों में से श्लेष्मा को बाहर निकालता है, तथा वृक्कोंको उत्तेजित करता है । मूत्रल है, श्वासनालियों, मूत्रमार्ग तथा आँतों के स्रावों के द्वारा कफको शरीर से बाहर निकालता है । कास में जब श्लेष्मा, श्वासनालियों में बढ़जाय और उसे निकालना अभीष्ट हो, ऐसी हालत में यह बहुत उपयोगी है । किन्तु खांसी की प्रथमावस्था में इसे नहीं देना चाहिये । उस समय देने से खाँसी अधिक बढ़ जाती है, श्वासनालियों में श्लेष्मा का स्राव बढ़जाता है । यदि हृदय की निर्बलता के कारण, श्वयथु होतो, इसे देने से जहाँ हृदय उत्तेजित होता है, वहाँ मूत्र भी अधिक आता है, जिससे सूजन कम हो जाती है । श्वास, ज्वरादि रोगों में निर्बल हृदय को उत्तेजित करने के लिये इसे दिया जाता है ।

(अ० योगमाला)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४७६ वनप्सासव--(स्वकृत) प्रतिश्यायादि निवारक ।

विधि—बनपसे के फूल १॥ सेर लेकर, कूट कर, २० सेर जल में पकावे ६। सेर जल शेष रहने पर, उसे छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें २ सेर मिश्री, १३ छटाँकर धायके फूलों का चूर्ण तथा छोटी पीपल और वंसलोचन प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले, मुलैठी का चूर्ण ८ तोले; कालीमिरच २ तोले, और केशर १ तोला खूब पीसकर मिलावे । और पात्रका मुख अच्छी तरह बन्द कर ७ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर और २० तोले रेक्टिफाइडस्प्रिट मिलाकर बोतलों में कार्क लगाकर रक्खे। ४ दिन के बाद काम में लावे।

मात्रा—६ माशे से २ तोले तक।

गुण—बिगड़ा हुआ जुकाम, कफज्वर, खाँसी, निमोनिया, सिरदर्द, और क्षयपर भी लाभदायक है । यह पसीना लाकर ज्वर को उतार देता है।

---

४७७ वनप्साद्यासव--(स्वकृत) प्रतिश्यायादि नाशक ।

विधि--बनपसे के फूल, गावजबाँ, रेशाखतमी, मुलैठी, बहेड़े की बकली और स्यातरा प्रत्येक का मोटा चूर्ण ४-४ तोले, मुनक्का १ सेर और उन्नाव १ पाव जवकुट कर सबको ६ सेर जल में २४ घन्टे भिगो रक्खे, पश्चात् पकावे । ३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें शर्बत अनार १३ छटाँक, धायके फूलोंका चूर्ण १ पाव, गुड़ १ सेर मिला, अच्छे प्रकार मुख मुद्राकर १५ दिन तक सुरक्षित रखे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रखदे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक । प्रातः सायं सेवन करे ।

गुण—खाँसी, सर्दी, जुकाम (प्रतिश्याय), हरारत, दम-फूलना, दस्त की कब्जियत, भूख न लगना इत्यादि शिकायतों को दूर करता है ।

---

४७८ तरुणासव *--प्लीहा, विद्रधि आदि नाशक ।

विधि--बरने की जड़ की छाल ५ सेर, शीशम की छाल २॥ सेर, पाढ़करमूल २॥ सेर, चीते की जड़ १। सेर तथा पियाबांसा (पीली कटसरैया), रुहेड़े की छाल, सहंजने की छाल, और दशमूल (सरिवन, दोनों कटेरी गोखरू, बेल, सोनापाठा, कुंभेर, पाढल, अरनी प्रत्येक, की जड़) प्रत्येक १०-१० छटाँक, देवदारु और कटेरी १॥-१॥ सेर, दाभकी छड़ २० तोले, बाल-

* शतं पलानां वरुणस्य मूलं त्वक् शिंशपायाश्च तदर्धमात्रा । तावत्तथा पुष्करमूलमुक्तं तदर्धमाम्रेश्च तदर्धमात्रः ॥ कुरण्टकारोहीतिकत्वचश्च तावच्च शिग्रुर्दशमूलकं च । पलानि त्रिंशत्खळुदेवदारोः क्षुद्रा च तुल्या सुरदारुणा च ॥ दर्भस्य मूलानि पळानि पंच हिंस्रातरोस्त्रीणि च कंटकार्याः । राजादनस्यापि पलानि सप्त शतावरीमूलपलत्रयंच॥तत्तुल्यकाश्मर्यकर्जुनश्च श्रृङ्गीशताह्वा गजपिप्पलीच । वला शटी नागवला करंज त्रायन्तिका कंवुकमपश्चगंध्यः ॥ कुष्ठं च वासासितकर्वुकं च विडंगकृष्णातिविषाश्च जीरम् । चव्यं च रास्नोत्पळसारिवाच स्यात्कौटजश्चाप्यथदीप्यकं च । वातार्यरिष्टारुगनार्यतिक्तं रक्ताऽमृता तेजानिवल्कळंच ॥ सव्याधिघाता हपुषा च भृङ्गी प्रत्येकमेषां हि पलद्वयं तु । पचेज्जलद्रोणचतुष्टये च तत्पादशेषे पलषट्शतं च ॥ क्षिपेद् गुडं माक्षिक धातकीनां पळानित्रिंशत्सकळंपुनस्ततः । निधापयेच्चागुरुमांसिधूपिते भाण्डे ततः कुंकुमचन्दनद्वयम् । ॥ पलं क्षिपेद्वै

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छड़ (जटामांसी) तथा बड़ी कटेरी १२-१२ तोले, ढाकके फूल २८ तोले, शतावर की जड़ १२ तोले, तथा खम्भारी (गंभारी) की छाल, अर्जुन की छाल, काकड़ासिंगी, सोया और गजपीपल प्रत्येक १२-१२ तोले एवं खरेंटी, कचूर, नागबला, कंजुआ, त्रायमाणा, केवटीमोथा, मेढासिंगी, कूठ, बांसा, कच्ची हल्दी, वायविडंग, पीपल, अतीस, जीरा, चव्य, रास्ना, कमल, अनन्तमूल, इन्द्रजौ, अजवायन, एरंड की जड़, नीम की छाल, लाल खैर, चिरायता, मजीठ, गिलोय, मूर्वा, दारचीनी, अमलतास, हाऊबेर और अतीस ये प्रत्येक ८-८ तोले लेकर सबको एकत्र कूटकर, २ मन २४ सेर जल में पकावे। २६ सेर जल शेष (पानी का प्रमाण यथा योग्य बढ़ाकर हमने लिखा है) रहने पर, छानकर, उसे अगर एवं बालछड़ से धूपित किये हुये मटके में भर उसमें ६ सेर गुड, ३ सेर शहद, १॥ सेर धायके फूलों का चूर्ण तथा केशर, सफेदचन्दन, लालचन्दन, निमेली के बीज, कपूर, लौंग, अकरकरा, वंसलोचन, भारंगी, सोरठी मिट्टी,

---

कतकं सचन्दं लवंगमाकल्लकवंशरोचनम् ॥ भार्ङ्गी सुराष्ट्री तगरं कवाबं जातीफलं पत्रकजातिपत्रिके। लोहं चतुर्जातकवालकं च प्रत्येकमेषां हिपलं विनिक्षिपेत् ॥ मासं निधेयो यवमध्यतस्तु पेयोयथाव्याधिबलं समीक्ष्य। प्लीहोदरं विद्रधि गुल्मकासं श्वासं तथा रक्तविकार हिक्के। शूलामवातार्बुद पाण्डुरोगं कुष्ठं तथा छर्दिभरोचकंच ॥ शोफं तथाध्मानमगन्दरं च शुक्राश्मरीं ग्रन्थिमनेकभेदम्। शोषापतानार्दितपक्षघात सन्धिग्रहार्तीश्च हलीमकं च ॥ निहन्ति वन्ध्यासुतदोऽथ वृष्यः प्राणप्रदोऽयं वरुणासवो हि। पित्तानिलश्लेष्मरुजापहश्च वैतालरक्षो ग्रहभीतिहन्ता। अन्यान्समालोक्य चिकित्सकानां हिताय नूनं कथितो मया हि ॥ —गदनिग्रह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तगर, कबाबचीनी, जायफल, तेजपात, जावित्री, लोहभस्म, दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेसर और सुगंधबाला (नेत्रवाला) प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, जौ के ढेर में दबा देवे । १ मास पश्चात् आसव को छानकर, बोतलों में भर कर रखदे ।

मात्रा—आधा तोला से दो तोले तक ।

गुण—तिल्ली, विद्रधि, गुल्म, खाँसी, दमा, रक्तविकार, हिचकी, शूल, गठिया (आमवात), अर्बुद, पाण्डु, कुष्ठ, उलटी, अरुचि, सूजन, अफ़ारा, भगन्दर, शुक्राश्मरी, अनेक प्रकार की ग्रन्थि, क्षय, अपतानक, अर्दित, पक्षाघात (लकवा) जोड़ों का दर्द, हलीमक, बांझपना, अन्य बहुत से वातज पित्तज एवं कफज रोगों को नष्ट करता है, तथा वीर्य की वृद्धि करता है ।

---

४७९ वाजीकरणासव—अपूर्व गुणकारी ।

विधि—अम्बर ६ माशे, एलुआ ६ माशे, कौडियालोबान १३ माशे और कस्तूरी .१ माशा, इन चारों को एकत्र शुद्ध खरल में खरल करे । फिर उसमें उतना ही ऐलकोहल (मद्य) डाले, जिससे कि वह सारी औषधि शर्बत की समान पतली होजाय। इसमें १॥ तोला एलकोहल (रेक्टिफाइडस्प्रिट) काफी होता है । अधिक डाल देने पर भी कोई हानि नहीं । पश्चात् उस रस को एक शीशी में भर कर, अच्छे प्रकार से मुँह बन्द कर, थोड़े गरम रेत में देर तक रक्खे (अथवा ७ दिन तक धूप में रक्खे) । पश्चात् फिल्टर के द्वारा छान लेवे, अथवा मोटे और गाढे लट्ठे के कपड़े से छान लेवे, और शीशी में भर मुँह अच्छी तरह से बन्द कर रख देवे ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—४ बून्द से ५ बून्द तक।

गुण—यदि सायंकाल में, मलाई में मिलाकर लीजावे तो पहिले ही दिन अपना प्रभाव दिखाती है। रोज प्रातःसायं इसे मक्खन, मलाई या एक चम्मच भर दूध में मिला कर सेवन करे, और ऊपर से दूध पीवे तो अत्यन्त बल की वृद्धि होती है। यह आसव अत्यन्त वाजीकरण और स्वाभाविक ही स्तम्भक है। विशेष गुण इसमें यह है कि इसमें एलुआ होने के कारण कोष्ठबद्धता नहीं होती। अम्बर और कस्तूरी होने से यह समस्त सूक्ष्म अवयवों के लिये उपयोगी है, और लोबान होने से यह कफज एवं वातज रोगों यहाँ तक कि श्वास व गठिया तक के लिये लाभदायक है। ('वैद्य' मासिकपत्र—मुरादाबाद)

---

४८० वातघ्नासव—वातविकार नाशक।

(श्रीमान् स्वामी चैनदासजी वैद्यराज ळाडनू)

विधि—प्रसारणी ५ तो०, असगन्ध, अग्निमन्थ, शुद्ध कुचला, घाघरवेल, श्वेतपुर्नवेकी जड़ की छाल, आमले, रास्ना, कुड़े की छाल, नागरमोथा, पीपलामूल, ऐलियो प्रत्येक २॥–२॥ तोले, धतूरे का पंचाङ्ग और बलापंचाङ्ग १२॥–१२॥ तोले, बड़ी हरड़ की छाल ५ तोले, इन सबको जवकुट कर २१४८ तोले (२६ सेर २८ तो०) जल में मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें १३०० तो० (१६। सेर) पुराना गुड़, ६० तोला दाख मिला, पात्र का मुख अच्छे प्रकार बन्द कर, जमीन में गाढ़ देवे। १ मास के पश्चात् निकाल, वस्त्र से छानकर और नितार कर, बोतलों में भर कर रखदे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा-अवस्थानुसार १। तो०से २॥ अथवा ३॥ तोले तक की मात्रा से सेवन करावे।

गुण—सब प्रकार के वातजन्य विकारों पर अत्यन्त ही लाभप्रद है। (अ० योगमाला, सिद्धयोगाङ्क)

---

४८१ वातपीड़ाहरासव—वातरोग नाशक।

विधि—अफीम २॥ तो०, वत्सनाभ (बच्छनाग) विष ५ तो०, लहसुन ५ तोले, कच गुग्गुल १० तोले, निम्बफल १० तोले, मदार का दूध ४० तोले, भेड़ का दूध ४० तोले और गोमूत्र ५ सेर लेकर, कूटने योग्य सब द्रव्यों को अलग २ पीस कर गोमूत्र में भिगोकर, सब का मिश्रण कर पात्र का मुख बन्द कर, ७ दिन तक पड़ा रहने देवे। फिर वारुणीयंत्र से अर्क खींचलेवे।

व्यवहार—यह अर्क २० तोले, मोटर का तैल (पेट्रोल) १० तो० और कर्पूरार्क (स्पिट कैंफर) १० तोले, एकत्र मिला बोतल में भर कर रखदे और दर्द के स्थान पर लगा कर हाथ से धीरे धीरे मलना चाहिये।

गुण—समस्त वात पीड़ाओं को शान्त करने में अव्यर्थ है. दर्द को शीघ्र ही बन्द करता है। (धन्वन्तरि)

बालआसव—देखिये, किनगिचासव।

४८२ वासकासव नं० १—कास श्वासादि नाशक।

विधि—बांसे (अडूसा) के पत्तों का स्वरस १०० तो०, मृतसंजीवनी सुरा १०० तो० तथा मुलैठी का सत्व, बहेड़े का बक्कल, लौंग, छोटी इलायची और तालीसपत्र प्रत्येक का चूर्ण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२-२ तोले, तथा कपूर, अफीम, भारंगी, जायफल, कालीमिरच और काकड़ासिंगी प्रत्येक का चूर्ण १-१ तोला, तथा मिश्री ४० तोले, सब को शुद्ध चिकने मटके में भर, मुख अच्छे प्रकार बन्द कर १ मासतक सुरक्षित रखे। पश्चात् छानकर साफ करलेवे।

मात्रा—१ माशे से ६ माशे तक।

गुण—बढ़े हुये कफको नष्टकर खांसी को दूर करता है, तथा श्वास, क्षय, ज्वर और प्रतिश्याय को नष्ट करता है। श्वास को तो अतिशीघ्र बन्द करता है।

(क्षेमादर्श)

नोट—उक्त तथा नीचे के प्रयोगों को अरिष्ट नाम से कहा गया है, किन्तु हमने इन्हें 'आसव' नाम से ही पुकारना उचित समझा है।

---

४८३ वासकासव नं० २—कास श्वासादि नाशक।

विधि—बासा (अडूसा) पत्र स्वरस ५ सेर, मृतसंजीवनी सुरा ५ सेर, मिश्री २ सेर, मुलैठी का घनसत्व, तालीसपत्र, बहेड़े की बकली, छोटी इलायची के दाने, और लौंग प्रत्येक ८-८ तोले तथा कालीमिरच, भारंगी, काकड़ासिंगी, कपूर, जायफल और अफीम प्रत्येक ५-५ तोले लेकर, चूर्ण कर, सब को शुद्ध चिकने घड़े में भर, मुख बन्द कर दे। फिर उसे अनाज के ढेर में, भूसा के ढेर में, अथवा जमीन में गाड़ कर रक्खे। शीत ऋतु में २० या २५ दिन तथा और उष्णऋतु में १५ या १६ दिन तक रक्खे रहने के पश्चात्, भबके में डालकर, अर्क खींच लेवे। भबका मिट्टीका, टीन का अथवा कलई किया हुआ होना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—१ से ३ मासे तक । सुखोष्ण जलमें मिला कर सेवन करे ।

गुण—श्वास और खांसी को तत्काल दबाता है, मुंह और कफके साथ खून आने को रोकता है ।

(धन्वन्तरि)

---

४८४ वासकासव नं० ३—कास श्वासादि नाशक ।

विधि—वासकासव नं० १ के अनुसार सब द्रव्य लेवे, किन्तु लौंग के स्थान में लोध २ तोला और कालीमिरच १ तोला के स्थान में केशर ३ मासे लेकर, मुलैठी सत्व आदि का बारीक चूर्ण कर, मृतसंजीवनी सुरा और वासापत्र स्वरस में मिला कर, १ मास तक चीनी के पात्र (मरतबान) में डाल; मुख बन्द कर, भूसे में रक्खे । पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—आधा माशा से ३ मासे तक अथवा ३० से ६० बून्द तक । समान भाग जल मिला कर सेवन करावे ।

गुण—कास, श्वास, तथा क्षय की खांसी में अत्यन्त लाभकारी है ।

(अ० चिकित्सा संग्रह)

नोट—इसे श्वाहरासव या श्वासहरविन्दु भी कहते हैं ।

---

४८५ वासकासव * नं० ४—कासाश्वासादि नाशक ।

---

* वासास्वरसमादाय मृतसंजीवनी समम् । सांमिश्रय भिषगन्योऽन्यं वासरे शुभतारके ॥ मृद्भाण्डे काचभाण्डे वा निरुध्य तन्मुखं दृढम् ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—बासे (अडूसा) के हरे पत्ते एवं हरी छाल का स्वरस तथा मृतसंजीवनी सुरा (अभाव में रेक्टीफाइडस्पिरिट) समभाग किसी कांच के पात्र में भरकर, मुँह अच्छी तरह बन्द कर, ७ दिन रक्खा रहने देवे। पश्चात् फलालेन या बन्नात में छान कर रख दे।

मात्रा—१-१ माशा, समभाग जल मिला, दिन में कई बार सेवन करावे।

गुण—खाँसी, दमा, रक्तपित्त, उरःक्षत, राजयक्ष्मा (क्षय), और कण्ठ रोगों पर लाभप्रद है।

---

४८६ वासकासव नं० ६—उरःक्षतादि नाशक।

विधि—बासे (अडूसा) की जड़ की छाल १ भाग चूर्णकर, उसमें मद्य (४० से ६० प्रतिशतवाली) ४ भाग मिला, बोतल में भर, अच्छी तरह काग लगा कर रक्खे। ७ या १५ दिन के बाद, फलालेन या बन्नात में छान कर सुरक्षित रक्खे।

मात्रा—६ बून्द से २० बून्द तक। अथवा आधा माशा से ४ माशे तक।

गुण—उरःक्षत, रक्तपित्त, यक्ष्मा, कास, श्वास, आमाति-

सप्ताहं स्थापयेत् तस्मात् पूतीकुर्यात्तु वाससा ॥ वासारिष्टः (वासासवः) सुसेव्योऽयं मात्रामात्रो दिने दिने। एतत्सेवी सुपथ्याशी देवभूदेवभक्तिमान्॥ कासं श्वासं रक्तपित्तं कण्ठरोगमुरःक्षतम् । अन्याँश्च विविधान् रोगान् जयेदाशु न संशयः ॥ उरःक्षते यक्ष्माणिरक्तापित्ते श्वासे च कासेऽपि हिता विभज्य। येचागदाबैद्यविमूढचेतः सुखावबोधाय यथाधिकारम् ॥

—भैषज्यरत्नावली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

सार में इसके सेवन से बड़ा लाभ होता है । अभ्रहरारिष्टादि अन्य औषधियों के साथ मिला कर देनेसे इसकी और भी गुण-वृद्धि होती है । उठते हुये श्वास को यह शीघ्र ही रोकता है ।

(मद्यालव)

---

४८७ वासकारिष्ट * नं० १—शोथनाशक ।

विधि—बासा (अड़ूसा) १२॥ सेर लेकर जवकुट कर, ६४ सेर जल में पकावे । १६ सेर शेष रहने पर, छान कर, शुद्ध चिकने घटके में भर, उसमें ६। सेर गुड़, ४० तोले धाय के फूलों का चूर्ण तथा दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर, कंकोल, सोंठ, मिरच, पीपल और सुगंधवाला प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिलाकर, पात्रका मुख अच्छे प्रकार बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रखे । पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक ।

गुण—समस्त प्रकार के शोथों (सूजन) को नष्ट करता है । श्वास, कास पर अपूर्व प्रभाव रखता है ।

४८८ वासकारिष्ट नं० २—शोथादि नाशक ।

---

* वासकस्य तुले द्वे तु द्विद्रोणेऽपां विपाचयेत् । कृत्वा द्रोणार्धशेषं तु पूते शीते प्रदापयेत् ॥ गुडस्यैकां तुलां तत्र धातक्यास्तु पलाष्टकम् । क्षिपेच्चूर्णीकृतं तस्मिन् त्वगेलापत्रकेसरम् ॥ कङ्कोलव्योषतोयानि पलिका न्युपकल्पयेत् । सम्यक् पक्वं ततो ज्ञात्वा पक्षादूर्ध्वं पिबेदमुम् ॥ वास-कासघ्न (वासकारिष्ट) इत्येष सर्वश्वयथुनाशनः ॥

—योगरत्नाकर ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि--वासे (अडूसा) के ताजे पत्र २॥ सेर लेकर, जवकुट कर, २० सेर जल में पकावे। ६। सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने घड़े में भर, उसमें ३। सेर गुड़, ३२ तोले धाय के फूलों का चूर्ण, तथा दारचीनी, इलायची तेजपात, नागकेसर, शीतलचीनी कालीमिरच, और खस प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर काम में लावे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक।

गुण—शोथ (सूजन), कास, श्वासादि नाशक है।

नोट—श्वास पर उक्त दोनों वासारिष्ट उत्तम कार्य करते हैं, यदि केवल इसके प्रयोग से लाभ प्रतीत न हो तो इसके साथ किञ्चित् कनकासव का मिश्रण कर सेवन कराने से तत्काळ लाभ होता है।

(वैद्यक-चिकित्सासार)

---

४८९ वासकारिष्ट--सं० ३—कास, श्वासादि नाशक।

(श्री. रामेश्वेदी स्नानक गुरुकुलकांगड़ी)

विधि--बांसे के पत्तों का कषाय ५ सेर, एक शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें मृतसंजीवनी सुरा ५ सेर (सुरा की मात्रा अत्यधिक है),गुड़ २ सेर,. धायके फूल १६ तोले और चातुर्जात (दारचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर) प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोले मिला, मुखमुद्रा कर रक्खे। (१५ दिन पश्चात् निकाल और छानकर काम में लावे)।

मात्रा—२ से ८ ड्राम तक।

गुण—कास, श्वास, क्षय, रक्तपित्त पर पूर्ण गुणकारी है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विजयसारासव--देखिये, बीजकारिष्ट ।

४९० विजयासव नं० १--धनुस्तम्भादि नाशक ।

(कविराज पं० शशिकान्तजी मिश्र, भिषगाचार्य सं० जीवनसुधा)

विधि—भांग के हरे ताज़े पत्ते खूब कूटकर १ भाग और रेक्टिफाइडस्प्रिट (अथवा संजीवनी सुरा) ५ भाग एकत्र मिला, बोतल में भर, दृढ़ काग लगा कर रक्खे । ७ या १५ दिन के बाद फलालेन या बन्नात में छानकर उपयोग में लावे ।

मात्रा—२ से १० बून्द तक ।

गुण-धनुस्तम्भ के दौरे के बाद कुछ दिन तक इसके सेवन से रोग दूर होता है । हैज़े में इसे कर्पूरासव के साथ देना चाहिये । अतिसार में कुटजादि के साथ । ठंडाई में इसकी कुछ बूंदें डालकर सेवन कर सकते हैं । जिस अतिसार का रात्रि में वेग होता हो, या अधिक मात्रा में बार २ दस्त आरहे हों तो इसे अहिफेनासव के साथ देवे । अथवा इसी को, जल मिला कर देने से लाभ होता है । (जीवनसुधा)

---

४९१ * विजयासव--नं० २--अजीर्णादि नाशक ।

विधि—भांग का घनसत्व एक्सट्रेक्ट केनिविसइन्डिका सोलेड) १ भाग और मद्य (७० से ९० प्रतिशतवाली) २० भाग एकत्र कर बोतल या चीनी मिट्टी के पात्र में भर, मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ दिन सुरक्षित रक्खे । बीच २ में हिलाते जाना आवश्यक है । फिर छानकर रक्खे ।

मात्रा—५ से १५ बूंद तक ।

गुण—अग्निमान्द्य, अजीर्ण, अरुचि और ग्रहणी आदि उदर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रोगों पर लाभप्रद है। कभी २ इसके सेवन से क्षुधा की इतनी वृद्धि होती है कि अत्यधिक भोजन से भी तृप्ति नहीं होती। किन्तु लगातार और अधिक मात्रा में सेवन करने से इससे मन्दाग्नि होजाती है। वेदना, अनिद्रा, बहक, धतुर्वात, उन्माद, अपस्मार और हिस्टीरिया आदि रोगों के लिये भी यह बड़ी लाभदायक है। शिरःशूल और बच्चों के कमेड़ों में इसके सेवन से तत्काल लाभ होता है। यह कामोत्तेजक भी है, किन्तु इसके अधिक सेवन से नपुंसकत्व पैदा होजाता है। (मद्यासव)

नोट—जिन मद्यासवों में औषधि के घनसत्व ही पड़ते हैं, वे केवल एक ही दिन में तैयार होजाते हैं।

---

४९२ विडङ्गाद्यासव * उरुस्तंभ, भगंदरादि नाशक।

विधि--वायविडंग, पीपलामूल, पाठा, आँवला, एलवालुक, कुड़े की छाल, इन्द्रजौ, रास्ना और भारंगीमूल प्रत्येक का चूर्ण २०-२० तो० लेकर, २ मन २४ सेर जल में पकावें। १३ सेर जल शेष रहने पर, ठंडा होजाने पर, छानकर घृत से चिकने

---

* विडंगं पिप्पलीमूलं पाठा धात्र्येलवालुकम्। कुटजत्वक्फलं रास्ना भार्ङ्गी पंचपलोन्मितान्॥ अष्टद्रोणेऽम्भसः पक्त्वा द्रोणशेषं तु कारयेत्। पूते शीते क्षिपेत्तस्मिन्माक्षिकस्य शतत्रयम्॥ धातक्या विंशतिपलं चूर्णं कृत्वा तु दापयेत्। त्र्योषस्य तु पलान्यष्टौ त्रिजातं द्विपलं तथा॥ फलिनी हेमतोयानां सर्वाणां पलं पलम्। घृतभाण्डे समाधाय मासमेकं विधारयेत्॥ एषयोगो हरत्येव प्रत्यष्ठीला भगंदरान्। ऊरुस्तम्भाश्मरीमेह गण्डमालां सविद्रधिम्। आढ्यवातं ह्युरुस्तम्भं विडंगाख्यो महासवः॥

—योगरत्नाकर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किये हुये मटके में भर, उसमें १५ सेर शहद, १ सेर धायके फूलों का चूर्ण, सोंठ, कालीमिरच और पीपल तीनों का एकत्र चूर्ण ३२ तो०, दालचीनी, तमालपत्र और इलायची तीनों का का चूर्ण ८ तोले, फूलप्रियंगु, नागकेसर, सुगन्धबाला और लोध प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक जमीन में गाढ़ कर रक्खे। पश्चात् निकाल और छानकर बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—उरुस्तम्भ, प्रत्यष्ठीला, भगन्दर, पथरी, प्रमेह, गण्डमाला, विद्रधि, आढ्यवात तथा हनुस्तंभ को नष्ट करता है। सब प्रकार के रक्तदोष एवं कृमि नाशक है। गुल्म पर भी यह प्रभावशाली है।

नोट—इसे वास्तव में 'बिडंगाद्यरिष्ट' ही कहना चाहिये। शार्ङ्गधर, और भै० रत्नावली में भारंगीमूल नहीं लिया है, और नागकेशर एवं सुगन्धबाला भी नहीं है, कचनार की छाल ४ तोले लेने के लिये कहा गया है। शेष द्रव्य एवं विधि उक्तानुसार ही है।

यह अरिष्ट कफ, श्वास और कास पर भी लाभ देता है। रोगों को नष्ट कर अग्नि, बल एवं वीर्य की वृद्धि करता है। उदर, रक्त एवं वृणान्तर्गत् कृमियों को नष्ट कर क्षुधा को बढ़ाता है। बालक, स्त्रियाँ और निर्बलों को बहुत कम मात्रा में सेवन कराना चाहिए।

---

४९३ विडङ्गाद्यरिष्ट नं० १—कृमि नाशक।

[वैद्यराज मुन्नालालजी गुप्त-महेन्द्रगढ़]

विधि--वायविडंग, पलासबीज, निम्बगिरी, वकायन के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बीज, कबीला, इन्द्रायन की जड़, अजवायन, हरड़, बहेड़ा, आमला, निशोथ, कुड़ेकी छाल, कुटकी, बावची और नागरमोथा ये प्रत्येक ४-४ तोले लेकर, जवकुट चूर्ण बना, १२॥ सेर जल में, चतुर्थांश क्वाथ कर, ठंडा होने पर, छान कर, अमृतबान में, या शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें ३ पाव शहद, तथा सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग, नागरमोथा, राई, दोनोंजीरे, हींग भुनीहुई और कपूर प्रत्येक १-१ तोला, तेजपत्र, नागकेशर, इलायची प्रत्येक ६-६ माशे, सब का चूर्ण कर मिलावे, और पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर काम में लावे।

मात्रा—१ तोला। अनुपान-जल। प्रातः सायं सेवन करे।

गुण—पेट के संपूर्ण कृमि और आन्त्र के कृमि नष्ट हो जाते हैं।

विषतिन्दुकासव—देखिये, कारस्करासव नं० ३।

४९४ विषमज्वरारिष्ट—विषमज्वर नाशक।

[श्री० डा० कृष्णकुमारी पंडिता]

विधि—करंजुआ १५ तो० तथा गिलोय, चिरायता, पित्तपापड़ा, नीम के पत्ते, अफसनतीन, नागरमोथा, गावजवाँ, वनपशा और उन्नाव प्रत्येक ५-५ तोले लेकर, सबको अधकुटा कर ६ सेर जल में भिगो देना चाहिये, दूसरे दिन आग पर चढ़ा कर क्वाथ करे, जब ३ सेर शेष रह जाय, मल कर रखले, ठंडा होने पर छान ले, फिर उसमें आध सेर शहद मिला कर, एक मिट्टी के पात्र में भर कर, धूप में १२ दिन तक रक्खे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ध्यान रहे पात्र में रखने पर सुराकिट्ट या किसी आसव की बची हुई गाद १० तोले तक उसमें और मिला देवे । फिर छान कर शीशी में भर कर रखदे ।

मात्रा—१ से ३ तोले तक । प्रातः समय पिलावे ।

गुण—विषमज्वर (मलेरिया) को शीघ्र भगाता है ।

---

४९५ विषमुष्ट्यासव * नं० १—उदर रोगादि नाशक ।

विधि—शुद्ध कुचले का चूर्ण दो तोले और मृतसंजीवनी सुरा ६० तो० दोनों को एकत्र मिला, बोतल में भर मुंह काग लगा कर, १ मास तक रक्खा रहने देवे । पश्चात् छान कर, कागदार बोतलों में भर लेवे ।

मात्रा—२ से ५ बून्द तक । अनुपान—१ तोला जल । दिन में २ । ३ बार सेवन करावे ।

गुण—उदर रोग, अग्निमांद्य, अरोचक, भ्रम, उदासी, थकावट, यकृत रोग, सिर दर्द आदि रोगों को नष्ट करता है ।

---

* चूर्णं द्वितोलकं तत्र देयं शुद्धकुपीछुजं । मृतसंजीवनीसुरायाश्च ग्राह्यं पंचदशं पलम् ॥ निधाय कूपिकामध्ये स्थापयेन्मासमात्रकम् । घनवस्त्रान्तरे गाल्यं द्वि त्रि विन्दूनि कल्पयेत् ॥ पानीये तोलकेन्यस्य द्वित्रिवारं प्रयोजयेत् । अस्य प्रयोगमात्रेण रोगाद्यान्ति क्षणात्क्षयम् ॥ व्यायामं तु विगाह्यायान्ति धनिकानित्यं सुसक्तासने । तेषामोदरजाः हि रोगनिचयास्तूर्णं समुत्पद्यते ॥ वन्हिर्मान्द्यमरोचकाश्रमकृमाः शूलं शिरोजे तथा । ते सर्वे विलयं प्रयान्ति सहसा वातेरता वै घनाः ॥

—सिद्धप्रयोग ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४९६ विषमुष्ट्यासव नं० २—दुर्बलतादि नाशक।

[वैद्यराज श्री० पं० घनानन्दजी पन्त विद्यार्णव]

विधि—कुचले दो तोले, चिरायता, गिलोय और नागरमोथा प्रत्येक का चूर्ण १-१ तोला तथा मुनक्का ४ तोले, गुड़ ३० तोले और जल दो सेर सब को एकत्र मिला, कांच के पात्र में भर, एवं अच्छी तरह मुख बुद्रा कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर उपयोग में लावे।

मात्रा—२० बून्द से ४० बून्द तक।

गुण—हृदय शक्तिवर्धक, क्षुधावर्धक, बलवर्धक, प्रतिश्याय, ज्वर तथा त्रिदोष नाशक है। किसी रोग के पश्चात् प्राप्त हुई दुर्बलता एवं मन्दाग्नि को शीघ्र नष्ट करता है।

---

४९७ विशूचिकान्तकासव नं० १—हैजा नाशक।

[वैद्यराज श्री पं० बालकृष्णजी शर्म्मा, भूपाल]

विधि—पोदीना, सौंफ, गुलाब के फूल और पलांडु (प्याज) प्रत्येक २०-२० तोले तथा अर्क (आक) मूल छाल, बड़ी इलायची के बीज ५-५ तोले, अजमोद और सोंठ १०-१० तोले, सब को कूट कर, ६ सेर जल में २४ घन्टे भिगो रक्खे। पश्चात् भवके के द्वारा ४ बोतल अर्क-आसव खींच लेवें।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक। प्रति दो २ घन्टे के बाद। ज्यों २ फायदा होता जाय, त्यों२ मात्रा कम करदेनी चाहिए।

गुण—हैजा, कै, दस्त, प्यास, ज्वर, अजीर्ण के विकार और पेट की गड़गड़ाहट के लिये सदा लाभप्रद है।

नोट—यदि इसे ज्यादा दिन रखना हो तो प्रति बोतल ५-५ तोले रेक्टीफाइडस्प्रिट मिलाकर रक्खे और भी अधिक गुणदायक होजाता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

४९८ विशूचिकान्तकासव नं० २—हैजा नाशक ।

(श्री अनन्तदेवजी दीक्षित, वैद्यशास्त्री)

विधि—प्याज, नवीन सौंफ और हरा पुदीना प्रत्येक १-१ सेर, आलूबुखारा, गुलाब के फूल और असली-चन्दन का सफेद बुरादा प्रत्येक आध-आध सेर, बड़ी इलायची १ पाव, तवाखीर १० तोले तथा लौंग, छोटी इलायची और अनारदाना प्रत्येक ५-५ तोले और दारचीनी २० तोले लेकर सबको जवकुट कर २८ सेर जल में २४ घन्टे भिगो कर भवके के द्वारा अर्क खींच लेवें, अर्क खींचने से पहले कपूर ५ तोले कूट कर मिला देना चाहिये ।

मात्रा—२ तोले से ४ तोले तक रोगानुसार आध-आध घन्टे के बाद सेवन करावें ।

गुण—हैजे के लिये रामबाण है, प्यास को रोकता, पेशाब उतारता है, दाह को शांत करता, दस्त और वमन को शीघ्र बन्द करता है । विशूचिका के दिनों में स्वस्थ मनुष्य पीवें तो हैजे का भय रहीं रहता । (धन्वन्तरि)

---

४९९ वृश्चिकविषहार्यासव—(स्वकृत)-बिच्छू के विषपर ।

विधि—कागज़ी नीबूका रस १० तोले लेकर, एक शीशी में भरे तथा उसमें ५ तोले नौसादर का महीन चूर्ण, २ तोले शहद और ३ तोले मेथिलिटेडस्प्रिट मिला कर रक्खे । इसे दंश स्थान पर कपास की पुरेरी से लगावें । लगाते ही आराम मालूम होता है । १०-१० मिनिट बाद इसे बराबर लगाने से सब विष दूर हो जाता है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

५०० वृश्चीवाद्योऽरिष्ट *—गुल्म नाशक।

विधि—श्वेत पुनर्नवा, लाल पुनर्नवा, एरंडमूल, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी और चित्रकमूल प्रत्येक १३-१३ छटाँक लेकर जवकुट कर, ३२ सेर जल में १२ घंटे तक भिगोकर, पकावे। ८ सेर जल शेष रहने पर, ठंडा होने पर, छानकर, मधुमिश्रित पीपल एवं चीते के चूर्ण से प्रलिप्त मटके में भर उसमें २ सेर शहद और आध सेर हरड़ का चूर्ण मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १० या १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। इसे धान के भूसे में दबा कर रक्खे। पश्चात् निकाल और छानकर बोतलों में भर कर रखले।

मात्रा—१ तो० से ३ तोले तक।

गुण—कष्टसाध्य, अपक्व एवं दुस्तर गुल्म को नष्ट करता है।

---

५०१ व्रणासव—(देशी टिंचरायडिन)।

विधि—पीपल की छाल, नीम की छाल, बबूल की छाल, गूलर की छाल और रसौत ४-४ तोले, रतनजोत दो तोले, सब को जवकुट कर, शुद्ध कांच के पात्र में डाल कर, उसमें देशी शराब ५ सेर मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर धूपमें रख दे, प्रति दिन एक या दो वार हिला देना चाहिये। ७ दिन के पश्चात् छानकर, बोतलों में भर कर रक्खे।

---

* वृश्चीवमुरुबूकंच वर्षाभूबृहतीद्वयम्। चित्रकं च जलद्रोणे पचेत्पादावशेषितम्॥ मागधी चित्रकक्षौद्रलिप्ते कुम्भे निधापयेत्। मधुनः प्रस्थमावाप्य पथ्याचूर्णार्ध संयुतम्॥ तुषोषितं दशाहं तं जीर्णभक्तः पिबेन्नरः। अरिष्टोऽयं जयेद्गुल्ममविपाकं सुदुस्तरम्॥ —वृन्दमाधव।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

व्यवहार—घाव को साफ़ कर, रुई के फाये से इसे लगावे।

गुण—घाव का खून गिरना, जलन और राध बन्द होती है और घाव शीघ्र ही अच्छा होजाता है।

(अ० योगमाला)

नोट—देशी टिंचरायोडीन—नं० २—देखिये, शोथनाशकासव।

---

६०२ व्याघ्रीआसव—वातव्याधि आदि नाशक।

(रसायनाचार्य श्रीयुत आर० के० शर्मा, जगराओं)

विधि—कटेरी की जड़ २ सेर, इन्द्रायन की जड़ २ सेर, घीकुआर २ सेर, और अपामार्ग २ सेर, सबको कूट पीस कर, ३२ सेर जल मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर, मुख मुद्रा कर, १५ दिन तक एकान्त में सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—२ माशे से ८ माशे तक। प्रातःकाल सेवन करे।

गुण—वातव्याधि, कफ, कास, श्वास, आमाशय के विकार ज्वर, कब्जी, तथा शूल रोगों को नष्ट करता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श

—o—

५०३ शतपुष्पासव--नं० १—विशूचिका नाशक।

विधि—सौंफ १ सेर, प्याज ४० तोले, सूखा पोदीना १० तोले और देशी कपूर ५ तोले लेकर, सबको कुचलकर, २८ सेर ४ तोले जल में मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर, मुखमुद्रा कर रक्खे। ६ दिन के बाद भबके के द्वारा ५ बोतल अर्क खींच लेवे।

मात्रा—१ से २ तोले तक। दिन में दो बार और रात्रि में २ बार सेवन करावे।

गुण—हैजे में अपूर्व गुणकारी है। (धन्वन्तरि)

---

५०४ शतपुष्पासव-नं० २—बल पुष्टिवर्धक।

(रसायनाचार्य श्री आर० के० शर्मा जगराओं)

विधि—सौंफ १॥ सेर, बीज कसुंबा १॥ सेर, बीज खरबूजा १॥ सेर, सोया, सौंफ, हाऊबेर, हन्सराज, पोदीना पहाड़ी और पोदीना देशी प्रत्येक ३२-३२ तो० लेकर, सबका चूर्णकर, चिकने मटके में भर, उसमें शक्कर (मिश्री की) ६॥ सेर और जल २६ सेर मिला, अच्छी तरह सन्धान कर, एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—२ तोले।

गुण—बल, पुष्टि, आयु और अग्नि की वृद्धि करता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

स्त्रियों का मासिकधर्म खुल कर होता है तथा स्त्रियों के समस्त रोगों का नाशक है।

---

२०५ शतपुष्पाद्यरिष्ट—विशूचिका और भ्रमनाशक।

(श्री कविराज विश्वनाथजी द्विवेदी वैद्यशास्त्री, प्रिंसपिल)

विधि—सौंफ, पोदीना, गुलाब के फूल, बड़ी इलायची, मिरचियाकंद, कालीमिरच, अजवायन, लौंग, जायफल और धनिया, सबको जवकुट कर, १६ सेर जल में पकावे, ४ सेर शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने घड़े में भरे और ठंडा होने पर उसमें ४ सेर शहद, मिला, एक मास तक सन्धान कर रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर १० तोला कपूर का चूर्ण कर, थोड़ा २ किंतु प्रमाण से प्रत्येक बोतल में डाल कर, मजबूत डाट लगा देवे। तीसरे दिन से कार्य में लावे।

मात्रा—१ तो० से ३ तोले तक।

गुण—हैजे में इसका सेवन करने से शीघ्र ही वमन और दस्त रोकता है। प्रथम खुराक से ही रोग में परिवर्तन आरंभ हो जाता है। वमन सर्व प्रथम बंद होजाती है, पश्चात् दस्त, उदर शूल, मूत्रावरोध आदि कोई भी उपद्रव नहीं होने पाते। भ्रम, सिर में चक्कर आना, भारी रहना, हमेशा नथुनों का खुश्क रहना इत्यादि रोग शीघ्र ही दूर होजाते हैं। घुमरी या चक्कर जिसमें रोगी सम्पूर्ण वस्तुओं को घूमते हुये देखता है, शीघ्र ही दूर होती है, इस रोग की यह अनुभूत दवा है।

नोट—अभाव में या जल्दबाजी में इसका अर्क भवके के द्वारा खींच कर प्रयोग कर सकते हैं। फल जरा देरा में होगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस आसव को अधिक मात्रा में सेवन करने से मूत्रसंग, विबन्ध आदि उपद्रव होते हैं। उनके परिहारार्थ उशीरासव का दो तोले की मात्रा में सेवन करे या कांजी पीवे।

पथ्य में-शर्बत, लघुअन्न तथा उपवास।

अपथ्य-संग्राहक एवम् विबंध कारक-गुरु पदार्थ।

---

५०६ शरपुंखासव-क्षय, कास नाशक।

[श्री बालकृष्णजी शर्म्मा वैद्यराज, भूपाल]

विधि-सरफोंके की जड़ ४० तोले लेकर, जवकुट कर, ७॥ सेर जल में पकावे, लगभग दो सेर तक जल शेष रहने पर, छान कर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें २ सेर शक्कर, १३ छटांक धाय के फूलों का चूर्ण मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर सुरक्षित रक्खे। १५ दिन बाद छान कर, बोतलों में भर कर रखदे। प्रत्येक बोतल में ५-५ तोले रेक्टीफाइडस्प्रिट मिला देवे। ४ दिन के बाद काम में लावे।

मात्रा-६ माशे से १॥ तोला तक।

गुण-क्षय की खांसी तथा साधारण खांसी पर भी लाभप्रद है।

शर्करासव-देखिये, दुरालभारिष्ट नं० १।

५०७ शंखपुष्प्यासव-उन्मादादि नाशक।

[प्रो०रामकृष्णजी बर्म्मा, आयुर्वेदाचार्य]

विधि-शंखपुष्पी (शंखाहूली) की जड़ १ पाव, कूट पीस कर, ८ सेर जलमें, कलईदार बर्तन में पकावे। २ सेर जल शेष

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहने पर, उसमें ६ सेर जल और डाल कर पुनः पकावे, फिर १॥ सेर जल शेष रहने पर, छान कर, शुद्ध मटके में भर, उसमें ५ तोले गुलाब के फूल, २॥ तोले धनिया और २॥ तोले खस, महीन चूर्ण कर मिला देवे । पात्र का मुख बन्द कर रक्खे । दूसरे दिन इसको भबके में डाल कर अर्क खींच लेवे । इसमें, २॥ तोला आसवार्क में आधा तोला रेक्टीफाइडस्प्रिट के हिसाब से, रेक्टिफाइडस्प्रिट मिला, कांच के कार्क वाली शीशी में भर कर रख लेवे ।

मात्रा—१० से २५ बून्द तक । जल में मिला दिन में कई बार सेवन करावें ।

गुण—इसको पिलाने और सूंघने से उन्माद, मृगी आदि रोग दूर होते हैं । विशेषतःहिस्टेरिया में यह अधिक लाभप्रद है ।

('वैद्य'—मासिकपत्र, मुरादाबाद)

---

५०८ शाल्मल्यासव—(शाल्मलीकुसुद)—रजवीर्य विकारहारी ।

[वैद्यराज उमादत्तजी मिश्र मिर्जापुर]

विधि—सेमल के फूल १०० नग और छोटी मूली का स्वरस आध सेर दोनों को एकत्र कर, शुद्ध मटके में भर २४ घन्टे रखने के बाद, मल कर साफ वस्त्र से छान, चीनी मिट्टी के पात्र में भर कर, उसमें सोंफ का अर्क २५ प्रतिशत [फल, फूल एवं पत्र शुष्कद्रव्य में ६ गुना जल, तथा काष्ठद्रव्य में ८ गुना जल मिला, २४ घन्टे भिगोकर अर्क खींचे, जब अर्क द्रव्य से चौगुना खिंच आता है, वह २५ प्रतिशत कहलाता है] और अशोक का अर्क २५ प्रतिशत वाला प्रत्येक आध-आध सेर और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिश्री १ सेर मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् मल, छान कर बोतलों में भर, कार्क लगा, एक सप्ताह तक रक्खा रहने देवे, फिर ऊपर का द्रवरूप आसव (कीट रहित) निथार कर, काम में लावे।

मात्रा—१ तो० से २॥ तोले तक। अनुपान-जल के साथ, भोजन के बाद, उदर दोष रहने पर दिनमें ३ बार।

गुण—गर्भाशय एवं योनिगत दोषों को नष्ट करता है। निर्बलता तथा रजवीर्य से सम्बन्ध रखने वाले सर्व रोगों में आशातीत फल देता है पाचनशक्ति को बढ़ाता है।

---

५०९ शिरीषारिष्ट *—विषविकार नाशक।

विधि—सिरस की छाल २॥ सेर लेकर, जवकुट कर, २६ सेर जल में पकावे। ६॥ सेर जल शेष रहने पर छान कर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें १० सेर गुड़ तथा पीपल, प्रियंगु, कूठ, बड़ी इलायची, नील का पंचाङ्ग, निशोथ, नागकेसर, हल्दी और दारुहल्दी प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे।

मात्रा—६ माशे से २॥ तोले तक।

गुण—सब तरह के विष के विकारों को नष्ट कर देता है।

---

* पंचत् तुलार्धं द्विद्रोणे शिरीषस्य जले सुधीः। पादशेषे कषायेऽस्मिन् क्षिपेद् गुडतुलाद्वयम्॥ कृष्णाप्रियंगु कुष्ठैलानीलिनागकेशरम्। रजन्यौ पलमानेन दद्यादत्रत्वचागरम्॥ मासादूर्ध्वं जातरसं यथामात्रं प्रयोजयेत्। शिरीषारिष्ट इत्येष विषव्यापद्विनाशनः॥

—भैषज्यरत्नावली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कंठमाला, विषबेल तथा जहरबाद या जहरीले और न भरने वाले घावों पर भोजन के बाद १-१ तो० अरिष्ट, जल में मिलाकर पिलावे, तथा प्रातः सायं गर्म दूध में शिरीषघृत १-१ तो० मिला पिलावे, व्रणों पर भी लगावे । ३ मास में पूर्ण लाभ होता है ।

---

५१० शिलाजत्वासव—सुजाक नाशक ।

[कविराज पं० रामगोपालजी मिश्र राजवैद्य]

विधि—शुद्ध शिलाजीत ५ तोले, जवाखार दो तोले, मुलहठी का सत १ तोला, सतगिलोय १ तोला, सब को एकत्र मिला, उसमें २० तोले रेक्टिफाइडस्प्रिट मिलावे और कांच की बोतल में भर, अच्छी तरह मुखमुद्रा कर, १५ दिन तक रक्खा रहने देवे । पश्चात् छान कर शीशियों में भर कर रखदे ।

मात्रा—६ बून्द से १५ बून्द तक । शुद्ध जल या शक्कर के साथ सेवन करावे ।

गुण—सुजाक की सभी अवस्थाओं में पूर्ण गुणकारी है ।

(अ० योगमाला)

---

५११ शिशुसंजीवन्यासव—उत्तम बालामृत ।

[श्रीयुत बालकृष्णजी शर्मा वैद्यराज, भूपाल]

विधि—काली दाख (द्राक्षा) ४० सेर को कूटकर, ८० सेर जल में, दो दिन तक भिगोकर, (शुद्ध चिकने मटके में भिगोना चाहिये) उसमें शहद १० सेर, धाय के फूलों का चूर्ण १। सेर तथा हरड़ की छाल, अतीस, असगन्ध, काकड़ासिंगी, इलायची, छोटी पीपल, चोपचीनी, सोंठ, कालीमिरच, मजीठ,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लौंग, सफेदचन्दन, कपूरकचरी, वायविडंग, धनिया, तुलसी-पत्र और देवदारु प्रत्येक का चूर्ण १२-१२ तोले, अड़ूसे (बांसे) के हरेपत्र २० तोले, लोहभस्म १० तोले, नागफनीथूहर के पके फलों का रस १। सेर, शक्कर २० सेर और सुवर्णपत्र (वर्क) १ तो० मिलाकर, अच्छी तरह मुख बन्द कर, १॥ मास तक रक्खा रहने देवे। इसे लकड़ी के पीपे में भर रखना अधिक अच्छा है। प्रति सप्ताह एक बार हिलाते रहना चाहिए। फिर छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—३ माशे से ६ माशे तक। पानी या दूध में मिला कर देवे।

गुण—बालक हृष्ट पुष्ट दीर्घायु होते हैं, यह बालकों के अनेक रोगों को दूर करता है।

---

५१२ शीतपित्तारि अरिष्ट—शीतपित्त नाशक।

(श्री स्वामी चैनदासजी आयुर्वेद-विशारद छाडनू)

विधि—चोबचीनी २० तोले, हरड़, बहेड़ा आमला प्रत्येक दो २ तोले, श्वेतचन्दन ४ तो०, श्वेतचीनी ४ तो०, उसवा-मगरबी १२ तोले, सनाय की पत्ती १२ तो०, श्वेत निसोथ १३ तो०, चिरायता १२ तोले, नीम की छाल ८ तोले, सबको जवकुट कर ३० सेर जल में पकावे। ७॥ सेर जल शेष रहने पर, आँच से अलग उतार कर, उसे कुछ ठंडा कर लेवे। पश्चात् उसे बिना छाने, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें ४० तोले मिश्री और १ सेर शहद मिला, हाथ से खूब मथकर मिला देवे। पश्चात् पात्र का मुख अच्छी तरह कपड़ मिट्टी से बन्द कर, जमीन में गाढ़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देवे। गर्मी के मोसम में २० दिन के बाद, और सरदी के मौसम में १ मास के बाद जमीन से निकाल, अरिष्ट को गाढ़े वस्त्र से छानकर, शीशियों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक। प्रातः सायं सेवन करे।

गुण—यह शीतपित्त रोग को दूर करने में अव्यर्थ महौषधि है।

शीतलचीन्यासव—देखिये, कङ्कोळासव।

शुण्ठ्यासव—देखिये, शृङ्गबेरासव।

५१३ शूलहारी आसव—(स्वकृत)—उदरशूल नाशक।

विधि—घीकुआर (ग्वारपाठा) का गूदा १ सेर निकाल कर, शुद्ध चिकने मिट्टी के पात्र में भरकर, उसमें ४ छटाँक सेंधा नमक डालकर धूप में रख देवे, जब नमक और गूदा मिलकर एक होजाय, तब उसमें १ सेर नीबू का रस तथा हींग भुनी हुई १ तोला और काला नमक ४ तोले मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, घोड़े की लीद में दबा दे। २० दिन के बाद निकाल, और छानकर बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—२ माशे से ६ माशे तक। प्रातःसायं सेवन करावे।

गुण—पेट में वात की पीड़ा चाहे जैसी हो, तथा वायगोला आदि उदर सम्बन्धी सम्पूर्ण विकार शीघ्र ही दूर होजाते हैं।

---

५१४ शृङ्गबेरासव—अग्निवर्धक।

विधि—सोंठ का चूर्ण १ भाग और मद्य (७० से ९० प्रतिशत वाली) १० भाग एकत्र कर, कांच की बोतल में भर, दृढ़ काग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लगाकर, ७ या १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे । बीच २ में हिलाते जाना चाहिये । पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रखदे ।

मात्रा—आधा माशा से ४ माशे तक ।

गुण—यह अत्यन्त अग्निवर्धक है । अग्निमांद्य, अजीर्ण, अरुचि और आध्मान में अत्यन्त लाभप्रद है । (मद्यासव)

---

५१५ शृङ्गिकासव * ज्वरनाशक ।

विधि—शुद्ध किया हुआ शृङ्गिक विष (सींगिया) १ तोला का चूर्ण कर, ८ तोले उत्तम मद्य में (अथवा रेक्टिफाइडस्पिरट में) मिला, कांच के पात्र में भर कर, अच्छी तरह मुखमुद्रा कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे । पश्चात् गाढ़े वस्त्र से छान कर, शीशियों में भर लेवे ।

मात्रा—७ बिन्दु से १२ बिन्दु तक । शुद्ध जल २ या ३ तोले में मिलाकर सेवन करावे ।

गुण—ज्वर को भगाने के लिये बड़ा उत्तम है ।

---

५१६ शोथनाशकासव—देशी टिंचरायोडीन नं० २ ।

(श्री वैद्यराज पं० बालकृष्णजी शर्म्मा—भूपाल)

विधि—सोंठ १ तोला, हीराबोल २ तोले तथा रेवन्दचीनी, सज्जीखार, लाध, कपूर प्रत्येक २॥—२॥ तोले, और फटकरी २

---

* प्रक्षिपश्रृङ्गिकचूर्णं करतलतुलितं द्विमुष्टिमादिरायाम् । स्थापय कूपीजठरे नूनमुपेक्षस्व तत्पुनः पक्षम् ॥ दृढवासोभिः पावय योजय पश्चाज्ज्वरामृतं तदिदम् । सलिलं तत्र सहायं मात्रा तरयैव विन्दवः सप्त ॥

—सिद्ध भैषज्यमंजूषा ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तोले एवं आम्बाहलदी ५ तोले और मैदालकड़ी ५ तोले लेकर, सबको जबकुट कर, किसी चीनी मिट्टी के पात्र में भर, उसमें १०० तोले (१। सेर) मेथीलेटेडस्प्रिट मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, ५ दिन तक तेज धूप में रक्खे । ६ ठे दिन कपड़े से छानकर रख लेवे ।

गुण—इसे कपास की पुरेरी से, किसी भी कारण से उत्पन्न हुई शोथ पर या किसी जहरी कीड़े के दंश पर लगावे, तत्काल लाभ होता है। बिलायती टिंचरायोडीन की अपेक्षा दर्द, चोट, जख्मादि पर इसका शीघ्र और चिरस्थायी लाभ होता है।

इयोनाकासव—देखिये, टुण्टुकासव ।

५१७ श्रीखण्डासव *—पानात्ययादि नाशक ।

विधि—सफेदचन्दन, कालीमिरच, बालछड़, हल्दी, दारु-हल्दी, चीते की जड़, नागरमोथा, खस, तगर, मुनक्का, चन्दन लाल, नागकेसर, पाठा, आंवले, पीपल, चव्य, लौंग, एलबालुक और लोध प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोले, गुड़ १५ सेर, धायके फूलों का चूर्ण ६॥ छटाँक और जल २६ सेर, सबको एकत्र कर,

---

* श्रीखंड मरिचं मांसी रजन्यौ चित्रकं घनम् । उशीरं तगरं द्राक्षा चन्दनं नागकेसरम् ॥ पाठां धात्रीं कणां चव्यं लवङ्गं चैलवालुकम् । लोध्रं चार्धपलं तत्र गुडस्य च तुलात्रयम् ॥ धातकीं द्वादशपलं चैकैकं परियोजयेत् ॥ सासं संस्थाप्य मृद्भाण्डे वस्त्रपूतं रसं नयेत् । पापयेन्मात्रया वैद्यो वयोशक्त्याद्यपेक्षया ॥ पानात्ययं परमदं पानाजीर्णं च नाशयेत् पानविभ्रमसत्युग्रं श्रीखण्डासव आशुच ॥ —भैषज्यरत्नावली ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शुद्ध चिकने घड़े में भर, एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ तोला से ३ तोले तक।

गुण—पानात्यय, परमद, पानोजीर्ण और पानविभ्रय नाशक है।

---

५१८ श्रीवासासव—सुजाक नाशक।

(कविराज श्री रामगोपालजी मिश्र—राजवैद्य)

विधि—गंदा बिरोजा १ तोला, राल १ तो० दोनों को कूटकर, १० तोले मद्य (या रेक्टिफ़ाइडस्प्रिट) में मिला, कांच के पात्र में भर, दृढ़ काग लगाकर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रखदे।

मात्रा—५ बून्द से १५ तक। पानी या शक्कर में मिलाकर सेवन करावे।

गुण—सूजाक की सम्पूर्ण अवस्थाओं में पूर्ण लाभप्रद है।

---

५१९ श्वासहरासव—नं० १—श्वासरोग नाशक।

(श्रीमान् माननीय स्वामी चैनदासजी वैद्यराज)

विधि—रास्ना, गिलोय, पीपल, भारंगी, पुष्करमूल, कालीमिरच, हल्दी, सोंठ और मुलैठी, ये, प्रत्येक १-१ तोला, गुलबनपसा, गावजवाँ और हंसराज प्रत्येक १।-१। तोला तथा कूष्माण्डमूल, बड़ी कटेरी का पंचाङ्ग, छोटी कटेरी का पंचाङ्ग, धतूरा पंचाङ्ग और धमासा पंचाङ्ग प्रत्येक ५-५ तोले, बासे (अड़ूसा) की छाल और सरफोंका २॥-२॥ तोले लेकर, सबको जवकुट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर, ३२ सेर जल में पकावे। १६ सेर जल शेष रहने पर, शुद्ध चिकने मटके में भर, ठंडा होजाने पर, उसमें मुनक्का (दाख) १० तोले, शहद १। सेर और खांड (चीनी) २॥ सेर मिलाकर, पात्र को मुख अच्छी तरह बन्द कर, जमीन में गाढ़ देवे। गरम ऋतु में २० दिन बाद तथा शीतकाल में ३० दिन बाद, उसे निकाल कर साफ वस्त्र से एक साफ बर्तन में छान लेवे और उस पूर्व पात्र को, जल से साफ धोकर, उस छने हुये आसव को नितरने के लिये फिर उसी में वापिस डालकर, उसका मुख बन्द कर, दो दिन तक स्थिर रक्खा रहने देवे। पश्चात् आहिस्ते से निकालकर शीशियों में भर लेवे।

मात्रा—आवश्यकतानुसार, दिन में तथा रात्रि में भी ४ या ५ बार १ से २॥ तोले तक सेवन करावे।

गुण—सब प्रकार के श्वास रोग के प्रबल से प्रबल वेग में, घण्टे २ भर के बाद सिर्फ ३ या ४ मात्रायें देने से श्वास को रोक देता है।

(धन्वन्तरि—परीक्षितप्रयोगाङ्क)

---

५२० श्वासहरासव—नं २—श्वास नाशक।

(पं० हुब्बरामजी आयुर्वेदविशारद)

विधि—एक साबित गिरी का गोला (नारियल के अन्दर का साबित गोला) लकर, उसमें चाकू से छेदकर १ तोला अफीम भर दो और उसी में आक का दूध अच्छी तरह खूब भर कर, गोले की ही डाट लगा दो, फिर गेंहू का आटा माड़कर, गोले के ऊपर चढ़ा दो और सुखा लो। जब आटा सूखजाय तब उस गोले को भेड़ की मेंगनी में फूंक दो। जब जानों कि गोला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भस्म होगया है तो निकाल कर, आटा छुड़ाकर गोले को महीन पीस अलग रखलो। पश्चात् सतमुलैठी, काकड़ासिंगी, कड़वे इन्द्रजौ, प्याज के बीज, पीपल, छोटी इलायची के बीज, जायफल, भारंगी, सोंठ, जावित्री और नारियल की कली प्रत्येक ४-४ माशे लेकर महीन चूर्ण करले। फिर सबको एक बड़ी बोतल में भर उसमें महुये की शराब १ पाव डालकर, केशर ६ माशे और कस्तूरी ४ रत्ती दोनों को एक कपड़े में पोटली बांधकर उसी बोतल में डाल देवे और बोतल का मुख काग से बंद कर तारों से कस दे, तथा १५ दिन तक घोड़े की लीद में दबा दे। पश्चात् निकाल कर, सावधानी से डाट खोलकर, आसव को छान लेवे, और पूर्व वाले गोले की भस्म मिलाकर, शीशी में रख ले।

मात्रा-१ बून्द से ५ बून्द तक। दूध या जल के साथ देवे।

गुण—सब प्रकार के श्वास (दमा) को नष्ट करता है।

---

५२१ श्वासहरासव नं० ३—श्वास नाशक।

विधि--कल्मीशोरा २० तोले, नौसादर १० तोले, आक के पत्ते १० सेर और सांभर नमक १ सेर, इन सबको एकत्रित कर घड़े में भर, पाताल यंत्रविधि से अर्क टपका लेवे। इस अर्क में-असली केसर, कालीमिरच, पीपल और सोंठ प्रत्येक १-१ तोला, बांसाक्षार ३ माशे मिला कर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर ७ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रखदे।

मात्रा—प्रथम सप्ताह में १-१ माशा प्रातःसायं देवे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दूसरे सप्ताह में ३-३ माशे सोंफ के अर्क में मिला कर सेवन करावे । पथ्य में घी, दूध, मक्खन का विशेष सेवन करे । घी के साथ बेसनी रोटी खावे ।

गुण—वात तथा कफ के पुराने से पुराने श्वास (दमा) के रोगी अच्छे होजाते हैं । (धन्वन्तरि)

श्वासहरासव--नं० ४--देखिये, वासकासव नं० ३ ।

५२२ श्वासान्तकारिष्ट—श्वास कासादि नाशक ।

(वैद्यराज रामनारायणजी हर्षुल)

विधि---बबूल की छाल, अपामार्ग पंचाङ्ग, कालेधतूरे का पंचाङ्ग, मुनक्का (दाख), दशमूल और कटेरी का पंचाङ्ग, प्रत्येक आध-आध सेर लेकर, ४८ सेर जल में क्वाथ करे । १२ सेर जल शेष रहने पर, उसे शुद्ध चिकने मटके में छानकर भर देवें, और उसमें ६ सेर देशी शक्कर, ४० तोले धायके फूलों का चूर्ण तथा काकड़ासिंगी, नागरमोथा, सोंठ, हरड़ और दार-चीनी प्रत्येक का चूर्ण ५-५ तोले मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे । पश्चात् फलालेन के कपड़े से छानकर, बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक । भोजन के बाद दिन में दो बार सेवन करे ।

गुण-श्वास, खाँसी, मन्दाग्नि और क्षय रोग पर लाभप्रद है ।

(अ० योगमाला)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स

५२३ सञ्जीवनासव—सन्निपात नाशक।

(वैद्यभूषण रामनारायणजी बुनहड़)

विधि—शुद्ध कुचला १॥ माशा और शुद्ध शृंगिक (सिंगीया) विष ६ माशे दोनों को बारीक पीसकर कपड़छन करले। फिर उत्तम मृतसंजीवनी सुरा १ तोला में सुवर्ण वर्क १॥ माशे और उत्तम कस्तूरी १ माशा दोनों को खूब खरल करे, जब भली प्रकार घुटजाय, तब एक मजबूत शीशी में १ पाव मृतसंजीवनी सुरा भर कर उसमें उक्त कुचला आदि चूर्ण और घुटी हुई कस्तूरी, सुवर्ण वर्क मिला कर, मजबूत काक लगाकर, शीशी को खूब हिलावे, और २१ दिन तक अनाज की राशि या भूसे के ढेर में दबा कर रक्खे। पश्चात् निकाल और छानकर शीशियों में भर लेवे।

मात्रा—५-५ बून्द। अनुपान—अदरख का स्वरस समभाग मिला कर सेवन करावे। इसीप्रकार १-१ घन्टे के बाद देवे।

गुण—कैसा भी घोर सन्निपात क्यों न हो, बिजली की तरह असर दिखाकर रोगी को पूर्ण आरोग्य करता है। (राकेश)

सञ्जीवन्यासव (सुरा)—देखिये, मृतसंजीवनी सुरा नं० २।

सनायासव—देखिये, स्वर्ण पञ्चासव।

५२४ * सप्तपर्णासव—अतिसारादि नाशक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—सतौने (छितवन) की छाल १ भाग जवकुट कर, मद्य (४० से ६० प्रतिशत वाली) ८ भाग उसमें मिला, कांच के पात्र में या चीनी मिट्टी के पात्र में भर, अच्छी तरह मुख मुद्रा कर ७ या १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। बीच २ में हिलाते जाना चाहिये। पश्चात् फलालेन से छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—आधा माशा से ४ माशे तक।

गुण—यह ग्राही है। अतिसार और आमातिसार में बड़ा लाभदायक है। इसका ज्वर नाशक प्रभाव कुनैन के तुल्य होता है। रोग जन्य निर्बलता के लिये भी यह परम लाभप्रद है।

(मद्यासव)

---

६२६ सर्पविषहरासव—(स्वकृत)—सर्प विष नाशक।

विधि—रीठे (बीज रहित) १० तोले और कच्ची फटकरी २ तोले लेकर, दोनों का चूर्ण कर १॥ सेर जल में मिला बोतल में भर, उसमें १०तोला रेक्टिफाइडस्प्रिट मिला दृढ़ कार्क लगाकर, ७ दिन तक रक्खा रहने देवे। रोज एक या दो बार हिलाना चाहिये। पश्चात् छानकर दूसरी शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से १॥ तोला तक।

गुण—सर्पदंष्ट्र रोगी को १५-१५ मिनिट बाद पिलाना चाहिये। चमत्कारी लाभकारक है। यदि रोगी बेहोश होगया हो तो उसके मस्तक पर शीतल जल डालकर खूब धोना चाहिये, तथा उक्त आसव को उसके नेत्रों में कई बार डालना चाहिये। वह जब होश में आजावे, तब उसे इसी आसव का पान करावे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सहतूतासव—देखिये, तूतासव।

५२६ सारस्वतासव—पौष्टिक, शक्तिवर्धक।

(वैद्यराज पं० बालकृष्णजी शर्मा, भूपाल)

विधि—ब्राह्मीपंचाङ्ग ४०० तोले (५ सेर), शतावर, दारचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेशर, देवदारु, सफेद चन्दन, हरड़, खस, सोंठ, सौंफ, शीतलचीनी, बचमीठी, वायविडंग, कपूर, बीजबन्द और गोखरू प्रत्येक ४० तोले और धाय के फूल २॥ सेर, कूट पीस कर, चीनी की बरणी में भरे और उसमें शक्कर १० सेर, पानी दो मन, और सुवर्णपत्र दो तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर छाया में रक्खे। प्रत्येक सप्ताह इसे एक बार हिला दिया करे। ३५ दिन के बाद छान कर बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक। दूने पानी में मिलाकर सेवन करावे।

गुण—इसका १ वर्ष तक सेवन करने वाले को आयु, वीर्य, बल, कान्ति, स्मृति, मेधा, वाणी की शुद्धता आदि की वृद्धि होती है। पौष्टिक और शक्ति वर्धक है, तथा वृद्ध पुरुष जवान होजाते हैं और अनेक रोगों का नाश होता है।

(रसतरंगिणी)

नोट—इसे 'महासरस्वति सुरा भी कहते हैं।

---

५२७ * सारस्वतारिष्ट—आयु, वीर्य, स्मृतिशक्ति आदि वर्धक।

विधि—ब्राह्ममुहूर्त में, शुद्धता के साथ उखाड़ी हुई मूल पत्र

---

* समूलपत्रशाखायाब्राह्म्या ब्राह्ममुहूर्तके। गृहीत्वा विंशतिपलं पुष्ययोगे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तथा शाखासमेत ब्राह्मी १ सेर, तथा पुष्य योग में संग्रह की गई शतावर, विदारीकंद, हरड़, खस, अदरख, और सौंफ ये प्रत्येक २०-२० तोले लेकर, सबको जवकुट कर, १६ सेर जल में पकावे। ४ सेर जल शेष रहने पर, छान कर, ठंडा होनेपर, उसे सुवर्ण कलश में या मिट्टी के शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें आध सेर शहद, १। सेर मिश्री, धाय के फूल १ पाव, तथा रेणुका

शतावरीः ॥ विदारिकाभयोशीराण्यार्द्रकं च तथा मिसिः।पंच पंच पलान्येषां जलद्रोणे पचेद्भिषक् ॥ पादावशेषे विस्राव्य रसं वस्त्रेण गालयेत् । साक्षिकस्य दशपलं सिताया पंचविंशतिः ॥ धातकी पंचपलिका रेणुका त्रिवृता कणा । देवपुष्पं वचाकुष्ठं वाजिगन्धा विभीतकी ॥ अमृतैला त्रिदंगत्वक् प्रत्येकं कर्षसम्मितम् ॥ क्वाथे तस्मिन् समस्तानि समाक्षिप्य प्रयत्नतः । स्वर्णकुम्भे निदध्याद्वा भाजने मृण्मयेऽपि वा ॥ स्वर्णप्रतनुपत्रं च क्षिप्त्वास्मिन् कर्षसम्मितम् । मासाज्जातरसं दृष्ट्वा हेमपत्रे लयं गते ॥ वाससा च परिस्राव्य स्थापयेद्वृतभाजने । सारस्वताभिधोऽरिष्टः एषोऽमृतसमःपुरा॥शिष्याणामुपकारार्थं धन्वन्तरिविनिर्मितः। आयुर्वीर्यं धृतिं मेधां बलकान्ति विवर्धयेत् ॥ वाग्विशुद्धिकरो ह्यग्र्यो रसायनवरः स्मृतः । बालकानां च यूनाञ्च वृद्धानां च हितः सदा ॥ नरनारीहितो नित्यं परमोजस्करोमतः । वारयेत्स्वरकार्कश्यं तथा चास्पष्टभाषणम् ॥ स्वरं परभृतस्येव जनयेत्सेवनात् सदा । रजोदोषेण दुष्टानां योषितां शुक्रदोषिणाम् ॥ पुंसाञ्चापि शुभकरः सर्वदोपहरामतः । अत्यध्ययन गीतादि क्षीणस्मृति बलानरा ॥ लभन्ते चित्तसन्तोषं स्मृतिं चास्य निषेवणात् । पयसा सह पातव्योऽरिष्टोऽयं शाणमानतः ॥ मासाभ्यां रोगहृच्चायं शरदा सर्वसिद्धिदः । अकालमृत्योर्हरणे यद्दीच्छानारीप्रियत्वं यदिवांछितं स्यात् ॥ वाक्शुद्धिर्धैर्यस्मृतिलब्धिरिष्टा निषेव्यतां तर्ह्यमृतं भवद्भिः ॥

—भैषज्यरत्नावली ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(मालवे के बीज), निसोथ, पीपल, लौंग, बच, कूठ, असगन्ध, बहेड़ा, गिलोय, छोटी इलायची के बीज, वायविडंग, दारचीनी और सुवर्णपत्र प्रत्येक का चूर्ण १-१ तोला मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर शीशियों में भर कर रखदे।

मात्रा—३ माशे से १ तोला तक। गाय के दूध के साथ।

गुण—आयु, वीर्य, धारणाशक्ति, बुद्धि, बल, एवं कांति-बर्धक है। स्वरभंग स्वर का भारी होना और हकलाना नाशक, वाणीको शुद्ध करने वाला, हृदय को हितकारक, रसायन है। यह मज्जातंतु, मस्तिष्क और हृदय पर अत्यन्त गुणकारी है। इसके सेवन से सब प्रकार की अशक्ति दूर होजाती है, तथा शिशु, बालक, तरुण, वृद्ध स्त्री या पुरुषों को किसी भी ऋतु में एक समान गुण दायक है। पुरुषों के वीर्य दोषों को को तथा स्त्रियों के ऋतुदोषों को नष्ट करने में यह अपूर्व गुणशाली है। अधिक पढ़ने तथा गाने से उत्पन्न हुई स्मरणशक्ति की न्यूनता तथा शारीरिक निर्बलता को यह शीघ्र दूर कर देता है। उन्माद, अपस्मार एवं मूर्च्छा रोग कोभी यह दूर करता है। जिस बालक के मुख से लालस्राव अधिक होता हो, तोतलापन हो (वाणी साफ उच्चारण नहीं करसकता हो) बुद्धि मन्द हो, बीच २ में मूर्च्छा आती हो, या अपस्मार हो तो, प्रातःसायं इस अरिष्ट की ३ माशे की मात्रा २ तोला जल या दूध में मिला कर पिलावे और रात्रि में मकरध्वज का सेवन करावे। कफ-कारक पदार्थों से परहेज रक्खे।

नोट—इसे 'ब्राह्मासव' या 'ब्राह्मी अरिष्ट' भी कहते हैं। 'सुव-र्णारिष्ट' भी इसे ही कहते हैं। इसे सुवर्ण पात्र में सन्धान करके रखने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का विधान है, उसके अभाव में ही इस में सुवर्णवर्क १ तो० मिलाने के लिये लिखा गया है ।

---

५२७ सारिवाद्यासव * नं० १—प्रमेहादि नाशक ।

विधि—अनन्तमूल (दोनों) नागरमोथा, पठानीलोध, बड़ की छाल, पीपल की छाल, कचूर, पद्माख, नेत्रवाला (सुगन्धवाला), पाठा, आमला, गिलोय, खस, सफेदचन्दन, लालचन्दन, अजवायन, कुटकी, पत्रज (तेजपात), बड़ी इलायची, छोटी इलायची, कूठ,सनाय और हरड़,प्रत्येक का चूर्ण १६-१६ तोले लेकर, २६ सेर जल में मिलाकर, उसमें गुड़ १५ सेर, धाय के फूलों का चूर्ण आध सेर और मुनक्का (दाख बीज निकाली हुई) ३ सेर लेकर अच्छी तरह घोल कर, शुद्ध चिकने मटके में भर, अच्छे प्रकार मुख मुद्रा कर,१ मास तक सुरक्षित रक्खे । पश्चात् छान कर, बोतलों में भर कर रखदे ।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक । भोजन के पश्चात् अथवा प्रातःसायं (आवश्यकतानुसार), समानभाग जल और ४ तोले

---

* सारिवा मुस्तकं लोध्रं न्यग्रोधं पिप्पलं शटीम् । अनन्तां पद्मकं बालं पाठां धात्रीं गुडूचिकाम् ॥ उशीरं चन्दनद्वन्द्वं यमानीं कटुरोहिणीम् । पत्रमेलाद्वयं कुष्ठं स्वर्णपत्रीं हरीतकीम् ॥ एषां चतुःपलान्भागान् सूक्ष्मचूर्णीकृतान् शुभान् । जलद्रोणद्वये क्षिप्त्वा दद्याद् गुडतुलात्रयम् ॥ पलानि दशधातक्याः द्राक्षां षष्टिपलां तथा । मासं संस्थापयेद् भाण्डे सवृते मृण्मयेशुभे ॥ सारिवाद्यासवस्यास्य पानान्मेहांश्च विंशतिः । शराविकादयः सर्वाःपिडिकास्तत्कृताश्च याः ॥ औपदंशिकरोगाश्च वातरक्तं भगन्दरम् । सर्वएते शमं यान्ति व्याधयो नात्रसंशयः ॥ —भैषज्यरत्नावली ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शहद मिलाकर सेवन करावे।

गुण—बीसों प्रकार के प्रमेह, प्रमेह जनितशराविकादि-पिड़िका, उपदंश, बातरक्त, भगन्दर तथा रक्तदोष नाशक है। यह रक्त शोधक औषधियों में अत्यन्त प्रभावशाली है। इसके थोड़े समय के सेवन से ही दाद, खुजली, शरीर के लालचकत्ते, फोड़े, फुन्सी आतशक आदि रक्त के सर्व दोष शीघ्र ही दूर हो जाते हैं।

हरिहरसार्सापारिला—सारिवाद्यासव १० तोले और पोटा-सम्रायोडाइड ६० बूंद एकत्र मिला शीशी में रक्खे। मात्रा १-१ तोला जल मिला प्रातःसायं सेवन कराने से रक्तविकार शीघ्र ही दूर होजाता है। (अ० योगमाला)

---

६२९ सारिवाद्यासव—नं० २—विसर्पादि नाशक।

विधि—सारिवा १ पाव तथा नागरमोथा, पठानीलोध, निसोथ, पीपल की छाल, कचूर, पद्मचन्दन, बला, पाठा, आमला, गिलोय, खस, सफेदचन्दन, लालचन्दन, अजमोद, कुटकी, पत्रज, छोटी इलायची, बड़ी इलायची, सनाय, और हरीतकी प्रत्येक १६-१६ तोले, तथा निम्बपत्र, मजीठ, चिरायता, हल्दी, चोपचीनी और पित्तपापड़ा प्रत्येक १-१ पाव, सबका सूक्ष्म चूर्ण कर २६ सेर जलमें मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें मुनक्का (दाख) १६ तोले, धायके फूलों का चूर्ण १ सेर, बेर की छाल १६ तोले, गुड़ ३॥ सेर घोलकर, अच्छी तरह मुख बन्द कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर लेवे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—१ तोले से २॥ तोले तक ।

गुण—विसर्प, उपदंश, एवं रक्त दोष नाशक है, पित्तजन्य विकारों को भी दूर करता है। (अ० योगमाला)

---

५३० सारिवाद्यरिष्ट—नं० १—कुष्ठादि नाशक ।

(वैद्यराज पं० सुखरामदासजी टी० ओझा प्राणाचार्य)

विधि—अनन्तमूल २॥ सेर, मुलैठी १। सेर, कालीदाख ५ सेर, बावची १। सेर, बृहत्मंजिष्ठादि क्वाथ की सब चीजें १० सेर लेकर, सबको जवकुट कर, ३ मन जल में पकावें, ३० सेर, जल शेष रहने पर, छानकर, ठंडा होने पर शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें ५ सेर शहद, १ सेर धायके फूलों का चूर्ण और १० सेर मिश्री मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे । पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—६ माशे से १। तोला । समभाग जल मिलाकर दिन में दो बार सेवन करावे ।

गुण—कुष्ठ (कोढ) एवं समस्त प्रकार के त्वचा सम्बन्धी रोगों को दूर करता है ।

(धन्वन्तरि—अनुभूताचिकित्सांक)

---

५३१ सारिवाद्यरिष्ट—नं० २—रक्तशोधक ।

विधि—अनंतमूल १। सेर, द्राक्षा (मुनक्का) १। सेर, दोनों को जवकुट कर, २५ सेर जल में पकावे । चतुर्थांश शेष रहने पर, छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें ३ सेर शक्कर,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तथा आमला और गिलोय २॥-२॥ तोले पीपल और काली-मिरच १॥-१॥ तोले, लौंग और तज १-१ तोला, तथा मुलैठी ५ तोले सबका चूर्ण कर मिलावें । पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर २५ दिन तक सुरक्षित रक्खे । पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे और दृढ़ काग लगावें, १५ या २० दिन बाद दूसरी बोतलों में निथार कर भरलेवें । नीचे का मैल फेंक देवें ।

मात्रा—१ से २ तोले तक ।

गुण—किसी भी कारण से बिगड़ा हुआ रक्त साफ होजाता है । (अ० योगमाळा)

---

५३२ सिङ्कोनासव--(स्वकृत) ज्वरघ्न ।

विधि—लाल सिंकोना * की छाल का चूर्ण १० तोले और रेक्टिफाइडस्प्रिट ५० तोले, एकत्र किसी शुद्ध बोतल में भर कर, मुख बन्द कर, रक्खे । ३ दिन के बाद फिल्टरपेपर या फलालेन से छान कर शीशियों में भर कर रखदे ।

मात्रा—३० बून्द से १२० बून्द तक ।

गुण—शीतज्वर, वेदना, मस्तक शूल पर क्विनाइन या क्विनाइनासव के स्थान में इसे दे सकते हैं । यह कटुपौष्टिक और पाचक है, अशक्ति, मन्दाग्नि और अजीर्ण नाशक है ।

---

* पहले सिंकोना की छाल अमेरिका से आती थी । अब हिन्दुस्तान के दार्जिलिंग प्रांत में सरकार की ओर से इसकी उपज की जाती है । लाल और पीले भेद से इसके दो प्रकार हैं । इसमें से लाल सिंकोना की छाल विशेष उपयोगी है । पीत सिंकोना में लाल की अपेक्षा क्विनाइन अधिक होती है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

५३३ सिद्धजीवनासव—ज्वर दाहादि नाशक।

विधि—२ सेर पत्थर के चूने में २० सेर पानी डालकर, बार २ पानी को चलाते रहें फिर ३ दिन रख छोड़ें। बाद में पानी निथार लेवें। निथारे हुये जल में निम्न वस्तुयें डालकर २ दिन तक रक्खे, पश्चात् भवके के द्वारा १२ बोतल अर्क आसव खींच लेवें। दशमूल उत्तम १ सेर, अजवायन, पलाशपापड़ा, करंज की गिरी, द्रोणपुष्पी पंचाङ्ग, चिरायते के फूल, सौंफ, १०० वर्ष पुराने नीम की जड़ की छाल, कालादाना, सनाय, बड़ी पीली हरड़, नागरमोथा, गुलाबी फटकरी शुद्ध और सुहागाशुद्ध ये प्रत्येक २०-२० तोले तथा अतीस, सोंठ, बनपसा, गावजबाँ, अडूसे की जड़, सफेदचन्दन और रतनजोत प्रत्येक १०-१० तोले तथा सेंधानमक, नौसादर, कालानमक, पोदीना और तुलसीपत्र प्रत्येक ५-५ तोले लेकर सबको जबकुट करके उपरोक्त पानी में डाल देवें।

मात्रा—२ तोला से ५ तोले तक अर्क। अनुपान—गर्म जल या गर्म दुग्ध के साथ। प्रातःसायं सेवन करावे।

गुण—जीर्णज्वर, पुराना प्रसूतज्वर, जीर्णकास, अग्निमांद्य, हाथ पैरों की दाह, यकृतप्रदाह और प्रायः सभी जीर्ण रोगों में तथा शरीर की क्षीणतासम्बन्धी रोगों में अत्यन्त प्रभावशाली है। (धन्वन्तरि)

सुगन्धमरिच्यासव—देखिये, कङ्कोलासव।

५३४ * सुदर्शनासव नं० १—ज्वर नाशक।

विधि—सुदर्शन बूटी (इसका क्षुप चक्र की समान होता है,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पत्ते लम्बे २ ईख की समान, फूल सफेद रंग का होता है) का घनसत्व १२० रत्ती, एलुवा १२० रत्ती, रेवन्दचीनी ४० रत्ती, इक्षल ४० रत्ती, त्रायमाणमूल, केशर, सोया, खड़िया, कुटकी, देवदारुमूल, कंकोल, हीराबोल, श्वेतछतरी ये प्रत्येक २०-२० रत्ती, कपूर १० रत्ती, दारचीनी ४ रत्ती, सोंठ ४ रत्ती, काली-मिरच २। रत्ती, अफीम १। रत्ती, कुनीन ८७ रत्ती और मद्य (७० से ९० प्रतिशत वाली) ५० तोले लेकर, काष्ठौषधियों का चूर्ण कर, सबको एकत्र मिला, कांच के पात्र में भर, दृढ़ मुख मुद्रा कर, ७ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर काम में लावें। इसे तीसरे दिन से ही काम में ला सकते हैं।

मात्रा-आधा माशा से ८ माशे तक।

गुण—प्रत्येक प्रकार के ज्वर एवं सूतिका रोगों को यह नष्ट करता है। मलेरिया आदि ज्वरों में जहाँ केवल कुनीन से कुछ लाभ नहीं होता हो इससे अवश्य लाभ होता है। (मद्यासव)

---

५३९ सुदर्शनासव नं० २—सर्व ज्वर नाशक।

[श्री रामेश्वरप्रसादजी द्विवेदी, आयुर्वेदाचार्य]

विधि--बृहत् सुदर्शन चूर्ण १० तोले में उत्तम देशी सुरा (मृतसंजीवनी सुरा मिले तो और भी उत्तम हो) १ बोतल मिला कर, कांच के पात्र में भर, दृढ़ मुख मुद्रा कर २१ दिन तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छान कर रख लेवे।

मात्रा—५ बून्द से १० बून्द तक। रोगी का बलाबल देख कर सेवन करावे।

गुण—ज्वर को शीघ्र शमन करता है।

(धन्वन्तरि)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नोट—उक्त बोतल में कांच का ही कार्क होना चाहिये और प्रतिदिन दो बार बोतल को हिलाते रहना चाहिये। २१ दिन या १ मास के बाद उसे अच्छी तरह हिला कर, चीनी की बाल्टी पर कपड़ा बिछाकर छान लेने। छने हुये आसव को उसी बोतल में रक्खे। लुगदी को अलग रक्खे। उक्त मात्रा बहुत ही कम है-बड़ी उमर के रोगी को ३० से ६० बून्द तक दे सकते हैं। बहुत शीघ्र ज्वर दूर होता है। निमोनिया के रोगी को १० से ४० बून्द तक सुखोष्ण जल में मिला, प्रति दो घन्टे बाद देवे। लुगदी को २ या ३ माशा, ताजे या उष्ण जल ५ तो० में मिला, छानकर पिलाने से भी ज्वर उतर जाता है।

सम्पादक--

---

५३६ सुदर्शनारिष्ट—ज्वर नाशक।

[श्री पं० मक्खनलालजी शर्म्मा वैद्यभूषण-खेरली]

विधि—शार्ङ्गधरोक्त बृहत् सुदर्शन चूर्ण १ सेर लेकर, १६ सेर जल में पकावे। ४ सेर जल शेष रहने पर, छान कर, शुद्ध चिकने मटके में भरे और ठंडा हो जाने पर उसमें ६ सेर शहद, और गिलोय का सत ५ तोला मिला देवे। मुख मुद्राकर १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तक।

गुण—ज्वर पर विशेष प्रभावशाली है।

---

५३७ सुधासव नं० १—क्षयादि नाशक।

विधि—इसकी सर्व कृति दाड़िमासव नं० २ के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही है। इसके विषय में श्रीयुत रामनारायणजी वैद्यराजने 'जीवनसुधा' में प्रकाशित किया है कि सन्धानावधि अर्थात् १ मास के पश्चात् आसव को मोटे कपड़े से छान कर, उसमें आधा तोला केशर पीस कर मिला देवे और शीशियों में भर कर रख देवे।

मात्रा—१। तोला, बच्चों को ३ माशे से ६ माशे तक।

समय—रोग के लक्षणानुसार।

गुण—क्षय (दाह, वमन, तृष्णा, खांसी, अरुचि, रक्तपित्त, अतिसार, निर्बलता, हृदय की कमजोरी, छाती के दर्द पर) आदि के लिये लाभकारी है। पित्तज्वर और बच्चों केबालशोष की बीमारी पर भी लाभ करता है। स्त्रियों के प्रदर और हिस्टीरिया रोग में भी लाभ पहुंचाता है। शरीर की कमजोरी दूर करने के लिये इसका ज्यादह प्रयोग किया जाता है।

---

५३८ सुधासव नं० २—उदररोग नाशक।

विधि—गुलाब जल (असली) ५० तोले, अर्क केवड़ा २५ तोले और चूने का साफ जल २५ तोले, इन तीनों को एकत्र शुद्ध चीनी मिट्टी के बर्तन में भर, उसमें १२ तोले संतरे का रस, २५ तोले नीबू का रस, १० तोले अदरख का रस, १० तो० सेंधानमक, १० तोले कालानमक तथा जीरा सफेदभुना हुआ, सौंफ भुनी हुई, कालाजीरा, चीता, हींग भुनी हुई, कल्मीशोरा, कुलीजन, हाऊबेर प्रत्येक का चूर्ण ६-६ माशे, तथा अजवायन, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, लौंग और खाने का सोड़ा प्रत्येक का चूर्ण ३-३ माशे मिलाने के पश्चात् पिपरमेंट का सत १

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भाशा और केशर (असली) दोनों को अलग २ पीस कर मिलावे और पात्र का मुख अच्छी तरह बन्दकर, ५ दिन के बाद छानकर काम में लावे ।

मात्रा—२ माशे से २ तोले तक ।

गुण—सर्व उदररोग, अजीर्ण, शूल, प्लीहा, यकृतविकार, गुल्म, कोष्ठबद्धता नाशक है । (एक प्राचीन पुस्तक से)

---

२३९ सुरञ्जानासव नं० १—वातव्याधि नाशक ।

(श्रीयुत मदनलालजी चतुर्वेदी आयुर्वेदाचार्य)

विधि—सुरञ्जान (कड़वी) का महीन (सुर्मे के समान पिसा हुआ) चूर्ण १० तोले, मृतसंजीवनी सुरा (७५ प्रतिशत अल्कोहलवाली) १ पौंड (४० तोले) दोनों को मिलाकर, कांच के कार्क वाली बोतल में भरकर रखे, और १ मास बाद फिल्टरपेपर में छानकर पुनः शीशियों में भर कर रख दे ।

मात्रा—६० बून्द से १२० बून्द तक । २॥–२॥ तोले जल मिलाकर दिन में ३–४ बार सेवन कराना चाहिये ।

गुण—पुरानी वातव्याधि, गठिया, शोथ, शूल आदि नाशक है । मूत्रल, रेचन, हृदय–दुर्बलतानाशक ।

नोट–अधिक मात्रा में यह हृदय की गर्मी को मन्दकर मद-कारक प्रभाव करता है, अधिक दस्त, वमन, कंठ में जलन, उदर में सख्त दर्द, दुर्बलता, सुस्ती, मष्तिष्क विकार, आन्त्ररोग प्रभृति उपद्रवों को करता है । कभी २ मूर्च्छा होकर रोगी की मृत्यु भी होजाती है । अतएव इसका सेवन सावधानी से करना चाहिये ।

(जीवनसुधा)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुरवल्लीकषाय--देखिये, प्राणामृतारिष्ट।

सुरिज्ञानासव—नं० २—देखिये, हिरण्यतुत्थासव ।

५४० सुवर्चलासव—विशूचिका नाशक ।

(श्री० के० डी० तलनिया वैद्यराज)

विधि—हुरहुर (हुरहुर--जवा) के फूल की कली (कली न मिलने पर खिला या सूखा फूल भी ले सकते हैं, किंतु पूरा गुण कली से ही होता है) ५ तोले, नीबू का रस ५ तोले, (नीबू कागजी, जम्बीरी या कमला होना चाहिये, नीबू न मिल सके तो उसके बदले पकी हुई इमली का पन्ना भी ले सकते हैं) उत्तम मिश्री ५ तोले और शुद्ध जल १ सेर लेकर प्रथम कली और मिश्री को खूब पीस डालें, फिर उसे जल में घोलकर, साफ कपड़े में छान लेवे, पश्चात् उसमें ताजा नीबू का रस मिलावे। और बोतल में भर दृढ़ डाट लगा देवे। (इसमें १० तोले तक रेक्टिफाइडस्प्रिट मिलाने से बहुत दिनों तक अच्छा बना रहता है।

मात्रा—१-१ तोला हर एक कै या दस्त के बाद और कै दस्त बन्द होजाने पर भी एक २ घन्टे बाद दे । फिर समय बढ़ाकर उसी मात्रा से देते रहना चाहिए।

गुण—हैजे की हर हालत में इसका व्यवहार किया जाता है। इससे कै, दस्त आना बन्द होजाते हैं, प्यास रुकती है, पेशाव खुलता है और उंगलियों का अकड़ना बन्द होजाता है। दो तीन खुराक देने पर भी यदि पेशाव न खुले तो थोड़े गेंदे के फूलों के रस का नाभि के चारों तरफ और पेडू पर लेप करे। (धन्वन्तरि)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नोट—लेखक ने इसका सार्थक नाम 'विशूचिकान्तक' रक्खा है, यह वास्तव में 'आसव' नहीं है। रेक्टिफाइडस्प्रेट मिलाकर हमने इसका अनुभव कर इसे आसव का स्वरूप दिया है। —सम्पादक।

सुवर्णारिष्ट—देखिये, सारस्वतारिष्ट।

५४१ * सूक्ष्मैलारिष्ट—(आसव) शूलादि नाशक।

विधि—छोटी इलायची ८ तोले तथा जावित्री, बड़ी इलायची, धायके फूल, लौंग, दालचीनी, नागकेशर, और छोरकाकोली प्रत्येक का चूर्ण ६-६ माशे, मृतसंजीवनी १६ तोले और जल ८ तोले सबको एकत्र कर, बोतल में भर, दृढ़ काग लगाकर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर शीशियों में भर कर रखदे

मात्रा—१ माशे से ३ माशे तक अथवा ३० बून्द से ६० बून्द तक।

गुण—अत्यन्त भयंकर घोर उदर शूल को शीघ्र ही नष्ट करता है।

---

* सूक्ष्मैलायाः द्वे पले जातिकोषं स्थूलैला च धातकी देवपुष्पम्। त्वक् केशरं क्षीरकाकोलिकाच प्रत्येकशः कोलमानं प्रकुर्य्य॥ संजीवन्याः कौडवं तोयमर्धं स्निग्धे भाण्डे सर्वमेतीन्नधाय। पक्षं यावत्स्थापयेत् प्रावृतास्ये उद्धृत्यैनं वस्त्रपूतं प्रयुञ्जात्॥ मात्रा ज्ञेया मापकात् षाणतानां हन्याच्छीघ्रं शूलरोगं सुघोरम्। रोगानन्यान् नीलकंठो यथाहीन् एलारिष्टो नीलकंठ प्रणुन्मः॥

—भै० रत्नावली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सेवन्त्यासव—देखिये, तरुण्यासव।

५४२ स्तम्भासव—वाजीकरण।

[श्रीमान् पं० कृष्णदयालुजी शर्मा आयुर्वेदपंचानन]

विधि—कस्तूरी, शुद्धशिलाजीत, केशर कश्मीरी, लोबान-कौडिया, प्रत्येक १-१ तोला, अफीम ६ माशे, अम्बर ३ माशे, और कपूर ३ माशे, सब चीजों को पीसकर-संजीवनी सुरा अथवा बरान्डो नं० १ तीन छटाँक (१५ तोले) में मिला, बोतल में भर, दृढ़ कार्क लगाकर, ३ या ७ दिन तक पड़ा रहने देवे। प्रतिदिन दो तीन बार हिला दिया करे। पश्चात् उसे निथार कर किसी कांच की डाटवाली शीशी में सुरक्षित रक्खे।

मात्रा—५ बून्द से १० बून्द तक। दूधके चमचे में मिला कर सेवन करे। इसके ऊपर शक्ति अनुसार दूध पिलावे।

गुण—स्तम्भन और पुष्टि के लिये अपूर्व योग है। सेवन काल से ५ मिनिट के भीतर ही अपना गुण दिखलाता है। यह वशीकरण से कम नहीं है।

(धन्वन्तरि-प्रयोगाङ्क)

स्फटिकासव—देखिये, खण्डासव नं० १।

५४३ स्वर्णासव नं० १—क्षीणता नाशक।

(वैद्यराज पं० देवकरणजी बाजपेयी वैद्यशास्त्री कानपुर)

विधि—सोने के वर्क (असली) ३ माशे और मदिरा की गाद २० तोले लेकर, खरल में स्वर्ण वर्क डाल थोड़ी २ मदिरागाद डालकर खरल करे। जब सब समाप्त होजाय, तब २० तोले और मदिरा मिलाकर एक घंटे तक खूब खरल कर शुद्ध

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चिकने चीनी मिट्टी के पात्र में भर मुखमुद्रा कर आर्द्र भूमि में जहाँ रात दिन पानी बहता हो गाढ़ कर रक्खे। १ माह बाद निकाल कर प्रयोग में लावे।

मात्रा—६ माशे से १ तोले तक।

गुण—वैसे तो यह ताकत के लिये सर्वोत्तम औषधि है। किंतु इसका विशेष अनुभव इसप्रकार है कि इसकी १ पूर्ण मात्रा यदि मरणासन्न रोगी के मुख में डाल दीजावे तो वह रोगी प्रायः किंचित् बोलने के लिये समर्थ होजाता है।

---

५४४ स्वर्णासव नं० २—(स्वकृत) अपस्मार नाशक।

विधि—स्वर्ण के असली वर्क ३ माशे, कस्तूरी दो माशे और शुद्ध कुचले दो माशे लेकर, प्रथम कुचले के महीन चूर्ण को २॥ सेर (२०० तोले) रेक्टीफाइडस्प्रिट में हल करे, फिर उस में स्वर्ण वर्क को अच्छी तरह घोट कर मिलावे, पश्चात् कस्तूरी मिला, मजबूत कांच के पात्र में भर, मुखमुद्रा कर, धान के ढेर में दबा कर रखदे। १५ दिन बाद निकाल कर और छानकर, बोतलों में भर ले।

मात्रा—रोगी के बलानुसार ५ बून्द से १५ बून्द तक।

गुण—अपस्मार (मृगी) को शीघ्र ही नष्ट करता है। वातव्याधि नाशक, स्नायुओं को बलदायक एवं वीर्य विकार नाशक है। इसे अपस्मारहरासव भी कहते हैं।

---

५४५ * स्वर्णपत्र्यासव नं० १—कोष्ठबद्धता नाशक।

विधि—सनाय (सोनामुखी) के पत्ते १६ तोले, जीरा दो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तोले, धनिया दो तोले, शहद ८ तोले और मद्य (४० से ६० प्रतिशत वाली) ७२ तोले लेकर, सनाय आदि का चूर्ण कर, सब को एकत्र मिला, बोतल में भर, दृढ़ कार्क बन्द कर, ७ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रखले।

मात्रा—आधा माशा से ८ माशे तक।

गुण—प्रत्येक प्रकार के बद्धकोष्ठ में इसके सेवन से बड़ा लाभ होता है। (मद्यासव)

---

५४६ स्वर्णपत्र्यासव नं० २--(स्वकृत)-अजीर्णादि नाशक।

विधि--सनाय ८ तो०, सौंफ २ तोले, धनिया २ तो०, इनका मोटा चूर्ण करे, तथा दाख (मुनक्का) ५ तोले और रेक्टिफाइडस्प्रिट ५० तोले लेकर उक्त विधि से केवल ३ दिन तक बंद बोतल में सुरक्षित रखने से यह आसव सिद्ध होजाता है।

मात्रा—६० बून्द से १। तोला तक।

गुण—रेचक है। अजीर्ण, मलावरोध, त्वचा के रोग एवं अर्शादि विकारों पर इसका रेचनार्थ प्रयोग बड़ा लाभदायक होता है।

---

५४७ स्वर्णरसायनासव--अपूर्व बलवर्धक।

(वैद्यरत्न पं० नारायणजी पन्त वैद्यशास्त्री)

विधि--सोने के वर्क ३ माशे, कपूर १ माशा और रेक्टिफाइडस्प्रिट ५॥ तोले लेकर, इसमें से करीब ३ माशे स्प्रिट में एक एक करके सोने का वर्क डालता जाय और खरल में घोटताजाय सब वर्क जब महीन घुट जाँय, तब उसमें कपूर भी घोट देवे। फिर सब स्प्रिट मिला दे, तथा इसमें १५ तोले बराएडी ऐक्शा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

नं० १ की मिलाकर, एक कांच की उमदा डाट की मज़बूत शीशी में भर देवे। ध्यान रहे शीशी इतनी बड़ी हो जिसमें यह वस्तु पौने भाग में ही आजाय और चौथाई खाली रहे। फिर गुड़ और चूना मिलाकर शीशी के मुँह की कांच की डाट के ऊपर से लगा देवे, और उसके ऊपर मुलतानी मिट्टी से २-३ कपड़मिट्टी कर, इसे ऐसी जगह जमीन में गाढ देवे, जो ऊपर से हर समय गीली रहती हो, अथवा एक गड्ढे में गाढ़ कर ऊपर से हर रोज पानी भर दिया करे, कभी वह पानी सूखे नहीं। एक साल के बाद इसे निकाले। छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—५ बून्द से १० बून्द तक।

गुण—इसमें स्वर्ण से भी अधिक गुण हैं। चाहे जिस रोग से दुर्बलता आगई हो, इसके कुछ काल के सेवन से ही अपूर्व बल का संचार होने लगता है। मरते समय जो काम चन्द्रोदय आदि बड़े २ रस नहीं कर पाते, वह इससे होजाते हैं।

(अ० योगमाळा-सिद्धयोगांक)

---

५४८ स्वर्णक्षीरीआसव नं० १-टिंक्चर आयोडिन से प्रभावशाली।

(श्री पं० चिरंजीलालजी जैन वैद्यशास्त्री)

विधि—स्वर्णक्षीरी (सत्यानाशी कटेरी) की जड़ की छाल १० तोले, हल्दी और चूना प्रत्येक ५-५ तोले लेकर, २॥ सेर जल में पकावे, और जब चतुर्थांश शेष रहे तब उतार कर छान लेवे। उसको एक साफ बोतल में, ५० तोले स्प्रिट मिलाकर ४ दिन धूप में रखकर, पुनः फिल्टर द्वारा छान लेवे। पश्चात् साफ शीशियों में भर कर रखले।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा–२ या ३ बूंद।

गुण—चोट पर रुई के फाहे से २ या ३ बार लगाने से पूर्ण लाभ होता है। वैसे ही शोथ पर भी लगाने से शोथ उतर जाता है। फोड़ा फूट गया हो तो इसको दिनमें एक बार लगा कर धो डालने से बराबर रोपण क्रिया होती है, ऐसा तीन चार दिन करने से कैसा ही सड़ा हुआ जख्म क्यों न हो, बहुत जल्दी अच्छा होजाता है। खाँसी पर इसकी २ या ३ बून्दें बबूलारिष्ट में मिलाकर देने से २–३ खुराक में ही लाभ होता है। गलशुंड रोग में जिसमें गले का काग बढ़ जाता है, खाँसी चैन नहीं लेने देती, तब दिन भर में ३–४ बार गले में लगाने से बहुत अच्छा लाभ होता है। सिर के फोड़ों में एक बार लगा देने से पूर्ण प्रभाव दिखलाता है। जिन बच्चों को दूध न पचता हो, उन्हें बतासे में आधी बून्द से १ बून्द तक रोज देने से पूर्ण लाभ होता है। (धन्वन्तरि–बूटीचित्राङ्क)

---

५४९ स्वर्णक्षीरीआसव नं० २—त्वग्रोगादि नाशक।

(पं० धर्मदत्त विद्यालंकार, वैद्यभूषण)

विधि–सत्यानाशी कटेरी का स्वरस ५ सेर, मिश्री १॥ सेर तथा मुनक्का, अनन्तमूल उसवा, चोबचीनी, बकुलवृक्ष (मौलसिरी) की छाल और धायके पुष्प प्रत्येक का चूर्ण १०–१० तोले, सब को एकत्र मिला; कांच या चीनी मिट्टी के पात्र में भर कर, अच्छी तरह मुखमुद्रा कर, १५ दिन तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रखले।

मात्रा—६० बून्द से २४० बून्द तक (१ से ४ ड्राम)।

गुण—रक्तविकार नाशक, खाज, दाद, फोड़ा, फुन्सी आदि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

त्वचा के रोगों को शीघ्र नष्ट करता है। उपदंश या फिरंग के उपद्रवों को शीघ्र शमन करता है।

५९०स्वादिष्टासव-नं० १—अजीर्ण, अरुचि आदि नाशक।

[हकीम राजकुमार साहब हकीम कामिल]

विधि—लौंग, बड़ी इलायची, कालाजीरा, कालीमिरच और सफेदजीरा प्रत्येक १-१ तोला तथा छोटी पीपल, दालचीनी, जवाखार, सज्जीखार और जवाखार प्रत्येक ६-६ माशे, सांभर नमक, काला नमक, सेंधा नमक और खारी नमक प्रत्येक ४॥-४॥ माशे लेकर सब को अधकुचला कर, किसी बड़ी बोतल में या मिट्टी के उस पात्र में जिसमें कुछ दिन पानी भर रहा हो, भर कर, उसमें अदरक का रस और क़ाग़ज़ी नीबूका रस ३-३ पाव तथा घीकुआर का गूदा, बंगलापान का रस और जम्भीरी नीबूका रस प्रत्येक आध-आध सेर मिला कर, खूब हिला देवे और पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिन तक धूप में रख देवे। पश्चात् छान कर बोतल में भर कर रख लेवे और काम में लावे।

मात्रा—३ माशे से दो तोले तक।

गुण—अजीर्ण, अरुचि, अफारा आदि रोग नाशक है। किंतु गर्म मिज़ाज़ वालों को एवं धातुक्षीण वालों को लाभ नहीं करता।

(आयुर्वेदसिद्धान्त)

---

५९१ स्वादिष्टासव (अर्क) नं० २—पाचनशक्ति वर्धक।

[श्री वैद्यराज पं० बालकृष्ण शर्मा भूपाल]

विधि—बड़ी इलायची ३० तोले और दालचीनी ४० तोले,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दोनों को जवकुट कर, १० सेर जल में १२ घन्टे भिगोकर, नलिका यन्त्र द्वारा ६ या ७ बोतल अर्क खींच लेवे।

मात्रा—२॥ तोले से ५ तोले तक। जल के साथ।

गुण—पाचनशक्ति को ठीक कर भूँखको बढ़ाता है। पीने में स्वादिष्ट है। भोजन के बाद पीने से दिन भर मुख सुगंधित रहता है। हैजे का उद्रेक होने पर, जल के स्थान में इसी को पिलाना लाभदायक है। किसी उदर रोग की दवा के साथ इस को अनुपान की भाँति देने से शीघ्र लाभ होता है। बालकों को कम मात्रा में देना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ह

५५२ हरमलासव-नं० १-(स्वकृत) पौष्टिक।

विधि—हरमल (इस्पन्द) १० तोले, पोस्त के डोरे ४ तोले, तिली का चूर्ण ४ तोले, सबको जवकुट कर, १॥ सेर जल में मिला शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें आध सेर गुड़ और २० तोले धाय के फूलों का चूर्ण मिला, पात्र मुख अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिनतक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक। अनुपान-दूध या जल।

गुण—यह अत्यंत स्तम्भक एवं पौष्टिक योग है। श्वासरोग, अपस्मार, आमवात पर भी लाभदायक है।

---

५५३ हर्मलासव नं० २—(स्वकृत)रक्तशोधक, वात नाशक।

विधि—हर्मल (इस्पंद) के बीज १० तोले लेकर जवकुट कर, ७॥ सेर खूब गर्म जल में भिगो देवें, ३ घन्टे के बाद, उसे खूब मसलतेहुये छान कर, चीनी मिट्टी के पात्र में भर, उसमें ३ सेर शहद और १ सेर रेक्टिफाइडस्पिरट मिला, अच्छी तरह मुख बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—१० से ६० बून्द तक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण—रक्तशोधक, कफ वात जनित रोग नाशक, तथा पक्षाघात, गृध्रसीवात, स्त्रियों के मासिक धर्म से उत्पन्न होनेवाली, पीड़ा, अनियमित मासिकधर्म, योषापस्मार, अमावात और मूत्रकृच्छ्र को यह शीघ्र दूर करता है। श्वास (दमा) पर भी यह उत्तम प्रभाव दर्शाता है, तथा यह उत्तम निद्राकारक है।

---

५५४ हारिद्रासव—प्रमेह नाशक।

[स्वर्गीय श्री पं० परशुरामजी शास्त्री विद्यासागर]

विधि—हल्दी १ पाव लेकर, जलमें भिगोदेवे, फिर कूटकर, जल डालकर स्वरस निकाल ले। अथवा सूखी हल्दी का चूर्ण १ भाग और रेक्टिफाइडस्प्रिट ६ भाग (सूखा चूर्ण डालते समय, उसे समभाग जल में भिगोकर स्प्रिट में डालना चाहिये) एकत्र मिला, बोतल में भर, दृढ़ कार्क लगा कर रख दे। फिर २४ घण्टे बाद फलालेन से छान कर, शीशियों में भर कर रख ले।

मात्रा—२ बून्द से ५ बून्द तक। २ तोला जल में दो बून्द आसव मिला कर पिलावे। इसी प्रकार दिन में ३ बार देवे।

गुण—प्रमेह और मधुमेह को शीघ्र नष्ट करता है। पथ्य से रोगी को रक्खे, व्यायाम कराने से न चूके और इसके चमत्कृत गुणों को देखे, कैसा आशु लाभ पहुंचाता है।

(अ० योगमाला—प्रमेहाङ्क)

---

५५५ हरीतक्यासव *—क्षयकासादि नाशक।

---

* प्रस्थार्धं तु हरीतक्याः धात्रीप्रस्थद्वयं तथा। दशमूलशतार्धं च

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—हरड़ ६॥ छटाँक, आँवले १ सेर १० छटाँक, दशमूल २॥ सेर, पोहकरमूल १। सेर, चीतामूल १। सेर, दुरालभा १० छटाँक, गिलोय १ सेर, इन्द्रायणमूल २० तोले, खैर ३२ तोले, बिजौरे नीबू की छाल १६ तोले तथा मजीठ, मुलैठी, कूठ, कैथ देवदारु, वायविडंग, चव्य, लोध, भारंगी, शीतलचीनी, कमल के कोमल पत्र, पीपल, सुपारी, कचूर, पद्माख, प्रियंगु, सारिवा, बालछड़, नागकेसर, सम्हालू के बीज (मालवे के बीज), निसोथ, हलदी, रास्ना, मेदासिंगी, बिसखपरा, सोया, कुटकी,

---

पौष्करं च तदर्धकम्। तत्तुल्यं चित्रकं दद्याच्चित्रकार्धा दुरालभा गुडूच्या विंशतिपलं विशाला पलपंचकम् ॥ खदिरस्य पलान्यष्टौ तदर्धं बीजपूरकम्। मंजिष्ठा मधुकं कुष्ठं कपित्थं देवदारुकम् ॥ विडंगं चविकां रोध्रं भार्ङ्गी स्यादैलवालुकम्। संवर्तकं कणां चैव कमुकं शटी सुप्रभम् ॥ प्रियंगुं सारिवा मांसी नागकेसर रेणुकाम्। त्रिवृतां रजनीं रास्नां मेषशृङ्गीं पुनर्नवाम् ॥ शताह्वां रोहिणीं दन्ती पलांशां क्वाथयेज्जले। चतुर्थभागशेषेतु द्राक्षां षष्टिपलां क्षिपेत् ॥ त्रिंशत्पलानि धातक्या गुडाच्छुद्धाच्चतुः शतम्। द्वात्रिंशत्पलिकं क्षौद्रं सर्वमेकत्र कारयेत् ॥ भाण्डे पुराणे सुस्निग्धे मांसी मरिच धूपिते। धूपिते च पुनर्दद्यात्पिप्पलीनां पलद्वयम् ॥ जातीफलं लवंगं च त्वगेलापत्रकेशरान्। कर्षमात्रां च नैपालीं दत्वा पक्षं निधापयेत् ॥ कनकफलचूर्णेऽपि क्षिप्ते निर्मलता भवेत्। पक्षादूर्ध्वं पिबेद्यस्तु मात्रया च यथाबलम्। धातुक्षयं जयेत्पीतःकासं पंचविधं तथा। अर्शांसि षट्प्रकाराणि तथाष्टावुदराणि च ॥ प्रमेहां च महाव्याधिमरुचिं पाण्डुतां तथा। सर्वान् वातान् तथाऽप्यामं श्वासं छर्दिं तथैव च ॥ अष्टादशैव कुष्ठानि शोषं शूलं भगन्दरम्। शर्करां मूत्रकृच्छ्रं च ह्यश्मरीं च विनाशयेत् ॥ कृशानां च महापुष्टिं कुरुते च महाबलम्। महावेगो महातेजो महावीर्य बलोद्धतः॥ कामपुष्टिं करोत्येष वन्ध्यानां पुत्रदो भवेत्। —गदनिग्रह ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जमालगोटे की जड़ प्रत्येक ४-४ तोले लेकर, सबको जवकुट कर, ५ मन ८ सेर जल में पकावे। १ मन १२ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में बालछड़ तथा कालीमिरच की धूनी देकर, उसमें भर देवे। और उसमें ३ सेर मुनक्का (बीज रहित), २० सेर उत्तम गुड़, १॥ सेर धायके फूलों का चूर्ण, १ सेर ६॥ छटाँक शहद, ८ तोले छोटी पीपल का चूर्ण तथा १-१ तोला, लौंग, जायफल, दालचीनी, बड़ी इलायची, तेजपात, नागकेसर और कस्तूरी का चूर्ण मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर, दूसरे मटके में भर कर, उसमें निर्मली के बीजोंका चूर्ण डालकर दूसरे दिन पुनः छान लेवे। और बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—आधा तोला से २॥ तोले तक।

गुण—धातुक्षय, पांच प्रकार की खाँसी, छः प्रकार की बवासीर, आठों तरह के उदररोग, अरुचि, प्रमेह, पाण्डु, वातविकार, आमविकार, श्वास (दमा), कै (वमन), १८ प्रकार के कुष्ठ, क्षय, शूल, भगन्दर, पेशाब में शक्कर आना (मधुमेह), मूत्रकृच्छ, पथरी, कृशता एवं निर्बलता नाशक है।

हरीतक्याद्यरिष्ट—देखिये, अभयारिष्ट नं० १।

५५६। हस्तिशुंड्यासव—बालअपस्मार नाशक।

(वैद्यराज श्री बाबूरामजी शर्मा आयुर्वेदाचार्य)

विधि—हस्तिशुण्डी बूंटी (हाथीशुण्डी) का अर्क २ औंस (५ तोले) और संजीवनी सुरा या असली ब्रांण्डी दो औंस (५ तोले) दोनों को ऐसी शीशी में डालकर जिसमें ३० तोले आ सके डाट लगाकर, कपड़े या मिट्टी से मुंह को खूब अच्छी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तरह से बन्द कर, लगभग १५ दिन, तेज धूप में रक्खे या जमीन में गाढ़ देवे । पश्चात् फिल्टर पेपर से छान लेवे । फिर इसमें कस्तूरी १ माशा, अम्बर अशहब १ माशा डालकर खूब घोटे, और शीशी को साफ करके उसी में फिर यह आसव भर कर, खूब मजबूत डाट लगा पुनः १५ दिन तक रक्खा रहने दवे । पश्चात् काम में लावे ।

मात्रा—जितने मासका बच्चा हो प्रायः उतनी ही बून्दें थोड़े से दशमूल के अर्क या पानी में मिला कर, दिन में ३-४ बार देवे ।

गुण—बालकों के हाथ पैरों में जो बाँइटे (कमेड़ा) आते हैं, जिसे आँकड़ी रोग कहते हैं, इसके सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है । (धन्वन्तरि-प्रयोगाङ्क)

---

५५७ * हिंग्वासव—उदरशूलादि नाशक ।

विधि—हींग १ भाग और मद्य (७० से ९० प्रतिशत वाली) ५ भाग, दोनों को एकत्र कर, बोतल में भर, मजबूत कार्क लगा, ७ या १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे । बीच २ में हिलाते जाना चाहिये । पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे ।

मात्रा—आधा माशा से ४ माशे तक ।

गुण—उदरशूल, अग्निमांद्य, अजीर्ण और आध्मान (अफारा) में बड़ा लाभप्रद है । इसे मूलद्राव अथवा निम्बूस्वरस और लवण के साथ मिला कर देना चाहिये ।

(मद्यासव)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

५५८ * हिरण्यतुत्थासव—गठियावात नाशक।

विधि—सुरञ्जान कड़वी १ भाग चूर्ण कर, मद्य (७० से ९० प्रतिशत ब्राली) १० भाग, दोनों को एकत्र मिला बोतल में भर कर, मजबूत कार्क लगा, ७ या १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। बीच बीच में हिलाते जाना चाहिये। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रखदे।

मात्रा—आधा माशा से १ माशा तक।

गुण—गठिया रोग में इसकी प्रथम मात्रा ही अपना पूर्ण चमत्कार दिखलाती है। शोथ और शूल ४-५ घंटे में दूर हो जाते हैं। किन्तु यदि गठिया का दूसरा हमला हो तो इससे कोई लाभ नहीं होता। यह आसव हृदय की गति को मन्द करता है, अतएव जिनका हृदय निर्बल हो उन्हें इसका सेवन नहीं करना चाहिये।

(मद्यासव)

हीराबोलासव—देखिये, रक्तबोलासव।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्ष

५६९ क्षयारिअरिष्ट—क्षय नाशक।

[श्री० डा० इन्द्रदत्तजी शर्मा, राजवैद्य]

विधि—छोटी इलायची के दाने, छोटी पीपल, तमालपत्र, चिरायता, स्यातरा (पित्तपापड़ा), खैर की छाल, जवासा, पुनर्नवा, गोरखमुन्डी, मुनक्का, नागकेशर, बबूल की छाल और अडूसे (बांसा) की जड़, प्रत्येक ५-५ तोले लेकर, जवकुट कर, ६४ भाग (अर्थात् ५२ सेर) पानी में पकावे। चौथाई (१३ सेर) जल शेष रहने पर, उतार लेवे और ठंडा हो जाने पर, उसे शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें १ सेर शुद्ध शहद मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, जमीन में गाढ़ देवे। ४० दिन बाद निकाल कर छान लेवे। फिर उसमें १ पौंड (४० तोले) रेक्टिफाइडस्प्रिट मिला, १ मास तक रख कर छान लेवे। और बोतलों में मजबूत डाट लगाकर, रख दे।

मात्रा—६ माशे से दो तोले तक। क्षयहरि अर्क अथवा केवल शुद्ध जल के साथ सेवन करावे।

गुण—क्षय की अवस्था में बहुत लाभ पहुंचाता है।

(राकेश-राजयक्ष्माङ्क)

---

५६० क्षुधामृत-(आसव) नं० १—क्षुधावर्धक।

[श्रीयुत बालचन्द्रजी शुक्ल वैद्यराज]

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—एलकोहल (शुद्ध शराब) १० तोले में सलफ्यूरिक एसिड (गंधक का तेजाब) २॥ तोले एक एक बून्द (थोड़ा २) मिलावे, फिर शीशी को ३ दिन तक धूप में रक्खे। पश्चात् उसमें दालचीनी १ तोला, सोंठ ६ माशे और नौसादर १। तोला, प्रत्येक का महीन चूर्ण कर मिलावे, और शीशी का मुख अच्छी तरह बन्द कर, ६ दिन तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् फिल्टर पेपर से छान कर रख लेवे।

मात्रा—५ से २० बून्द तक। जल के साथ, दिनमें ३ बार।

गुण—उदर रोगों की सर्व श्रेष्ठ दवा है। भूख खूब लगाती है, हाज़मा अच्छा होता है। आँतों की कमजोरी से जो खट्टी डकारें आने लगती हैं, वह इसके सेवन से दूर होजाती हैं। यकृत और प्लीहा वृद्धि में भी लाभदायक है।

(जीवनसुधा से)

---

२६१ क्षुधामृतासव-नं० २—उदर रोग नाशक।

[श्रीयुत—बालकृष्णजी शर्म्मा वैद्यराज]

विधि—लौंग, इलायची बड़ी, सज्जी, जीरा, सेंधानमक, तज, यवक्षार, कालाजीरा, सोंचरनोन, सांभरनोन प्रत्येक १-१ तोला लेकर मोटा २ कूटकर बरनी में भर, उसमें अदरक का रस, पान का रस, नीबू का रस, नारंगी का रस, घीकुआर का रस, बिजौरे नीबू का रस, पोदीने का रस और अनार का रस, प्रत्येक १५-१५ तोले मिला देवे, और पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक धूप में रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर लेवे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—३ माशे से ६ माशे तक । नित्य दोनों समय भोजन के बक, थोड़े पानी के साथ सेवन करे ।

गुण—उदर रोगों पर उत्तम लाभदायक है । धातु विकार और गर्म प्रकृति वालों के लिये विशेष उपकारी है ।

---

५६२ क्षुधामृतासव नं० ३—क्षुधासागर अर्क ।

[श्री वैद्यवर मुन्नालालजी—कानपुर]

विधि—अदरक का रस ३ पाव, घीकुआर का रस, बंगलापान का रस और जम्भीरी नीबू का रस प्रत्येक २-२ पाव, तथा बिजोरे नीबू का रस ३ पाव लेकर, एक अमृतबान (बरनी) में सब रसों को एकत्र करे और उसमें लौंग, बड़ी इलायची, पीपल, तज, कालीमिरच, जवाखार, सज्जीखार, कालानमक, साम्भर नमक, सेंधानमक, भुनाहुआ जीरा और धनिया प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोले मिलाकर, तथा उसके मुख को अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे । बीच २ में हिलाते रहना चाहिये और धूप में रखना चाहिये ।

मात्रा—६ माशे । अनुपान जल में मिला कर देवें ।

समय—भोजन के बाद ।

गुण—मन्दाग्नि को दूर कर, क्षुधा को चैतन्य करता है ।

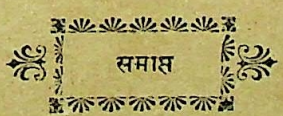

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि—एलकोहल (शुद्ध शराब) १० तोले में सलफ्यूरिकएसिड (गंधक का तेजाब) २॥ तोले एक एक बून्द (थोड़ा २) मिलावे, फिर शीशी को ३ दिन तक धूप में रक्खे। पश्चात् उसमें दालचीनी १ तोला, सोंठ ६ माशे और नौसादर १। तोला, प्रत्येक का महीन चूर्ण कर मिलावे, और शीशी का मुख अच्छी तरह बन्द कर, ६ दिन तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् फिल्टर पेपर से छान कर रख लेवे।

मात्रा—५ से २० बून्द तक। जल के साथ, दिनमें ३ बार।

गुण—उदर रोगों की सर्व श्रेष्ठ दवा है। भूख खूब लगाती है, हाज़मा अच्छा होता है। आँतों की कमजोरी से जो खट्टी डकारें आने लगती हैं, वह इसके सेवन से दूर होजाती हैं। यकृत और प्लीहा वृद्धि में भी लाभदायक है।

(जीवनसुधा से)

---

२६१ क्षुधामृतासव-नं० २—उदर रोग नाशक।

[श्रीयुत—बालकृष्णजी शर्म्मा वैद्यराज]

विधि—लौंग, इलायची बड़ी, सज्जी, जीरा, सेंधानमक, तज, यवक्षार, कालाजीरा, सोंचरनोन, सांभरनोन प्रत्येक १-१ तोला लेकर मोटा २ कूटकर बरनी में भर, उसमें अदरक का रस, पान का रस, नीबू का रस, नारंगी का रस, घीकुआर का रस, बिजौरे नीबू का रस, पोदीने का रस और अनार का रस, प्रत्येक १५-१५ तोले मिला देवे, और पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक धूप में रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर लेवे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्रा—३ माशे से ६ माशे तक । नित्य दोनों समय भोजन के बक, थोड़े पानी के साथ सेवन करे ।

गुण—उदर रोगों पर उत्तम लाभदायक है । धातु विकार और गर्म प्रकृति वालों के लिये विशेष उपकारी है ।

---

५६२ क्षुधामृतासव नं० ३—क्षुधासागर अर्क ।

[श्री वैद्यवर मुन्नालालजी—कानपुर]

विधि—अदरक का रस ३ पाव, घीकुआर का रस, बंगलापान का रस और जम्भीरी नीबू का रस प्रत्येक २-२ पाव, तथा बिजौरे नीबू का रस ३ पाव लेकर, एक अमृतबान (बरनी) में सब रसों को एकत्र करे और उसमें लौंग, बड़ी इलायची, पीपल, तज, कालीमिरच, जवाखार, सज्जीखार, कालानमक, साम्भर नमक, सेंधानमक, भुनाहुआ जीरा और धनिया प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोले मिलाकर, तथा उसके मुख को अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे । बीच २ में हिलाते रहना चाहिये और धूप में रखना चाहिये ।

मात्रा—६ माशे । अनुपान जल में मिला कर देवे ।

समय—भोजन के बाद ।

गुण—मन्दाग्नि को दूर कर, क्षुधा को चैतन्य करता है ।

समाप्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हमारे यहाँ

सब प्रकार के रस, रसायन, आसव, अरिष्ट, अवलेह, धातु और जड़ी-बूंटी आदि सब देशी दवाएँ सुलभ मूल्य में प्राप्त होसकती हैं।

सूचीपत्र मंगाकर देखिये।

पता--आयुर्वेदोद्धारक औषधालय, मुरादाबाद।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by MoE-IKS

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE